ख़ुत्बा इल्हामियः

(दैवीय संभाषण)

KHUTBA ILHAMIYYAH

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

ख़ुत्बा इल्हामिया

(दैवीय संभाषण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: ख़ुत्बा इल्हामिया (दैवीय संभाषण)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डाक्टर अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य
टाइप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) जून 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Khutba Ilhamiya
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Dr. Ansar Ahmad & Farhat Ahmad Acharya
Type Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) June 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

टाईटल प्रथम संस्करण

هذا هو الكتاب الذي الهمت حصة منه من رب العباد - في يوم عيد من الاعياد - فقرأته على الحاضرين - بانطاق الروح
الامين - من غير مدد الترقيم والتدوين - فلا شك انه آية من الآيات - وما كان لبشر ان ينطق كمثل مرتجلا متحفظا في شيء هذه
العبارات - وكان الناس يرقبون طبعه رقبة يوم العيد - ويستطلعون بعيون المشتاق المريد - فالحمد لله
الذي ادام مقصودهم بعد الانتظار - ووجدوا واطلعهم كبستان مذللة اغصانه من الثمار - وانه صنيعة
احسان الحضرة - وخطبة تبليغ الناس الى السعادة وانه غيث من الله بعد ما اقحلت البلاد و
عم الفساد - ولن تجد هذه المعارف في الآثار المنقولة المدونة من الثقات - بل هي حقائق
اوحيت اليّ من رب الكائنات - وانه اظهار تام وهل بعد المسيح كتم - وهل بعد
خاتم الخلفاء على السر ختم - وليس من العجب ان تسمع من خاتم
الائمة - نكاتا ما سمعت من قبل من علماء الملة بل العجب كل العجب
ان يأتي المسيح الموعود والامام المنتظر وحكم
الناس وخاتم الخلفاء ثم لا يأتي بمعرفة جديدة
من حضرة الكبرياء - ويتكلم كتكلم العامة من
الطلباء - ولا يفرق فرقا بينا بين الظلمة
والضياء - واني سميت
هذه الرسالة

خُطبة اِلهاميّة

واني علمتها الهاما من ربي وكانت آية

ثمن نسخة واحدة عمه

تعداد الاشاعة ۲۱۰۰

وانها طبع في مطبع ضياء الاسلام قاديان باهتمام الحكيم فضل الدين
البهيروي في سنة ١٣١٩ من الهجرة المقدسة

प्रथम संस्करण के टाइटल का अनुवाद

यह वह पुस्तक है जिसका एक भाग अल्लाह तआला की ओर से, एक ईद के दिन मुझे इल्हाम हुआ तो मैंने उसे बिना किसी लिखने या इकट्ठा करने के फरिश्ते की वाक् शक्ति से, उपस्थित जनों के सम्मुख पढ़ा। निस्सन्देह यह ख़ुदा के चमत्कारों में से एक महान चमत्कार है। किसी मनुष्य के लिए संभव नहीं कि वह इस प्रकार के लेख मेरे समान मौखिक प्रस्तुत कर सके। और लोग ईद के दिन की प्रतीक्षा के समान उसके प्रकाशन के प्रतीक्षक थे और इच्छा तथा शौक रखने वाले उसके प्रकाशन के लिए नज़रें बिछाए बैठे थे। अत: प्रशंसा अल्लाह की है जिसने प्रतीक्षा के बाद उनको उनका अभीष्ट दिखा दिया और उन्होंने अपने उद्देश्य को फलों से झुकी हुई टहनियों वाले बाग़ के समान पा लिया। और ख़ुदा तआला के उपकार का करिश्मा है और लोगों को सौभाग्य तक पहुंचाने की सवारी है और देश के अकाल ग्रस्त हो जाने और उपद्रव के फैल जाने के बाद अल्लाह की ओर से रहमत की बारिश है और तुम यह अध्यात्म ज्ञान बड़े-बड़े प्रकांड उलमा द्वारा लिखित चयनित लेखों में भी नहीं पाओगे बल्कि यह वे वास्तविकताएं हैं जो ब्रह्मांड के पालनहार की ओर से मुझे वह्यी की गई हैं। यह पूर्ण इज़हार है। और क्या मसीह के बाद भी कुछ छुपा है और क्या ख़ातमुल ख़ुलफ़ा के बाद भी कोई राज़ रह गया है। और यह बात आश्चर्यचकित करने वाली नहीं कि तू ख़ातमुल अइम्मा से ऐसे नुकात (रहस्यमयी ज्ञान) सुने जो तुमने उससे पूर्व उम्मत के उलमा से नहीं सुने बल्कि आश्चर्य पर आश्चर्य तो यह होता कि मसीह मौऊद और अपेक्षित इमाम और लोगों का हकम (निर्णायक) और ख़ातमुल ख़ुलफ़ा आता और फिर ख़ुदा तआला की ओर से कोई नया ज्ञान न लाता और सामान्य उलमा के समान बात करता और अंधकार तथा प्रकाश के मध्य स्पष्ट अंतर न दिखाता। और मैंने इस पुस्तक का नाम

ख़ुत्बा इल्हामिया

(दैवीय संभाषण)

रखा है और यह मुझे मेरे रब ने इल्हाम के द्वारा सिखाया और यह महान चमत्कार है

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**ख़ुत्बा इल्हामिया**" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद और आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम.ए. और आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल महदी एम.ए., आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना। (अनुवादक)

तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

पुस्तक परिचय

ख़ुत्बा इल्हामिया

(दैवीय संभाषण)

ईदुल अज़्हा जो 11, अप्रैल 1900 ई० तदनुसार 10, ज़ुलहज्ज 1317 हिज्री को हुई। उस दिन ईद की नमाज़ अदा करने के पश्चात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में एक ख़ुत्बा (भाषण) दिया जो 'ख़ुत्बा इल्हामिया' के नाम से प्रसिद्ध है और वह इस पुस्तक का वह हिस्सा है जो يَا عِبَادَ اللّٰهِ فَكِّرُوْا (या इबादल्लाहे फ़क्किरू) से आरम्भ होता है और وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمْ خَبِيْرٌ (व सौफा युनब्बिउहुम ख़बीर) पर समाप्त होता है। यह ख़ुत्बा उर्दू के प्रथम संस्करण के पृष्ठ-1 से लेकर पृष्ठ-38 पर तथा इस संस्करण के पृष्ठ-31 से लेकर पृष्ठ-73 पर समाप्त होता है। इसके पश्चात द्वितीय अध्याय आरम्भ होता है। असल ख़ुत्बे में जिसके कारण सम्पूर्ण पुस्तक का नाम ख़ुत्बा इल्हामिया रखा गया, क़ुर्बानी की दार्शनिकता (हिक्मत) और उसकी फ़िलास्फ़ी वर्णन की गई है तथा शेष चार अध्यायों में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बाद में लिखे, अपने दावे पर प्रकाश डाला है और पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों से अपने दावे की सच्चाई और समर्थन में तर्क दिए हैं। उस में उर्दू भाषा में एक विज्ञापन 'चन्दा मीनारतुलमसीह' ख़ुत्बा इल्हामिया का परिशिष्ट प्रकाशित किया गया है। जिसमें हज़रत अक़्दस ने मीनारतुलमसीह के उद्देश्यों का वर्णन किया है तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मे'राज (रुहानी सफ़र) के दोनों प्रकारों अर्थात् मे'राज मकानी (स्थान से संबंधित) और मे'राज ज़मानी (समय से संबंधित) का वर्णन करके मे'राज ज़मानी की दृष्टि से "मसीह मौऊद" की मस्जिद को मस्जिद अक़्सा ठहराया है और उस विज्ञापन के अन्त में आपने 28, मई 1900 ई० तिथी लिखी है।

इस से पूर्व उर्दू के प्रथम संस्करण के मुखपृष्ठ के पृष्ठ-2 से अ, ब, ज पृष्ठों तथा इस संस्करण के पृष्ठ-3 से पृष्ठ-11 तक अरबी भाषा में जो "अलऐलान" प्रकाशित हो चुका है उसके नीचे 25 अगस्त 1901 ई० तिथि लिखी है और ख़ुत्बा इल्हामिया से संबंधित हाशिया जो शीर्षक

ما الفرق بين آدم والمسيح الموعود

के अन्तर्गत तथा

الحالة الموجودة تدعو المسيح الموعود و المهدى المعهود

जो पुस्तक के अन्त में उर्दू प्रथम संस्करण के पृष्ठ अ से श तक और इस संस्करण के पृष्ठ 307 से 334 तक दर्ज है। इसके अन्त में 17, अक्तूबर 1902 ई० तिथि लिखी है। इन तिथियों में स्पष्ट है कि मूल ख़ुत्बे के अतिरिक्त जो आप ने 11, अप्रैल 1900 ई० को दिया था, शेष चार अध्याय और दूसरे विज्ञापन तथा हाशिये आपने मई 1900 ई० से लेकर अक्तूबर 1902 ई० तक के मध्य किसी समय लिखे और उसका वर्तमान प्रकाशन पूर्ण पुस्तक के रूप में उर्दू भाषा में अक्तूबर 1902 ई० के पश्चात् हुआ।

'ख़ुत्बा इल्हामिया' ख़ुदा का एक निशान है

ईदुल अज़्हा 11 अप्रैल 1900 ई. के आयोजन में सम्मिलित होने के लिए 10 अप्रैल से ही मेहमानों का क़ादियान आना आरंभ हो गया था और बटाला, अमृतसर, सियालकोट, जम्मू, पेशावर, गुजरात, जेहलम, रावलपिण्डी, कपूरथला, पटियाला, सिन्नौर इत्यादि बहुत से स्थानों से मेहमान पहुँच चुके थे। अखबार अलहकम 17, अप्रैल 1900 ई० में वृतान्त जलसा ईदुज़्ज़ुहा के संबंध में लिखा जिसका सारांश यह है :-

> "अरफ़ात के दिन प्रातः काल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक पत्र द्वारा हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब को सूचना दी कि "मैं आज का दिन और रात का कुछ भाग अपने और अपने दोस्तों के लिए दुआ में व्यतीत

करना चाहता हूँ। इसलिए सारे दोस्त जो यहाँ मौजूद हैं अपना नाम अपने निवास सहित लिखकर मेरे पास भेज दें, ताकि दुआ करते समय मुझे याद रहे" आदेश का पालन करते हुए दोस्तों की क्रमानुसार एक सूची तैयार करके हुज़ूर की सेवा में भेज दी गई। मग़रिब और इशा में हुज़ूर तशरीफ़ लाए जो जमा की गईं। उससे निवृत होने के बाद फ़रमाया-

"चूंकि मैं ख़ुदा तआला से वादा कर चुका हूँ कि आज का दिन और रात का भाग दुआ में व्यतीत करूँ। इसलिए मैं जाता हूँ ताकि वादा ख़िलाफ़ी न हो।"

यह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले गए और दुआ में व्यस्त हो गए। दूसरी सुबह ईद के दिन मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अन्दर जाकर हज़रत अक़्दस से भाषण देने के लिए विशेष रूप से निवेदन किया। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया-

"ख़ुदा ने ही आदेश दिया है" और फिर फ़रमाया कि-

"रात इल्हाम हुआ है कि मज्मे (जमावड़े) में कुछ अरबी वाक्य पढ़ो, मैं कोई और जमावड़ा समझता था शायद यही सभा हो।"

.....जब हज़रत अक़्दस ख़ुत्बा पढ़ने के लिए तैयार हुए तो हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को आदेश दिया कि वे समीप होकर इस ख़ुत्बे को लिखें। जब ये मौलवी साहिबान तैयार हो गए तो हुज़ूर ने يَا عِبَادَ اللّٰهِ (या इबादल्लाहे) के शब्द से अरबी ख़ुत्बा आरम्भ किया... ख़ुत्बे के मध्य हज़रत अक़्दस ने यह भी फ़रमाया -

"अब लिख लो फिर ये शब्द याद न रहेंगे"

जब हज़रत अक़्दस ख़ुत्बा पढ़ कर बैठ गए तो अधिकांश दोस्तों के निवेदन

पर मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब उसका अनुवाद सुनाने के लिए खड़े हुए। इस से पूर्व कि मौलाना अनुवाद सुनाते हज़रत अक़्दस ने फ़रमाया कि-

"इस ख़ुत्बे को कल अरफ़ा के दिन और ईद की रात में जो मैंने दुआएं की हैं उनकी स्वीकारिता के लिए निशान रखा गया था कि यदि मैं यह ख़ुत्बा अरबी भाषा में ज़बानी पढ़ गया तो वे समस्त दुआएं स्वीकार समझी जाएँगी। अल्हम्दुलिल्लाह कि वे सारी दुआएं भी ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार स्वीकार हो गईं।"

अभी मौलाना अब्दुल करीम साहिब अनुवाद सुना ही रहे थे कि हुज़ूर भावना के आवेग से कृतज्ञता पूर्वक सज्दे में जा पड़े। हुज़ूर के साथ समस्त उपस्थित लोगों ने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। सज्दे से सिर उठाकर हज़रत अक़्दस ने फ़रमाया-

"अभी मैंने लाल शब्दों में लिखा देखा है कि '**मुबारक**' यह मानो स्वीकारिता का निशान है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-1 पृष्ठ- 324-325)

तारीख़-ए-अहमदियत में हज़रत मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी और हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब क़ादियानी की रिवायात संक्षिप्त वर्णन हुई हैं।

हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथलवी फ़रमाते हैं कि:

"हुज़ूर ने खड़े हो कर 'या इबादल्लाह' के शब्दों से ज़बानी (मौखिक) अरबी ख़ुत्बा पढ़ना आरम्भ किया। आप ने अभी कुछ वाक्य ही कहे थे कि उपस्थितगण पर जिनकी संख्या सम्भवत: दो सौ थी, आत्म-विस्मृति (वजद) की एक अवस्था छा गई। मुग्ध होने की ऐसी अवस्था थी कि वर्णन से बाहर है, ख़ुत्बे के प्रभाव का वह चमत्कारी रंग पैदा हो गया कि यद्यपि लोगों के समूह में अरबी भाषा जानने वाले बहुत कम लोग थे परन्तु समस्त श्रोतागण उत्कंठित (हम:तनगोश) थे।"

(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द - 2 पृष्ठ - 84 विवरणात्मक रूप के लिए देखिए रिवायात सहाबा जिल्द - 13, पृष्ठ- 385-386)

हज़रत भाई अब्दुर्रहमान क़ादियानी फ़रमाते हैं-

> ".....हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हालत यह थी कि आप की शक्ल-व-सूरत, भाषा और वर्णन शैली से मालूम होता था कि यह आकाशीय पुरुष एक अन्य संसार का व्यक्ति है जिसकी ज़बान से आसमान का ख़ुदा बोल रहा है। ख़ुत्बे के समय आपकी हालत और आवाज़ में एक परिवर्तन महसूस होता था। प्रत्येक वाक्य के अन्त में आपकी आवाज़ बहुत धीमी और बारीक हो जाती थी। उस समय आपकी आँखें बन्द थीं, चेहरा लाल और अत्यन्त नूरानी (प्रकाशमान)। ख़ुत्बे के मध्य हुज़ूर ने ख़ुत्बा लिखने वालों को सम्बोधित करके कहा कि यदि कोई शब्द समझ न आए तो उसी समय पूछ लें, संभव है कि बाद में मैं स्वयं भी न बता सकूँ। फिर आप इतनी तेज़ी से वाक्यों को वर्णन करते थे कि ज़बान के साथ क़लम का चलना कठिन हो जाता था। इन दोनों कारणों से मौलवी अब्दुल करीम साहिब और मौलवी नूरुद्दीन साहिब को, जो ख़ुत्बा लिखने के लिए नियुक्त थे, कई बार शब्द पूछने पड़ते थे।"

(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द-2 पृष्ठ-84, विवरणात्मक रूप के लिए देखिए रिवायात हज़रत भाई अब्दुर्रहमान साहिब क़ादियानी, सीरतुल महदी भाग द्वितीय, परिशिष्ट, पृष्ठ-365-371)

इसी ख़ुत्बे से संबंधित हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक "ता'तीरुल अनआम" वर्तमान ख़िलाफ़त लाइब्रेरी रब्वाह के काग़ज़ पर अपने मुबारक कलम से दो स्वप्न लिखे हैं। 19 अप्रैल 1900 ई० की तिथि लिखकर हुज़ूर ने मियां अब्दुल्लाह साहिब सन्नौरी का निम्नलिखित स्वप्न लिखा है कि-

> "मियां अब्दुल्लाह सन्नौरी कहते हैं कि स्वर्गीय मुन्शी ग़ुलाम क़ादिर सन्नौर वाले यहाँ आए हैं। उनसे उन्होंने पूछा है कि इस जल्से के बारे में उस तरफ़ की ख़बर दो कि क्या

कहते हैं। तो उसने उत्तर दिया कि ऊपर बड़ी धूम मच रही है।"

यह स्वप्न हू-बहू सय्यद अमीर अली शाह साहिब के स्वप्न के समान है, क्योंकि उन्होंने देखा था कि जिस समय अरबी ख़ुत्बा ईद के दिन पढ़ा जाता था उस समय जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तथा हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम जल्से में मौजूद हैं और इस ख़ुत्बे को सुन रहे हैं। यह स्वप्न ठीक ख़ुत्बा पढ़ने के समय ही बतौर कश्फ़ उस जगह बैठे हुए उन्हें मालूम हो गया था।"

(तज़्किरह हाशिया, पृष्ठ-290 चतुर्थ संस्करण)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी ख़ुत्बा इल्हामिया के विषय में अपनी पुस्तक "हक़ीक़तुल वह्यी" में फ़रमाते हैं-

"11 अप्रैल 1900 ई॰ को ईदुल अज़्हा के दिन प्रातः काल मुझे इल्हाम हुआ कि "आज तुम अरबी में तक़रीर (भाषण) करो तुम्हें क़ुव्वत (शक्ति) दी गई।" और साथ यह इल्हाम हुआ -

كَلَامٌ اُفْصِحَتْ مِنْ لَّدُنْ رَبٍّ كَرِيْمٍ

अर्थात् इस कलाम में ख़ुदा की ओर से सरसता प्रदान की गई है।

.....तब मैं ईद की नमाज़ के बाद ईद का ख़ुत्बा अरबी भाषा में पढ़ने के लिए खड़ा हो गया और ख़ुदा तआला जानता है कि ग़ैब (परोक्ष) से मुझे एक शक्ति दी गई और वह सरस भाषण अरबी में ज़बानी मेरे मुंह से निकल रहा था जो मेरी शक्ति से सर्वथा बाहर था और मैं नहीं सोच सकता कि ऐसा भाषण जिसकी मोटाई कई भागों तक थी, ऐसी सरसता एवं सुबोधता के साथ बिना इसके कि पहले किसी काग़ज़ पर लिखा जाए कोई व्यक्ति संसार में ख़ुदा के विशेष इल्हाम के बिना वर्णन कर सके। जिस समय यह अरबी भाषण जिसका नाम 'ख़ुत्बा इल्हामिया' रखा गया, लोगों में सुनाया गया उस समय उपस्थितगण की

संख्या दो सौ के लगभग होगी। सुब्हान-अल्लाह उस समय एक ग़ैबी (अदृश्य) झरना खुल रहा था, मुझे मालूम नहीं कि मैं बोल रहा था या मेरी ज़बान से कोई फ़रिश्ता बोल रहा था। क्योंकि मैं जानता था कि इस कलाम में मेरी पहुँच न थी। अपने आप (स्वत:) बने बनाए वाक्य मेरे मुंह से निकलते जाते थे और प्रत्येक वाक्य मेरे लिए एक निशान था। .....यह एक ज्ञान संबंधी चमत्कार है जो ख़ुदा ने दिखाया और कोई इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता।"

(हक़ीक़तुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ-375,376
तथा देखो नुज़ूलुल मसीह पृष्ठ-210, और मुखपृष्ठ ख़ुत्बा इल्हामिया)

अत: यह ख़ुत्बा इल्हामिया ख़ुदा तआला का एक महान निशान है जो कि 11, अप्रैल 1900 ई० को प्रकट हुआ।

الاعلان

ایّھا الاخوان من العرب وفارس والشام وغیرھا من بلاد الاسلام اعلموا رحمکم اللہ انی کتبت ھٰذا الکتاب لکم ملھمًا من ربّی واُمرت ان ادعوکم الی صراط ھُدیتُ الیہ و اُؤدبکم بادبی وھٰذا بعدما انقطع الامل مِن علماء ھٰذہ الدیار وتحقق انھم لا یبالون عقبی الدار وانقطعت حرکتھم الی الصدق من تفالٍ لامن فالٍ وما نفعھم اثر دواء ولاسعی معالج ومابقی لِاَجَارِد المعارف فی ارضھم مرتع ولا فی اھلھا مطمع فعند ذالک القی فی قلبی من

घोषणा

हे अरब, फ़ारस और सीरिया तथा अन्य इस्लामिक देशों से संबंध रखने वाले भाइयो! अल्लाह तआला तुम पर दया करे। जान लो कि मैंने यह पुस्तक तुम्हारे लिए अपने रब से इल्हाम पाकर लिखी है और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हें उस मार्ग की ओर बुलाऊं जिसकी ओर मेरा मार्गदर्शन किया गया है और अपने शिष्टाचार से तुम्हें सुसज्जित करूं। और यह आदेश उसके बाद मिला जब इस देश के उलमा से आशा समाप्त हो गई और सिद्ध हो गया कि वे परलोक के अंजाम की परवाह नहीं करते और सच्चाई की ओर उनका कदम बनावटी लक्वे से रुक गया है न कि वास्तविक लक्वे से। और न किसी दवा के प्रभाव ने और न किसी चिकित्सक के प्रयत्न ने उन्हें लाभ दिया और न ही अध्यात्मज्ञान के अच्छे घोड़ों के लिए उनकी भूमि में कोई चरागाह शेष रही। और न ही उस धरती के निवासियों से कोई आशा शेष रही। अत: उस समय ख़ुदा तआला की ओर से मेरे दिल में यह डाला गया कि मैं सहायता के लिए तुम्हारी ओर आऊं ताकि तुम

الحضرة ان اٰوی الیکم لطلب النصرة لتکونوا انصاری کاھل المدینة ومن نصرنی وصدقنی فقد ارضی ربہ وخیرَ البریة وان شر الدواب الصّم البکم الذین لا یصغون الی الحق والحکمة ولا یسمعون برھانًا ولوکان من الحجج البالغة واذا قیل لھم اٰمنوا بما اتاکم من ربّکم من الحقّ والبیّنة بعد ایام کثرت الفِرق واختلافھم فیھا وتلاطم بحر الضلالة قالوا لانعرف ماالحق وانا وجدنا اٰبَاء نا علی عقیدة واناعلیھا الی یوم المنیّة وماقلت لھم الاما قال القراٰن فما کان جوابھم الاالسب والھذیان وان اللہ قد علّمنی ان عیسی ابن مریم قد مات ولحق الاموات واماالذی کان نازلا من السماء فھو ھٰذا القائم بینکم کما اوحی الیّ من حضرة

मदीना वालों की तरह मेरे अन्सार (सहायक) बन जाओ और जिसने मेरी सहायता की और मेरा सत्यापन किया उसने अपने रब और खैरुल बरिय्या (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को राज़ी कर लिया। और निकृष्ट जानवर वह बहरे-गूंगे लोग हैं जो सच्चाई और हिकमत की ओर ध्यान नहीं देते और वह कोई दलील नहीं सुनते चाहे वह प्रभावी दलीलों में से हो। और जब उनसे कहा जाए कि फ़िर्क़ों की अधिकता और उनके आंतरिक मतभेद और गुमराही के समुद्र के उथल पुथल के ज़माने के बाद सच्चाई और प्रकाशमान दलील के साथ तुम्हारे रब की ओर से जो तुम्हारे पास आया है उस पर ईमान लाओ तो वे कहते हैं कि हम नहीं जानते कि सच्चाई क्या है। और हमने अपने बाप-दादों को एक आस्था पर पाया और हम मौत के दिन तक उसी आस्था पर स्थापित रहेंगे। और मैंने उनसे वही कहा जो क़ुरआन कहता है तो उनका उत्तर गाली-गलौज और अभद्र बातों के अतिरिक्त कुछ न था। और अल्लाह ने मुझे बताया है कि ईसा पुत्र मरियम मर चुके और मरे हुए लोगों से जा मिले। रहा वह जिसने आसमान से उतरना था तो वह यह तुम्हारे बीच खड़ा है जैसा कि ख़ुदा तआला की ओर से मेरी ओर वह्यी

الكبرياء و كانت حقيقة النزول ★ ظهور المسيح الموعود عند انقطاع الاسباب وضعف الدولة الاسلامية وغلبة الاحزاب و كان

की गई। और नुज़ूल ★ (अर्थात उतरने) की असल वास्तविकता संसाधनों के कट जाने, इस्लामी देशों के कमज़ोर हो जाने तथा विरोधी समूहों के प्रभुत्व के समय

★ الحاشية: اعلموا انّ لفظ النزول قد اختير للمسيح الموعود للوجهين إحداهما لاظهار انقطاع الاسباب الارضية كالحكومة والرياسة والوسائل الحربية فى مُلك يُبعث فيه من الحضرة الاحديّة كانّه كانت اشارة الىٰ ان المسيح الموعود لا يأتى الا فى مُلك لا يبقٰى فيه للاسلام قوةٌ ولا للمسلمين طاقة ومع ذالك يقومون للانكار و يريدون اَن يطفئوا نور الله فضلا من ان يكونوا من الانصار فيؤيّد المسيح من لدن ربّ السماء ولا يكون عليه منّة احد من ملوك الارض واهل الدول والامراء ولا يستعمل السيف والسنان فكانّه نزل من السماء ونصره الله من لدنه و أعان ثانيهما لاظهار شهرة المسيح الموعود فى اسرع الاوقات والزمان فى جميع البلدان فان الشئ الذى ينزل من السماء يراه كل احدٍ من قريبٍ وبعيدٍ ومن الاطراف والانحاء ولا يبقٰى عليه سِتْرٌ فى اَعْين ذوى الانصاف ويشاهد كبرقٍ يبرق من طرفٍ الى طرفٍ حتّى يحيط كدائرةٍ على الاطراف منه

★ **हाशिया -** जान लो कि मसीह मौऊद के लिए नुज़ूल (अर्थात उतरने) का शब्द दो कारणों से अपनाया गया है- **पहला** कारण ज़मीनी माध्यमों अर्थात साम्राज्य, रियासत और जंगी संसाधनों के इस देश में समाप्त हो जाने के इज़हार के लिए जिसमें ख़ुदा तआला की ओर से उस (अर्थात मसीह मौऊद) ने अवतरित होना था। मानो कि संकेत था कि मसीह मौऊद ऐसे देश में ही आएगा जिसमें इस्लाम की शक्ति और मुसलमानों की ताकत शेष नहीं रहेगी उसके बावजूद भी वह इन्कार करने के लिए तैयार हो जाएंगे और अल्लाह के नूर को बुझाने के लिए तत्पर हो जाएंगे बजाय इसके कि वे उसके सहायक बनें। अत: आसमानों के रब की ओर से मसीह का समर्थन किया जाएगा और उस पर धरती के शासकों और हाकिमों और अमीरों में से किसी का उपकार न होगा और न ही वह तलवार और भालों का प्रयोग करेगा। मानो कि वह आसमान से उतरा है और अल्लाह ने अपनी ओर से उसकी सहायता की है। **दूसरा** कारण मसीह मौऊद की समस्त देशों में प्रसिद्धि का अति शीघ्र समय और ज़माने में प्रकट हो जाना है, क्योंकि जो वस्तु आसमान से उतरती है उसे प्रत्येक दूर एवं समीप और विभिन्न दिशाओं में रहने वाले देख लेते हैं। और न्यायप्रिय जनों की दृष्टि में उस पर कोई पर्दा नहीं रहता और उस बिजली की तरह उसको देख लिया जाता है जो एक ओर से दूसरी ओर कूंदती है और समस्त दिशाओं पर एक चक्र की भांति छा जाती है। इसी से

هٰذا اشارة الی ان الامر کله ینزل من السماء من غیر ضرب الاعناق وقتل الاعداء ویُریٰ کالشمس فی الضیاء ثم نقل اهل الظاهر هٰذه الاستعارة الی الحقیقة فهٰذه اوّل مصیبة نزلت علیٰ هٰذه الملة وما اراد الله من انزال المسیح الّا لیُری مقابلة الملتین بالتصریح فان نبینا المصطفٰی کان مثیل موسٰی و کانت سلسلة خلافة الاسلام کمثل سلسلة خلافة الکلیم من الله العلام فوجب من ضرورة هٰذه المماثلة والمقابلة ان یظهر فی اٰخر هٰذه السلسلة مسیح کمسیح السلسلة الموسویة ویهود کالیهود الذین کفّروا عیسٰی و کذبوه و ارادوا قتله وجروه الیٰ ارباب الحکومة فمن العجب ان علماء الاسلام اعترفوا بان الیهود الموعودون فی اٰخر الزمان لیسوا

मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव है। और यह इस ओर संकेत है कि गर्दनें उड़ाए बिना और शत्रुओं का वध किए बिना यह समस्त मामला आसमान से उतरेगा और अपने प्रकाश में सूरज की तरह दिखाई देगा। फिर भौतिक वादियों ने इस रूपक को वास्तविकता पर आधारित समझ लिया। अत: यह सबसे पहली मुसीबत थी जो इस उम्मत पर आई। और मसीह को अवतरित करने से अल्लाह तआला का अभिप्राय केवल यह था कि दोनों उम्मतों के मध्य मुकाबला स्पष्ट रूप से दिखा दे क्योंकि हमारे नबी मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के समरूप हैं और सर्वज्ञानी ख़ुदा की ओर से इस्लाम की ख़िलाफ़त का सिलसिला हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त के सिलसिले के समान है। अत: इस समानता और मुकाबले की अनिवार्य मांग यह थी की मूसवी सिलसिले के मसीह के समान इस सिलसिले के अंत में भी मसीह प्रकट हो और इस सिलसिले में भी उन यहूदियों जैसे यहूदी हों जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम को काफिर ठहराया, उनको झुठलाया और उनके वध का निर्णय किया और हुकूमत के अधिकारियों की ओर उनको खींच कर ले गए। अत: आश्चर्य की बात है कि इस्लाम के उलमा ने यह तो स्वीकार किया कि अन्तिम युग में होने वाले मौऊद

یھودًا فی الحقیقۃ بل ھم مثلھم من المسلمین فی الاعمال وَالعادۃ ثم یقولون مع ذالک ان المسیح ینزل من السماء وھو ابن مریم رسول اللہ فی الحقیقۃ لا مثیلہ من الاصفیاء فکانھم حسبوا ھٰذہ الامۃ اردء الامم واخبثھم فانھم زعموا ان المسلمین قوم لیس فیھم احد یقال لہ انہ مثیل بعض الاخیار السابقین وامّا مثیل الاشرار فکثیر فیھم ففکروا فیہ یامعشر العاقلین ثم ان مسئلۃ نزول عیسٰی نبی اللہِ کانت من اختراعات النصرانیین واما القراٰن فتوفاہ والحقہ بالمیتین وما اضطرت النصارٰی الٰی نحت ھٰذہ العقیدۃ الواھیۃ الا فی ایام الیأس وقطع الامل من النصرۃ الموعودۃ فان الیھود کانوا یسخرون منھم ویضحکون علیھم ویؤذونھم بانواع الکلمات عندما رَأَوْا اخذلانھم

(अर्थात कथित) यहूदी वास्तव में यहूदी नहीं बल्कि वे मुसलमानों में से कर्मों और शिष्टाचार में उन (यहूदियों) के समरूप हैं, इसके बावजूद वे कहते हैं कि मसीह आसमान से अवतरित होगा और वास्तव में वह अल्लाह का रसूल इब्ने मरियम होगा न कि नेकों में से उसका कोई समरूप। मानो कि उन्होंने इस उम्मत को समस्त उम्मतों में से रद्दी और निकृष्टतम समझा है क्योंकि वे इस आस्था को अपनाए बैठे हैं कि मुसलमान ऐसी क़ौम हैं जिनमें कोई एक भी ऐसा नहीं कि उसे पिछले नेक लोगों का समरूप कहा जा सके, हां दुष्टों के समरूप उनमें बहुत हैं। अत: हे बुद्धिमानों के समूह! इस पर विचार करो। फिर अल्लाह के नबी ईसा अलैहिस्सलाम के अवतरण का विषय नसरानियों (ईसाईयों) का मनगढ़त है और जहां तक क़ुरआन का संबंध है तो उसने उसे मृत्यु प्राप्त घोषित किया है और मुर्दा लोगों से मिलाया है। मसीह को ख़ुदा बनाने की इस दूषित आस्था को तराशने पर ईसाई मायूसी और कथित सहायता से निराशा के समय ही मजबूर हुए। क्योंकि यहूदी जब उन्हें रुसवा होते हुए और कठिनाइयों में गिरफ्तार देखते थे तो उनका मज़ाक उड़ाते और उन पर हंसते और भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्दों से उन्हें कष्ट देते थे। वे कहते थे कि तुम्हारा वह मसीह कहां गया जो यह समझता था कि वह

وتقلبهم فی الأفات فکانوا یقولون این مسیحکم الذی کان یزعم
انه یرث سریر داؤد وینال السلطنة وینجی الیهود فتألم النصارٰی
من سماع هٰذه المطاعن والام الصبرُ باللّاعن فنحتوا الجوابَین
عند هٰذین الطعنین والخطابین فقالوا ان یسوع ابن مریم وان کان
مانال السلطنة فی هٰذه الأوان ولٰکنه ینزل بصورة الملوك الجبارین
القهارین فی اٰخر الزمان فیقطع ایدی الیهود وارجلهم وانوفهم
ویهلکهم باشد العذاب والهوان ویجلس احبابه بعد هٰذا العقاب
علی سرر مرفوعة موعودة فی الکتاب واما قول المسیح انه من
اٰمن به فینجیه من الشدائد التی نزلت علٰی بنی اسرائیل فمعناه انه
ینجیه بدمه من الذنوب لا من جور الحکومة الرومیة کما ظنّ وقیل

दाऊद के तख़्त का वारिस होगा और सल्तनत प्राप्त करेगा और यहूदियों को मुक्ति दिलाएगा। इन व्यंग्यों को सुनकर ईसाई बहुत कष्ट अनुभव करते थे और लान-तान पर सब्र कब तक। अत: उन्होंने इन दो व्यंग्यों और दो उपाधियों पर दो उत्तर गढ़े। उन्होंने कहा कि ईसा इब्ने मरियम ने यद्यपि इस दौर में सल्तनत नहीं पाई लेकिन अंतिम युग में वह अत्याचारी तथा प्रकोपी शासकों के रूप में अवतरित होगा और वह यहूदियों के हाथ-पांव और नाक काटेगा और उन्हें घोर दण्ड और अपमान के साथ नष्ट करेगा और उस दंड के बाद अपने प्यारों को उन बुलंद तख़्तों पर बैठाएगा जिनका किताब में वादा है। और जहां तक मसीह के इस कथन का संबंध है कि अपने पर ईमान लाने वालों को उन कष्टों से मुक्ति दिलाएगा जो बनी इस्राईल पर आए तो उससे अभिप्राय यह है कि वह अपने खून के कफ़्फ़ारा द्वारा गुनाहों से मुक्ति दिलाएगा न कि रोमी शासन के अत्याचार से, जैसा कि विचार किया जाता है और कहा जाता है। अत: सारांश यह कि जब मुसीबतों में लंबा समय ग्रस्त रहने ने ईसाइयों को कष्ट दिया और यहूदियों ने उनके मामलों में बुरा-भला कहा और उन्हें नाकाम समझा तो इस अपमान ने उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाया। तो उन्होंने यह दो कथित आस्थाएं गढ़ लीं ताकि शत्रु चुप हो जाएं। और

فحاصل الكلام ان النصارٰى لمّا اذاهم طول مكثهم فى المصائب
واطال اليهود السنهم فى امرهم وحسبوهم كالخاسر الخايب شق
عليهم هٰذا الاستهزاء فنحتوا العقيدتين المذكورتين ليسكت
الاعداء وانّ من عادات الانسان انه يتشبّث بامانى عند هبوب رياح
الحرمان واذا رأى انه مابقى له مقام رجاء فيسرّ نفسه باَهْوايٍ
فيطلب ما ندّ عن الاذهان وشذّ عن الاٰذان فقد يطلب الكيمياء
عند نفاد الاموال وقد يتوجه الى تسخير النجوم والاعمال وكذالك
النصارٰى اذا وقع عليهم قول الاعداء وما كان مَفَرٌّ من هٰذا البلاء
فنحتوا مانحتوا واتّكئوا على الامانى كماهو سيرة الاسير والعانى
فاشاعوا الاصولين المذكورين كما تعلم وترٰى ووفّوا حق العمٰى

यह मानवीय स्वभाव में है कि वह मेहरूमी (वान्चित्य) की हवाओं के चलने के समय इच्छाओं का सहारा लेता है और जब वह देखता है कि उम्मीद की कोई किरण शेष नहीं रही तो वह अपनी अंतरात्मा को इच्छाओं से प्रसन्न करता है और वह उस चीज़ की मांग करता है जो न कभी दिमाग़ में आई और न कानों ने सुनी। अत: कभी वह धन-संपत्ति के समाप्त होने पर कीमियां की मांग करता है और कभी वह सितारों को वशीभूत करने और जादू-टोने की ओर आकर्षित होता है। और इसी तरह नसारा (अर्थात ईसाइयों) का हाल है कि जब उनको शत्रुओं के कथन से कष्ट पहुंचा और उस बला से बचने का कोई मार्ग शेष न रहा तो जो उन्होंने गढ़ा सो गढ़ा और उन्होंने इच्छाओं का सहारा लिया जैसा कि क़ैदी की आदत है। अत: उन्होंने यह दो उपरोक्त सिद्धांत फैला दिए जैसा कि तू देखता और जानता है और अंधे होने का पूरा हक अदा किया। और जब मसीह के अवतरण की आस्था उनकी फितरत का हिस्सा बन गई और उनकी सोच और स्वभाव के ऊपर हावी हो गई तो निश्चित रूप से उनका पूरा ध्यान ईसा अलैहिस्सलाम के अवतरण पर केंद्रित हो गया ताकि वह उनके शत्रुओं को नष्ट करे और उन्हें सम्मान और बुलंदी के तख़्तों पर विराजमान करे। अत: ईसाइयों के विभिन्न

ولما صار اعتقاد نزول المسیح جزو طبیعتھم واحاط علی مجاری الفھم وعادتھم کانت عنایتھم مصروفۃ لامحالۃ الی نزول عیسٰی لیھلک اعداءھم ویجلسھم علی سرر العزۃ والعُلٰی فھٰذا ھو سبب سریان ھٰذہ العقیدۃ فی الفِرق المسیحیۃ ومثلھم فی الاسلام یوجد فی الشیعۃ فانّہ لمّا طال علیھم امد الحرمان وما قام فیھم ملک الی قرون من الزمان نحتوا من عند انفسھم ان مھدیھم مستترفی مغارۃ ویخرج فی اٰخر الزمان و یحیی صحابۃ رسول اللّٰہ لیقتلھم بِاِذنِہٖ وان حسینًا بن علی وان کان مانجّاھم من ظلم یزید ولٰکن ینجّیھم بدمہ فی الیوم الاٰخر من عذاب شدید و کذالک کل من خسر وخاب نَحَتَ ھٰذا الجواب وسمعت ان فرقۃ من الوھابیین الھندیین ینتظرون

संप्रदायों में इस आस्था के फैल जाने का यही कारण है। और इस्लाम में उनका उदाहरण शीया फिर्के में पाया जाता है। अत: जब उन पर मेहरूमी का ज़माना लंबा हो गया और सदियों तक उनमें कोई बादशाह न हुआ तो उन्होंने अपनी ओर से यह बात बना ली कि उनका महदी गुफा में छुपा हुआ है और वह अंतिम युग में निकलेगा और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के सहाबा को जीवित करेगा ताकि उन्हें कष्ट देकर उनका वध करे। और हुसैन पुत्र अली यद्यपि उन्हें यज़ीद के अत्याचार से नहीं बचा सका लेकिन वह परलोक में अपने खून के द्वारा उन्हें कष्टदायक दंड से बचाएगा। तो इसी प्रकार प्रत्येक नाकाम और नामुराद रहने वाले ने यह उत्तर गढ़ लिया है। और मैंने सुना है कि इन फिर्कों (संप्रदायों) के समान हिंदुस्तानी वहाबियों में से एक फ़िर्का अपने शेख सैयद अहमद बरेलवी की प्रतीक्षा में है और उन्होंने जंगलों में अपनी आयु इसी प्रतीक्षा में गुज़ार दी। अत: यह सब के सब दया योग्य हैं कि उनके बड़ों में से अभी तक कोई वापस नहीं लौटा बल्कि प्रतीक्षा करने वाले उनके पास पहुंच गए और कितनी ही निराशाएँ दिल में लिए वह कब्रों में चले गए। सारांश यह कि उनकी मसीह के लौटने तथा जीवित रहने की आस्था वास्तव में ईसाइयों का ताना-बाना और उनकी

كمثل هٰذه الفرق شيخهم سيد احمد ن البريلوى وانفدوا اعمارهم
فى فلوات منتظرين فهٰؤلاء كلهم محل رحم بمالم يرجع احد من
كبراء هم الى هٰذا الحين. بل رجع المنتظرون اليهم و كم حسرات
فى قلوب المقبورين. فملخّص القول ان عقيدة رجوع المسيح وحياته
كانت من نسج النصارٰى ومفترياتهم ليطمئنوا بالامانى ويذبّوا
اليهود وهمزاتهم. واما المسلمون فدخلوها من غير ضرورة و
اُخذ وا من غير شبكة. وا كلوا السم من غير حلاوة واذا قبلوا
ركنًا من ركنى الملة النصرانية فما معنى الانكار من الركن الثانى
اعنى الكفّارة وانا فصّلنا هٰذه الامور كلها فى الكتاب و كفاك هٰذا
ان كنت من الطُّلّاب ان الذين ظنوا من المسلمين ان عيسٰى نازل

गढ़ी हुई बातें हैं ताकि वे इच्छाओं के द्वारा संतुष्टि प्राप्त करें और यहूदियों तथा उनके व्यंग्यों का खंडन करें। रहे मुसलमान तो वे अकारण इसमें सम्मिलित हो गए और बिना जाल के फंस गए और बिना मीठे के ज़हर खाया (अर्थात बिना आनन्द के गुनाह किया) और जब उन्होंने ईसाई धर्म के 2 में से एक भाग को स्वीकार कर लिया तो दूसरे भाग अर्थात कफ़्फ़ारा के इन्कार के क्या अर्थ? और हमने यह समस्त बातें विस्तृत तौर पर इस पुस्तक में वर्णन कर दी हैं और यदि तू सत्य का अभिलाषी है तो तेरे लिए यह पर्याप्त हैं। मुसलमानों में से जो यह समझते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से अवतरित होने वाले हैं उन्होंने सत्य का अनुसरण नहीं किया बल्कि वे गुमराही की घाटियों में भटक रहे हैं। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं वे तो केवल अनुमान लगा रहे हैं। क्या उन्हें कोई दलील दी गई है या उन्हें क़ुरआन के द्वारा सिखाया गया है जिससे वे चिपके हुए हैं, कदापि नहीं। बल्कि उन्होंने उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण किया जो उनसे पहले गुमराह हुए और अपने रब के फ़रमान को त्याग दिया और वे कोई परवाह नहीं करते। और क़ुरआन मजीद ने वर्णन किया है कि ईसा मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे? क्या वे मसीह के आगमन के रहस्य

من السماء ماتبعوا الحق بل هم فی وادی الضلال یتیهون مالهم
بذالك من علم ان هم الا یخرصون اَمۡ اُوۡتوا من البرهان اوعُلّموا
من القراٰن فهم به مستمسکون کلّا بل اتبعوا اهواء الذین ضلّوا
من قبل وترکوا ماقال ربّهم ولا یبالون وقد ذکر الفرقان ان عیسٰی
قد توفّی فبأی حدیث بعد ذالك یؤمنون الا یفکرون فی سرّ مجیٔ
المسیح ام علی القلوب اقفالها ام هم قوم لا یبصرون ان اللّٰہ کان قد
مَنّ علی بنی اسرائیل بموسٰی و النبیین الذین جاءوا من بعده منهم
فعصوا انبیاءهم ففریقًا کذبوا وفریقًا یقتلون فاراد اللّٰہ ان ینزع
منهم نعمته ویؤتیها قومًا اٰخرین ثم ینظر کیف یعملون فبعث مثیل
موسٰی من قوم بنی اسماعیل وجعل علماء امته کانبیاء سلسلة

पर विचार नहीं करते या उनके दिलों पर ऐसे ताले लगे हैं जो उनके दिलों ही की पैदावार हैं या वे ऐसी क़ौम हैं जो विवेक नहीं रखते। निस्सन्देह अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनके बाद आने वाले नबियों को जो उनमें से थे, अवतरित करके बनी इस्राईल पर उपकार किया। अत: उन्होंने अपने नबियों की अवज्ञा की, एक समूह को झुठलाया और एक समूह का वध करने का प्रयत्न किया। अत: अल्लाह ने इरादा किया कि उनसे अपने उपकार छीन ले और दूसरी क़ौम को दे दे। फिर वह देखे कि वे कैसे कर्म करते हैं। अत: उसने मूसा के समरूप को बनी इस्माईल की क़ौम से अवतरित किया और उसकी उम्मत के उलेमा को मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम के सिलसिले के नबियों जैसा बनाया और उसके द्वारा यहूदियों का अभिमान तोड़ दिया क्योंकि वे अहंकार किया करते थे। और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह सब कुछ दिया गया जो मूसा को दिया गया बल्कि उससे अधिक। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके समान किताब और ख़लीफे दिए गए और इस प्रकार उसने अत्याचारियों तथा अहंकारियों के दिलों को जलाया ताकि वे लौट आएं। अत: जैसे उसने समस्त जोड़े पैदा किए हैं उसी प्रकार उसने इस्माईली सिलसिले को इस्राईली सिलसिले

الکلیم و کسر غرور الیھود بھا بما کانوا یستکبرون واٰتٰی نبینا کلّما اوتی موسٰی وزیادہ واٰتاہ من الکتاب والخلفاء کمثلہ واحرق بہ قلوب الذین ظلموا واستکبروا لعلھم یرجعون. فکما انہ خلق الازواج کلّھا کذالک جعل السلسلۃ الاسماعیلیۃ زوجًا للسلسلۃ الاسرائیلیۃ. وذالک امر نطق بہ القراٰن ولا ینکرہ الا العمون. الا تری قولہ تعالٰی فی سورۃ الجاثیۃ۔

وَ لَقَدۡ اٰتَیۡنَا بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ الۡکِتٰبَ وَ الۡحُکۡمَ وَ النُّبُوَّۃَ وَ رَزَقۡنٰھُمۡ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰھُمۡ عَلَی الۡعٰلَمِیۡنَ ۚ﴿۱۷﴾ وَ اٰتَیۡنٰھُمۡ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَھُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡیًۢا بَیۡنَھُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّکَ یَقۡضِیۡ بَیۡنَھُمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ فِیۡمَا کَانُوۡا فِیۡہِ یَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰکَ عَلٰی

का जोड़ा बनाया और यह वह बात है जिसे पवित्र क़ुरआन ने वर्णन किया है और सिवाए अंधों के उसका कोई इन्कार नहीं करता। क्या तू अल्लाह का फ़रमान सूर: जासिया में नहीं पाता-

وَ لَقَدۡ اٰتَیۡنَا بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ الۡکِتٰبَ وَ الۡحُکۡمَ وَ النُّبُوَّۃَ وَ رَزَقۡنٰھُمۡ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰھُمۡ عَلَی الۡعٰلَمِیۡنَ ۚ﴿۱۷﴾ وَ اٰتَیۡنٰھُمۡ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَھُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡیًۢا بَیۡنَھُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّکَ یَقۡضِیۡ بَیۡنَھُمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ فِیۡمَا کَانُوۡا فِیۡہِ یَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۸﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰکَ عَلٰی شَرِیۡعَۃٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ فَاتَّبِعۡھَا وَ لَا تَتَّبِعۡ اَھۡوَآءَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾

अनुवाद- और हमने बनी इस्राईल को किताब और तत्वज्ञान और नबूवत प्रदान की थी और पवित्र चीज़ों में से जीविका प्रदान की थी और अपने ज़माने के लोगों पर उनको प्रतिष्ठा प्रदान की थी और हमने उनको शरीयत की स्पष्ट शिक्षाएं प्रदान की थीं और बनी इस्राईल ने उसी समय उसके बारे में मतभेद किया जब उनके पास पूर्ण ज्ञान (अर्थात क़ुरआन) आ गया। (यह मतभेद) उनकी आपस की उद्दंडता के कारण था। तेरा रब उनके मध्य क़यामत के दिन उनके मतभेदीय बातों के बारे में निर्णय करेगा और हम ने तुझको शरीयत के एक मार्ग पर नियुक्त किया है अत:

شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾

فانظر كيف ذكر الله تعالىٰ هٰهنا سلسلتين متقابلتين سلسلة موسٰى الىٰ عيسٰى وسلسلة نبينا خير الورىٰ الى المسيح الموعود الذى جاء فى زمنكم هٰذا وانه ماجاء من القريش كما ان عيسٰى ماجاء من بنى اسرائيل. وانه علم لساعة كافة الناس كما كان عيسٰى علما لساعة اليهود هٰذا ما اشير اليه فى الفاتحة وما كان حديث يفترىٰ وقد شهدت السماء بٰاياتها وقالت الارض الوقت هٰذا الوقت فاتق الله ولاتيئس من روح الله والسلام على من التبع الهُدٰى فحاصل الكلام ان القراٰن مملو من ان الله تعالىٰ اختار موسٰى بعد ما

अत: देखो कैसे अल्लाह तआला ने यहां दो परस्पर सिलसिलों का वर्णन किया है। मूसा के सिलसिले को ईसा अलैहिस्सलाम तक और हमारे नबी सर्वश्रेष्ठ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिलसिले को मसीह मौऊद तक जो तुम्हारे इस ज़माने में आया है, और वह क़ुरैश में से नहीं आया जिस प्रकार कि ईसा अलैहिस्सलाम 'बनी इस्राईल' में से नहीं आए। और यह समस्त लोगों के लिए क़यामत की घड़ी का ज्ञान प्रदान करता है जिस प्रकार कि ईसा यहूदियों की घड़ी का ज्ञान थे और यह वही है जिसकी और सूरह फातिहा में संकेत है और यह झूठे तौर पर बनाया हुआ किस्सा नहीं बल्कि आसमान अपने निशानों से गवाही दे चुका और धरती कह रही है कि यही वह समय है। अल्लाह का संयम धारण करो और अल्लाह की कृपा से निराश न हो और सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया। सारांश यह है कि पवित्र क़ुरआन इस वर्णन से भरा हुआ है कि अल्लाह तआला ने पहली क़ौमों को नष्ट करने के बाद मूसा को चुना और उसे तौरात प्रदान की और उसके समर्थन के लिए निरंतर नबी अवतरित किए। फिर

तू उसका अनुसरण कर और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण मत कर जो ज्ञान नहीं रखते। (सूर: अल् जासिया- 17 से 19)

اهلك القرون الاولىٰ واٰتاه التوراة وارسل لتائيده النبيين
تترا ثم قفا علىٰ اٰثارهم بعيسىٰ★ واختار محمدا صلى الله عليه

उनके पदचिन्हों पर ईसा★ अलैहिस्सलाम को भेजा फिर यहूद को तबाह करने के बाद। मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चुना। इसमें कोई संदेह

★ الحاشية: اعترض علّ جاهل من بلدةٍ اسمها جهلٌ يا ذوى الحصاتِ وفى اٰخرها حرف الميم ليدل علىٰ مسخ القلب والممات وفرح فرحًا شديدًا باعتراضه وشتمنى وذكرنى باقبح الكلمات وقال انّ هٰذا الرجل يزعم ان عيسٰى كان من مُتّبعى موسٰى وليس زعمه هٰذا الّا باطلًا وانّ كذبه من اَجْلى البديهيّات بل اُوْتى عيسٰى شريعةً مستقلةً بالذات فاغنى الذين كانوا مجتمعين عليه من شريعة الكليم واقام الانجيل مقام التوراة فاعلم ان هٰذا قولٌ لا يخرج من فَمٍ اِلّا من فم الذى نُجس بنجاسة الجهل والجهلات وذاب انف فطنته بجذام التعصّبات وزعم هٰذا الجاهل كانّه يستدل على دعواه بالفرقان الذى هو الحَكَم عند الخصومات وقرء قوله تعالىٰ
وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰةِ

★**हाशिया** - हे बुद्धिमानो! मुझ पर एक मूर्ख ने ऐतराज़ किया है, एक ऐसे शहर से जिसका नाम मूर्खता है और उसके अंत में 'मीम' है ताकि यह (मीम) उसके दिल के गंदा होने और मौत पर दलालत करे। और वह अपने ऐतराज़ से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मुझे गालियां दीं और अत्यंत गंदे शब्दों से मेरा वर्णन किया और कहा कि यह व्यक्ति दावा करता है कि ईसा, मूसा के अनुयायियों में से था और उसका यह विचार निपट झूठ है और उसका यह झूठ अत्यंत स्पष्ट है, बल्कि ईसा अलैहिस्सलाम को अपने अस्तित्व में स्थाई शरीयत प्रदान की गई और ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को कलीमुल्लाह की शरीयत से निस्पृह कर दिया था और इंजील को तौरात का क़ायम मुकाम (स्थानापन्न) बना दिया। याद रख कि यह कथन केवल ऐसे मुंह से निकलता है जो अज्ञानता और मूर्खता की गंदगी से दूषित हो और जिसकी बुद्धि की नाक पक्षपात के कोढ़ से गल गई हो। और यह मूर्ख समझता है कि वह अपने दावे पर इस क़ुरआन से दलील प्रस्तुत कर रहा है जो झगड़ों के समय निर्णायक है। और उसने अल्लाह का यह कथन प्रस्तुत किया है-

وسلم بعد ما اهلك اليهود واردىٰ و لا شك ولا ريب ان السلسلة الموسوية والمحمدية قد تقابلتا و كذالك اراد الله وقضٰى واما

नहीं कि मूसवी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला परस्पर समान हैं और इसी प्रकार अल्लाह ने इरादा किया और निर्णय किया है। और जहां तक ईसा अलैहिस्सलाम का

وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ لْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ
(المائدة:۴۸-۴۷)

یعنی ببشارة خیر الکائنات ومافهم سرّ هذه الاٰیة وصال علیّ بصوت هو اَنْکر الاصوات وظنّ انّه اوىٰ الیٰ رکن شدید وسبّنی کالقاذفاتِ المفحشات وقال انّها دلیل واضح علی ان الانجیل شریعة مستقلة فیا اسفًا علیه وعلی غیظه الذی اخرجهٗ من الارض کالحشرات وان من اشقی الناس من لاعقل له ویعدّ نفسه من ذوی الحصاة ویعلم کل صبیٍّ وصبیة من المسلمین والمسلمات فضلا من البالغین والبالغات ان القراٰن لا یامر الیهود ولا النصاریٰ ان یتبعوا کتبهم ویثبتوا علی شرائعهم بل یدعوهم الی الاسلام واوامره وقد قال الله فی کتابه العزیز

शेष हाशिया - وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ؕ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ لْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ
(अलमाइदा 47-48)

अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी। और वह इस आयत के रहस्य को नहीं समझा और मुझ पर ऐसी आवाज़ से आक्रमण किया जो अत्यंत घृणित (अर्थात गधों की सी) है और यह विश्वास किया कि उसने अत्यंत दृढ़ सहारे की शरण ली है और मुझे आरोप लगाने वाली, गालियां देने वाली स्त्री के समान गालियां दीं और कहा कि यह स्पष्ट दलील है इस बात पर कि इंजील स्थाई शरीयत है। हाय अफसोस! उस पर और उसके उस क्रोध पर जिसने उसे कीड़ों की तरह धरती से निकाला है। और लोगों में से अत्यंत दुर्भाग्यशाली वह व्यक्ति है जिसके पास बुद्धि नाम की कोई चीज़ न हो और फिर भी वह स्वयं को बुद्धिमानों में से समझता हो। हालांकि मुसलमानों के व्यस्क स्त्री-पुरुष को तो छोड़ो उनका हर बच्चा-बच्ची यह जानता है कि क़ुरआन न यहूद को आदेश देता है और न नसारा को कि वह अपनी पुस्तकों का

عیسٰی فھو من خدام الشریعة الاسرائیلیة و من انبیاء سلسلة موسٰی و ما اوتی له شریعة کاملة مستقلة ولا یوجد فی کتابه

संबंध है तो वह इस्राईली शरीयत के सेवकों और मूसा तथा मूसा के सिलसिला के नबियों में से है। और उन्हें स्थाई पूर्ण शरीयत नहीं दी गई और न ही उनकी किताब

اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ (آل عمران :۲۰)

وَ مَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَ هُوَ فِی الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ (آل عمران:۸۶)

فکیف یُظنُّ فی الله القدوس انّه یدعوا الیهود و النصارٰی فی هٰذه الاٰیة الی الاسلام یقول انّکم لا تفلحون ابدًا ولا تدخلون الجنّة الا بعد ان تکونوا مسلمین ولا ینفعکم توراتکم ولا انجیلکم الا القرآن ثم ینسٰی قوله الاول و یامر کل فرقة من الیهود و النصارٰی ان یثبتوا علی شرائعهم یتمسکوا بکتبهم و یکفیهم هٰذا لنجاتهم و ان هٰذا الاجمع الضدّین و اختلاف فی القراٰن

शेष हाशिया - अनुसरण करें और अपनी शरीयतों पर स्थापित रहें बल्कि वह उन्हें इस्लाम और उसके आदेशों की ओर बुलाता है और अल्लाह ने अपनी महान किताब में फ़रमाया है-

(आले इमरान- 20) اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ

وَ مَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَ هُوَ فِی الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ

(आले इमरान- 86)

पवित्र ख़ुदा के बारे में कैसे यह विचार किया जा सकता है कि वह यहूद और नसारा को तो इस आयत में इस्लाम की ओर बुला रहा है और कह रहा है कि तुम कदापि सफल न होगे और न तुम जन्नत में प्रवेश करोगे सिवाय इसके कि तुम मुसलमान हो जाओ और तुम्हें न तुम्हारी तौरात लाभ पहुंचाएगी और न इंजील बल्कि क़ुरआन लाभ देगा। फिर वह अपने पहले कथन को भूल गया और यहूदी और नसारा के हर फिर्के को आदेश देने लगा कि वह अपनी-अपनी शरीयतों (धर्मविधानों) पर स्थापित रहें और अपनी किताबों को दृढ़तापूर्वक थामे रखें और उनके

अनुवाद - अल्लाह के निकट सच्चा और पूर्ण धर्म इस्लाम है (आले इमरान - 20)

अनुवाद - और जो कोई इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म को चाहेगा तो कदापि उससे स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक के दिन घाटा पाने वालों में से होगा।

(आले इमरान - 86)

تفصیل الحرام و الحلال و الوراثۃ و النکاح و مسائل اخرٰی
و النصارٰی یُقِرُّون بہ ولذالک تری التورات فی ایدیھم کما تری

में हराम और हलाल, विरासत, निकाह और अन्य विषयों का विवरण पाया जाता है और ईसाई इस बात का इक़रार करते हैं। इसीलिए तू उनके हाथों में तौरात को वैसे

و اللہ نزّہ کتابہ عن الاختلاف بقولہ وَلَوْکَانَ مِنْ عِنْدِ غَیْرِ اللّٰہِ لَوَجَدُوْا فِیْہِ اخْتِلَافًا کَثِیْرًا

وَ لَوْ کَانَ مِنْ عِنْدِ غَیْرِ اللّٰہِ لَوَجَدُوْا فِیْہِ اخْتِلَافًا کَثِیْرًا (النساء :۸۳)

بل الاٰیۃ التی حَرَّف المُعتَرِض معناھا کمثل الیھود تشیر الی ان بشارت نبینا صلی اللہ علیہ وسلم کانت موجودۃً فی التورات و الانجیل فکان اللہ یقول مالھم لا یعملون علٰی وصایا التوراۃ و الانجیل و لا یُسلمون نعم لوکانت عبارۃ القراٰن بصیغۃ الماضی ولم یقل وَلْیَحْکُمْ بل قال و کان النصارٰی یحکمون بالانجیل فقط مکان ذالک دلیلًا علٰی مدعاہُ و اما بقیۃ الفاظ ھٰذہ الاٰیات اعنی لفظ فیہ نور و ھدًی فلیس ھٰذا دلیلًا علی کون الانجیل شریعۃً مستقلۃً

शेष हाशिया - लिए उनकी मुक्ति हेतु यही पर्याप्त है। हालांकि यह तो केवल दो विपरीत बातों का इकट्ठा होना है और क़ुरआन में मतभेद करना है और अल्लाह ने अपने कथन-

وَ لَوْ کَانَ مِنْ عِنْدِ غَیْرِ اللّٰہِ لَوَجَدُوْا فِیْہِ اخْتِلَافًا کَثِیْرًا (अन्निसा - 83)

में अपनी किताब को मतभेदों से पवित्र क़रार दिया है बल्कि वे आयतें जिनके अर्थ में ऐतराज़ करने वाले ने यहूदी के समान तहरीफ़ (परिवर्तन) की है वह संकेत करती हैं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी तौरात और इंजील में मौजूद थी। मानो ख़ुदा तआला यह फ़रमा रहा है कि उन्हें क्या हो गया है कि वे तौरात और इंजील के आदेशों का अनुसरण नहीं करते और न आज्ञापालन करते हैं। हां अगर क़ुरआन की इबारत भूतकाल की विभक्ति में होती तो अल्लाह "वल्यहकुम" न फ़रमाता बल्कि **و کان النصارٰی یحکمون بلانجیل فقط** (अर्थात ईसाई इंजील के अनुसार निर्णय करते थे) फ़रमाता तो यह उसकी विचारधारा पर दलील होती। और जहां तक इन आयतों के बाकी शब्दों का संबंध है अर्थात शब्द **فِیْہِ نُوْرٌ وَّ ھُدًی** (अर्थात उसमें नूर और हिदायत है) तो यह इंजील के स्थाई शरीयत होने पर दलील नहीं। क्या ज़बूर और बनी इस्राईल के अन्य नबियों की पुस्तकें

अनुवाद - यदि वह ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का कलाम होता तो उस में बहुत सा मतभेद पाया जाता। (अन्निसा - 83)

الانجيل وقال بعض فرقهم انانجينامن اثقال شريعة التورات بكفارة دم عيسٰى واما بعضهم الاٰخرون فيحرمون ماحرم التوراة ولايا كلون الخنزير كمثل نصارىٰ ارمينيا وهم اقدم من فرق اخرى فى المدى واتفق كلهم علىٰ ان عيسٰى اتىٰ بفضل من الله وان موسٰى اتىٰ بالشريعة وسموهما عهد الشريعة وعهد الفضل وسمّوا الاوّل عتيقًا والاٰخر جديدًا فاسئلهم ان كنت تشك فى هٰذا

ही देखता है जैसे इंजील को। और उनके कुछ फ़िर्क़े यह कहते हैं कि ईसा के खून के कफ़्फ़ारा के द्वारा हम तौरात की शरीयत के बोझों से मुक्ति दिए गए हैं। और उनके कुछ दूसरे फ़िर्क़े हैं जो उसे हराम क़रार देते हैं जिसे तौरात ने हराम क़रार दिया और वे सूअर नहीं खाते। उदाहरण स्वरूप आर्मीनिया के ईसाई, और वे समय के दृष्टिकोण से दूसरे फ़िर्क़ों की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं और वे सब इस पर सहमत हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह की कृपा लेकर आए और मूसा अलैहिस्सलाम शरीयत लेकर आए और उन्होंने उन दोनों का नाम अहद-ए-शरीयत और अहद-ए-कृपा रखा और पहले का नाम उन्होंने अहद नामा अतीक़ (पुरातन नियम) और दूसरे का नाम अहद नामा जदीद (नूतन नियम) रखा। यदि तुझे इस विषय में संदेह है तो उनसे पूछ।

اليس الزبور وغيره من كتب انبياء بنى اسرائيل هُدًى للناس ا يوجد فيها ظلمة ولا يوجد نور فتفكر ولا تكن من الجاهلين وانّ النصارٰى قد اتفقوا علىٰ ان عيسى بن مريم ما اتاهم بالشريعة وانّا نكتب هٰهنا شهادة جى ا ليفرا الذى هو بش لاهورا عنى امام قسوس هٰذه الناحية وكفاك هٰذا ان كنت تخشى من سواد الوجه والذلّة ورأينا ان نكتب عليحدة هٰذه الشهادة فى الحاشيه منه

शेष हाशिया - लोगों के लिए सन्मार्ग का माध्यम नहीं थीं? क्या उन में अंधकार पाया जाता था और नूर नहीं पाया जाता। अत: विचार कर और मूर्खों में से न बन। और ईसाई इस बात पर सहमत हैं कि ईसा इब्ने मरियम उनके पास शरीयत लेकर नहीं आए। और हम यहां जी० ए० लेफ्राय बिशप लाहौर अर्थात उस इलाके के पादरियों के प्रमुख की गवाही दर्ज करते हैं और अगर तू मुंह काला होने तथा अपमान से डरता है तो तेरे लिए यह पर्याप्त है और हम ने उचित समझा कि इस गवाही को अलग से हाशिया में लिखें। इसी से।

فملخّص كلامنا ان الله توجّه الىٰ بنى اسرائيل رحمة منه فاقام سلسلة بموسٰى واتمّها بعيسٰى وهو اٰخر لبنةٍ لها ثم توجه الىٰ بنى اسماعيل فاقام سلسلة نبينا المصطفٰى وجعله مثيل الكليم ليرى المقابلة فى كل ما اتٰى وختم هٰذه السلسلة علىٰ مثيل عيسٰى ليتم النعمة على هٰذه السلسلة كما اتمها على السلسلة الاولىٰ وان كانت السلسلة المحمدية خاليةً من هٰذا المسيح المحمدى فتلك اذا قسمةٌ ضيزىٰ ففكروا كل الفكر وليس النُهٰى الا لهٰذا الامر يا اولى النُهٰى ولا ينجى المرء الاالصدق فاطلبوه بدق باب الحضرة واقبلوا على الله كل الاقبال لهٰذه الخطّةِ وادعوه فى جوف الليالى وخرّوا

हमारे कथन का सारांश यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से बनी इस्राईल की ओर ध्यान दिया और मूसा अलैहिस्सलाम के द्वारा एक सिलसिला स्थापित किया और ईसा अलैहिस्सलाम पर उसे पूर्ण किया और वह उस सिलसिले की अंतिम ईंट थी। फिर अल्लाह ने बनी-इस्माईल की ओर ध्यान दिया और हमारे नबी मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिला स्थापित किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मूसा कलीमुल्लाह का समरूप बनाया ताकि वह हर वरदान में मुक़ाबला दिखाए और इस सिलसिला को ईसा के समरूप पर समाप्त किया ताकि वह इस सिलसिले पर भी यह नेमत उसी प्रकार पूर्ण करे जिस प्रकार उसने इससे पहले सिलसिले पर पूर्ण की थी। और यदि यह सिलसिला मुहम्मदिया इस मसीह मुहम्मदी से खाली होता तो तब तो यह एक बहुत तुच्छ विभाजन होता। अत: पूर्णत: विचार करो, पुन: विचार करो। और हे बुद्धिमानो! केवल इस बात के लिए ही बुद्धि है और सच्चाई ही इंसान को मुक्ति देती है। अत: अल्लाह तआला के द्वार को खटखटा कर उसी से मांगो और इस उद्देश्य के लिए अल्लाह की ओर पूर्णत: ध्यान दो और रातों को उसे पुकारो और महान प्रतापी ख़ुदा के आगे रोते हुए गिर जाओ और ठट्ठा और व्यंग्य और ताना करते

باکین للّٰہ ذی العزۃ والجبروت ولا تمرّوا ضاحکین ھامزین واستعیذوا باللہ من الطاغوت

یاعباد اللہ تذکروا وتیقظوا فان المسیح الحَکَم قدأَتٰی فاطلبوا العلم السماوی ولا تقوِّموا متاعکم فی حضرۃ المولٰی وواللہ انّی من اللہ اتیتُ وما افتریتُ وقدخاب من افترٰی انّ ایاّم اللہ قداتَتْ وحسراتٌ علی الذی ابٰی ولا یُفلح المُعرض حیث أَتٰی والحق والحق اقول ان مجیٔ المسیح من ھٰذہ الامۃ کان امرا مفعولا من الحضرۃ من مقتضی الغیرۃ وکان قدّر ظھورہ من یوم الخلقۃ والسرّ فیہ ان اللہ اراد ان یجعل اٰخر الدنیا کأولھا فی نفی الغیر والمحو فی طاعۃ الحضرۃ الاحدیۃ واسلاک الناس فی سلک الوحدۃ الطبعیۃ بعدما دعوا الی الوحدۃ القھریۃ وکان الناس مُفْترقین الی الفرق المختلفۃ والاٰراء

हुए न जाओ और शैतान से बचने के लिए अल्लाह की शरण मांगो।

हे अल्लाह के बंदो! सीख ग्रहण करो और जाग जाओ क्योंकि **निर्णायक** मसीह आ गया है। अत: आसमानी ज्ञान मांगो और ख़ुदा के दरबार में अपनी नेकियों को कीमती न समझो और ख़ुदा की क़सम मैं अल्लाह की ओर से आया हूं और मैंने झूठ नहीं कहा है, और नाकाम हुआ वह जिसने झूठ कहा। निस्सन्देह अल्लाह के दिन आ गए और जिसने इन्कार किया उस पर अफसोस है और विमुख होने वाला जिधर से भी आए सफल नहीं होता। यह सच है और मैं सच ही कहता हूं कि मसीह का इसी उम्मत में से आना अल्लाह की ओर से उसके स्वाभिमान के कारण अटल था और अनादि से उसका प्रादुर्भाव निर्धारित था और इसमें यह भेद छुपा हुआ था कि अल्लाह ने इरादा किया कि उसके अतिरिक्त समस्त उपास्यों का इन्कार करने और ख़ुदा तआला के आज्ञापालन में फना होने में संसार के अन्त को आरम्भ के समान बना दे। **और बलपूर्वक एकत्व की ओर बुलाए जाने के बाद लोगों को एक स्वभाविक एकत्व की लड़ी में पिरोए।** लोग विभिन्न संप्रदायों, भिन्न-भिन्न मतों और भिन्न-भिन्न

المتنوعة والاهواء المتخالفة ومطيعين للحكومة الشيطانية الدجالية الظلمانية وما كانوا منفكين حتى تنزل عليهم فوج من السكينة والشيطان الذى هو ثعبان قديم ودجال عظيم ما كان مخلصهم من اسره و كان يريد ان يا كلهم كلهم و يجعلهم وقود النار لانه نظر الىٰ ايّامه و رَأَى انه مابقى من ايام الانظار الا قليلا فخاف ان يكون من المغلوبين بمالم يكن من المنظرين اِلّا الىٰ هٰذا الحين فرأى انه هالك باليقين فاراد اَنْ يصول صولا هو خاتم صولا ته واٰخر حركاته فجمع كلما عنده من مكائده و حِيَله وسلاحه وسائر الاٰلات الحربيّة فتحرك كالجبال السائرة والبحار الزاخرة بجميع افواجه ليدخل حمى الخلافة مع ذُرّياته فعند ذالك انزل الله مسيحه من السماء بالحربة السماوية ليكون بين الكفر والايمان فيصلة

प्रकार की इच्छाओं में बटे हुए थे और शैतानी, दज्जाली और अत्याचारी हुकूमत के अधीन थे और संतुष्टि की फौज के उन पर उतरने तक वे बाज़ आने वाले न थे और शैतान जो पुराना सांप और बड़ा दज्जाल है अपनी क़ैद से उन्हें छोड़ने वाला नहीं था और वह चाहता था कि उन सबको खा जाए और उन्हें आग का ईंधन बना दे क्योंकि उसने अपनी छूट के शेष बचे दिनों की ओर देखा और उसे ज्ञात हुआ कि छूट के दिन थोड़े रह गए हैं। अत: वह पराजित होने से डर गया क्योंकि उसको उसी समय तक के लिए छूट दी गई थी। अत: उसने जान लिया कि वह निस्सन्देह नष्ट होने वाला है तो उसने इरादा किया कि वह अपने आक्रमणों में से अंतिम आक्रमण और अंतिम षड्यंत्र ज़ोरदार करे। तो उसने अपनी सब चालें, बहाने, हथियार और समस्त जंगी सामग्रियां इकट्ठी कीं। अत: वह चलते-फिरते पहाड़ों और हिलोरे मारते समंदर की तरह अपनी पूरी सेना के साथ आक्रमणकारी हुआ ताकि वह अपनी औलाद और नस्ल समेत ख़िलाफ़त के विशेष क्षेत्र में प्रवेश कर जाए। तब अल्लाह ने अपने मसीह को आसमान से आसमानी हथियार के साथ उतारा ताकि कुफ्र तथा

القسمة وانزل معه جنده من اٰياته وملائكة سماواته فاليوم يوم حرب شديد وقتال عظيم بين الداعى الى الله وبين الداعى الى غيره انها حرب ماسمع مثلها فى اول الزمن ولا يسمع بعده اليوم لايترك الدجال المفتعل ذرة من مكائده الا يستعملها ولاالمسيح المبتهل ذرة من الاقبال على الله والتوجه الى المبدء الا ويستوفيها ويحاربان حربًا شديدًا حتى يعجب قوتهما وشدتهما كُلّ من فى السّمآء وترى الجبال قدمُ المسيح ارسخ من قدمها والبحار قلبه ارق واجرٰى من ماء ها وتكون محاربة شديدة وتنجّر الحرب الى اربعين سنة من يوم ظهور المسيح حتّى يُسمع دُعاء المسيح لتقواه وصدقه وتنزل ملائكة النصرة ويجعل الله الهزيمة على الثعبان وفوجه منة على عبده

ईमान के बीच भाग्य का निर्णय हो जाए और उसके साथ अपने निशानों और आसमानी फरिश्तों की सेना उतारी। अत: आज अल्लाह की ओर बुलाने वालों और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे उपास्यों की ओर बुलाने वालों के बीच भयानक जंग और बड़ी लड़ाई का दिन है और यह ऐसी जंग है जिसका उदाहरण न पहले ज़माने में सुना गया और न इसके बाद सुना जाएगा। आज झूठा और मक्कार दज्जाल अपने षड्यंत्रों के प्रयोग में कोई कसर नहीं छोड़ेगा और रो-रो कर दुआएँ करने वाला मसीह ख़ुदा की ओर बढ़ने और अपने सृष्टा की ओर ध्यान करने में कोई कमी नहीं छोड़ेगा और दोनों भयानक जंग करेंगे यहां तक कि समस्त आसमानी वजूदों को उनकी शक्ति और तेज़ी आश्चर्य में डाल देगी। पहाड़ मसीह के क़दमों को स्वयं से अधिक मज़बूत पाएंगे और समुद्र उसके दिल को नर्मी और तेज़ बहाव में अपने पानी से अधिक पाएंगे। घमासान का युद्ध होगा और मसीह के प्रकटन के दिन से 40 वर्ष तक जंग जारी रहेगी यहां तक कि मसीह की दुआ उसके संयम तथा सच्चाई के कारण स्वीकार होगी और सहायता हेतु फ़रिश्ते उतरेंगे और अल्लाह अपने बंदे पर उपकार करते हुए उस सांप अर्थात शैतान और उसकी फौज के लिए पराजय निर्धारित कर देगा

فترجع قلوب الناس من الشرك الى التوحيد ومن حب الشيطان الى حب الله الوحيد والى المحوية من الغيرية والى ترك النفس من الاهواء النفسانية فان الشيطان يدعو الى الهوىٰ والقطيعة والمسيح يدعو الى الاتحاد والمحوية وبينهما عداوة ذاتية من الازل واذا غلب المسيح فاختتم عند ذالك محاربات كلها التى كانت جارية بين العساكر الرحمانية والعساكر الشيطانية فهناك يكون اختتام دور هٰذه الدنيا ويستدير الزمان وترجع الفطرت الانسانية الى هيئتها الاولىٰ الّا الذين احاطتهم الشقوة الازلية فاولٰئك من المحرومين ومن فضل الله واحسانه انه جعل هٰذا الفتح علىٰ يد المسيح المحمدى ليرى الناس انه اكمل من المسيح الاسرائيلى فى بعض شيونه وذالك

और लोगों के दिल शिर्क से एकेश्वरवाद और शैतान की मोहब्बत से 'एक' ख़ुदा की मोहब्बत और अन्य उपास्यों से ख़ुदा में विलीनता की ओर, तामसिक इच्छाओं से संयम की ओर लौटेंगे क्योंकि शैतान तामसिक इच्छाओं और ख़ुदा से संबंध विच्छेद की ओर बुलाता है और मसीह एकेश्वरवाद और फ़ना की ओर बुलाता है और उन दोनों के बीच अनादि से व्यक्तिगत शत्रुता है और जब मसीह विजयी होगा तो उस समय रहमानी और शैतानी सेनाओं के बीच चल रही लड़ाइयाँ समाप्त हो जाएंगी। तब इस संसार के दौर का अंत होगा और ज़माना अपना चक्र पूर्ण कर लेगा और इंसानी फितरत अपनी पहली प्रकृति की ओर लौट आएगी, सिवाय उन लोगों के जिन्हें उनके अनादि दुर्भाग्य ने घेर रखा है तो यही लोग वंचित हैं। और अल्लाह ने अपनी कृपा और उपकार से यह महान विजय मसीह मुहम्मदी के हाथ पर मुक़द्दर कर दी ताकि वह लोगों को दिखाए कि वह इस्राईली मसीह से अपने अधिकतर कार्यों में श्रेष्ठतर है और यह अल्लाह का वह स्वाभिमान है जिसे ईसाइयों ने अपने मसीह की बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा के द्वारा जोश दिलाया। और जब मसीह मुहम्मदी की यह शान है तो उस नबी की शान कितनी बुलन्द होगी जिसका वह उम्मती है। हे अल्लाह!

من غيرة الله التى هيّجها النصارىٰ باطراء مسيحهم ولما كان شان المسيح المحمدى كذالك فما اكبر شان نبى هو من اُمّتهٖ اللّٰهم صلّ عليه سلامًالا يغادر بركة من بركاتك وسَوّد وجوه اعداء ه بتائيداتك واٰياتك اٰمين

الراقم ميرزا غلام احمدؐ من مقام القاديان الفنجاب
لخمس و عشرين من اغسطوس سنـــــــــه ۱۹۰۱

उस पर ऐसा दरूद और सलाम भेज जो तेरी बरकतों में से किसी बरकत से खाली न हो और अपनी सहायतायों तथा चमत्कारों से उसके शत्रुओं के चेहरे काले कर दे। आमीन।

लेखक- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद
क़ादियान- पंजाब
25 अगस्त 1901 ई०

ख़ुत्बा इल्हामिया के टाइटल पृष्ठ के हाशिया का परिशिष्ट

Bishops Bourno
Lahore
Aug 15.01

Dear Sir,

The Lord Jesus Christ was certainly not a lawgiver, in the sense in which Moses was, giving a complete descriptive law about such things as clean and unclean food etc. That he did not do this must be evident to any one who reads the New testament with any care or thought whatever. The Mosaic law of meats etc was given in order to develop in the minds of men who were in a very elementary stage of education and religion, the sense of law, and gradually of Holiness and the reverse. It is therefore called in the New testament a "Schoolmaster to bring us to Christ" (gal iii. 24) for it developed a conseience in men which, when awakened,could not find rest in any external or purely ceremonial acts but needed an inner righteousness of heart and life. And it was to bring this that christ came, By His life and death he both deepened in men's minds the sense of what sin really is and how terrible it is and also showed men how they could be reconciled to God, obtaining forgiveness of sins and also power by the gift of the Holy Spirit to live a new life in real holiness, and in love to God and man. What the characteristics of that new life are, you can see by reading the sermon of the mount St. Mathew Chapters V-VII.

(इस का अनुवाद अगले पृष्ठ पर देखो)

अनुवाद

बिशप्स बोर्न, लाहौर

दिनांक 15 अगस्त, 1901 ई०

श्री मान,

प्रभु यीशु मसीह कदापि शरीयत वाला न था जिन अर्थों में कि हज़रत मूसा शरीयत वाला था जिसने एक पूर्ण विस्तृत शरीयत ऐसे मामलों के संबंध में दी कि उदाहरणतया खाने के लिए हलाल क्या है और हराम क्या है इत्यादि। कोई व्यक्ति इंजील को बिना विचार किए सरसरी निगाह से भी देखे तो उस पर अवश्य प्रकट हो जाएगा के यशु मसीह शरीयत वाला न था। मूसा की शरीयत खाने इत्यादि मामलों के बारे में इसलिए अवतरित हुई थी कि इंसान का दिल प्रशिक्षण पाकर शरीयत के उद्देश्य को प्राप्त कर ले और धीरे-धीरे पवित्र और अपवित्र को समझने लगे क्योंकि इंसान उस समय शिक्षा और धर्म की प्रारंभिक अवस्था में था। इसलिए इंजील में कहा गया है कि मूसा की शरीयत एक शिक्षक थी जो हमें मसीह तक लाई क्योंकि इस शरीयत ने इंसान के दिल में एक ऐसी फितरत पैदा कर दी जो की उन्नति प्राप्त करके केवल बाह्य एवं रस्मी कर्मों पर संतुष्ट न हुई अपितु दिल और रूह की अंदरूनी पवित्रता की तलाश करने वाली हुई। इस पवित्रता को लाने के लिए मसीह आया। अपनी जिंदगी और मौत के द्वारा उसने लोगों के दिलों में यह समझ डाल दी कि गुनाह क्या है और वह कैसा भयानक है और गुनाहों की क्षमा प्राप्त करके और रूहुल क़ुदुस (जिब्रील फ़रिश्ता) की सहायता से हम पवित्रता की नई ज़िंदगी पाकर और ख़ुदा और इंसान के मध्य मुहब्बत स्थापित करके ख़ुदा को फिर प्रसन्न कर सकते हैं। मती अध्याय 5-7 में पहाड़ी शिक्षा के पढ़ने से ज्ञात हो सकता है कि इस नई जिंदगी का तरीका क्या था।

(हस्ताक्षर जे ए लैफ्राय बिशप लाहौर)

परिशिष्ट ख़ुत्बा इल्हामिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मीनार-तुल-मसीह के चन्दे का विज्ञापन

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید

وپائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد

(यह वह **इल्हाम** है जो बराहीन-ए-अहमदिया में वर्णित

है जिसको प्रकाशित हुए बीस वर्ष गुज़र गए)

ख़ुदा तआला की कृपा से क़ादियान की मस्जिद जो मेरे स्वर्गीय पिता जी ने दो बाज़ारों के बीच में एक ऊंची ज़मीन पर, छोटी सी बनाई थी अब इस्लाम के वैभव (शानो-शौकत) के लिए बहुत विशाल की गई और इमारतों के कुछ भाग और भी बनाए गए हैं। इसलिए अब इस मस्जिद ने और रूप ले लिया है। अर्थात् पहले इस मस्जिद की लम्बाई-चौड़ाई केवल इतनी थी कि इसमें मुश्किल से दो सौ आदमी नमाज़ पढ़ सकते थे किन्तु अब इसमें दो हज़ार के लगभग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं और सम्भवत: यह मस्जिद भविष्य में और भी विशाल हो जाएगी। मेरे दावे की प्रारंभिक अवस्था में इस मस्जिद में जुमे की नमाज़ के लिए अधिक से अधिक पन्द्रह-बीस आदमी एकत्र हुआ करते थे, परन्तु अब ख़ुदा तआला की यह अनुकम्पा है कि तीन सौ या चार सौ नमाज़ी और कभी सात सौ से आठ सौ तक भी नमाज़ी हो जाते हैं, यह एक सामान्य अनुमान है। लोग दूर-दूर से नमाज़ पढ़ने के लिए आते हैं। ख़ुदा तआला की यह अद्भुत क़ुदरत है कि पंजाब और हिंदुस्तान के मौलवियों ने बहुत ज़ोर लगाया कि हमारा सिलसिला टूट जाए तथा अस्त-व्यस्त हो जाए, किन्तु ज्यों-ज्यों वे समूल विनाश के लिए प्रयास करते गए और भी उन्नति होती गई और विलक्षण तौर पर सिलसिला इस देश में फैल गया। अत: यह ऐसी बातें हैं कि आँखें रखने वालों

के लिए एक निशान है। यदि यह मनुष्य का कारोबार होता तो इन मौलवियों के प्रयास से कब का मिट जाता। परन्तु चूंकि यह ख़ुदा का कारोबार और उसके हाथ से था, इसलिए मानवीय हस्तक्षेप इसको रोक न सका।

अब इस मस्जिद को पूर्ण करने के लिए एक और प्रस्ताव तय पाया है और वह यह है कि मस्जिद के पूरब की ओर जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का आशय है एक बहुत ऊंचा मीनार बनाया जाए और वह मीनार तीन उद्देश्यों के लिए विशिष्ट हो :-

प्रथम यह कि अज़ान देने वाला उस पर चढ़कर पाँच समय नमाज़ की अज़ान दिया करे। ताकि ख़ुदा के पवित्र नाम की ऊँची आवाज़ से दिन-रात में पाँच बार तब्लीग़ हो, ताकि संक्षिप्त शब्दों में हमारी ओर से लोगों को पाँच समय यह आवाज़ दी जाए कि वह अजर-अमर ख़ुदा जिसकी समस्त लोगों को इबादत करनी चाहिए केवल वही ख़ुदा है जिसकी ओर उसका चुना हुआ और पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मार्ग-दर्शन करता है। उसके अतिरिक्त पृथ्वी और आकाश में और कोई ख़ुदा नहीं।

द्वितीय उद्देश्य इस मीनार से यह होगा कि इस मीनार की दीवार के किसी बहुत ऊंचे भाग पर एक बड़ी लालटेन स्थापित की जाएगी जिसका मूल्य लगभग एक सौ रुपये या कुछ अधिक होगा। यह प्रकाश मनुष्यों की आँखें प्रकाशित करने के लिए दूर-दूर तक जायेगा।

तृतीय उद्देश्य इस मीनार से यह होगा कि इस मीनार की दीवार के किसी ऊंचे भाग पर एक बड़ी अलार्म घड़ी जो चार सौ या पाँच सौ रुपये के मूल्य की होगी, लगा दी जाएगी ताकि लोग अपने समय को पहचानें और लोगों को समय पहचानने की ओर ध्यान हो।

ये तीनों कार्य जो इस मीनार द्वारा जारी होंगे इनके अन्दर तीन सच्चाइयां (रहस्य) छुपी हुई हैं। **प्रथम** यह कि बांग (अज़ान) जो पांच समय ऊंची आवाज़ से लोगों को पहुंचाई जाएगी। इसके अन्तर्गत यह सच्चाई छिपी है कि अब निश्चित तौर पर समय आ गया है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ प्रत्येक कान

तक पहुँचे। अर्थात् समय अब स्वयं बोलता है कि उस अजर-अमर जीवित ख़ुदा के अतिरिक्त जिसकी ओर पवित्र रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मार्ग दर्शन किया है अन्य सब ख़ुदा जो बनाये गए हैं झूठे हैं? क्यों झूठे हैं? इसलिए कि उनके मानने वाले उनसे कोई बरकत नहीं पा सकते, कोई निशान नहीं दिखा सकते।

दूसरे वह लालटेन जो इस मीनार की दीवार में स्थापित की जाएगी उसमें सच्चाई यह है ताकि लोग जान लें कि आकाशीय प्रकाश का समय आ गया और जैसा कि पृथ्वी ने अपने आविष्कारों में क़दम आगे बढ़ाया ऐसा ही आकाश ने भी चाहा कि अपने प्रकाशों को बड़ी सफाई से प्रकट करे ताकि सत्याभिलाषियों के लिए पुनः ताज़गी के दिन आएं और हर आँख जो देख सकती है आकाशीय प्रकाश को देखे तथा उस प्रकाश के द्वारा ग़लतियों से बच जाए।

तीसरे वह अलार्म घड़ी जो इस मीनार की किसी दीवार के भाग में लगाई जायेगी उसमें यह सच्चाई छुपी है कि ताकि लोग अपने समय को पहचान लें अर्थात् समझ लें कि आकाश के द्वारों के खुलने का समय आ गया। अब से ज़मीनी जिहाद बन्द किए गए और लड़ाइयों का अन्त हो गया जैसा कि हदीसों में पहले लिखा गया था कि जब मसीह आएगा तो धर्म के लिए लड़ना हराम (वर्जित) किया जायेगा। **अतः आज से धर्म के लिए लड़ना हराम किया गया।** अब इसके पश्चात् जो धर्म के लिए तलवार उठाता है और गाज़ी (धर्म योद्धा) नाम रखा कर काफ़िरों का वध करता है वह ख़ुदा और उसके रसूल का अवज्ञाकारी है। सही बुखारी को खोलो और उस हदीस को पढ़ो जो मसीह मौऊद के बारे में है अर्थात् يضع الحرب जिस के अर्थ ये हैं कि जब मसीह आएगा तो जिहादी लड़ाइयों का अन्त हो जायेगा। अब मसीह आ चुका और **यही है जो तुम से बोल रहा है।**

अतः हदीस-ए-नबवी में जो मसीह मौऊद के बारे में लिखा गया था कि वह मीनार-ए-बैज़ा (सफ़ेद मीनार) के पास उतरेगा। उस से अभिप्राय यही था कि मसीह मौऊद के समय का यह निशान है कि उस समय संसार के परस्पर मेल जोल के कारण तथा मार्गों के खुलने और मुलाक़ात की सुविधा के कारण आदेशों का प्रचार-प्रसार तथा धार्मिक प्रकाश पहुंचाना और आवाज़ देना इतना सरल होगा कि मानो यह

व्यक्ति मीनार पर खड़ा है। ये रेल, तार, अग्निबोट तथा डाक-व्यवस्था की ओर संकेत था। जिसने समस्त संसार को एक शहर के समान कर दिया। अत: मसीह के युग के लिए मीनार के शब्द में यह संकेत है कि उसका प्रकाश एवं आवाज़ बहुत शीघ्र संसार में फैलेगी और ये बातें किसी और नबी को प्राप्त नहीं हुईं। इंजील में लिखा है कि मसीह का आना ऐसे युग में होगा जैसा कि बिजली आकाश के एक किनारे में चमक कर समस्त किनारों को पल भर में प्रकाशित कर देती है। यह भी इसी बात की ओर संकेत था। यही कारण है कि चूंकि मसीह समस्त संसार को प्रकाश पहुँचाने आया है, इसीलिए उसे पहले से यह सारे सामान दिए गए, वे ख़ून बहाने के लिए नहीं अपितु समस्त संसार के लिए मैत्री (सुलह) का संदेश लाया है। अब मनुष्यों के क्यों ख़ून किए जाएँ। यदि कोई सत्य का अभिलाषी है तो वह ख़ुदा के निशान देखे जो सैंकड़ों प्रकटन में आए और आ रहे हैं और यदि ख़ुदा का अभिलाषी नहीं तो उसे छोड़ दो और उसे मारने की चिंता में मत रहो, क्योंकि मैं सच-सच कहता हूँ कि अब वह अंतिम दिन निकट है जिससे समस्त नबी जो संसार में आए डराते रहे।

अतएव यह अलार्म घड़ी जो समय को पहचानने के लिए लगाई जायेगी मसीह के समय के लिए यादध्यानी है और स्वयं इस मीनार के अन्दर ही एक सच्चाई छिपी है। और वह यह कि आँहज़रत सल्लाहो अलैहि वस्सल्लम की हदीसों में निरन्तर आ चुका है कि आने वाला मसीह मीनार वाला होगा अर्थात् उस के युग में इस्लाम की सच्चाई चरमोत्कर्ष तक पहुँच जाएगी जो उस मीनार के समान है जो बहुत ऊंचा हो और इस्लाम धर्म समस्त धर्मों पर विजयी हो जायेगा, उसी के समान जैसा कि कोई व्यक्ति जब एक बुलंद मीनार पर अज़ान देता है तो वह आवाज़ समस्त आवाज़ों पर विजयी हो जाती है। अत: निश्चित था कि ऐसा ही मसीह के दिनों में होगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

(अस्सफ़्फ़- 10)

यह आयत मसीह मौऊद के बारे में है और इस्लामी प्रमाण की वह बुलन्द आवाज़ जिसके नीचे समस्त आवाज़ें दब जाएँ वह अनादि काल से मसीह के

लिए विशिष्ट की गई है और हमेशा से मसीह मौऊद का क़दम उस बुलन्द मीनार पर ठहराया गया है जिससे अधिक ऊंची और कोई इमारत नहीं। इसी की ओर बराहीन अहमदिया के उस इल्हाम में संकेत है जो वर्णित पुस्तक के पृष्ठ 522 में दर्ज है और वह यह है :-

"بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد"

इसी प्रकार मसीह मौऊद की मस्जिद भी मस्जिद अक़्सा है। क्योंकि वह इस्लाम के प्रारम्भिक युग से सुदूर अन्तिम युग पर है। और एक रिवायत में ख़ुदा के पवित्र नबी ने यह भविष्यवाणी की थी कि मसीह मौऊद का नुज़ूल (अवतरण) मस्जिद अक़्सा के पूर्वी मीनार के निकट होगा।★

★**हाशिया :-** कुछ हदीसों में यह पाया जाता है कि दमिश्क़ के पूर्वी दिशा में कोई मीनार है जिसके निकट मसीह का नुज़ूल (अवतरण) होगा। अत: यह हदीस हमारे उद्देश्य के विपरीत नहीं है, क्योंकि हम कई बार वर्णन कर चुके हैं कि हमारा यह गाँव जिसका नाम क़ादियान है और हमारी यह मस्जिद जिसके निकट यह मीनार तैयार होगा दमिश्क़ की पूर्वी दिशा में ही है। हदीस में इस बात का विवरण नहीं कि मीनारा दमिश्क़ से संलग्न तथा उसका एक भाग होगा अपितु उसकी पूर्वी दिशा में होगा। फिर दूसरी हदीस में इस बात का विवरण है कि मस्जिद अक़्सा के निकट मसीह उतरेगा। इस से सिद्ध होता है कि वह मीनार यही मस्जिद-ए-अक़्सा का मीनार है और दमिश्क़ का वर्णन इस उद्देश्य के लिए है जो हम अभी वर्णन कर चुके हैं, और मस्जिद अक़्सा से अभिप्राय इस स्थान पर यारोशलम की मस्जिद नहीं है अपितु मसीह मौऊद की मस्जिद है जो लम्बे समय की दृष्टि से ख़ुदा के नज़दीक मस्जिद अक़्सा है। इस से किसको इन्कार हो सकता है कि जिस मस्जिद की नींव मसीह मौऊद रखे वह इस योग्य है कि फिर उसको 'मस्जिद-ए-अक़्सा' कहा जाए। जिसके मायने हैं 'मस्जिद अब्अद'। क्योंकि जब कि मसीह मौऊद का अस्तित्व इस्लाम के लिए एक अन्तिम दीवार है और निश्चित है कि वह अन्तिम युग में और दुनिया के दूरस्थ भाग में आकाशीय बरकतों के साथ उतरेगा। इसलिए प्रत्येक मुसलमान को यह मानना पड़ता है कि मसीह मौऊद की मस्जिद, मस्जिद अक़्सा है, क्योंकि इस्लामी युग की लम्बी रेखा के अन्तिम बिन्दु पर मसीह मौऊद का अस्तित्व है इसीलिए मसीह मौऊद की मस्जिद पहले युग से जो इस्लाम का प्रारंभिक युग है बहुत दूर है। अत: इस कारण

अब हे दोस्तो! यह मीनार इसलिए तैयार किया जाता है ताकि हदीस के अनुसार मसीह मौऊद के युग की यादगार हो और महान भविष्यवाणी पूरी हो जाए, जिसका वर्णन पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में है कि

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ
اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ (बनी इस्राईल -2)

और जिसके मीनार का वर्णन हदीस में भी है कि मसीह का उतरना मीनार

शेष हाशिया - से मस्जिद अक़्सा कहलाने योग्य है और इस मस्जिद अक़्सा का मीनार इस योग्य है कि सब मीनारों से ऊंचा हो। क्योंकि यह मीनार मसीह मौऊद का सच्चाई को स्थापित करने, साहस व्यय करने, समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने और मिल्लत को बुलन्द करने का भौतिक चित्रण है। जैसा कि इस्लामी सच्चाई मसीह मौऊद के द्वारा उच्चतम श्रेणी की बुलन्दी तक पहुँच गई है और मसीह का साहस खोये हुए ईमान को सुरैया (सितारे) से वापस ला रहा है, इसी के अनुसार यह मीनार भी रूहानी बातों की श्रेष्ठता प्रकट कर रहा है। वह आवाज़ जो संसार के चारों ओर पहुँच जाएगी वह रूहानी तौर पर बहुत ऊंचे मीनार को चाहती है। लगभग बीस वर्ष हुए कि मैंने अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला का यह कलाम जो मेरी जीभ पर जारी किया गया लिखा था। अर्थात् यह कि

انا انزلناہ قریبًا من القادیان وبالحق انزلناہ وبالحق نزل. صدق اللّٰہ و رسولہٖ و
کان امر اللّٰہ مفعولًا

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 498, अर्थात् हमने इस मसीह मौऊद को क़ादियान में उतारा है और वह वास्तविक आवश्यकता के साथ उतारा गया और वास्तविक आवश्यकता के साथ उतरा। ख़ुदा ने क़ुर्आन में और रसूल ने हदीस में जो कुछ फ़रमाया था वह उसके आने से पूरा हुआ। इस इल्हाम के समय जैसा कि मैं कई बार लिख चुका हूँ, मुझे कश्फ़ी तौर पर यह भी ज्ञात हुआ था कि यह इल्हाम पवित्र क़ुर्आन में लिखा हुआ है और उस समय कश्फ़ी अवस्था में मेरे दिल में इस बात का विश्वास था कि पवित्र क़ुर्आन में तीन शहरों का वर्णन है अर्थात् मक्का और मदीना और क़ादियान का। इस बात पर लगभग बीस वर्ष हो गए जबकि मैंने बराहीन अहमदिया में लिखा था। अब इस किताब के लिखने के समय मुझ पर यह प्रकट हुआ कि मैंने जो कुछ बराहीन अहमदिया में क़ादियान के बारे में कश्फ़ी तौर पर लिखा अर्थात् यह कि उसकी चर्चा पवित्र क़ुर्आन में मौजूद हैं। वास्तव में यह सही बात है, क्योंकि यह निश्चित बात है कि पवित्र क़ुर्आन की यह आयत कि

के पास होगा। दमिश्क़ का वर्णन उस हदीस में जो मुस्लिम ने वर्णन की है इस उद्देश्य से है कि तीन ख़ुदा बनाने का बीजारोपण प्रथम दमिश्क़ से आरंभ हुआ है और मसीह मौऊद का नुज़ूल इस उद्देश्य से है ताकि तीन के विचारों को समाप्त करके पुनः एक ख़ुदा का प्रताप संसार में स्थापित करे। अतः इस संकेत के लिए वर्णन किया गया कि मसीह का मीनार जिसके निकट उसका नुज़ूल होगा दमिश्क़ से पूरब की ओर है, और यह बात सही भी है। क्योंकि

शेष हाशिया -

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ (बनी इस्राईल -2)

मे'राज-ए-मक़ानी व ज़मानी (स्थान तथा समय सम्बन्धी) दोनों पर आधारित है और इसके बिना मे'राज अपूर्ण रहता है। अतः जैसा कि स्थान सम्बन्धी मेराज (यात्रा) की दृष्टि से ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदुल हराम से बैतुल मुक़द्दस तक पहुंचा दिया था, ऐसा ही समय सम्बन्धी यात्रा की दृष्टि से आंहज़रत को इस्लाम के वैभव के युग से जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग था, इस्लामी बरकतों के युग तक जो मसीह मौऊद का युग है, पहुंचा दिया।★ अतः इस पहलु के अनुसार जो इस्लाम के अन्तिम युग तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कश्फ़ी यात्रा है मस्जिद अक़्सा से अभिप्राय मसीह मौऊद की मस्जिद है जो क़ादियान में स्थित है, जिसके बारे में बराहीन अहमदिया में ख़ुदा का कलाम यह है –

مُبَارَك وَ مُبَا رَك وَ كُلُّ اَمْرٍ مُّبَارَك يُّجْعَلُ فِيْهِ

और यह 'मुबारक' का शब्द जो कर्म और कर्ता के तौर पर आया पवित्र क़ुर्आन की आयत بارکنا حوله के अनुसार है। अतः इसमें कुछ सन्देह नहीं कि पवित्र क़ुर्आन में क़ादियान की चर्चा है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ (बनी इस्राईल -2)

★**हाशिए का हाशिया -** इस्लाम के वैभव का युग जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का युग था उसका बड़ा प्रभाव यह था कि हज़रत मूसा के समान मोमिनों को काफ़िरों के आक्रमण से मुक्ति दी, इसीलिए बैतुल्लाह का नाम भी बैत-ए-अमन रखा गया किन्तु बरकतों का युग जो मसीह मौऊद का युग है उसका प्रभाव यह है कि हर प्रकार के आराम पृथ्वी पर पैदा हो जाएँ और न केवल अमन अपितु ऐश्वर्यपूर्ण जीवन भी प्राप्त हो। (इसी से।)

क़ादियान जो ज़िला-गुरदासपुर पंजाब में है जो लाहौर से पश्चिम-दक्षिणी कोने में है वह दमिश्क़ से ठीक-ठीक पूर्वी दिशा में है। अत: इस से सिद्ध हुआ कि यह मीनारतुल मसीह भी दमिश्क़ से पूर्वी दिशा में है। प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि दमिश्क़ के शब्द पर आध्यात्मिक विचार करे कि इसमें दार्शनिकता क्या है जो यह लिखा गया है कि मसीह मौऊद दमिश्क़ के पूर्वी दिशा में उतरेगा। क्योंकि ख़ुदा तआला की निर्धारित बातें केवल सयोंगवश नहीं हो सकतीं बल्कि उनके नीचे रहस्य एवं संकेत होते हैं। कारण यह है कि समस्त बातें रहस्यों एवं

शेष हाशिया -

इस आयत के एक तो वही अर्थ हैं जो उलमा में प्रसिद्ध हैं अर्थात् यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्थान सम्बन्धी मे'राज का यह बयान है, परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि इसके अतिरिक्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक समय से सम्बन्धित मे'राज भी था जिसका उद्देश्य यह था ताकि आप की कश्फ़ी दृष्टि की विशेषता प्रकट हो और सिद्ध हो कि मसीही युग की बरकतें भी वास्तव में आप ही की बरकतें हैं जो आपके ध्यान और हिम्मत से पैदा हुई हैं, इसी कारण मसीह एक प्रकार से आप ही का रूप है और वह मे'राज अर्थात् दृष्टि की प्रौढ़ता, कश्फ़ी जगत की चरम सीमा तक थी जो मसीह के समय से चरितार्थ किया जाता है और उस मे'राज में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद हराम से मस्जिद अक़्सा तक यात्रा की वह मस्जिद अक़्सा यही है जो क़ादियान में पूरब की ओर है जिस का नाम ख़ुदा के कलाम ने मुबारक रखा है। यह मस्जिद भौतिक तौर पर मसीह मौऊद के आदेश से बनाई गई है और रूहानी तौर पर मसीह मौऊद की बरकतों एवं विशेषताओं की तस्वीर है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से बतौर अनुदान हैं और जैसा कि मस्जिद अल हराम की रूहानियत हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम की विशेषताएं तथा बैतुल मुक़द्दस की रूहानियत बनी इस्राईल के नबियों की विशेषताएं हैं। इसी प्रकार मसीह मौऊद की यह मस्जिद अक़्सा जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है उसकी रूहानी विशेषताओं की तस्वीर है।

अत: इस जांच पड़ताल से ज्ञात हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मे'राज में गुज़रे हुए युग की ओर चढ़ना है और भविष्यकाल की ओर उतरना है। इस मे'राज का निष्कर्ष यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहलों और बाद में आने वालों में सर्वश्रेषठ हैं, मे'राज जो मस्जिदुल हराम से आरम्भ हुआ उस में यह संकेत है कि

भेदों से भरी हुई हैं। अब हमारे विरोधी यद्यपि इस दमिश्क़ी हदीस को बार-बार पढ़ते हैं परन्तु वे इसका उत्तर नहीं दे सकते कि हदीस में जो यह बताया गया है कि मसीह मौऊद दमिश्क़ के पूरब दिशा के मीनार के निकट उतरेगा, इसमें क्या भेद है, अपितु उन्होंने एक कहानी की तरह इस हदीस को समझ लिया है। परन्तु स्मरण रहे कि यह कहानी नहीं है और ख़ुदा तआला व्यर्थ कार्यों से पवित्र

शेष हाशिया - आदम सफियुल्लाह की समस्त विशेषताएं और इब्राहीम खलीलुल्लाह की समस्त विशेषताएं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में मौजूद थीं। फिर यहाँ से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़दम स्थान सम्बन्धी यात्रा के तौर पर बैतुल मुक़द्दस की ओर गया। और उसमें यह संकेत था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में समस्त इस्राईली नबियों की विशेषताएं भी मौजूद हैं। और फिर इस स्थान से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कदम समय संबंधी यात्रा के तौर पर उस मस्जिद अक़्सा तक गया जो मसीह मौऊद की मस्जिद है। अर्थात् कश्फ़ी दृष्टि उस अन्तिम युग तक जो मसीह मौऊद का युग कहलाता है, पहुँच गई। यह इस बात की ओर संकेत था कि जो कुछ मसीह मौऊद को दिया गया वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हस्ती (अस्तित्व) में मौजूद है। और फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़दम आकाशीय यात्रा के तौर पर ऊपर की तरफ़ गया और 'क़ाबा कौसैन' का पद पाया। यह इस बात की ओर संकेत था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला की विशेषताओं के सर्वांगपूर्ण द्योतक थे। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस प्रकार का मे'राज अर्थात् मस्जिदुल हराम से मस्जिद अक़्सा तक जो समय और स्थान संबंधी दोनों प्रकार की यात्रा थी तथा साथ ही ख़ुदा तआला की ओर एक यात्रा थी जो समय और स्थान दोनों से पवित्र थी। इस नवीन ढंग की मे'राज से आशय यह था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खैरुल अव्वलीन वलआख़रीन (पहलों और बाद में आने वालों में सर्वश्रेष्ठ) हैं और उन का ख़ुदा की तरफ़ यात्रा करना उस बुलन्दी के बिन्दु पर है कि उस से अधिक की किसी मनुष्य को गुंजायश नहीं। परन्तु इस हाशिये में हमारा मतलब केवल यह है कि जैसा आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में कश्फ़ी तौर पर लिखा गया था कि पवित्र क़ुर्आन में क़ादियान का वर्णन है। यह कश्फ़ अत्यन्त सही और ठीक था, क्योंकि समय की दृष्टि से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मे'राज और मस्जिद अक़्सा की तरफ़ यात्रा मस्जिदुलहराम से आरम्भ होकर यह किसी प्रकार सही नहीं हो सकता जब तक ऐसी मस्जिद तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

है अपितु उस हदीस के शब्दों में जो पहले दमिश्क़ का वर्णन किया और फिर उसके पूर्वी ओर एक मीनार बताया एक बहुत बड़ा रहस्य्य है, और वह वही है जो अभी हम वर्णन कर चुके हैं। अर्थात् यह कि तस्लीस एवं तीन ख़ुदाओं की बुनियाद दमिश्क़ से ही पड़ी थी। क्या ही अशुभ वह दिन था जब पोलूस यहूदी ने एक स्वप्न की योजना बनाकर दमिश्क़ में प्रवेश किया, तथा कुछ भोले-भाले

शेष हाशिया - वसल्लम की यात्रा स्वीकार न की जाए जो समय की दूरी की दृष्टि से मस्जिद अक़्सा हो और स्पष्ट है कि मसीह मौऊद का वह युग है जो इस्लामी समुद्र का आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के मुक़ाबले पर दूसरा किनारा है। यात्रा का आरंभ जो मस्जिदुल हराम से वर्णन किया गया और यात्रा का अंत जो उस बहुत दूर की मस्जिद तक निर्धारित किया गया जिसके चारों ओर को बरकत दी गई है। यह बरकत देना इस बात की ओर संकेत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में इस्लाम का वैभव प्रकट किया गया और हराम किया गया कि काफ़िरों का अत्याचार इस्लाम को मिटा दे जैसा कि आयत-

وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا (आले इमरान-98)

से स्पष्ट है परन्तु मसीह मौऊद के युग में जिसका दूसरा नाम महदी भी है, समस्त क़ौमों पर इस्लाम की बरकतें सिद्ध की जाएँगी और दिखाया जायेगा कि एक इस्लाम ही बरकत वाला धर्म है जैसा कि वर्णन किया गया है कि वह ऐसा बरकतों का युग होगा कि संसार में मैत्री अर्थात् सुलह की बरकत फैलेगी और आकाश अपने निशानों के साथ बरकतें दिखायेगा तथा पृथ्वी में नाना प्रकार के फलों के उपलब्ध होने और भिन्न-भिन्न प्रकारों के अरामों से इतनी बरकतें फैल जाएँगी जो इस से पहले कभी नहीं फैली होंगी। इसी कारण से मसीह मौऊद और महदी मा'हूद के युग का नाम हदीसों में बरकतों का युग (ज़मानुल बरकात) है जैसा कि तुम देखते हो कि हज़ारों नवीन अविष्कारों ने पृथ्वी पर कैसी बरकतें और आराम फैला दिए हैं। क्योंकि रेल के द्वारा पूरब और पश्चिम के मेवे एक स्थान पर एकत्र हो सकते हैं। तथा तार के द्वारा हज़ारों कोसों की ख़बरें पहुँच जाती हैं। सफ़र के समस्त संकट अचानक दूर हो गए जो पूर्व युग में थे।

अत: इस युग का नाम जिसमें हम हैं "बरकतों का युग" है, परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग "समर्थनों का युग" और "आपदाओं के निवारण का युग" था और इस युग में ख़ुदा तआला का बड़ा उद्देश्य बुराई का निवारण था। इसलिए ख़ुदा तआला ने उस युग में इस्लाम को अपने शक्तिशाली हाथ से शत्रुओं से बचाया और

ईसाइयों के पास यह व्यक्त किया कि ख़ुदावन्द मसीह मुझे दिखाई दिया और उस शिक्षा को प्रकाशित करने के लिए आदेश दिया कि जैसे वह भी एक ख़ुदा है। अत: वही स्वप्न तस्लीस की धारणा का बीजारोपण था। निष्कर्ष यह कि बहुत बड़े शिर्क का खेत पहले दमिश्क़ में ही बढ़ा और फूला और फिर यह ज़हर अन्य-अन्य स्थानों में फैलता गया। चूंकि ख़ुदा तआला को मालूम था कि मनुष्य को ख़ुदा बनाने का बुनियादी पत्थर पहले दमिश्क़ में ही रखा गया, इसलिए ख़ुदा

शेष हाशिया - शत्रुओं को यों हांक दिया जैसे कि एक शक्तिशाली पुरुष अपनी लाठी से कुत्तों को हांक देता है।

फिर चूंकि मसीह मौऊद और महदी मौऊद का युग "बरकतों का युग" था इसलिए ख़ुदा तआला ने उसके बारे में फ़रमाया - بَارَكْنَا حَوْلَهٗ अर्थात् मसीह मौऊद के यात्री के तौर पर थोड़े समय तक ठहरने के स्थान के इर्द-गिर्द जहाँ देखोगे हर ओर बरकतें दिखाई देंगी। अत: हम देखते हैं कि पृथ्वी कैसे आबाद हो गई, बाग़ कैसे प्रचुर मात्रा में हो गए, नहरें कैसे अधिक संख्या में जारी हो गईं, रहन-सहन के आराम की वस्तुएं कितनी बड़ी संख्या में विद्यमान हो गईं। फिर ज़मीनी बरकतें हैं और जैसे इस युग में ज़मीनी और आकाशीय बरकतें प्रचुरता के साथ प्रकट हो गई हैं, इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में सहायताओं का भी एक दरिया बह रहा था।

निष्कर्ष यह कि युग दो प्रकार के हैं- (i) सहायताओं तथा आपदाओं को दूर करने का युग (ii) बरकतों तथा पवित्र एवं वैध वस्तुओं का युग। ख़ुदा तआला ने अपने इस कथन में इसी की ओर संकेत किया है -

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ (बनी इस्राईल - 2)

अत: जान ले कि अल्लाह तआला के कथन में मस्जिदुल हराम का शब्द उस युग को बताता है जिसमें ख़ुदा की सहायता से अल्लाह तआला के हुर्मात* का सम्मान प्रकट होगा उसकी हुदूद (धर्मानुसार दिए जाने वाले दण्ड), उसके आदेशों, कर्त्तव्यों का सम्मान प्रकट होगा और तू उसके धर्म के वैभव तथा उसकी मिल्लत का रोब-दबदबा देखेगा। वह युग हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग है और मस्जिदुल-हराम वह घर जिसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का में बनाया और वह आज तक मौजूद है, अल्लाह तआला ने प्रत्येक आपदा

* **हुर्मात -** अल्लाह तआला की प्रतिष्ठित एवं सम्मानित चीज़ें। (अनुवादक)

ने उस युग के वर्णन के समय जब ख़ुदा का स्वाभिमान (ग़ैरत) उस झूठी शिक्षा को समाप्त करेगी फिर दमिश्क़ का वर्णन किया और कहा कि मसीह का मीनार अर्थात् उसके प्रकाश के प्रकट होने का स्थान दमिश्क़ के पूरब की ओर है। इस इबारत से यह अभिप्राय नहीं था कि वह मीनार दमिश्क़ का एक भाग है और दमिश्क़ में स्थापित है जैसा की दुर्भाग्य से समझा गया अपितु तात्पर्य यह था कि मसीह मौऊद का सूर्य के प्रकाश के समान दमिश्क़ के पूर्वी ओर से उदय करके पश्चिमी अंधकार को दूर करेगा और यह एक सूक्ष्म संकेत था। क्योंकि मसीह के मीनार को जिस के निकट उस का नुज़ूल (उतरना) है दमिश्क़ के पूर्वी ओर बताया गया तथा दमिश्क़ की तस्लीस को उसके पश्चिमी ओर रखा, और इस प्रकार आने वाले युग के बारे में यह भविष्यवाणी की कि जब मसीह मौऊद आयेगा तो सूर्य के समान जो पूरब से निकलता है प्रकट होगा और उसके सामने

शेष हाशिया - से उसकी रक्षा की। इस कथन के बाद अल्लाह तआला का यह कथन الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ अर्थात् उस युग का पता देता है जिसमें पृथ्वी पर हर पहलू से बरकतें प्रकट होंगी, जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है, और वह युग मसीह मौऊद तथा महदी मा'हूद का युग है और मस्जिद अक़्सा वह मस्जिद जिसे मसीह मौऊद ने क़ादियान में बनाया, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग से दूरी होने कारण अक़्सा नाम रखा था और जब्कि इस्लाम के प्रारंभिक युग से दूरी पर स्थापित है। इस पर विचार कर यह अल्लाम (जिसके ज्ञान की सीमा न हो) ख़ुदा के रहस्स्यों से प्रदान किया गया है।

निष्कर्ष यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मे'राज तीन प्रकार पर विभाजित है- सैरे मकानी अर्थात (स्थान संबंधी यात्रा), सैरे ज़मानी अर्थात (समय संबंधी यात्रा) तथा न सैरे मकानी न सैरे ज़मानी। सैरे मकानी में संकेत है प्रभुत्व एवं विजयों की ओर अर्थात् यह संकेत कि इस्लामी देश मक्का से बैतुल मुक़द्दस तक फैलेगा। और सैरे ज़मानी में संकेत है कि शिक्षाओं तथा प्रभावों की ओर। अर्थात् यह कि मसीह मौऊद का युग भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रभावों से प्रशिक्षण प्राप्त होगा। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है - وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूरत अल जुमअ:- 4) और स्थान एवं समय से मुक्त यात्रा में ख़ुदा के उच्चतम श्रेणी के सानिध्य और निकटता की ओर संकेत है जिस पर सानिध्य की सम्भावना का दायरा समाप्त है। अत: समझ ले। (इसी से)

तस्लीस का दीपक मुर्दा जो पश्चिम की ओर स्थापित है दिन-प्रतिदिन मलीन होता जाएगा। क्योंकि पूरब से निकलना ख़ुदा की किताबों से वैभव का लक्षण ठहराया गया है और पश्चिम की ओर जाना पतन का लक्षण। और इसी लक्षण की ओर संकेत करने के लिए ख़ुदा तआला ने क़ादियान को जो मसीह मौऊद के उतरने का स्थान है दमिश्क़ से पूरब की ओर आबाद किया तथा दमिश्क़ को उस से पश्चिम की ओर रखा तथा हमारे विरोधियों को बड़ा धोखा यह लगा है कि उन्होंने हदीस के शब्दों में यह देखकर कि मसीह मौऊद उस मीनार के निकट उतरेगा जो दमिश्क़ के पूर्वी ओर है यह समझ लिया कि वह मीनार दमिश्क़ में ही स्थापित है। हालांकि दमिश्क़ में ऐसे मीनार का अस्तित्व नहीं और यह नहीं सोचा कि यदि कहा जाए कि उदाहरणतया अमुक स्थान, अमुक शहर के पूर्वी ओर है तो क्या हमेशा उस से यह अभिप्राय हुआ करता है कि वह स्थान उस शहर से संलग्न है? और यदि हदीस में ऐसे शब्द भी होते जिन से निश्चित तौर पर यही समझा जाता कि वह मीनार दमिश्क़ के साथ संलग्न (सटा हुआ) है और अन्य संभावना की गुंजायश न होती, तथापि ऐसा न होता। परन्तु अब चूंकि हदीस पर विचार करने से स्पष्ट तौर पर समझ आता है कि इस हदीस का केवल यह उद्देश्य है कि वह मीनार दमिश्क़ के पूर्वी ओर है न कि वास्तव में उस शहर का भाग। अत: ईमानदारी से दूर और बुद्धिमत्ता से परे है कि ख़ुदा तआला की उन दार्शनिकताओं एवं रहस्यों की उपेक्षा करके जिन को हमने उस विज्ञापन में व्यक्त कर दिया है अकारण इस बात पर बल दिया जाये कि वह मीनार जिसके निकट मसीह का नुज़ूल (उतरना) है वह दमिश्क़ में स्थापित है। बल्कि जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस मीनारे से मस्जिद अक़्सा का मीनारा अभिप्राय लिया है जो दमिश्क़ से पूरब की ओर है, अर्थात् मसीह मौऊद की मस्जिद जिसे अभी विस्तार दिया गया है और इमारत भी बढ़ाई गई है। यह मस्जिद वास्तव में दमिश्क़ से पूरब की ओर है, और इस मस्जिद को केवल इस उद्देश्य से विस्तार दिया गया और बनाया गया है ताकि दमिश्क़ की खराबियों का सुधार करे और यह मीनारा वह मीनारा है जिसकी नबवी हदीसों में आवश्यकता स्वीकार की गयी। इस मीनारतुल मसीह का ख़र्च दस हज़ार रुपए से

कम नहीं है। अब जो दोस्त इस मीनार के निर्माण हेतु सहायता करेंगे मैं निस्संदेह समझता हूँ कि वे एक भारी सेवा को सम्पन्न करेंगे और मैं निस्सन्देह जानता हूँ कि ऐसे अवसर पर ख़र्च करना हरगिज़-हरगिज़ उनकी हानि का कारण नहीं होगा वे ख़ुदा को क़र्ज़ा देंगे और ब्याज सहित वापस लेंगे। काश उनके दिल समझें कि ख़ुदा के नज़दीक उस कार्य की कितनी महत्ता है। जिस ख़ुदा ने मीनारे का आदेश दिया है उस ने इस बात की ओर संकेत कर दिया है कि इस्लाम की मुर्दा हालत में इसी स्थान से जीवन रूपी रूह फूंकी जाएगी और यह स्पष्ट विजय का मैदान होगा। किंतु यह विजय उन हथियारों के साथ नहीं होगी जो मनुष्य बनाते हैं बल्कि आकाशीय शस्त्र के साथ है जिस शस्त्र से फ़रिश्ते काम लेते हैं।

आज से मानवीय जिहाद जो तलवार से किया जाता था ख़ुदा के आदेश से बन्द किया गया। अब इस के बाद जो व्यक्ति काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम धर्म योद्धा (ग़ाज़ी) रखता है वह उस रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा करता है जिसने आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व फरमा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर तलवार के समस्त जिहाद समाप्त हो जायेंगे। अतः अब मेरे प्रादुर्भाव के पश्चात् तलवार का कोई जिहाद नहीं। हमारी ओर से अमन और मैत्री का सफेद झंडा बुलन्द किया गया है। ख़ुदा की ओर बुलाने का एक मार्ग नहीं। अतः जिस मार्ग का मूर्ख लोग ऐतराज़ कर चुके हैं ख़ुदा तआला की हिकमत और युक्ति हित नहीं चाहती कि उसी मार्ग को पुनः अपनाया जाये। इसका उदाहरण ऐसा ही है कि जैसे जिन निशानों को पहले झुठलाया जा चुका है हमारे सरदार ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं दिए गए। **इसलिए मसीह मौऊद अपनी फ़ौज को उस वर्जित क्षेत्र से पीछे हट जाने का आदेश देता है, जो बुराई का मुक़ाबला बुराई के साथ करता है वह हम में से नहीं है। स्वयं को उपद्रवी के आक्रमण से बचाओ परन्तु स्वयं उपद्रवपूर्ण मुक़ाबला न करो। जो व्यक्ति एक व्यक्ति को इस उद्देश्य से कड़वी दवा देता है ताकि वह ठीक हो जाये वह उस से नेकी करता है। ऐसे व्यक्ति के बारे में हम नहीं कहते कि उस ने बुराई का**

बुराई से मुक़ाबला किया। प्रत्येक नेकी और बदी नीयत से ही जन्म लेती है। अतः चाहिए कि तुम्हारी नीयत कभी अपवित्र न हो ताकि तुम फ़रिश्तों के समान हो जाओ।

यह विज्ञापन मीनार के निर्माण हेतु लिखा गया है परन्तु स्मरण रहे कि मस्जिद के कुछ भाग की इमारतें भी अभी ठीक नहीं है। इसलिए यह तय हुआ है कि मीनार के ख़र्चों में से जो कुछ बचेगा वह मस्जिद की दूसरी इमारत पर लगा दिया जायेगा। यह कार्य बहुत जल्दी का है दिलों को खोलो और ख़ुदा को प्रसन्न करो। यह रुपया बहुत सी बरकतें साथ लेकर पुनः आप लोगों की ओर वापस आयेगा। मैं इस से अधिक कहना नहीं चाहता और समाप्त करता हूँ तथा ख़ुदा के सुपुर्द।

अन्ततः मैं एक आवश्यक बात की ओर अपने दोस्तों को ध्यान दिलाता हूँ कि इस मीनार में हमारा यह भी उद्देश्य है कि मीनार के अन्दर या जैसा उचित हो एक गोल कमरा या किसी ढंग का कमरा बना दिया जाए, जिसमें कम से कम सौ आदमी बैठ सकें यह कमरा उपदेश और धार्मिक वार्तालापों के लिए काम आएगा। क्योंकि हमारा इरादा है कि वर्ष में एक या दो बार क़ादियान में धार्मिक भाषणों का एक जल्सा हुआ करे और उस जल्से में हर एक व्यक्ति मुसलमानों, हिन्दुओं, आर्यों, ईसाइयों और सिखों में से अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन करेगा, किन्तु यह शर्त होगी कि अन्य धर्म पर किसी प्रकार का प्रहार न करे। केवल अपने धर्म और उसके समर्थन में जो चाहे सभ्यतापूर्वक कहे। इसलिए लिखा जाता है कि हमारे दोस्त इस विज्ञापन को प्रत्येक कारीगर आर्किटेक्ट को दिखाएँ, और यदि वह कोई उत्तम नमूना इस मीनार का बताए जिसमें दोनों कथित उद्देश्य पूरे हो सकते हों तो अति शीघ्र हमें इस से सूचित करें।

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

28 मई सन् 1900 ई॰

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

يَاعِبَادَاللّٰهِ فَكِّرُوْا فِيْ يَوْمِكُمْ هٰذَا يَوْمِ الْاَضْحٰى ۔ فَاِنَّهٗ اُوْدِعَ اَسْرَارًا لِاُولِي النُّهٰى وَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ يُضَحّٰى بِكَثِيْرٍ مِنَ الْعَجْمَاوَاتِ۔ وَتُنْحَرُ اٰبَالٌ مِّنَ الْجِمَالِ وَخَنَاطِيْلُ مِنَ الْبَقَرَاتِ۔ وَتُذْبَحُ اَقَاطِيْعُ مِنَ الْغَنَمِ ابْتِغَأَ مَرْضَاتِ رَبِّ الْكَاءِنَاتِ۔ وَ كَذَالِكَ يُفْعَلُ مِنْ اِبْتِدَاءِ زَمَانِ الْاِسْلَامِ ۔ اِلٰى هٰذِهِ

हे अल्लाह के बन्दो! अपने इस दिन में कि जो क़ुर्बानी की ईद का दिन है विचार करो और सोचो क्योंकि इन क़ुर्बानियों में बुद्धिमानों के लिए भेद गुप्त रखे गए हैं और आप लोगों को मालूम है कि इस दिन बहुत से जानवर ज़िब्ह किए जाते हैं और कई रेवड़ ऊंटों के और कई रेवड़ गायों के ज़िब्ह किये जाते हैं और कई रेवड़ बकरियों के क़ुर्बानी करते हैं और यह सब कुछ ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। और इसी प्रकार इस्लामी युग के प्रारंभ से इन दिनों तक किया जाता है और मेरा विचार है कि ये कुर्बानियां जो हमारी

الْاَ يَّامِ۔ وَ ظَنِّیْ اَنَّ الْاَضَاحِیَ فِیْ شَرِیْعَتِنَا الْغَرَّاءِ۔ قَدْخَرَجَتْ مِنْ حَدِّ الْاِحْصَاءِ ۔ وَفَاقَتْ ضَحَایَا الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ مِنْ اُمَمِ الْاَنْبِیَاءِ ۔ وَبَلَغَتْ کَثْرَةُ الذَّبَاءِحِ اِلٰی حَدٍّ غُطِّیَ بِهٖ وَجْهُ الْاَرْضِ مِنَ الدِّمَاءِ ۔ حَتّٰی لَوْجُمِعَتْ دِمَاءُ هَا وَاُرِیْدُ اِجْرَاءُ هَا لَجَرَتْ مِنْهَا الْاَنْهَارُ۔ وَسَالَتِ الْبِحَارُ وَفَاضَتِ الْغُدْرُ وَالْاَوْدِیَةُ الْکِبَارُ۔ وَقَدْعُدَّ هٰذَا الْعَمَلُ فِیْ مِلَّتِنَا مِمَّا یُقَرِّبُ اِلَی اللّٰهِ سُبْحَانَهٗ ۔ وَحُسِبَ کَمَطِیَّةٍ تُحَاکِی الْبَرْقَ فِی السَّیْرِ وَلُمْعَانَهٗ ۔ فَلِاَجْلِ ذَالِكَ سُمِّیَ الضَّحَایَا قُرْبَانًا ۔ بِمَا وَرَدَ اِنَّهَا تَزِیْدُ قُرْبًا وَلُقْیَانًا کُلَّ مَنْ قَرَّبَ اِخْلَاصًا وَتَعَبُّدًا وَاِیْمَانًا ۔ وَاِنَّهَا مِنْ

इस उज्ज्वल शरीअत में होती हैं गणना की परिधि से बाहर हैं और उनको उन क़ुर्बानियों पर प्रमुखता है कि जो नबियों की पहली उम्मतों के लोग किया करते थे, और क़ुर्बानियों की अधिकता इस सीमा तक पहुँच गई है कि उन के ख़ूनों से पृथ्वी का मुंह छिप गया है। यहाँ तक कि यदि उन के ख़ून एकत्र किए जाएँ और उन को बहाने का इरादा किया जाए तो उन से नहरें जारी हो जाएँ और नदियाँ बह निकलें और पृथ्वी के निचले भागों में तथा घाटियों में ख़ून प्रवाहित होने लगे और यह काम हमारे धर्म में उन कामों में गिने गए हैं कि जो अल्लाह तआला के सानिध्य का कारण होते हैं। और उस सवारी की भांति ये समझे गए हैं कि जो अपने चलने में बिजली के समान हैं जिसे बिजली की चमक से समरूपता प्राप्त है और इसी कारण से उन ज़िब्ह होने वाले जानवरों का नाम क़ुर्बानी रखा गया। क्योंकि हदीसों में आया है कि यह क़ुर्बानियां ख़ुदा तआला के सानिध्य और मुलाक़ात का कारण हैं, उस व्यक्ति के लिए कि जो क़ुर्बानी को निश्छलता और ख़ुदा की इबादत और इमानदारी से अदा करता है और ये क़ुर्बानियां शरीअत की महान इबादतों में से हैं और इसीलिए क़ुर्बानी का नाम अरबी में **नसीकः** है और नुसुक का शब्द अरबी भाषा में आज्ञापालन करने तथा इबादत के अर्थों में आता है और ऐसा ही यह शब्द नुसुक उन जानवरों के ज़िब्ह करने पर भी कथित

اَعْظَمِ نُسُكِ الشَّرِيْعَةِ۔ وَلِذَالِكَ سُمِّيَتْ بِالنَّسِيْكَةِ ۔ وَالنُّسُكُ اَلطَّاعَةُ وَالْعِبَادَةُ فِي اللِّسَانِ الْعَرَبِيَّةِ۔ وَ كَذَالِكَ جَاءَ لَفْظُ النُّسُكِ بِمَعْنَى ذَبْحِ الذَّبِيْحَةِ ۔ فَهٰذَ الْاِشْتِرَاكُ يَدُلُّ قَطْعًا عَلٰى اَنَّ الْعَابِدَ فِي الْحَقِيْقَةِ هُوَالَّذِىْ ذَبَحَ نَفْسَهٗ وَقُوَاهُ۔ وَ كُلَّ مَنْ اَصْبَاهُ لِرِضٰى رَبِّ الْخَلِيْقَةِ وَ ذَبِّ الْهَوٰى ۔ حَتّٰى تَهَافَتَ وَانْمَحٰى۔ وَذَابَ وَغَابَ وَاخْتَفٰى ۔ وَهَبَّتْ عَلَيْهِ عَوَاصِفُ الْفَنَاءِ وَسَفَتْ ذَرَّاتِهٖ شَذَاءِدُ هٰذِهِ الْهَوْجَاءِ۔ وَمَنْ فَكَّرَ فِيْ هٰذَيْنِ الْمَفْهُوْمَيْنِ الْمُشْتَرِكَيْنِ ۔ وَتَدَبَّرَ الْمَقَامَ بِتَيَقُّظِ الْقَلْبِ وَفَتْحِ الْعَيْنَيْنِ۔ فَلَا يَبْقٰى لَهٗ خِفَاءٌ وَلَا مِرَاءٌ۔ فِيْ اَنَّ هٰذَا اِيْمَاءٌ ۔ اِلٰى اَنَّ الْعِبَادَةَ الْمُنْجِيَةَ مِنَ

भाषा में प्रयोग होता है जिनका ज़िब्ह करना शरीअत के अनुसार है। अत: यह भागीदारी (समानता) कि जो नुसुक के अर्थों में पाई जाती है निश्चित तौर पर इस बात को सिद्ध करती है कि वास्तविक और सच्चा इबादत करने वाला वही व्यक्ति है जिसने अपने अस्तित्व को उसकी सम्पूर्ण शक्तियों सहित और उस के उन प्रियतमों सहित जिनकी ओर उसका दिल खींचा गया है, अपने रब्ब की प्रसन्नता के लिए ज़िब्ह कर डाला है और तामसिक इच्छाओं को दूर किया यहाँ तक कि समस्त इच्छाएं टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ीं और नष्ट हो गईं और वह स्वयं भी पिघल गया और उसके अस्तित्व का कुछ भी निशान न रहा और लुप्त हो गया तथा पुन: (नश्वरता) की हवाएं उस पर चलीं और उसके अस्तित्व के कणों को उस हवा के तेज़ धक्के उड़ा कर ले गए और जिस व्यक्ति ने इन दोनों अर्थों में कि जो परस्पर नुसुक के शब्द में समानता रखते हैं विचार किया होगा और उस स्थान को चिन्तन की दृष्टि से देखा होगा और अपने दिल की जागरूकता और दोनों आँखों के खोलने से आगे पीछे को दृष्टिगत रखा होगा तो उस पर छुपा नहीं रहेगा और इस बात में किसी प्रकार का विवाद उसके दामन को नहीं पकड़ेगा कि यह दो अर्थों की समानता कि जो नुसुक के शब्द में पाई जाती है उस रहस्य की ओर संकेत है कि वह इबादत जो आख़िरत (परलोक) की हानि से मुक्ति देती है वह उस तामासिक वृत्ति

الْخَسَارَةِ۔ هِیَ ذَبْحُ النَّفْسِ الْاَمَّارَةِ۔ وَنَحْرُهَا بِمُدَی الْاِنْقِطَاعِ
اِلَی اللّٰہِ ذِی الْاٰلَاءِ وَالْاَمْرِ وَالْاِمَارَةِ۔ مَعَ تَحَمُّلِ اَنْوَاعِ الْمَرَارَةِ ۔
لِتَنْجُوَ النَّفْسُ مِنْ مَوْتِ الْغَرَارَةِ۔ وَ هٰذَا هُوَ مَعْنَی الْاِسْلَامِ۔
وَحَقِیْقَةُ الْاِنْقِیَادِ التَّامِّ وَالْمُسْلِمُ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰہِ رَبِّ
الْعَالَمِیْنَ ۔ وَ لَهٗ نَحَرَ نَاقَةَ نَفْسِهٖ وَتَلَّهَا لِلْجَبِیْنِ۔ وَمَا نَسِیَ الْحَیْنَ
فِی الْاِسْلَامِ۔ هِیَ تَذْکِرَةٌ لِّهٰذَا الْمَرَامِ۔ وَ حث عَلٰی تَحْصِیْلِ
هٰذَا الْمَقَامِ۔ وَاِرْهَاصٌ لِحَقِیْقَةٍ تَحْصُلُ بَعْدَ السُّلُوْكِ التَّامِّ۔
فَوَجَبَ عَلٰی کُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ کَانَ یَبْتَغِیْ رِضَاءَ اللّٰہِ الْوَدُوْدِ۔
اَنْ یَّفْهَمَ هٰذِهِ الْحَقِیْقَةَ وَیَجْعَلَهَا عَیْنَ الْمَقْصُوْدِ وَیُدْخِلَهَا فِیْ
نَفْسِهٖ حَتّٰی تَسْرِیَ فِیْ کُلِّ ذَرَّةِ الْوَجُوْدِ وَلَا یَهْدَءُ وَلَا یَسْکُنُ قَبْلَ

का ज़िब्ह करना है कि जो बुरे कामों के लिए अधिक से अधिक जोश रखता है और ऐसा हाकिम है कि हर समय बुराई का आदेश देता रहता है। अत: मुक्ति इस में है कि इस बुरा आदेश देने वाले को 'अल्लाह तआला का हो जाने' की छुरियों से ज़िब्ह कर दिया जाए और सृष्टि से संबंध विच्छेद करके ख़ुदा तआला को अपना मित्र और दुल की सकून ठहरा दिया जाए और इस के साथ नाना प्रकार की कटुताओं को सहन भी किया जाए ताकि इन्सान लापरवाही की मृत्यु से मुक्ति पाए और यही इस्लाम के मायने हैं और यही पूर्ण आज्ञापालन की वास्तविकता है। और मुसलमान वह है जिसने अपना मुंह ज़िब्ह होने के लिए ख़ुदा तआला के आगे रख दिया हो तथा अपने नफ़्स की ऊंटनी को उसके लिए कुर्बान कर दिया हो और ज़िब्ह के लिए मस्तक के बल उसे गिरा दिया हो तथा मौत से एक पल भी लापरवाह न हो। अत: सारांश यह है कि ज़बीहा और कुर्बानियां जो इस्लाम में प्रचिलित हैं वे सब इसी अभीष्ट के लिए जो नफ़्स की दानशीलता है बतौर यादिहानी हैं और इस मुक़ाम को प्राप्त करने के लिए एक प्रेरणा है और उस वास्तविकता के लिए जो पूर्ण साधना के बाद प्राप्त होती है एक इर्हास (अग्रिम भाग) है। अत: प्रत्येक मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्री पर जो परम प्रिय ख़ुदा की ख़ुशी का अभिलाषी है,

اَدَاءِ هٰـذِهِ الضَّحِيَّـةِ لِلـرَّبِّ الْمَعْبُـوْدِ۔ وَلَا يَقْنَـعُ بِنَمُـوْذَجٍ وَقِشْـرٍ كَالْجُهَلاءِ وَالْعُمْيَـانِ۔ بَـلْ يُـؤَدِّیْ حَقِيْقَـةَ اَضْحَاتِـهٖ۔ وَيَقْضِـیْ بِجَمِيْـعِ حَصَاتِـهٖ۔ وَرُوْحِ تُقَاتِـهٖ رُوْحَ الْقُرْبَـانِ۔ هٰـذَا هُـوَ مُنْتَهٰـی سُـلُوْكِ السَّـالِكِيْنَ وَغَايَـةُ مَقْصَـدِ الْعَارِفِـيْنَ ۔ وَعَلَيْـهِ يَخْتَتِـمُ جَمِيْـعُ مَـدَارِجِ الْاَتْقِيَـاءِ۔ وَبِـهٖ يَكْمُـلُ سَـاءِرُ مَرَاحِـلِ الصِّدِّيْقِـيْنَ وَالْاَصْفِيَـاءِ۔ وَاِلَيْـهِ يَنْتَهِـیْ سَـيْرُ الْاَوْلِيَـاءِ۔ وَاِذَابَلَغْـتَ اِلٰی هٰـذَا فَقَـدْ بَلَّغْتَ جُهْـدَكَ اِلَی الْاِنْتِهَـاءِ۔ وَفُـزْتَ بِمَرْتَبَـةِ الْفَنَـاءِ ۔ فَحِـيْنَءِذٍ تَصِـلُ شَـجَرَةُ سُـلُوْكِكَ اِلٰی اَتَـمِّ النَّمَـاءِ ۔ وَتَبْلُـغُ عُنُـقُ رُوْحِـكَ اِلٰی لُعَـاعِ رَوْضَـةِ الْقُـدْسِ وَالْكِبْرِيَاءِ۔ كَالنَّاقَةِالْعَنْقَـاءِ ۔ اِذَا اَوْصَلَـتْ عُنُقَهَـا اِلَی الشَّـجَرَةِ الْخَضْـرَاءِ ۔ وَبَعْـدَ ذَالِـكَ جَذَبَـاتٌ وَنَفَحَـاتٌ

अनिवार्य है कि इस वास्तविकता को समझे और उसको अपना उद्देश्य ही समझे और इस वास्तविकता को अपने नफ़्स के अन्दर दाख़िल करे यहाँ तक कि वह वास्तविकता अस्तित्व के प्रत्येक कण में प्रविष्ट हो जाए और चैन से न बैठे जब तक कि उस क़ुर्बानी को अपने मा'बूद (उपास्य) रब्ब के लिए अदा न करे और अनपढ़ों एवं मूर्खों के समान केवल नमूने और खोखली खाल को ही पर्याप्त न समझ बैठे बल्कि चाहिए कि अपनी क़ुर्बानी की वास्तविकता को अदा करे, और अपनी पूर्ण बुद्धि के साथ और अपने संयम की रूह से क़ुर्बानी की रूह को अदा करे। यह वह श्रेणी है जिस पर साधकों की साधना का अन्त होता है। और आरिफ़ों (आध्यात्म ज्ञानियों) का उद्देश्य अपनी चरम सीमा तक पहुँचता है और इस पर संयम की समस्त श्रेणियां समाप्त हो जाती हैं, और सत्यनिष्ठों तथा वली लोगों की सब मंज़िलें (पड़ाव) पूरी हो जाती हैं और यहाँ तक पहुँच कर वलियों की यात्रा अपने चरम बिन्दु तक जा पहुँचती है और जब तू उस स्थान तक पहुंह गया तो तूने अपने प्रयास को चरम सीमा तक पहुंचा दिया और फ़ना की श्रेणी तक पहुँच गया। अत: उस समय तेरी साधना (सुलूक) का वृक्ष अपने पूर्ण पोषण एवं विकास को पहुँच जाएगा और तेरी रूह की गर्दन पवित्रता और श्रेष्ठता के चरागाह की हरी

وَتَجَلِّيَاتٌ مِنَ الْحَضْرَةِ الْاَحَدِيَّةِ ۔ لِيَقْطَعَ بَعْضَ بَقَايَا عُرُوْقِ الْبَشَرِيَّةِ ۔ وَبَعْدَ ذَالِكَ اِحْيَاءٌ وَاِبْقَاءٌ وَاِدْنَاءٌ لِلنَّفْسِ الْمُطْمَءِنَّةِ الرَّاضِيَةِ الْمَرْضِيَّةِ الْفَانِيَةِ۔ لِيَسْتَعِدَّ الْعَبْدُ لِقَبُوْلِ الْفَيْضِ بَعْدَ الْحَيَاتِ الثَّانِيَةِ ۔ وَبَعْدَذَالِكَ يُكْسَى الْاِنْسَانُ الْكَامِلُ حُلَّةَ الْخِلَافَةِمِنَ الْحَضْرَةِ ۔ وَ يُصَبَّغُ بِصِبْغِ صِفَاتِ الْاُلُوْهِيَّةِ ۔ عَلٰى وَجْهِ الظِّلِّيَّةِ ۔ تَحْقِيْقًا لِّمَقَامِ الْخِلَافَةِ ۔ وَبَعْدَذَالِكَ يَنْزِلُ اِلَى الْخَلْقِ لِيَجْذِبَهُمْ اِلَى الرُّوْحَانِيَّةِ ۔ وَيُخْرِجَهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ الْاَرْضِيَّةِ ۔ اِلَى الْاَنْوَارِالسَّمَاوِيَّةِ ۔ وَيُجْعَلُ وَارِثًا لِكُلِّ مَنْ مَّضٰى مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَاَهْلِ الْعِلْمِ وَالدِّرَايَةِ ۔ وَشُمُوْسِ الْقُرْبِ وَالْوَلَايَةِ ۔ وَيُعْطٰى لَهٗ عِلْمُ الْاَوَّلِيْنَ ۔ وَمَعَارِفُ

घास तक पहुँच जाएगी, उस ऊंटनी के समान जिसकी गर्दन लम्बी हो और उसने अपनी गर्दन को एक हरे भरे वृक्ष तक पहुंचा दिया हो और इसके बाद एक ख़ुदा की भावनाएँ हैं, सुगंधें है और प्रकाश की झलकियाँ हैं ताकि वह कुछ उन रगों को काट दे जो मनुष्यता में से शेष रह गई हों। और उसके बाद जीवित करना है तथा शेष रखना और निकट करना उस नफ़्स (वृत्ति) को जो ख़ुदा के साथ आराम पा चुका है जो ख़ुदा से प्रसन्न और ख़ुदा उस से प्रसन्न तथा वह नफ़्स (वृत्ति) फ़ना हो चुका है। ताकि यह बन्दा दूसरे जीवन के बाद वरदान स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाए और इसके पश्चात् कामिल (पूर्ण) इन्सान को ख़ुदा तआला की ओर से ख़िलाफ़त का लिबास पहनाया जाता है और ख़ुदाई विशेषताओं के साथ रंग दिया जाता है, और यह रंग ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) के तौर पर होता है ताकि ख़िलाफ़त का स्थान निश्चित हो जाए और फिर इसके बाद मख्लूक़ (सृष्टि) की ओर उतरता है ताकि उनको रूहानियत की ओर खींचे। और पृथ्वी के अंधकारों से बाहर लाकर आसमानी प्रकाशों की ओर ले जाए और यह इन्सान उन सब का वारिस किया जाता है जो नबियों, सत्यनिष्ठों तथा विद्वानों और प्रतिभाशाली लोगों में से तथा सानिध्य और वलायत (वली की श्रेणी) के सूर्यों में से इससे पहले गुज़र चुके हैं

السَّابِقِيْنَ ۔ مِنْ اُولِی الْاَبْصَارِ وَحُكَمَاءِ الْمِلَّة ۔ تَحْقِيْقًا لِمَقَامِ الْوَرَاثَةِ ۔ ثُمَّ يَمْكُثُ هٰذَا الْعَبْدُ فِی الْاَرْضِ اِلٰی مُدَّةٍ شَاءَرَبُّهٗ رَبُّ الْعِزَّةِ ۔ لِيُنِيْرَ الْخَلْقَ بِنُوْرِ الْهِدَايَةِ ۔ وَاِذَا اَنَارَ النَّاسَ بِنُوْرِ رَبِّهٖ اَوْ بَلَّغَ الْاَمْرَ بِقَدَرِ الْكِفَايَةِ فَحِيْنَءِذٍ يَتِمُّ اسْمُهٗ وَيَدْعُوْهُ رَبُّهٗ وَيُرْفَعُ رُوْحُهٗ اِلٰی نُقْطَتِهِ النَّفْسِيَّةِ ۔ وَهٰذَا هُوَ مَعْنَی الرَّفْعِ عِنْدَ اَهْلِ الْعِلْمِ وَالْمَعْرِفَةِ ۔ وَالْمَرْفُوْعُ مَنْ يُّسْقٰی كَاْسَ الوِصَالِ۔ مِنْ اَيْدِی الْمَحْبُوْبِ الَّذِیْ هُوَ لُجَّةُ الْجَمَالِ ۔ وَيُدْخَلُ تَحْتَ رِدَاءِ الرُّبُوْبِيَّةِ ۔ مَعَ الْعُبُوْدِيَّةِ الْاَبَدِيَّةِ ۔ وَهٰذَا اٰخِرُ مَقَامٍ يَبْلُغُهٗ طَالِبُ الْحَقِّ فِی النَّشْاَةِ الْاِنْسَانِيَّةِ ۔ فَلَا تَغْفُلُوْا عَنْ هٰذَا الْمَقَامِ يَا كَافَّةَ الْبَرَايَا ۔ وَلَا عَنِ السِّرِّ الَّذِیْ يُوْجَدُ فِی الضَّحَايَا

और उसे ज्ञान दिया जाता है पहले लोगों का और मआरिफ पहले बुद्धिमानों एवं मिल्लत के दार्शनिकों की ताकि उसके लिए विरासत का मुक़ाम निश्चित हो जाए। फिर यह बन्दा पृथ्वी पर एक अवधि तक जो उसके रब्ब के इरादे में है ठहरा रहता है ताकि सृष्टि को हिदायत के नूर से प्रकाशित करे और जब जनता को अपने रब्ब के नूर के साथ प्रकाशित कर चुका या तब्लीग़ (प्रचार) को पर्याप्त होने तक पूरा कर दिया तो उस समय उसका नाम पूरा हो जाता है और उसका रब्ब (प्रतिपालक) उसे बुलाता है और उसकी रूह उसके मूल केंद्र की ओर उठाई जाती है, और अहले इल्म (विद्वानों) और आध्यात्म ज्ञानियों के निकट 'रफ़ा' के यही अर्थ हैं। और 'रफ़ा किया हुआ' वह है जिसको उस प्रियतम के हाथ से मिलन का प्याला पिलाया जाता है जो सुन्दरता और सौन्दर्य का दरिया है और प्रतिपालन की चादर के नीचे दाख़िल किया जाता है इस बात के बावजूद कि बन्दगी सदैव रहती है। और यह वह अन्तिम स्थान है कि जिस तक एक सत्याभिलाषी मानवीय जीवन में पहुँच सकता है। अत: इस स्थान से लापरवाह मत हो, हे सृष्टि के गिरोह और न उस भेद से लापरवाह हो जो क़ुर्बानी में पाया जाता है तथा क़ुर्बानी को इस वास्तविकता को देखने के लिए दर्पणों के समान बना दो और उन वसीयतों को

۔ وَاجْعَلُوا الضَّحَايَا لِرُؤْيَةِ تِلْكَ الْحَقِيْقَةِ كَالْمَرَايَا ۔ وَلَا تَذْهَلُوْا عَنْ هٰذِهِ الْوَصَايَا ۔ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوْا رَبَّهُمْ وَالْمَنَايَا ۔ وَقَدْ اُشِيْرَ اِلٰى هٰذَا السِّرِّ الْمَكْتُوْمِ ۔ فِيْ كَلَامِ رَبِّنَا الْقَيُّوْمِ ۔ فَقَالَ وَهُوَ اَصْدَقُ الصَّادِقِيْنَ ۔ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ وَ مَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ فَانْظُرْ كَيْفَ فَسَّرَ النُّسُكَ بِلَفْظِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ۔ وَاَشَارَ بِهٖ اِلٰى حَقِيْقَةِ الْاَضْحَاةِ ۔ فَفَكِّرُوْا فِيْهِ يَاذَوِى الْحَصَاةِ۔ وَمَنْ ضَحّٰى مَعَ عِلْمٍ حَقِيْقَةَ ضَحِيَّتِهٖ ۔ وَصِدْقِ طَوِيَّتِهٖ۔ وَخُلُوْصِ نِيَّتِهٖ ۔ فَقَدْ ضَحّٰى بِنَفْسِهٖ وَمُهْجَتِهٖ ۔ وَاَبْنَاءِهٖ وَحَفَدَتِهٖ وَلَهٗ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۔ كَأَجْرِ اَبْرَاهِيْمَ عند ربّه الكريم ۔ واليه اشار سَيّدنا المصطفٰى۔و رَسُوْلُنَا

मत भुलाओ और उन लोगों की भांति न हो जाओ जिन्होंने अपने ख़ुदा और अपनी मौतों को भुला रखा है और इस भेद की ओर ख़ुदा तआला के कलाम में संकेत किया गया। अत: ख़ुदा जो समस्त सत्यनिष्ठों से अधिक सत्यनिष्ठ है अपने रसूल से कहता है कि उन लोगों को कह दे कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन और मेरी मौत सब उस ख़ुदा के लिए है जो समस्त संसारों का पालने वाला है। अत: देख कि नुसुक शब्द की जीवन और मृत्यु के शब्द से कैसे तफ़्सीर की है और इस तफ़्सीर से क़ुर्बानी की वास्तविकता की ओर संकेत किया है। अत: हे बुद्धिमानो! इस पर विचार करो और जिसने अपनी क़ुर्बानी की वास्तविकता को मालूम कर के क़ुर्बानी अदा की और सच्चे दिल तथा शुद्ध नीयत के साथ अदा की तो निश्चित ही उसने अपनी जान (प्राण) और अपने बेटों और अपने मित्रों की क़ुर्बानी कर दी और उसके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है जैसा कि इब्राहीम के लिए उसके दयालु रब्ब के पास प्रतिफल था और इसी की ओर हमारे प्रितष्ठित सरदार और हमारे प्रतिष्ठित रसूल जो संयमियों का इमाम और नबियों का ख़ातम है, संकेत किया और फ़रमाया और वह ख़ुदा के बाद सब सच्चों से अधिक सच्चा है, कि निस्सन्देह क़ुर्बानियां वही सवारियां हैं जो ख़ुदा तआला तक पहुंचाती

الْمُجْتَبٰى ۔ وَاِمَامُ الْمُتَّقِيْنَ ۔ وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ ۔ وَقَالَ وَهُوَ بَعْدَ اللّٰهِ
اَصْدَقُ الصَّادِقِيْنَ اِنَّ الضَّحَايَا هِيَ الْمُطَايَا ۔ تُوْصِلُ اِلٰى رَبِّ
الْبَرَايَا وَتَمْحُوْ الْخَطَايَا ۔ وَتَدْفَعُ الْبَلَايَا ۔ هٰذَا مَا بَلَغَنَا مِنْ
خَيْرِ الْبَرِيَّةِ ۔ عَلَيْهِ صَلٰوَاةُ اللّٰهِ وَالْبَرَكَاتُ السَّنِيَّةُ ۔ وَاِنَّهٗ أَوْمَأَ
فِيْهِ اِلٰى حِكَمِ الضَّحِيَّةِ بِكَلِمَاتٍ كَالدُّرَرِ الْبَهِيَّةِ ۔ فَالْأَسِفُ كُلَّ
الْأَسِفُ اَنَّ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ هٰذِهِ النِّكَاتِ الْخَفِيَّةُ وَلَا
يَتَّبِعُوْنَ هٰذِهِ الْوَصِيَّةَ ۔ وَلَيْسَ عِنْدَهُمْ مَعْنَى الْعِيْدِ ۔ مِنْ دُوْنِ
الْغُسْلِ وَلَبْسِ الْجَدِيْدِ وَالْخَضْمِ وَ الْقَضْمِ مَعَ الْاَهْلِ وَالْخَدَمِ
وَالْعَبِيْدِ ثُمَّ الْخُرُوْجِ بِالزِّيْنَةِ لِلتَّعْيِيْدِ كَالصَّنَادِيْدِ ۔ وَ تَرَى الْأَ
طَائِبَ مِنَ الْأَطْعِمَةِ مُنْتَهٰى طَرَبِهِمْ فِيهٰذَا الْيَوْمِ ۔ وَالنَّفَائِسِ
مِنَ الْاَلْبِسَةِ غَايَةِ اَرَبِهِمْ لِاَرَائَةِ الْقَوْمِ ۔ وَلَا يَدْرُوْنَ مَاالْاَضْحَاةُ

हैं और ग़लतियों को मिटाती हैं और विपत्तियों को दूर करती हैं। ये वे बातें हैं जो हमें ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहुंचीं जो समस्त सृष्टि से उत्तम हैं। उन पर ख़ुदा तआला का सलाम और बरकतें हों और आप ने इन शब्दों में क़ुर्बानियों की हिक्मतों की ओर सरस वाक्यों के साथ जो मोतियों के समान हैं, संकेत किया है। परन्तु अफ़सोस और बहुत अफ़सोस है कि अधिकतर लोग इन गुप्त रहस्यों को नहीं समझते और इस वसीयत का अनुकरण नहीं करते और उन के नज़दीक ईद के मायने इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि स्नान करें और नए कपड़े पहनें और भोजन को पूरे मुंह के साथ तथा दांतों के किनारों से चबाएं। वे स्वयं और उनके परिवार तथा नौकर और दास, और फिर सजावट के साथ ईद की नमाज़ के लिए बाहर निकलें जैसे बड़े रईस होते हैं और तू देखेगा कि अच्छे भोजनों में उस दिन उन की सब से अधिक ख़ुशी है और इसी प्रकार अच्छे और उत्तम लिबासों में चरम सीमा उनकी आवश्यकताओं की है ताकि लोगों को दिखाएँ। और नहीं जानते कि क़ुर्बानी क्या चीज़ है तथा किस उद्देश्य के लिए बकरियां और गायें ज़िब्ह की जाती हैं। उनके निकट उनकी ईद फ़ज्र से लेकर इशा के समय

وَلِاَيِّ غَـرَضٍ يُذْبَـحُ الْغَنَـمُ وَالْبَقَـرَاتُ ۔ وَ عِنْدَهُـمْ عِيْـدُ هُـمْ مِـنَ الْبُكْـرَةِ اِلَى الْعَشِـيِّ ۔ لَيْسَ اِلَّا لِـلْاَكْلِ وَالشُّـرْبِ وَالْعَيْشِ الْهِـنِيِّ ۔ وَاللَّبَـاسِ الْبَهِـيِّ وَالْفَـرَسِ الشَّـرِيِّ ۔ وَاللَّحْمِ الطَّـرِيِّ ۔ وَمَـا تَـرٰى عَمَلَـهُمْ فِي يَوْمِـهِمْ هٰـذَا اِلَّا اَكْتِّسَـاءَ النَّاعَمَـاتِ وَالمَشْـطَ وَالْاِكْتِحَـالِ وَتَضْمِيْـخَ الْمَلْبُوْسَـاتِ وَتَسْـوِيَةَ الطُّـرَرِ وَالذَّوَاِيـبِ كَالنِّسَـاءِ الْمُتَبَرِّجَاتِثُـمَّ نَقَـرَاتٍ كَنَقْـرَةِ الدَّجَاجَـةِ فِيالصَّلٰـوةِ ۔ مَـعَ عـدم الحضـور وهجـوم الوسـاوس والشـتات ۔ ثمالتمايُـلَ الٰى انـواع الاغذيـة والمطعومـات ۔ وملاء البطـون بالـوان النعـم كالنعـم وَالْعَجَمَـاوَاتِ وَالْمَيْـلَ الى المَلَاهِـى والملاعـب

तक केवल इसलिए है कि खूब खाया जाए और पिया जाए और भोग विलास को रुचिकर किया जाए तथा उत्तम लिबास पहना जाए और चतुर घोड़ों पर सवारी की जाए और ताज़ा गोश्त खाया जाए और उस दिन उनका काम तू इसके अतिरिक्त नहीं देखेगा कि नर्म और मुलायम कपड़े पहनें और बालों को कंघी करें और आँखों को सुरमा लगाएं और लिबासों पर इत्र मलें और अपने तुर्रे और बाल खूब साफ़ करें जैसा कि श्रंगार करने वाली स्त्रियाँ किया करती हैं और फिर मुर्गी की भांति जो दाने पर चोंच मारती हैं कुछ बार नमाज़ के लिए हरकत करें, ऐसी हरकत कि उसके साथ ध्यान का कोई भी भाग न हो और भ्रमों की बहुतात हो और दिल में उथल-पुथल हो तथा नाना प्रकार के व्यंजनों की ओर झुक जाएँ और भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजनों की ओर तथा चौपायों के समान तरह-तरह की नेमतों से पेट भर लें और खेल-कूद की ओर झुकें तथा मूर्खतापूर्ण कार्यों की ओर आकृष्ट हों और कामवासनाओं की चरागाहों में अपने नफ्सों को छोड़ दें तथा यक्कों पर, ऊंटों पर और ऊंटनी पर और खच्चरों पर तथा लोगों की गर्दनों पर सवारी करें। कई प्रकार की शोभाओं के साथ और सारा दिन व्यर्थ बातों में नष्ट करने में और एक दूसरे को गोश्त का उपहार भेजने तथा परस्पर गर्व करना, गाय के गोश्त और बकरों के गोश्त के साथ और खुशियाँ तथा रंग-बिरंगी शादियाँ और नफ़्स के आकर्षण और

والْجَهَـلَاتِ وَسَـرْحِ النُّفُـوس فی مراتِـعِ الشَّـهَوَات ۔ والرکـوب علی الافـراس ۔ والعجـل والعنـاس ۔ والجمـال والبغـال ورقـاب النـاس ۔ مـع انـواعٍ مـن التزیینـات ۔ وافنـاء الیـوم کُلّہٖ فی الْخُزَعْبِیْـلَاتِ والهدایـا مـن الْقَلایَـا ۔ والتَّفاخُـرَ بِلُحُـومِ الْبَقَـرَاتِ والْجَدایـا ۔ وَالْاَفْـرَاحِ والمَـرَاحِ والْجَذَبَـاتِ وَالْجَمَـاحِ۔ وَالضِّحْـكَ وَالْقَهْقَهَـةَ بِابْـدَاءِ النَّوَاجِذِوالثنایـا ۔ والتشـوق الیٰ رقـص البغایـا ۔ وبوسـهن وعناقهـن ۔ وبعـد هٰـذا نطاقهـن ۔ فانـا للّٰہ عـلیٰ مصائـب الاسـلام ۔ وانقـلاب الایـام ۔ ماتـت القلـوب و کثـرت الذنـوب ۔ واشـتدت الکـروب ۔ فعنـد هٰـذہ اللیـلة اللَّیْـلَاءِ ۔ وظلمـات الهوجـاء اِقْتَضٰـی رَحْـمُ اللّٰہِ نُوْرَالسَّـمَاءَ★ ۔

उद्दण्डताएँ तथा हंसी और ठहाका मारकर हँसना पिछले दांतों के निकालने से और अगले दांतों के निकालने से और बाज़ारी स्त्रियों के नाच की ओर रुचि रखना और उनका चुम्बन और गले लगाना। फिर इसके पश्चात् उनके कमरबन्द का स्थान। अत: हम इस्लाम के संकटों पर इन्ना लिल्लाह पढ़ते हैं और काल चक्र पर दिल मर गए और गुनाह बहुत हो गए और बेचेनियाँ बढ़ गईं। अत: इस अन्धकारमय रात के समय और तीव्र वायु के अन्धकार के समय ख़ुदा के रहम (दया) ने चाहा कि आकाश★से प्रकाश उतरे। अत: मैं वह प्रकाश हूँ और वह मुजद्दिद हूँ कि

★**हाशिया :-** यह जो हदीसों में लिखा है कि मसीह मौऊद उतरेगा यह नुज़ूल का शब्द इस संकेत के लिए ग्रहण किया गया है कि वह युग ऐसा होगा कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर अन्धकार छा जायेगा और सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई पृथ्वी से उठ जाएगी तथा पृथ्वी अन्याय एवं अत्याचार से भर जाएगी तब ख़ुदा आकाश से एक प्रकाश उतारेगा और उस से पृथ्वी को दोबारा प्रकाशित कर देगा, वह ऊपर से आयेगा, क्योंकि नूर हमेशा ऊपर की ओर से आता है। और मसीह मौऊद का समय ऐसा समय वर्णन किया गया है कि उस समय इस्लाम के प्रचार के समस्त संसाधन निलंबित हो जाएंगे और मुसलामानों के दोनों हाथ निराश्रय हो जाएंगे क्योंकि ख़ुदा का स्वाभिमान इस बात को चाहेगा कि इस आरोप को समाप्त कर दे और दूर करे जो कहा गया है कि इस्लाम तलवार द्वारा फैलाया गया। अत: मसीह मौऊद के समय के लिए यह आदेश है कि तलवारों को

فَاَنَا ذَالِكَ النور ۔ و المجدد المأمور ۔ والعبد المنصور والمهدى المعهود ۔ والمسيح الموعود ۔ وانى نزلت بمنزلةٍ من ربّى لا يعلمها احدٌ من الناس ۔

وَاِنَّ سِرِّىْ اَخْفٰى واَنَّنِى مِنْ اَكْثَرِ اهلِ الله فضلًا عن عامة الاُناس ۔ وَاِنّ مَقامى اَبْعَدُ من ايدى الغوّاصِيْن ۔ وَصُعُودى ارفعُ مِن قياس القائسين ۔ وانّ قدمى هٰذہٖ اسرع من القلاص فى مسالك ربّ الناس ۔ فلا تقيسونى باحدٍ ولا احدًا بى ولا تهلكوا

जो ख़ुदा तआला के आदेश से आया है। सहायता प्राप्त बन्दा हूँ। और वह महदी हूं जिसका आना निश्चित हो चुका है और वह मसीह हूँ जिसके आने का वादा था और अपने मैं रब्ब की ओर से उस मर्तबे पर अवतरित हुआ हूँ जिसे मनुष्यों में से कोई नहीं जानता।

और मेरा भेद अधिकतर वलियों से छिपा हुआ और बहुत दूर है। और कहाँ यह कि जन सामान्य को इसका ज्ञान हो सके और मेरा मुक़ाम गोता लगाने वालों के हाथों से बहुत दूर है और मेरी आध्यात्मिक उन्नति का अनुमान नहीं किया जा सकता और मेरा यह क़दम ख़ुदा तआला के मार्ग में तीव्रगामी ऊंटों

शेष हाशिया :- म्यान में करें तथा धर्म के लिए कोई व्यक्ति तलवार न उठाए और यदि उठाएगा तो काफ़िरों से बुरी तरह से पराजित होगा तथा अपमानित होगा। जैसा कि हज़रत मूसा की जमाअत जिन को उन्होंने मिस्र से निकाला था। ऐसी लड़ाइयों में हमेशा पराजित होती रही, जिन लड़ाइयों के लिए मूसा की इच्छा के विरुद्ध वे अग्रसर हुए। अत: अब भी ऐसा ही होगा क्योंकि मसीह मौऊद का आकाश से उतरना इसी संकेत से बताया गया है कि उसका हाथ ज़मीनी संसाधनों को नहीं छुएगा और वह केवल आसमान के पानी से इस्लाम के बाग़ को सींचेगा, क्योंकि अब ख़ुदा तआला इस चमत्कार को दिखाना चाहता है कि इस्लाम अपने प्रसारित होने में तलवार और मानवीय सामानों का मुहताज नहीं। अत: जो व्यक्ति इस स्पष्ट निषेध तथा हदीस की मौजूदगी के बावजूद फिर तलवार उठाता है और धर्म योद्धा बनना चाहता है तो मानो वह चाहता है कि उस चमत्कार को संदिग्ध कर दे जिसको प्रकट करने का ख़ुदा तआला ने इरादा किया है। अर्थात् मानवीय सामानों के बिना इस्लाम को पृथ्वी (संसार) पर विजयी तथा जनता का प्रिय बना देना। (इसी से)

انفسكم بالريب والعماس ۔ وانّى لُبٌّ لا قشر معهٗ وروحٌ لاجسد معهٗ و شمسٌ لا يحجبها دخان الشماس ۔ واطلبوا مثلى ولن تجدوه وان تطلبوه بالنبراس ۔ ولا فخر ولٰكن تحديث لنعم الله الذى هو غارسٌ لهٰذا الغراس ۔ وانى غسلت بماء النور وطهرت بعين القدس من الاوساخ والادناس ۔ وسمّانى ربّى احمد فاحمدونى و لا تشتمونى و لا توصلوا امركم الى الالباس۔ و من حمدنى وما غادر من نوع حمدٍ فما مان ۔ و من كذب

से अधिक तीव्रतर है इसलिए मेरी किसी अन्य के साथ तुलना मत करो और न किसी अन्य की मेरे साथ। और स्वयं को सन्देह और लड़ाई के साथ तबाह मत करो और मैं मग्ज़ हूँ जिसके साथ छिल्का नहीं और रूह (आत्मा) हूँ जिसके साथ शरीर नहीं और वह सूर्य हूँ जिसे शत्रुता और बैर का धुआं छिपा नहीं सकता। और कोई ऐसा व्यक्ति तलाश करो जो मेरे समान हो और हरगिज़ नहीं पाओगे यद्यपि दीपक लेकर भी ढूँढ़ते रहो और यह कोई गर्व नहीं परन्तु उस ख़ुदा की नेमतों का धन्यवाद है जिसने इस नोनिहाल (नए पौधे) को लगाया है और मैं नूर (प्रकाश) के पानी के साथ नह्लाया गया हूँ और ख़ुदाई पवित्रता के चश्मे (झरने) से पवित्र किया गया हूँ और शुद्ध किया गया हूँ समस्त मैलों और मलिनताओं से और मेरे रब्ब ने मेरा नाम अहमद रखा है। अत: मेरी प्रशंसा करो और मुझे गालियाँ न दो और अपनी बात को निराशा के स्तर तक मत पहुँचाओ, और जिस ने मेरी प्रशंसा की और प्रशंसा का कोई प्रकार न छोड़ा तो उसने सच बोला और झूठ बोलने का काम नहीं किया। और जिसने इस बयान को झुठलाया तो उसने झूठ बोला है और अपने ख़ुदा के क्रोध को भड़काया है। अत: अफ़सोस उस व्यक्ति पर जिसने सन्देह किया और वादे को तोड़ा और दिल को शैतान के भ्रमों से लिप्त किया और मैं बहुत ऊंची दरगाह से आया हूँ ताकि मेरा ख़ुदा मेरे द्वारा अपनी कुछ प्रतापी एवं सौन्दर्य संबंधी विशेषताएं दिखाए अर्थात् बुराई का दूर करना और भलाई का पहुँचाना, क्योंकि युग को इस बात की आवश्यकता

هٰذا البيان فقدمان ۔ واغضب الرحمٰن ۔ فويلٌ للذى شك وَ فَسَخَ العهد و فَكَّ وَ لَوَّثَ بِطَائفٍ من الجن الجنانَ ۔ وانى جئتُ من الحضرة الرفيعة العالية ۔ لِيُرِىَ بِى رَبِّىْ مِنْ بَعْضِ صِفاته الجلالية۔ والجمالية ۔ اعنى دفع الضير وافاضة الخير فان الزمان كان محتاجًا الىٰ دافع شرٍ طغٰى ۔ والىٰ رافع خيرٍ انحط واختفٰى۔ فاقتضت العناية الالٰهيّة ان يعطى الزمان ماسأل بلسان الحال۔ وَيُرْحَمَ طَبَقَاتُ النساء والرجال ۔ فجعلنى مظهر المسيح عيسى ابن مريم لدفع الضرّ وابادة مواد الغواية ۔ وجعلنى مظهر النبى المهدى احمد اكرم لافاضة الخير واعادة عهاد الدراية والهداية ۔ وتطهير الناس من دَرَنِ الغفلة والجناية ۔ فَجِءْتُ فى الحلتين المهزودتين المصبّغتين بصبغ الجلال وصبغ الجمال ۔ واعطيت صفة الافناء والاحياء من الرب الفعال ۔ فاما الجلال

थी कि उस बुराई को दूर किया जाए जो सीमा से अधिक हो गई थी और उस भलाई को ऊंचा किया जाए जो जाती रही थी। इसलिए ख़ुदा की कृपा ने चाहा कि युग को वह वस्तु दी जाए जिसे वह अपनी वर्तमान व्यवहार रूपी ज़बान से मांगता है और पुरुषों एवं स्त्रियों पर दया (रहम) की जाए। अत: मुझे मसीह ईसा बिन मरयम का द्योतक बनाया ताकि हानि और गुमराही के तत्वों को दूर करे और मुझे अति प्रतिष्ठित महदी का द्योतक बनाया ताकि लोगों को लाभ पहुंचाए और दिरायत एवं हिदायत की वर्षा को दोबारा उतारे। और लोगों को लापरवाही और पाप कर्म से पवित्र करे। अत: मैं पीले रंग के दो लिबासों में आया हूँ जो प्रताप एवं सौन्दर्य के रंग से रंगे हुए है और मुझ को फ़ना करने और जीवित करने की विशेषता दी गई है और मुझे यह विशेषता ख़ुदा तआला की ओर से मिली है परन्तु वह प्रताप जो मुझे दिया गया है वह मेरे उस बुरूज़ का प्रभाव (असर) है जो ईस्वी बुरूज़ है और जो ख़ुदा की ओर से है ☆ ताकि मैं उस शिर्क की बुराई

الذی اعطیت فھو اثرٌ لبروزی العیسوی من اللّٰہ ذی الجلال ★۔ لابید بہٖ شر الشرک المواج الموجود فی عقائد اھل الضلال۔ المشتعل بکمال الاشتعال۔ الذی ھو اکبر من کل شرٍّ فی عین اللّٰہ عالم الاحوال۔ ولاھدم بہٖ عمود الافتراء علی اللّٰہ والافتعال۔ واما الجمال الذی اعطیت فھو اثرٌ لبروزی الاَحْمَدی من اللّٰہ ذی اللطف والنوال۔ لاعید بہٖ صلاح التوحید المفقود من الالسن والقلوب والاقوال والافعال۔ واقیم بہٖ امر التدیّن والانتحال۔ وامرت ان اقتل* خنازیر الافساد والالحاد والاضلال۔ الذین یدوسون درر الحق تحت النعال۔ و یُھْلِکون حرث الناس

* اللفظ لفظ الحدیث کما جاء فی البخاری والمراد من القتل اتمام الحجۃ و ابطال الباطل بالدلائل القاطعۃ والاٰیات السماویۃ لا القتل حقیقۃ. منہ

को मिटाऊँ जो गुमराहों की आस्थाओं में लहर मार रही है और मौजूद है तथा अपनी पूरी उत्तेजना से भड़क रही है और जो परिस्थितियों को जानने वाले ख़ुदा की दृष्टि में प्रत्येक बुराई से बढ़ कर है और ताकि मैं उसके माध्यम से उस झूठ के स्तंभ को गिरा दूँ जो ख़ुदा पर गढ़ते हैं परन्तु सौन्दर्य जो मुझे मिला है वह मेरे उस बुरूज़ का प्रभाव है जिसका नाम प्रदान करने वाले ख़ुदा की ओर से बुरूज़-ए-अहमदी है ताकि मैं उसके माध्यम से तौहीद (एकेश्वरवाद) की नेकी को जो ज़ुबानों, दिलों और कार्यों से जाती रही है वापस लाऊं और उसके द्वारा धार्मिकता को स्थापित करूँ। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं फ़साद, नास्तिकता और पथभ्रष्ट (गुमराह) करने के उन

★الحاشیۃ۔ قد قلت غیر مرۃ انی ما اتیت بالسیف ولا السنان۔ وانما اتیت بالاٰیات والقوۃ القدسیۃ وحسن البیان۔ فجلالی من السماء لا بالجنود والاعوان۔ منہ

☆**हाशिया :-** मैंने कई बार बताया है कि मैं तलवारों और भालों के साथ नहीं आया हूँ अपितु मेरे पास निशान हैं और क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया (पवित्र शक्ति) और अच्छी वर्णन शैली है। अत: मेरा प्रताप आकाशीय है न कि सेनाओं के साथ। (इसी से।)

ويُخْرِبُـون زروع الْاِيمانو التَّـوَرُّعِ وَالْاَعْـمـال ۔ وقتـلى هٰـذا بحربـةٍ سـماويةٍ لابالسـيوف والنبـال ۔ كمـا هوزعـم المحرومـين مـن الحـق وصـدق المقـال ۔ فانـهم ضَلّـوا و اَضَلُّـوا كثـيرًا مـن الجُهّـال ۔ وان الحـرب حرّمـت عـلىّ وسـبق لى ان اضـع الحـرب ولا اتوجـه الى الْقِتـال ۔ فـلا جِهـادَ الّا جهـادُ اللسـان والاٰيـات والاسـتدلال ۔ و كذالـك اُمِـرتُ اَنْ اَمْـلَأَ بُيُـوْتَ المؤمنـين وَجُرُبَـهم مـن المـال ۔ ولٰكـن لا باللُّجَـيْنِ والدَّجّـال ۔ بـل بمـال العلـم والرشـد والهدايـة واليقـين عـلىٰ وجـه الكمـال ۔ وجعـل الايمـان اثبـت مـن الجبـال ۔ وتبشـير الْمُثْقَلِـيْنَ تحـت الاثقـال ۔ فبشـرٰى لكـم قـد جـاء كُـم الْمَسِـيحُ ۔

सूअरों को मारूँ जो सच्चाई के रत्नों को पैरों के नीचे कुचलते हैं, लोगों की खेतियों को उजाड़ते हैं और ईमान एवं संयम तथा कर्मों की खेतियों को ख़राब करते हैं और यह मारना आकाशीय हथियारों के साथ है तलवारों तथा तीरों (बाणों) के साथ नहीं। जैसा कि यह विचार उन लोगों का है जो सच और सच बोलने से वंचित हैं क्योंकि वे स्वयं गुमराह हुए और मूर्खों में से बहुतों को गुमराह किया है और यह सच बात है कि काफ़िरों के साथ लड़ना मुझ पर हराम (अवैध) किया गया है और मेरे अस्तित्व से पहले मेरे लिए निर्धारित हुआ है कि लड़ाई को छोड़ दूँ और रक्तपात की ओर ध्यान न दूँ। अत: मौखिक जिहाद और निशान तथा तर्कों के अतिरिक्त कोई जिहाद शेष नहीं रहा और इसी प्रकार मुझे यह भी आदेश है कि मुसलमानों के घरों को और उनके तोश: दानों (सफ़र पर खाना ले जाने का बर्तन) को माल से भर दूँ, परन्तु चाँदी-सोने के माल से नहीं बल्कि ज्ञान और हिदायत और विश्वास के माल से तथा उस माल से कि ईमान को पर्वतों से अधिक सुदृढ़ किया जाए और जो लोग बोझों के नीचे दबे हुए हैं उनको ख़ुशख़बरी दी जाए। अत: तुम को ख़ुशख़बरी हो कि तुम्हारे पास मसीह आया।

और सर्वशक्तिमान (क़ादिर) ने उसको स्पर्श किया तथा उसे सरस कलाम

ومسحه القادر واعطی له الکلام الفصیح ۔ وانّهٗ یعصمکم من فرقۃٍ ھی للاضلال تسیحُ ۔ والی اللّٰہ یدعو ویصیح۔ وکل شبھۃٍ یُزیل و یُزیح ۔ وطوبٰی لکم قدجاء کم المھدی المعھود ۔ ومعه المال الکثیر والمتاع المنضود ۔ وانهٗ یسعٰی لِیُرِدَّ الیکم الغنی المفقود ۔ وَیَسْتَخْرِجُ الاقبال الموءود ۔ ما کان حدیث یُّفْتَرٰی ۔ بَلْ نورٌ من اللّٰہ مع اٰیاتٍ کبرٰی ۔ ایھا الناس انی انا المسیح المحمّدی ۔ وانّی انا احمدنالمھدی ۔ وان ربّی معی الٰی یوم لَحْدِیْ مِنْ یَوْمِ مَھْدِی ۔ واِنِّیْ اُعْطِیْتُ ضرامًا اَکّالًا ۔ وماءً زُلالًا ۔ وَاَنَا کَوکَبٌ یَمانِیٌّ ۔ ووابلٌ روحانیٌّ ۔ ایذائی سنانٌ مُذَرَّبٌ ۔ ودعائی دواءٌ مُجَرَّبٌ ۔ اُرِیْ قومًا جلالًا وقومًا اٰخرین جمالًا ۔ وبیدی حربۃٌ ابیدبھا عادات الظلم والذنوب۔

प्रदान किया और वह तुमको उस फ़िर्क़े से बचाता है जो गुमराह करने के लिए पृथ्वी पर भ्रमण करता है। और ख़ुदा की ओर बुलाता है और हर सन्देह को दूर करता है और तुम्हें मुबारक हो क्योंकि महदी मा'हूद तुम्हारे पास आ पहुंचा और उसके पास बहुत सा धन-दौलत है जो परतें लगाकर रखा है और वह प्रयास करता है कि वह माल जो तुम्हारे पास से जाता रहा है फिर तुम्हारी ओर लौट आए और प्रतिष्ठा जो जीवित रहने की अवस्था क़ब्र में है फिर क़ब्र से निकले। यह वह बात नहीं कि झूठ बना ली जाए, बल्कि ख़ुदा का प्रकाश है जो अपने साथ बड़े-बड़े निशान रखता है। हे लोगो! मैं वह मसीह हूँ कि जो मुहम्मदी सिलसिले में से है और मैं अहमद महदी हूँ तथा वास्तव में मेरा रब्ब मेरे साथ है मेरे बचपन से लेकर मेरी क़ब्र तक और मुझे वह आग मिली है जो खा जाने वाली है और वह पानी जो मीठा है तथा मैं समय का सितारा हूँ और रूहानी वर्षा हूँ मेरा कष्ट देना तीव्र धार वाला भाला है और मेरी दुआ अनुभव प्राप्त दवा है। एक क़ौम को मैं अपना प्रताप दिखाता हूँ और दूसरी क़ौम को सौन्दर्य दिखाता हूँ। और मेरे हाथ में हथियार है उसके द्वारा मैं अन्याय और गुनाह की

وفی الاخـرٰی شـربةٌ اعیدبهـا حیـاة القلـوب ۔ فـاسٌ للافنـاء ۔ وانفـاسٌ للاحیـاء ۔

اَمّـا جـلالی فبمـا قُـصِ کابـن مریـم اسـتیصالی ۔ وامـا جمـالی فبمـا فـارت رحمـتی کسـیدی احمـد لاهـدی قومًـا غفلـوا عـن الـربّ المتعـالی ۔ اَفَاَنتـم تعجبـون ۔ و الی الزمـان وضرورتـہٖ لا تلتفتـون ۔ ا لا تـرون الیٰ زمـان احتـاج الی الرب الفعّـال ۔ لیُرٰی لقومٍ صفـة جـلالہٖ وللاٰخریـن صفـة الجمـال ۔ وقدظهـرت الاٰیـات ۔ و تبیّنـت العلامـات ۔ وانقطعت الخصومـات ۔ فمالکـم لا تنظـرون۔ وَاِنْکَسَـفَتِ الشـمسُ والقمـرُ فی رمضـانَ فـلا تعرِفـون ۔ مـات بعـض النـاس بنبـأٍ مـن اللہ وقُتِـلَ الْبَعْـضُ فـلا تُفکّـرون ۔ ونزلـت لی آیٌ ۔ کثـیرةٌ فلاَ تُبَالُـون ۔ وشَـهِدَتْ لی الارضُ والسـماءُ والمـاءُ

आदतों का विनाश करता हूँ और दूसरे हाथ में शरबत है जिस से मैं दिलों को दोबारा जीवित करता हूँ। एक कुल्हाड़ी फ़ना करने के लिए है और फूँक जीवित करने के लिए।

मेरा प्रताप इस कारण है कि लोगों ने हज़रत ईसा की तरह मेरे अन्मूलन का इरादा किया है और सुन्दरता इस कारण कि मेरी रहमत (दया) मेरे सरदार अहमद (मुहम्मद स.अ.व) की भांति जोश में है ताकि मैं उस क़ौम का मार्ग-दर्शन करूँ जो अपने महान प्रतिपालक से लापरवाह है और क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो तथा युग और उसकी आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं देते? क्या तुम नहीं देखते कि युग ख़ुदा की ओर एक आवश्यकता रखता है ताकि एक क़ौम को अपने प्रताप की विशेषता दिखाए और दूसरी क़ौम को अपने सौन्दर्य की विशेषता से परिचित कराए और निस्सन्देह निशान प्रकट हो गए तथा लक्षण स्पष्ट हो गए और समस्त झगड़े समाप्त हो गए। तो क्यों नहीं देखते? और रमज़ान के महीने में सूर्य और चन्द्रमा को ग्रहण लगा, परन्तु तुम नहीं पहचानते और कुछ लोग भविष्यवाणी के अनुसार मरे और कुछ लोग क़त्ल की भविष्यवाणी के अनुसार मारे

والعفاء فلا تخافون ۔ وتَظَاهرَ لی العقلُ والنقل والعلاماتُ والاٰیات ۔ وتظاهرتِ الشَّهاداتُ و الرؤیا والمکاشفات ۔ ثم انتم تنکرون ۔ وان لها شانًا عظیمًا لقومٍ یتدبّرون ۔ وطل ذوالسنین ۔ ومضٰی من هٰذه المائة خمسها اِلّا قلیلٌ من سنین۔ فاین المجدد ان کنتم تعلمون ۔ ونزل من السماء الطاعون ۔ ومُنِع الحجّ و کثر المنون ۔ واختصم الفرق علٰی معدنٍ من ذهبٍ وهم یُقاتِلُون ۔ وعلا الصلیب ۔ واضحی الاسلام یسیب ویغیب ۔ کانه الغریب ۔ و کثر الفسق والفاسقون ۔ وحُبّب الی النفوس الخمر ۔ والقمر والزمر ۔ وتراءَی الزانون المجالحون وقَلّ المتقون ۔ وتجلّٰی وقت ربّنا وتمّ ما قال النبیون ۔ فبایّ حدیث بعده تؤمنون ۔ ایها الناس قوموا لله زرافاتٍ وفرادٰی

गए परन्तु तुम नहीं सोचते और मेरे समर्थन में बहुत से निशान प्रकट हुए, परन्तु तुम्हें कुछ परवाह नहीं। और मेरे लिए पृथ्वी, आकाश और पानी तथा मिट्टी ने गवाही दी परन्तु तुम बिलकुल नहीं डरते और बुद्धि, नक़ल एवं लक्षण और निशान एक दूसरे के गवाह हुए तथा दूसरी गवाहियों और स्वप्नों एवं कश्फ़ों ने आपस में एक दूसरे को शक्ति दी फिर तुम इन्कार करते हो और उन लोगों की दृष्टि में जो सोच-विचार करते हैं उन निशानों की बड़ी शान है और पुच्छल तारा (दुमदार सितारा) उदय हुआ और सदी में से पांचवां भाग गुज़र गया सिवाए कुछ वर्ष के। अत: यदि जानते हो तो बताओ कि मुजद्दिद कहाँ है? आकाश से ताऊन फूटी और हज रोका गया और मौतों की बहुतात हुई और सोने की खान पर क़ौमों ने आपस में लड़ाई-झगड़े किए और सलीब (ईसाई धर्म) बुलन्द हुई और इस्लाम ने अपने स्थान से गति की और लुप्त हो गया मानो कि वह मुसाफ़िर है तथा पाप और पापी बहुत हो गए तथा लोगों शराब और जुए तथा नाच-रंग की ओर लौटे और दुष्कर्म तथा एक-दूसरे पर कठोरता करने वाले प्रकट हुए और संयमी कम हो गए तथा हमारे ख़ुदा की झलक (आभा) का समय आ गया और वह सब जो

فـرادٰی - ثـم اتقـوا اللّٰہ وفکـروا کالذی مابخـل وماعـادٰی ۔ الیـس ھٰـذا الوقـت وقـت رحـم اللّٰہ عـلی العبـاد ۔ ووقـت دفـع الشـر وتدارك عطـش الاکبـا بالعھـاد ۔ الیـس سـیل الشـر قدبلـغ انتھـاءہٗ ۔ وذَیْـلُ الْجَھـلِ طُـوِّلَ ارجـاءہٗ ۔

وفسـد المُلْـكُ کلہٗ وشـکر ابلیـس جُھَـلَاءَہٗ ۔ فاشـکروا اللّٰہ الذی تَذَکَّرَکُمْ وَتَذَکَّـرَ دِیْنَکـم ومـا اَضَاعُـہٗ ۔ وعَصَـمَ حَرثَکـم وزَرَعَکـم ولُعَاعَـہٗ ۔ واَنـزل المَطَـر واکمـل اَبْضَاعَـہٗ ۔ وبَعـثَ مَسـیحہٗ لِدَفْـعِ الضـیر ۔ ومھدیـہٗ لافاضـۃ الخـیر ۔ وادخلکـم فی زمان امامکـم بعـد زمـان الغـیر ۔ ایھـا الاخـوان انّ زماننـا ھٰـذا یُضاھـی شـھرنا ھٰـذا بالتناسـب التَّـام ۔ فانـہٗ اٰخِـرُ الازمنـۃ وِاِنَّ ھٰـذا

कुछ नबियों ने कहा था, प्रकट हुआ। तो इसके अतिरिक्त किस बात को मानोगे। हे लोगो! ख़ुदा के लिए तुम सब के सब या अकेले-अकेले ख़ुदा का भय करके उस व्यक्ति की भांति सोचो जो न कंजूसी करता है और न दुश्मनी, यह वह युग नहीं कि ख़ुदा बन्दों पर रहम (दया) करे? और क्या यह वह युग नहीं कि बुराई को दूर किया जाए और जिग्रों (यकृतों) की प्यास का मेंह बरसाने से निवारण किया जाए? क्या बुराई का सैलाब (बाढ़) अपनी चरम सीमा तक नहीं पहुंचा और मूर्खता के दामन ने अपने किनारों को नहीं फैलाया?

और देश ख़राब हो गया और शैतान ने मूर्खों का आभार प्रकट किया। अत: उस ख़ुदा का धन्यवाद करो जिस ने तुम को याद किया और तुम्हारे धर्म को याद किया और नष्ट होने से सुरक्षित रखा और तुम्हारे बोए हुए को और तुम्हारी खेती को आपदाओं से बचाया और मेंह उतारा और उसकी पूँजी को पूर्ण किया और अपने मसीह को हानि के दूर करने के लिए तथा अपने महदी को भलाई और लाभ पहुँचाने के लिए भेजा और दूसरों के युग के बाद तुम्हें तुम्हारे इमाम के युग में प्रविष्ट किया। हे भाइयो! यह हमारा युग हमारे उस महीने से पूर्ण अनुकूलता रखता है। क्योंकि यह अंतिम युग है और यह महीना भी इस्लाम के महीने में से अन्तिम है और दोनों

الشَّهْرُ اٰخِرُالْاَشْهُر من شهور الاسلام ۔ و كلا هما قريبٌ من الاختتام۔ فی هٰذا ضحایا و فی ذٰلك ضحایا ۔ والفرق فرق الاصل وعكس المرایا ۔ وقد سبق نموذجها فی زمن خیر البرایا ۔ والاصل ضحیّة الروح یا اولی الابصار ۔ وان ضحایا الجدایا كالاظلال والاٰثار ۔ فافهموا سرّ هٰذه الحقیقة ۔ وانتم احق بها واهلها بعدا لصحابة ۔ وانكم الاٰخرون منهم اُلحقتم بِهِمْ بفضل من الله والرحمة ۔ وان سلسلة الازمنة خُتِمَتْ علیٰ زماننا من حضرة الاحدیة ۔ كماخُتِمَتْ شهور الاسلام علیٰ شهر الضحیة۔ وفی هٰذا اشارةٌ مخفیةٌ لاهل الرأی والرویّة ۔ وانی علیٰ مقام الختم من الولایة ۔ كما كان سیّدی المصطفٰ علیٰ مقام

समाप्त होने के निकट हैं। इस अन्तिम महीने में भी क़ुर्बानियाँ हैं और इस अन्तिम युग में भी क़ुर्बानियाँ हैं और अन्तर केवल असल (वास्तविक) और प्रतिबिम्ब का है जो दर्पण में पड़ता है और इसका नमूना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में गुज़र चुका है। और हे बुद्धिमानों वास्तविक क़ुर्बानी रूह की है तथा बकरों की क़ुर्बानियाँ रूह की क़ुर्बानी के लिए प्रतिबिम्ब और छावों के समान हैं। अत: इस वास्तविकता को समझ लो। और तुम सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के बाद यह अधिकार रखते हो तथा इस बात के योग्य हो कि इस वास्तविकता को समझो और तुम उन में से एक अन्तिम गिरोह हो जो ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहमत से उसके साथ सम्मिलित किए गए हो और युगों का सिलसिला ख़ुदा के यहाँ से हमारे युग पर समाप्त हो गया है जैसा कि इस्लाम के महीने क़ुर्बानी के महीने पर समाप्त हो गए हैं और उसमें अहले राय के लिए एक गुप्त संकेत है और मैं विलायत के सिलसिले को ख़त्म करने वाला हूँ जैसा कि हमारे सरदार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत के सिलसिले को समाप्त करने वाले थे और वह ख़ातमुल अंबिया हैं और मैं ख़ातमुल औलिया हूँ, मेरे बाद कोई वली नहीं परन्तु वह जो मुझ से होगा और मेरे अहद पर होगा, और मैं अपने ख़ुदा की ओर

الختم من النبوة ۔ وانہٗ خاتم الانبیاء ۔ وانا خاتم الاولیاء ۔ لاولیّ بعدی۔ الّا الذی ھو منّی وعلٰی عھدی ۔ وانی اُرْسِلْتُ من ربّی بکل قُوّۃٍ وبرکۃٍ وعزۃٍ ۔ وان قدمی ھٰذہٖ علٰی منارۃٍ ختم علیھا کل رفعۃ۔ فاتقوا اللّٰہ ایّھا الفتیان ۔ واعرفونی واطیعونی ولا تموتوا بالعصیان ۔ وقد قرب الزمان ۔

وحَان ا تُسْئَلَ کلُّ نفسٍ وتُدَانُ ۔ البلایا کثیرۃٌ ولا یُنَجِّیْکم الّا الایمان ۔ والخطایا کبیرۃٌ ولا تذوبھا الّا الذوبان ۔ اتقوا عذاب اللّٰہ ایھا الاعوان ۔ ولمن خاف مقام ربّہٖ جنّتان ۔ فلا تقعدوا مع الغافلینو الذین نسوا المنایا ۔ وسارعوا الی اللّٰہ وارکبوا علٰی اعدی المطایا ۔ واترکوا ذوات الضلع و الرَّذایا ۔ تَصِلُوْا الٰی ربّ البرایا ۔ خُذُوا الْاِنْقِطَاعَ الْاِنْقَطَاعَ لیُوْھَبَ لَکمُ الوَصْلُ والاقتِرابُ۔و کسّروا

से सम्पूर्ण शक्ति, बरकत और सम्मान के साथ भेजा गया हूँ तथा यह मेरा क़दम एक ऐसे मीनार पर है कि उस पर प्रत्येक ऊँचाई समाप्त की गई है। अत: ख़ुदा से डरो हे बहादुरों मुझे पहचानो और मेरा अनुसरण करो तथा अवज्ञा पर न मरो निस्सन्देह समय निकट आ गया है।

और वह समय निकट है कि प्रत्येक अस्तित्व अपने कार्यों के बारे में पूछा जाए और बदला दिया जाए। विपत्तियाँ बहुत हैं और तुम्हें केवल ईमान मुक्ति देगा और ग़लतियाँ बड़ी हैं और उनको पिघलाएगा नहीं परन्तु पिघल जाना। हे मेरे सहायक गण! ख़ुदा के अज़ाब से डरो और जो ख़ुदा से डरे उनके लिए दो स्वर्ग हैं। अत: लापरवाहों के साथ मत बैठो उन लोगों के साथ जिन्होंने अपनी मौतों को भुला रखा है। ख़ुदा की ओर दौड़ो और तीव्रगामी घोड़ों पर सवार हो जाओ। ऐसे घोड़ों को छोड़ो जो लंगड़ा कर चलते हैं ताकि अपने ख़ुदा को मिलो, ख़ुदा की ओर लीन हो जाने की आदत डालो ताकि ख़ुदा का मिलन और उसका सानिध्य तुम्हें प्रदान किया जाए तथा संसाधनों को तोड़ दो ताकि तुम्हारे लिए संसाधन पैदा किए जाएँ और मर जाओ ताकि दोबारा तुम्हें

الاسباب ليُخْلَقَ لكم الاسبابُ ۔ وموتوا ليُرد اليكم الحيٰوة ايّها الاحباب ۔ اليوم تمّت الحجة على المخالفين ۔ وانقطعت معاذير المعتذرين ۔ ويئس منكم زمر المضلين والموسوسين ۔ الذين اكلوا اعمارهم فى ابتغاء الدنيا وليس لهم حظٌّ من الدين ۔ بل هم كالعمين ۔ فاليو انقض الله ظهور هم ورجعوا يائسين ۔ اليوم حصحص الحق للناظرين ۔ واستبان سبيل المجرمين ۔ ولم يبق معرضٌ الا الذى حبسهٗ حرمانٌ ازليٌّ ۔ ولا منكرٌ الّا الذى منعهٗ عدوانٌ فطريٌّ ۔ فنترك هٰؤلاء بسلامٍ ۔ و قدتم الافحام ۔ وتحقّق الاثام ۔ وان لينتهوا فالصبر جديرٌ ۔ وسوف يُنبّئهم خبيرٌ ۔

जीवन दिया जाए। आज विरोधियों पर हुज्जत पूरी हो गई और बहाना करने वालों के समस्त बहाने टूट गए और तुम से वे सब गिरोह निराश हो गए जो गुमराह करने वाले और असमंजस में डालने वाले थे। उन्होंने संसार की चाहत में अपने प्राण गंवाए तथा धर्म में से कोई भाग प्राप्त न किया अपितु वे अन्धों के समान हैं और आज ख़ुदा ने उनकी कमरें तोड़ दीं और वे निराश होकर लौटे। आज देखने वालों के लिए सच प्रकट हो गया और अपराधियों का मार्ग खुल गया और सच से पृथक होने वाला वही व्यक्ति रहा जिस को सदैव के वंचित होने ने रोक दिया और वही इन्कारी रहा जिसको अत्याचार प्रिय होने ने मना कर दिया। अत: हम लोगों को सलाम के साथ विदा करते हैं और उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो गया और उन का दण्ड का पात्र होना सिद्ध हो गया। अत: यदि अब भी न रुकें तो धैर्य योग्य हैं तथा शीघ्र ही वह, जो उनकी हालतों से अवगत है उन्हें सतर्क कर देगा।

الباب الثانی

ثم بعد ذالك اعلموا يا اولی النهٰی ۔ اَنّ اللّٰہ ذکر فی القراٰن انّہٗ بعث موسٰی بعدما اهلك القرون الاولٰی ۔ واٰتاه اللّٰہ الکتاب والحکم والنبوة ۔ ووهب لقومه الخلافة ۔ واقام فیهم سلسلة الهُدٰی ۔ وجعل خاتم خلفائهٖ رسولہٗ ابن مریم عیسٰی ۔ فکان عیسٰی اٰخر لبن هٰذ العمارة وعَلمًا لساعة زوالها وعبرةً لمن یخشٰی ۔ث بعث اللّٰہ نبینا الاُمّی ۔ فی ارض اُمّ القُرٰی ۔ وجعلہٗ مثیل موسٰی ۔ وجعل سلسلة خلفاء ہ کمثل سلسلة خلفاء الکلیم لتکون رِدْئًا لها وانّ فی هٰذا لاٰیةً لمن

द्वितीय अध्याय

तत्पश्चात तुम्हें ज्ञात हो हे बुद्धिमानो! कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यह वर्णन किया कि उसने पहली उम्मतों के तबाह कर देने के बाद मूसा को पैदा किया और उसी को किताब, हुक्म और नुबुव्वत प्रदान की और उसकी क़ौम को खिलाफ़त दी तथा उनमें हिदायत का सिलसिला स्थापित किया, और उस सिलसिले का 'ख़ातमुल खुलफ़ा' हज़रत ईसा इब्ने मरयम को बनाया। अत: हज़रत ईसा इस इमारत की अन्तिम ईंट थे और एक दलील थे उस इमारत के पतन की घड़ी पर और एक सीख थे उस व्यक्ति के लिए जो डरता हो। फिर ख़ुदा ने हमारे पैग़म्बर उम्मी (अनपढ़) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का की धरती पर अवतरित किया और उनको मूसा अलैहिस्सलाम का मसील (समरूप) बनाया तथा उनके ख़लीफ़ों का सिलसिला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ों के सिलसिले की तरह और उनके समान कर दिया ताकि यह

یـرٰی ۔ وان شـئ فاقـرء اٰیـۃ

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ (سورۃ النور-56)

و لا تتبـع الھـوٰی ۔ فـان فیھـا وعـد الاسـتخلا لھٰـذہ الامـۃ کمثـل الذیـن اسـتخلفوا مـن قبـل والکریـم اذا وعـد وفـا ۔ وانـا لا نعلـم اسـما خلفـاء سـبقونا مـن ھٰـذہ الامـۃ مـن قبـل الا قلیـلًا ممـن مضٰـی - ومـا قـص علینـا ربنـا قصـص کلـھم ومـا انبأنـا باسـمائھم فـلا نؤمـن بـھم الااجمـالًا ونفـوض تفصیلـھم الیٰ ربنـا الاعـلیٰ ولٰکنـا الجئنـا بنـص القـراٰن الیٰ ان نـؤمر بخلیفـۃٍ منـا ھـو اٰخـر الخلفـاء عـلیٰ قـدم عیسٰـی ۔ ومـا کان لمؤمـنٍ ان یکفـر بـہٖ

सिलसिला उस सिलसिले का सहायक हो और इसमें देखने वालों के लिए एक निशान है तथा तू चाहे तो आयत-

(अन्नूर -56) وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ

को पढ़ ले और अपने लोभ-लालच का अनुकरण न कर। क्योंकि इस आयत में इस उम्मत के लिए ऐसे ख़लीफ़ों का स्पष्ट वादा है जो उन ख़लीफ़ों की तरह हों जो बनी इस्राईल में गुज़र चुके हैं। और करीम (कृपालु) जब वादा करता है तो उसे पूरा करता है और हम उन सब ख़लीफ़ों के नाम नहीं जानते जो हमसे पहले गुज़र चुके हैं। सिवाए इस उम्मत के तथा पहली उम्मतों के कुछ गुज़रे हुए लोगों के और ख़ुदा ने उन सब के नामों से भी हमें सूचित नहीं किया। अतः हम उन पर सामूहिक रूप से ईमान लाते हैं और उनके नामों के विवरण को अपने ख़ुदा पर छोड़ते हैं। परन्तु हम क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशानुसार इस बात पर विवश हो गए कि इस बात पर ईमान लाएं कि अन्तिम ख़लीफ़ा इसी उम्मत में से होगा और वह ईसा के क़दम पर आएगा और किसी मोमिन की मजाल (शक्ति) नहीं कि उस का इन्कार करे क्योंकि यह क़ुर्आन का इन्कार है और जो कोई क़ुर्आन का इन्कारी है वह जहाँ जाए ख़ुदा के अज़ाब के नीचे है। और तू क़ुर्आन पर ऐसा विचार कर जैसा कि विचार करने का हक़ है और उस व्यक्ति के समान

فانہٗ کفرٌ بکتا اللّٰھط ولا یفلح الکافر حیث اتٰی ۔ وفَکّر ف القراٰن حق الفکر ولا تکن کالذی استکبر وابٰی ۔ وانہ الحق من ربنا فاقرء سورۃ النور متدبّرًا لیتجلّٰی علیک ھٰذا النور کالضحٰی واقرء اٰیۃ ۔

صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ (سورۃ الفاتحۃ-7)

و کفاک ھٰذان الشاھدان ان کنت تسمع و ترٰی ۔ فحاصل الکلام ان سلسلۃ الخلفاء المحمدیۃ قد وقعت کسلسلۃ خلفاء موسٰی ۔و کذالک کان الوعد فی القراٰن من ر السمٰوات العلٰی ۔ فان اللّٰہ قد استخلف قومًا من قبل من بنی اسراء یل واصطفٰی ۔ واکرم بنی اسراء یل وجعل فیھم النبوۃ ومَھّلہ حتّٰی طال علیھم العمر وترکوا التقوٰی ۔ فلما انقضٰی علیھم ثلٰث مائۃٍ

न हो जो अभिमान पूर्वक सर फेर लेता है और यही बात ख़ुदा की ओर से सच है अत: सूरह नूर को ध्यानपूर्वक पढ़ ताकि तुझ पर यह प्रकाश दिन के समान प्रकट हो। तथा इसी प्रकार

(अलफ़ातिहा - 7) صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ

की आयत पढ़ और ये दोनों गवाह पर्याप्त हैं यदि तू देखता और सुनता है। अत: सारांश यह है कि मुहम्मदी ख़लीफ़ों का सिलसिला मूस्वी ख़लीफ़ों के सिलसिले के समान हुआ है तथा इसी प्रकार ऊंचे आकाश के ख़ुदा की ओर से पवित्र क़ुर्आन में वादा था, किस लिए कि ख़ुदा तआला ने इस से पहले बनी इस्राईल में ख़लीफ़ों का सिलसिला क़ायम किया और उनको ख़िलाफ़त के लिए स्वीकार किया तथा बनी इस्राईल को सम्मान दिया और उनमें नुबुव्वत क़ायम की और उन्हें लम्बा अवकाश दिया यहाँ तक कि उन पर बहुत लम्बा समय गुज़रा और उन्होंने सयंम को त्याग दिया। अत: जिस समय कि तेरह सौ वर्ष मूसा अलैहिस्सलाम के अवतरण से उन पर गुज़रे, वही मूसा कि जिस से ख़ुदा ने वार्तालाप किया था और जिसको चुना

بعد الالف من يومٍ بعث فيه الكليم الذى كلّمه الله و اجتبٰى۔ بعث الله رسولهٗ عيسى ابن مريم فيهم وجعلهٗ خاتم انبياء هم وعلمًا لساع نقل النبوة مع العذاب ط فانذرهم وخشّى ★۔ وما كان لهٗ ابٌ من بنى اسراء يل الّا امهٗ۔ و كذالك خلقه الله من غيرابٍ و اوما فيه الىٰ ما اومأ ۔ و كان ذالك اٰيةً و علمًا لليهود واخبارًا لهم فى رمزٍ قد اختفٰى ۔ و ارهاصً لظهور نبينا خير الورٰى ۔ وماجعل الله المسى خاتم السلسلة الموسوية الّا غضبًا

था ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा इब्ने मरयम को बनी इस्राईल में अवतरित किया और उनको बनी इस्राईल का ख़ातमुल अंबिया बनाया और नुबुव्वत के स्थानांतरण के समय के लिए उनको सबूत ठहराया और इस प्रकार से यहूदियों को भयभीत किया ☆ और ईसा अलैहिस्सलाम का बनी इस्राईल में से माँ के अतिरिक्त कोई बाप न था। इस प्रकार से ख़ुदा ने उनको बिना बाप पैदा किया और उस बिना बाप पैदा करने में एक संकेत किया जो किया और यह एक निशान तथा तर्क था यहूदियों के लिए और इसमें एक गुप्त सूचना थी और वह रहस्य यह था कि बनी इस्राईल में से अब नुबुव्वत जाती

★ الحاشية۔ ان مريم ولدت ابنًا ما كان من بنى اسرائيل۔ ثم قيل فيها ماقيل۔ وعَذّبوها باقاويل۔ فكان هٰذان الامران علمًا لساعة نقل النبوة و علمًا لتعذيب هٰذه الفرقة۔ فاصاب اليهود ذلة باخراجهم من هٰذا البستان۔ و نقل النبوة الىٰ بنى اسماعيل غضبًا من الله الديان۔ ثم اصابهم ذلة اخرىٰ وقارعة من ملوك الزمان۔ بل من كل ملك الىٰ هٰذا الاوان۔ وان فيها لاٰيةً لاهل العلم والعرفان۔ منه

☆ **हाशिया :-** मरयम ने एक लड़के को जन्म दिया जो बनी इस्राईल में से नहीं था, फिर उसके लिए जो कहा गया और भिन्न-भिन्न प्रकार की बातों से उसे दु:ख पहुँचाया गया। अत: ये दोनों बातें नुबुव्वत के स्थानांतरण की घड़ी पर एक सबूत थे इसके अतिरिक्त इस बात पर कि इस फ़िर्के को अज़ाब पहुंचाया जाएगा। अत: यहूदियों को दो अपमान पहुंचे। एक यह कि नुबुव्वत के बाग़ से बाहर कर दिए गए और नुबुव्वत बनी इस्माईल में स्थानान्तरित हो गई तथा दूसरा अपमान और अज़ाब बादशाहों के द्वारा उन्हें पहुंचा अपितु प्रत्येक बादशाह के द्वारा उस समय तक और इसमें विद्वानों और आरिफों के लिए निशान हैं। (इसी से।)

علی الیھود فاھلکھم کما اھلک القرون الاولیٰ ۔ ثم اختار اللّٰہ قومًا اٰخرین و وُلِدَ لھم ولدٌ طیبٌ من اُمّ القریٰ ۔ وھٰذا ھو محمّدٌ رسول اللّٰہ و حبیبہ الذی بُعث عند الفساد فی البر والبحر وجُعل مثیل موسیٰ ۔ لینجی الناس من کل فرعونٍ طغٰی ۔ علیہ سلام اللّٰہ وصلواتہٗ الیٰ یومٍ یُعطٰی لہ المقام المحمود و الدرجات العلیا ۔ واقام اللّٰہ بہٖ سلسلۃً اُخریٰ کمثل سلسلۃ مُوسیٰ ۔ الذی ھو مثیلہٗ ف ھٰذہٖ والعقبیٰ ۔ و کان ھٰذا وعدٌ من اللّٰہ فی التوراۃ و الانجیل و القراٰن و من اوفیٰ من اللّٰہ وعدًا و اصدق قیلًا ۔ ولما کان وعد المشابھۃ فی سلسلتی الاستخلاف وعدًا اُکّد بالنون

रहेगी और हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए इर्हास था। और ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को मूस्वी सिलसिले का ख़ातम इसलिए बनाया ताकि यहूदियों पर अपना प्रकोप प्रकट करे। अत: ख़ुदा तआला ने उनको तबाह किया जैसा कि पहली उम्मतों को तबाह किया था और फिर ख़ुदा तआला ने उन के बदले अन्य क़ौम को चुना और उनके लिए एक पवित्र और नेक सुपुत्र पवित्र मक्का में पैदा किया और वह मुबारक सपूत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा के रसूल और उसके प्रिय हैं जो पूर्णत: गुमराही के समय अवतरित हुए और मूसा के मसील समरूप ठहराए गए ताकि लोगों को हर फ़िरऔन से मुक्ति दें। ख़ुदा का सलाम और दरूद हो उन पर उस दिन तक कि जिस दिन तक मुक़ाम-ए-महमूद तथा श्रेणियां बुलन्द की जाएँ। और अल्लाह तआला ने उनके माध्यम से एक दूसरा सिलसिला क़ायम किया जो कि वह सिलसिला उस मूसा के सिलसिले के समान है कि वह उसका मसील है इस दुनिया में और आख़िरत में और यह ख़ुदा तआला का वादा था तौरात और इंजील तथा क़ुर्आन में और वादे को पूरा करने वाला और सत्यवादी ख़ुदा तआला से अधिक कौन है? और जिस समय कि वादा दोनों सिलसिलों में ख़िलाफ़त की समानता का

الثقيلة من الله صادق الوعد الذى هو اوّل من وفٰى ۔ اقتضٰى هٰذا الامر ان يأتى الله باٰخر السلسلة المحمّدية خليفةً هو مثيل عيسٰى ۔

فانّ عيسٰى كان اٰخر خلفاء ملّة موسٰى كما مضٰى ۔ ووجب ان لا يكون هٰذا الخليفة من القريش وان لا يأتى مع السيف ولا يؤمر للوغٰى ۔ ليتم امر المشابهة كما لا يخفٰى ۔ ووجب ان يظهر تحت حكوم قومٍ اٰخرين الذين هم كمثل قومٍ بعث المسيح فى زمن حكومتهم فانظر الٰى هٰذه المضاهاة فانها اوضح واجلٰى ۔ وانت تعلم انّ عيسٰى قدجمع هٰذه الاربعة و كذال اراد الله فى مسيح هٰذه الامة وقضٰى ۔ ليتم امر المماثلة

और ख़ुदा तआला की ओर से नून सक़ीला के साथ दिया गया था इस बात ने मांग की कि सिलसिला-ए-मुहम्मदिया के अन्त में वह ख़लीफ़ा आए कि जो ईसा अलैहिस्सलाम के समान हो।

क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ाओं में से अन्तिम ख़लीफ़ा थे। जैसा कि वर्णन किया गया और अनिवार्य हुआ कि यह ख़लीफ़ा जो ख़ातमुल खुलफ़ा है कुरैश में से न हो और तलवार न उठाए और युद्ध का आदेश न दे ताकि समानता पूर्ण हो जाए जैसा कि गुप्त नहीं और यह भी अनिवार्य हुआ कि वह एक अन्य क़ौम के शासन के अन्तर्गत प्रकट हो कि वह क़ौम उस क़ौम के समान हो जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम उसके शासन के युग में प्रकट हुए थे। अत: उस समानता को देख कि कैसी स्पष्ट और प्रकाशमान है। तथा तू जनता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने अस्तित्व में ये चारों विशेषताएं एकत्र रखते थे और इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि ये चारों विशेषताएं इस उम्मत के मसीह में भी एकत्र हों ताकि समानता की बात पूर्णतया प्राप्त हो जाए और ऐसा व्यर्थ अंतर न हो कि उसमें किसी प्रकार की न्यूनाधिकता

ولا یکون کقسمۃٍ ضیزٰی★ ۔ و کان ھٰذاوعد اللہ وان وعد اللہ لا یبدل ولا ینسٰی۔ الا تقرء ون کتاب اللہ الیس فیہ ھٰذا الوعدط فاتقوا اللہ الذی الیہ الرجعٰی ۔ ولا تکونوا کالذین یقرء ون القراٰن ومایبالون ما امر القراٰن ومانھٰی ۔ واذا قیل لھم اٰمنوا

रह जाए☆ तथा यह ख़ुदा तआला का वादा था और यह ख़ुदा तआला का वादा न परिवर्तन योग्य है, न भूलने योग्य है क्या तुम ख़ुदा की किताब को नहीं पढ़ते? क्या उस में यह वादा नहीं है? ख़ुदा तआला से डरो कि ख़ुदा तआला की ओर एक दिन जाना है और उन लोगों की भांति न बन जाओ कि पवित्र क़ुर्आन पढ़ते हैं और उसके आदेश और निषेध की कुछ परवाह नहीं करते, जब उनको कहा जाता है कि

★حاشیۃ :- ان قیل ان المسیح قد خلق من غیر ابٍ من یدالقدرۃ۔ وھٰذا امرٌ فوق العادۃ۔ فلا یتم ھناك شان المماثلۃ۔ وقد وجب المضاھاۃ کما لایخفٰی علی القریحۃ الوقادۃ۔ قلنا ان خلق انسانٍ من غیر اب داخلٌ فی عادۃ اللہ القدیر الحکیم ۔ ولا نسلّم انہٗ خارجٌ من العادۃ ولا ھو حریٌ بالتسلیم۔✷ فان الانسان قد یتولد من نطفۃ الامرأۃ وحدھا ولوعلٰی سبیل الندرۃ ۔ ولیس ھوبخارجٍ من قانون القدرۃ۔ بل لہٗ نظائر وقصصٌ فی کل قوم وقد ذکرھا الاطباء من اھل التجربۃ ۔

☆**हाशिया :-** यदि कहा जाए कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम बिना बाप पैदा हुए थे और यह एक विलक्षण बात है। अत: समानता की शान पूरी नहीं होती है जबकि परस्पर समानता का होना आवश्यक है। जो स्वच्छ स्वभाव रखने वाले लोगों पर गुप्त नहीं है। हम कहते हैं कि मनुष्य का बिना बाप पैदा करना ख़ुदा की आदत में शामिल है और हम इसे स्वीकार नहीं करते कि यह आदत से बाहर है और न इस योग्य है कि इस बात को स्वीकार किया जाए, क्योंकि मनुष्य कभी केवल स्त्री के नुत्फ़े (रज) से भी पैदा हो जाता है यद्यपि बात दुर्लभ हो और यह बात प्रकृति के नियम से भी बाहर नहीं है बल्कि हर क़ौम में इसके उदाहरण पाए जाते हैं और अनुभवी वैद्यों ने ऐसे उदाहरण वर्णन किए हैं।

✷حاشیۃ کا حاشیۃ :-الم تر انّ اٰدم علیہ السلام ما کان لہ ابوان فکون ھٰذا الامر من عادۃ اللہ ثابت من ابتداء الزمان۔ منہ

✷**हाशिए का हाशिया :-** क्या तुम ने नहीं देखा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का न कोई बाप था और न माँ। अत: इस बात का ख़ुदा की आदत में शामिल होना युग के प्रारंभ से ही सिद्ध है। (इसी से)।

بما وعداللّٰہ و لا تنسوا نصیبکم من رحمۃٍ تُرْجٰی۔ قالوا لا ندری ما الوعد ط وطبع علٰی قلوبھم فلا یسمع احدٌ منھم ولا یرٰی۔ ولا یقبلون الحق وقد اٰتینا الدلائل کدرٍ ابھٰی۔ الا ینظرون الی القراٰن اوعلی الابصار غشاوۃٌ فما یرون ماطلع وتجلّٰی ومنھم قومٌ اُعطوا علمًا ثم یمرّون کالذی اعرض واَبٰی۔ ولئن

ख़ुदा तआला के वादे पर ईमान लाओ और जिस रहमत के तुम प्रत्याशी हो उसमें से अपना भाग नष्ट न करो, तो कहते हैं कि हम नहीं जानते कि वादा क्या होता है और उन के दिल पर मुहर लगी हुई है उनमें से कोई भी नहीं देखता और नहीं सुनता और सच को स्वीकार नहीं करता हालाँकि हम ने चमकदार मोतियों की तरह उनको तर्क दिए। क्या क़ुर्आन की ओर नहीं देखते या उन की आँखों पर पर्दा है कि जो उस आभा की ओर नहीं देखते जिसका उदय हुआ है। और उनमें एक क़ौम है जिसे

نعم نقبل ان ھٰذہ الواقعۃ قلیلۃٌ نسبۃً الٰی ما خالفھا من قانون التولید و کذالک کان خلقی من اللّٰہ الوحید✶ و کان کمثلہٖ فی الندر و کفٰی ھٰذا القدر للسعید۔ فانی ولدت تَوْءَ مًا و کانت صبیۃٌ تولدت معی فی ھٰذہ القریۃ۔ فماتت وبقیت حیًّا من امر اللّٰہ ذی العزۃ۔ ولاشک ان ھٰذہ الواقعۃ نادرۃٌ نسبۃ الی الطریق المتعارف المشھود۔ و یکفی للمضاھاۃ الاشتراک فیالندرۃ بھٰذا القدر عند اھل العقل والشعور۔ فان المشابھۃ لاتوجب الا لونًا من المناسبۃ۔ ولا تقتضی الا رائحۃً من المماثلۃ۔

हाँ हम यह बात स्वीकार कर सकते हैं कि बिना बाप पैदा होना विरल बात है इस बात की अपेक्षा कि उस की विरोधी है और इस अद्‌भुत बात के समान मेरी पैदायश है क्योंकि मैं जुड़वाँ पैदा हुआ हूँ और मेरे साथ एक लड़की पैदा हुई थी जो मर गई और मैं जीवित रह गया और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि घटना भी अपेक्षाकृत सामान्य पैदायश के नियम से अद्‌भुत है और समानता के लिए इतनी समरूपता पर्याप्त है क्योंकि समानता और समरूपता एक रंग के अनुकूलता के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहती है और वह यहाँ प्राप्त है।

✶حاشیۃ کا حاشیۃ :- ومع ذالک انّی ارسلت فی المھزودتین و اعیش فی المرضین مرض فی الشقّ الاسفل ومرض فی الاعلٰی۔ فحیاتی اعجب من تولّد المسیح و اعجاز لمن یرٰی۔ منہ

سألتهم ما وعد الله ربّكمالاعلٰى - ليقولن انهٗ وعد المؤمنين ان يستخلف منهم كما استخلف من قوم موسٰى - فقد اقرّوا بتشابه السلسلتين ثم ينكرون كبصيرٍ تعامٰى-ولمّا كان نبينا مثيل موسٰى - و كان سلسلة خلفاء ہٖ مثيل السلسلة الموسوية

थोड़ा सा ज्ञान दिया गया है उस पर भी मुंह फेरते और इन्कार करते हैं। यदि उन से पूछा जाए कि तुम्हारे ख़ुदा ने क्या वादा किया है तो उसके उत्तर में कहते हैं कि हाँ ख़ुदा ने मोमिनों से यह वादा अवश्य किया है कि उन में ख़लीफ़े पैदा किए जाएंगे उन ख़लीफ़ों के समान जो मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम में पैदा किए गए थे। अत: दोनों सिलसिलों की समानता का वर्णन करते हैं। फिर ऐसे व्यक्ति की तरह इन्कार कर बैठते हैं जो सुजाखा हो और अपने आप को अँधा बना ले, तथा जिस हालत में हमारे

وانا اذا قلنا مثلًا ان هٰذا الرجل اسدٌ بطريق المجاز والاستعارة۔ فليس علينا من الواجب ان نثبت لهٗ كلما يوجد فی الاسد من الذنب والزئر وهيئة الجلد وجميع لوازم السبعية۔ ثم اعلم ان تولد عيسى ابن مريم من غيرابٍ من بنی اسرائيل بهٰذ الطريق۔ تنبيهٌ لليهود وعلمٌ لساعتهم واشارةٌ الٰی ان النبوة مُنْتَزَعٌ منهم بالتحقيق۔ واما مسيح هٰذه الامة فولد توأمًا من ذكرٍ و انثٰی وفُرّق بينهٗ و بين مادة النساء ۔ وفی ذالك اشارةٌ الٰی ان الله يبث بهٖ كثيرًا فی هٰذه الفئة رجال الصدق والصفاء۔ فالاغراض مختلفةٌ فی هٰذا وفی ذالك فلذالك اختلف طريق التوليدمن حضرة الكبرياء ۔ منه

उदाहरणतया जब हम लाक्षणिक एवं रूपक के तौर पर यह कहें कि यह व्यक्ति शेर है तो हमेशा यह अनिवार्य नहीं है कि हम यह सिद्ध करें कि उस शेर के समस्त अंग और विशेषताएं उस व्यक्ति में पाई जाती हैं। अत: पूँछ, आवाज़, बाल, खाल और दरिन्दगी के सारे सामान भी उसमें हों। फिर तू जान ले कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बिन बाप पैदा होना बनी इस्राईल में से यहूदियों के लिए एक चेतावनी है और उन के पतन की घड़ी पर एक तर्क है और इस बात की ओर संकेत है कि उन से नुबुव्वत अवश्य स्थानांतरित हो जाएगी परन्तु इस उम्मत का मसीह नर और माद: से जुड़वां पैदा हुआ है और माद: का तत्व उस से अलग कर दिया गया है। इसमें इस बात की ओर संकेत है कि ख़ुदा तआला इस गिरोह में बहुत से लोग पैदा करेगा जो श्रद्धावान और निष्ठावान होंगे। अत: इन दोनों पैदायशों में विभिन्न उद्देश्य हैं इस दृष्टि से जन्म पद्धति में मतभेद पाया जाता है। (इसी से।)

بنصٍ اجلیٰ۔وجب ان تختتم السلسلة المحمدیة علیٰ خلیفةٍ ھو مثیل عیسٰی ۔ کما اختتم علی ابن مریم سلسلة صاحب العصا ۔ لیطابق ھٰذہ السلسلة بسلسلةٍ اولیٰ ۔ ولیتم وعد مماثلة الاستخلاف کما ھو ظاھرٌ من لفظ کما فأرونی خلیفةً من دونی جاء علیٰ قدم ابن مریم منکم علیٰ اجلٍ یشابہ اجلًا مضٰی۔ وقد انقضت مدةٌ من نبیّنا الیٰ یوم بعثنا ھٰذا ۔ کمثل مدةٍ کانت بین موسٰی وعیسٰی۔ وان فی ذالک لاٰیةً لقومٍ یطلبون الھدٰی۔ فما لکم لم تنتظرون نزول المسیح من السماء۔ انسیتم ماتقرء ون فی القراٰن او رضیتم بتکذیب کلام ربّکم الاعلیٰ ۔

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा के मसील ठहरे और इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ाओं का सिलसिला मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले का मसील ठहरा जैसा कि क़ुर्आन की स्पष्ट आयत इस का पता देती है। अत: अनिवार्य हुआ की सिलसिला मुहम्मदिया एक ऐसे ख़लीफ़े पर समाप्त हो कि वह मसीले ईसा अलैहिस्सलाम हो जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का सिलसिला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हुआ ताकि ये दोनों सिलसिले परस्पर अनुकूल हो जाएँ और ताकि इस सिलसिले के ख़लीफ़ों का तथा उस सिलसिले के ख़लीफ़ों का समरूपता का वादा पूरा हो जाए। जैसा कि समरूपता की बात کما के शब्द से प्रकट है जो आयत में मौजूद है। अत: मुझे वह ख़लीफ़ा दिखाओ जो मेरे अतिरिक्त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के क़दम पर इस उम्मत में से आया हो और उसका युग तथा हज़रत मसीह का युग समान हो और यह निश्चित हो चुका है कि हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग से उस समय तक वही अवधि गुज़री है कि जो अवधि मूसा अलैहिस्सलाम से ईसा अलैहिस्सलाम के युग तक गुज़री थी और इसमें मार्ग-दर्शन के अभिलाषियों के लिए संकेत है। तुम्हें क्या हो गया कि तुम मसीह के आकाश से उतरने की प्रतीक्षा कर रहे हो और तुम ने जो पवित्र क़ुर्आन में पढ़ा है उसे भूलते हो। क्या इस बात पर सहमत हो गए कि ख़ुदा के कलाम को झुठलाया जाए।

اتكفرون بكتاب الله وهو بحرٌ من المعارف ومائٌ اصفٰى ۔ و كيف اِسۡتَطَبۡتُم ان تتركوا الفرقانالحميد لاقوالٍ شتّٰى۔ اتستبدلون الذى هوادنٰى بالذى هو خيرٌ و انّ الظنّ لا يغنى من الحقّ شيئًا ۔ وقد جمع الشمس والقمر كما ذكر القراٰن و كسفا فى رمضان كشق القمر فى زمن خير الورٰى ۔ وعطلت العشار لمن يّرٰى۔ ووهبت لنا مطيةٌ اخرٰى ۔ لنقدرعلى السياحة ازيد من المسيح ونجعل امر التبليغ اكمل منه واوفٰى ۔ وانظروا الٰى فضل الله انهٗ اظهر لى شهادةً من السماء۔ وشهادةً من الارض وشهادةً من بينهما وأَرَى الامر كضوء الضحٰى۔ الا ترون الٰى تشابهٍ فى امر استخلافٍ اتٰى۔ واستخلافٍ خلا ۔ وان فى ذالك لاٰيةً لمن تيقّظ و ارق الكرٰى ۔ الا ترون الٰى

तुम उस ख़ुदा की किताब का इन्कार करते हो जो अध्यात्म ज्ञान का सागर और शुद्ध जल है और तुम्हें यह बात कैसे पसन्द आ गई कि पवित्र क़ुर्आन को उन कथनों के बदले छोड़ते हो जो निरर्थक और बिखरे हैं और तुच्छ को उच्चतम चीज़ के बदले में छोड़ते हो तथा अनुमान सच के सामने किसी प्रकार का लाभ नहीं देता। और चन्द्र एवं सूर्य इकट्ठे किए गए जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वर्णन हुआ है और दोनों का रमज़ान मुबारक में ग्रहण हो गया जैसा कि ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में चन्द्रमा के फटने का निशान प्रकट हुआ, ऊँट बेकार किए गए तथा उनके स्थान पर अन्य सवारी मिली ताकि हम मसीह से अधिक भ्रमण करने पर समर्थ हों और उस से अधिक पूर्ण तब्लीग़ (प्रचार) को पूरा करें। ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल की ओर देखो कि उसने मेरे लिए आसमान से एक गवाही और एक गवाही पृथ्वी से और एक उन दोनों में प्रकट की और चाश्त (एक पहर दिन चढ़ने) के प्रकाश को दिखा दिया। तुम इस समानता की ओर नहीं देखते जो इस सिलसिले की खिलाफ़त के मामले में है और बनी इस्राईल की खिलाफ़त के सिलसिले में है। इसमें एक निशान है उनके लिए जो गहरी नींद

زمنٍ بعثت فيه وقد جئتكم بعد رسول الله المصطفٰى ۔ الیٰ امدٍ كان بين موسٰى وعيسٰى ۔ وان فی ذٰالك لاٰيةً لاولی النهٰی ۔ فانظروا كيف اجتمعت الاٰيات من الله ذی المجد والعلیٰ۔ فكُسف القمر والشمس فی شهر الصيام وترك القلاص فلا يُحمل عليها ولا تُمتطٰی۔ ومعها اٰياتٌ اخرٰی۔

وهل اجتمعت هٰذهٖ قط لكذابٍ افترٰی۔ فاتقوا جهنم التی تأكل المجرمين وان المجرم لا يموت فيها ولا يحيیٰ ۔ أ تنبذون كتاب الله وراء ظهوركم وتتبعون اقوالًا اخرٰی ۔ وان هو الا بغیٌ وظلمٌ وخروجٌ من الهدٰی ۔ والخير كلهٗ فی القراٰن والتمسك بهٖ من دأب التُقٰی ۔ وان الارض والسماء قد شهدتا لی وهل تشهدان الا لصادقٍ اذ ادّعٰی ۔ فاعلموا انی انا المسيح

से जागना चाहते हैं। क्या तुम उस युग को जिस में मैं अवतरित हुआ नहीं देखते कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उतने ही समय में आया हूँ जो समय मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम में चौदह सौ वर्ष का था। इस में बुद्धिमानों के लिए एक निशान है देखो कि ख़ुदा ने क्योंकर बहुत से निशान एकत्र कर दिए और क्योंकर चन्द्र और सूर्य का ग्रहण रमज़ान में हुआ और ऊँट की सवारी बेकार हुई और इनके अतिरिक्त और भी निशान हैं।

क्या कभी यह निशान किसी झूठ गढ़ने वाले के लिए एकत्र हुए हैं? उस नर्क से डरो जो दोषियों को खा जाने वाला है और दोषी उसमें न मरेंगे और न जिएंगे। क्या ख़ुदा की किताब को पीठ के पीछे डालते हो तथा दूसरी बातों का अनुकरण करते हो यह आदत सर्वथा विद्रोह, अन्याय और हिदायत से दूर होने की है सब भलाई पवित्र क़ुर्आन में है और उसका अनुकरण पवित्रता का मार्ग है पृथ्वी और आकाश ने मेरी गवाही दी क्या सच्चे के अतिरिक्त पृथ्वी और आकाश दूसरे की गवाही इस प्रकार से दे सकते हैं। तहक़ीक़ करके देखो मैं निस्सन्देह

الموعود والمهدی المعهود من اللہ الاحفٰی۔ و ارسلت عند صول الصلیب و کون الاسلام کالغریب لیتم بی الوعد الحق وما کان حدیثا یفتریٰ۔ولوکنت مفتریًا غیر صادقٍ لما اجتمع لی من الاٰ۔ ما اجتمع وان اللہ لایؤید من کَذَبَ وافترٰی علی اللہ واعتدٰی۔ وان فی زمانی ومکانی و قومی وعدا قومی لاٰیاتٌ علیٰ صدقی لمن تدبر وما استکبر وماعلا۔ وجئتکم حکمًا عدلًا لابین لکم بعض الذی تختلفون فیہ ولاقتل کل حیّۃٍ تسعٰی۔ وما جئت فی غیر وقتٍ بل جئت علیٰ رأس المائۃ وعندفتنٍ بلغت المنتھٰی۔ وما جئت من غیر برھانٍ وقد نزلت الاٰی من السَّمٰوات العلیٰ۔ وجحد الالسن واستیقن القلوب وھدی

मसीह और महदी मा'हूद हूँ, दयालु ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूँ, सलीबी विजय और इस्लामी पतन के समय ताकि ख़ुदा तआला का वादा पूरा हो और यह ऐसी बात नहीं है कि झूठ बना कर वर्णन की हो। यदि मैं झूठ गढ़ने वाला होता और सच्चा न होता तो ये समस्त निशान जो मेरे लिए एकत्र किए गए हैं हरगिज़ एकत्र न होते और ख़ुदा तआला उसका समर्थन नहीं करता जो ख़ुदा तआला पर झूठ बनाए और सीमा से आगे बढ़ जाए तो निश्चित रूप से मेरे युग में, मेरे मकान में, मेरी क़ौम में मेरे शत्रुओं की क़ौम में सोच-विचार करने वालों के लिए निशान हैं और मैं हकम-व-अदल हो कर आया हूँ ताकि तुम में तुम्हारे विभिन्न मामलों में फैसला कर दूँ और मैं असमय नहीं आया हूँ बल्कि उचित समय और सदी के सर पर आया हूँ और उस समय कि जब उपद्रव चरम सीमा को पहुँच गए हैं और न बिना प्रमाण और तर्क के आया हूँ तथा बहुत से निशान प्रकट हो गए हैं, मुंहों ने इन्कार किया और दिलों ने विश्वास कर लिया है ख़ुदा तआला जिस को चाहे हिदायत दे। क्या तुम मेरे मामले में सन्देह करते हो हालाँकि जितने सबूत के साथ सच प्रकट होना चाहिए था वह प्रकट हो गया और इतने प्रमाण प्रकट हुए कि जो असंख्य हैं। पवित्र क़ुर्आन को तुम नहीं देखते कि वह स्पष्ट एवं व्यापक

اللہ من ھدٰی ۔ ا تمارون فی امری وقد حصحص الحق وظھرت دلائل لا تُعَدُّ وتُحْصٰی ۔ الا تنظرون الی القراٰن وانہٗ یشھد لی ببیانٍ اوضح واجلٰی۔ وھل اتاك حدیث خیر الوریٰ ۔ اذ قال کیف انتم اذ نزل فیکم ابن مریم وامامکم منکم ففکّر فی قولہٖ منکم وتفکر کمن ا تقٰی ۔ وانّ ھٰذا الحدیث یقص علیکم مابین لکم الفرقان فلا تُفرّقوا بین کتاب اللہ وقول رسولہ المجتبٰی۔ واتقوا اللہ الذی ترجع الیہ کل نفسٍ فتجزٰی۔ الا تعلمون ماقال ربکم اعنی قولہٗ وَعَدَاللہ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ الٰی قولہٖ لَا یُشْرِکُوْنَ بِیْ شَیْئاً (سورۃ النور-۵۶) فمالکم تشرکون باللہ عیسٰی والدجال من غیر علمٍ من اللہ ولا الھدٰی ۔ وتنتظرون ینزل

वर्णन द्वारा मेरी गवाही देता है। तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस की भी ख़बर है जब आप ने फ़रमाया कि तुम्हारा क्या हाल होगा जब इब्ने मरयम तुम में अवतरित होगा, वह तुम्हारा इमाम और तुम में से ही होगा अर्थात् तुम्हारी ही क़ौम से न किसी अन्य क़ौम से। इस कथन में जो منکم (मिनकुम अर्थात् तुम में से) है विचार कर और संयमियों की तरह विचार कर तथा यह हदीस वही वर्णन करती है जो पवित्र क़ुर्आन ने कहा है। अत: ख़ुदा की किताब और रसूलुल्लाह के कथन में मतभेद पैदा न करो और उस ख़ुदा से डरो कि जिसकी ओर एक दिन जाना है और अपने कर्मों का प्रतिफल पाना है क्या तुम नहीं देखते कि हमारे ख़ुदा ने क्या कहा अर्थात् यह कि

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ (56 - अन्नूर)

से इस कथन तक

لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا (अन्नूर - 56)

क्या इस कथन में तुम विचार नहीं करते जो स्पष्ट तौर पर बाताता है कि समस्त ख़लीफ़े इसी उम्मत में से होंगे न कोई एक आकाश से उतरेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि हज़रत ईसा और दज्जाल को ख़ुदा का भागीदार ठहराते हो। क्या

مـن مـات وَاُلْحِـق بالمـوتٰى۔ أَعِنْد كـم حجّـةٌ قاطعـةٌ عـلٰى دعوا كـم
فتتبعونهـا او اٰثرتـم عـلى اليقـين ظنًّـا اخفٰـى ۔ ياحسـرةً عليكـم
انكـم نسـيتم قـول الله وقـول رسـولهٖ اعـنى منكـم وظننتـم ان
المسـيح يـأتى مـن السـّمٰوات العـلٰى۔ وهـل هـو الّا خـروجٌ مـن
القـراٰن وخـروجٌ مـن الحديـث ومفسـدةٌ عظمٰـى۔ و كيـف تتركـون
القـراٰن وا۔ شـهادةٍ اكـبر منـه لمـن اهتـدٰى۔ وان للقـراٰن شـانًا اَعْظم
مـن كلّ شـان وانـهٗ حَكَـمٌ ومهيمـنٌ و انـهٗ جمـع البراهـين وبـدّد
العـدا ۔ وانـهٗ كتـابٌ فيـه تفصيـل كلّ شى ءٍ وفيـه اخبـار مايـأتى
ومامضٰـى ۔ ولا ياتيـه الباطـل مـن م بـين يديـه ولا مـن خلفـهٖ وانـهٗ
نـور ربنـا الاعـلٰى ۔ فاتـرك كلّ قصـةٍ تُخَالِـفُ قصصـهٗ ولا تعـص

इस पर कोई तर्क रखते हो बल्कि अकारण प्रतीक्षा करते हो कि मसीह आकाश से आए। और वह आकाश से कैसे आ सकता है जबकि वह मृत्यु पा गया और मृत्यु-प्राप्त लोगों में सम्मिलित हो गया। क्या तुम्हारे दावे पर कोई ठोस प्रमाण है कि उसके अनुसरण में तल्लीन हो या विश्वास को त्याग कर गुप्त अनुमान को अपनाने में निर्भीक हो। तुम पर खेद कि तुम ने ख़ुदा तआला और उसके रसूल के कथन منكم (मिन्कुम) को भुला दिया और व्यर्थ विचार रखते हो कि मसीह आकाश से आएगा और यह तुम्हारा विचार पवित्र क़ुर्आन और हदीस से बाहर होने की निशानी है तथा सच से बाहर होना बहुत उपद्रव है तुम क़ुर्आन को क्यों छोड़ते हो। क्या कोई बड़ी भारी गवाही क़ुर्आन से अधिक तुम्हारे पास मौजूद है? और क़ुर्आन की वह उच्चतम प्रतिष्ठा है जो प्रत्येक प्रतिष्ठा से बुलन्द है और वह हकम है अर्थात् फैसला करने वाला और वह मुहयमिन है अर्थात समस्त हिदायतों का संग्रहीता, उसने समस्त तर्क एकत्र कर दिए और शत्रुओं के समूह को अस्त-व्यस्त कर दिया और वह ऐसी किताब है कि इसमें हर बात का विवरण है और उसमें भविष्य और भूतकाल की खबरें मौजूद हैं और झूठ उसमें नहीं आ सकता है न आगे से न पीछे से। और वह ख़ुदा तआला का प्रकाश है हर एक ऐसे किस्से

قول ربّك فتشقٰی ۔ وتعلم ان نبینا کان مثیل من نودی بالواد المقدس طُوٰی ۔ و کانت خلفاءہٗ کخلفاءہٖ و کانت السلسلتان متشابہتین فی المدٰی۔ و کذالك قال ربّنا وقد قرء ت فیما مضٰی ۔ وتلك حقیقۃٌ لا تُسْتر ولا تُخْفٰی ۔ فلا یصدّنك عنھا من اتبع ھواہ وترك الصراط وھو یرٰی۔

وعلمت انّی جئتُ علٰی اجلٍ من سیدی المصطفٰی۔ کمثل اجلٍ جاء علیہ من الکلیم ابن الصدیقۃ عیسٰی ۔ وعلمت انّ خاتم خلفاء ھٰذہ الامۃ من الامۃ لامن فئۃٍ اخرٰی ۔ فکیف تکفر بہٖ أَ تکفر بالقراٰن لِاَقوالٍ شتّٰی ۔ ومن فکّر فی اٰیۃ لیستخلفنھم مُلِئَ قلبہٗ یقینًا وایمانًا وترك مایُرْوٰی بخلافہٖ و یُحْکٰی ۔ و کُشفت علیہ الحقیقۃ و کَذّب من نطق بخلافہٖ و

को छोड़ दो जो क़ुर्आन का विरोधी है और प्रतिपालक के कथन की अवज्ञा न करो ताकि दुर्भाग्य के भंवर में न जा पड़ो। और तुम जानते हो कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के मसील थे तथा आप के समस्त ख़लीफ़े जो आप के बाद आए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ों के समान थे और ये दोनों सिलसिले परस्पर समयानुकूल समानता रखते थे और ऐसा ही हमारे ख़ुदा ने फ़रमाया है जैसा कि तुम ने पहले पढ़ लिया है और यह एक वास्तविकता है जिसे गुप्त रखना अच्छा नहीं है तुम्हारा लोभ और लालच उस से तुम्हें न रोक दे। और न वह व्यक्ति जो कि जान बूझ कर सीधे मार्ग को छोड़ता है।

और तुम जानते हो कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उसी समय पर आया हूँ कि जिसमें ईसा अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आए थे और तुम ने जान लिया कि उम्मत का ख़ातमुल खुलफ़ा इसी उम्मत में से है न कि दूसरे गिरोह में से। अत: क्यों इसका इन्कार करते हो? क्या निर्मूल बातों के भरोसे पर क़ुर्आन का इन्कार करते हो। और जो कोई विचार करेगा इस आयत में कि لیستخلفنھم है उसका, दिल विश्वास और ईमान से भर जाएगा और

روىٰ۔ فويلٌ للذى سمع هٰذه الدلائل ثم كَذَّب وابٰى ۔ امر حسب ان اللّٰه وعد وعدًا ثم اخلفهٗ او نسى وعدهٗ كرجلٍ هوكثير الذهول ضعيف القُوىٰ ۔ سبحان اللّٰه تقدس وتعالٰى ۔ فبأىّ حديثٍ م بعد كتاب اللّٰه تؤمنون ۔ ا تتركون اليقين بشكٍ سرٰى ۔ أَ تؤثرون الظنّ علىٰ ما جاء كم من اليقين ومن أَظْلم مِمّن ترك الحق واتبع الهوٰى ۔ أَبقى شك فى خاتم الخلفاء وفى انهٗ منكم فأتوا بالقراٰن ان كان الامركذا۔ وان الحق قد حصحص فلا تحثوا عليه التراب ولا تخفوه فى الثرٰى ۔ واتقوا اللّٰه الذى اليه ترجعون وحدانًا ۔ وما ارٰى معكم احباب الدنيا۔ فقوموا فرادىٰ فرادىٰ ولا تنظروا الىٰ من احبّ أو عادٰى ۔ ثم فكروا

जो बातें इसके विरुद्ध वर्णन की जाती हैं उन सबको छोड़ देगा तथा उस व्यक्ति पर सच्चाई प्रकट हो जाएगी और वह उसे झुठलाएगा जो उसके विरुद्ध रिवायत करेगा उस व्यक्ति पर अफ़सोस है जो तर्कों को सुने और फिर झुठलाने के पीछे-पीछे हो ले। क्या यह सोचता है कि ख़ुदा तआला ने वादे के विरुद्ध किया या अपने वादे को ऐसे व्यक्ति की भांति भूल गया जिस को भूलने की बीमारी है। इन कुधारणाओं से ख़ुदा तआला का अस्तित्व पवित्र है। क़ुर्आन को छोड़ कर किस हदीस पर ईमान लाओगे। क्या विश्वास को सन्देह के बदले में जो तुम्हारे दिलों में जम गया है, छोड़ते हो? क्या अनुमान को विश्वास के बदले अपनाते हो। इस से अधिक कौन ज़ालिम (अत्याचारी) होगा जो सच्चाई को छोड़े और लोभ-लालच का अनुसरण करे। क्या अब कोई सन्देह शेष रहा गया ख़ातमु लखुलफ़ा में या इस मामले में कि ख़ातमुल खुलफ़ा तुम में से है। क़ुर्आन को लाओ यदि सन्देह हो, सच्चाई प्रकट हो गई उस पर मिट्टी न डालो तथा हरगिज़ न छुपाओ और ख़ुदा तआला से जिसकी ओर जाना है, डरो। और मैं नहीं देखता कि तुम्हारे दुनिया के मित्र तुम्हारी सहायता के लिए तुम्हारे साथ जाएंगे। अत: तुम एक-एक होकर खड़े हो जाओ और किसी की मित्रता या शत्रुता की ओर न देखो, फिर संयमी दिल और तीक्ष्ण बुद्धि लेकर

بقلبٍ اتقٰی ۔ وعقلٍ اجلٰی۔ اَمَا قال ربّکم
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

وانّ فی ذالک حجۃً علٰی من طغٰی ۔ فان لفظ کما یوجب ان یکون سلسلۃ الخلفاء فی ھٰذہ الامۃ کمثل سلسلۃ نبی اللّٰہ موسٰی التی ختمت علی ابن مریم عیسٰی۔ فاین تذھبون من ھٰذہ الاٰیۃ وتبعدون ما دنٰی ۔ وو اللّٰہ لیس فی القراٰن الذی ھو اھل الفصل والقضاء الّا خبر ظھور خاتم الخلفاء من امۃ خیر الورٰی ۔ فلا تَقْفُوْا ما لیس لکم بہٖ علمٌ و قد اعطیتم فیہ من الھدٰی ۔ ولا تخرجوا من افواھکم کلماتٍ شتّٰی ۔ التی لیست ھی الّا کسھمٍ فی الظلمات یُرْمٰی ۔ وان ھٰذا الوعد وعد حق

विचार करो क्या तुम्हारे ख़ुदा ने नहीं फ़रमाया कि -

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर - 56)

इसमें एक प्रमाण है उसके लिए कि जो सीमा से बाहर जाता है। क्योंकि शब्द کما (जैसे) जो इस आयत में मौजूद है इस उम्मत के ख़लीफों के सिलसिले को मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ों के समान होने को अनिवार्य करता है और स्पष्ट है कि मूसा अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ों का सिलसिला ईसा अलैहिस्सलाम पर समाप्त हो गया है। अत: इस आयत से कहाँ मुँह फेरते हो और निकट मार्ग को दूर डालते हो। और ख़ुदा की क़सम पवित्र क़ुर्आन में, जो सम्पूर्ण मतभेदों का निर्णायक है, कहीं चर्चा नहीं है कि सिलसिला-ए-मुहम्मदिया का ख़ातमुल खुलफ़ा मूसा के सिलसिले में से आएगा। उसका अनुकरण मत करो कि तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है अपितु उसके विरुद्ध तुमको प्रमाण दिया गया तथा विभिन्न वाक्यों को अपने मुँह से न निकालो कि वे वाक्य उस तीर के समान हैं जो अँधेरे में चलाया जाए। और वह वादा जिसका वर्णन हुआ सच्चा वादा है। और तुम्हें कोई धोखा न दे और सूरह फ़ातिहा में दूसरी बार इस वादे की ओर संकेत किया है और यह आयत अर्थात् صراط الذین انعمت علیھم अपनी नमाज़ों में पढ़ते

فلا تغرّنكم ما تسمعون من اَهْلِ الهَوٰی۔ وقد اشیر الیه فی الفاتحة مرةً اخرٰی۔ وتقرء ون فی الصلٰوة صراط الذین انعمت علیهم ثم تستقرون سُبل الانکار وتسّرون النجویٰ ۔ مالکم تدوسون قول اللّٰه تحت الاقدام الا تموتون اوتترکون سدًی ۔ وتذکرونی کما یُذْکَرُ الکفّار وتقولون اقتلوه ان استطعتم وتکتبون الفتوٰی ۔ وما کان لنفسٍ ان تموت الّا باذن اللّٰه وانّ معی حفظةً یحفظونی من العدا ۔ فاجمعوا کیدکم ثم انظروا هل یسقط الکید الا علٰی من جفا ۔ وعسٰی ان تحسبوا رجلًا کاذبًا وهو صادقٌ فیما ادعٰی ۔ فلا تمیلوا کل المیل ومن ترک التقوٰی فقد هوٰی ۔ أرأیتم ان کنتُ من عنداللّٰه وقد کذبتم فما بال من اعتدٰی ۔ و انتم تکرهون ان یموت عبد اللّٰه عیسٰی

हैं फिर बहाना बनाते हैं और ख़ुदा के प्रमाण को दूर करने के लिए मशवरे करते हैं। तुम्हें क्या हो गया ख़ुदा तआला के आदेश को अपने पैरों से रौंदते हो। क्या एक दिन तुम नहीं मरोगे या कोई तुम से नहीं पूछेगा? और मेरा वर्णन काफ़िरों के वर्णन की तरह करते हैं और कहते हैं कि यदि हो सके तो क़त्ल कर दिया जाए और इसी प्रकार फ़तवे लिखते हैं। कोई व्यक्ति ख़ुदा की आज्ञा के बिना नहीं मरता और मेरे साथ तो ख़ुदा तआला के संरक्षक हैं कि वे मेरी मेरे शत्रुओं से रक्षा करते हैं तुम समस्त उपायों को इकठ्ठा कर लो औ फिर देखो कि हर एक का उपाय (यत्न) उसी पर लौट कर पड़ेगा जो ज़ालिम है और संभव है कि तुम किसी को झूठ बोलने वाला समझो और वह अपने दावे में सच्चा निकले। अत: सच्चाई से बिलकुल दूर न हो जाओ जिसने संयम को छोड़ा वह गिर गया। तुम देखते नहीं कि यदि मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूँ और तुम मुझे झुठलाते हो तो उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जो सीमा से बाहर चला गया? तुम्हें अच्छा मालूम नहीं होता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा जाएँ और उनके जीवित रहने में तुम्हारा कुछ फायदा नहीं है परन्तु ख़ुदा के लिए उनकी मृत्यु में बड़े-बड़े उद्देश्य हैं। क्या ईसा

۔ ولا نفع لکم فی حیٰوتہٖ وللّٰہ فی موتہٖ مآرب عظمٰی ۔أَلٰہٌ شرکۃٌ فی السّماء مع ربّنا فلا یبرح مقامہٗ ولا یتدلّٰی۔ فلا تحاربوا اللّٰہ بجھلکم وصلّوا علیٰ نبیکم المصطفٰی ۔ وھو الوصلۃ بین اللّٰہ وخلقہٖ وقاب قوسین او ادنیٰ ۔ اسمعتم منی مالا اسمعکم القراٰن او رأیتم عیسٰی فی السماء فکبر علیکم ان تُکَذِّبوا اعینکم او ظننتم ظنًّا وان الظن لا یغنی من الحقّ شیئًا ۔ وقد علمتم ان القراٰن اھلکہٗ وتوفّٰی ۔ فبأیّ حدیثٍ تؤمنون بعدہٗ وتکفرون بما انزل اللّٰہ واوحٰی ۔ ا تترکون الیقین لظنٍ اھلك قبلکم قومًا و ارذٰی ۔ یا حسرۃ علی الذین یقولون انا نحن العلماء ۔ انھم ما صاروا من انصاری بل صاروا اوّل من اٰذٰی ۔

अलैहिस्सलाम का आसमान में निवास करना ख़ुदा तआला के साथ भागीदारी है कि जिसकी वजह से वह आकाश को नहीं छोड़ते और उस स्थान से स्थानांतरित नहीं होते? अत: अपनी मूर्खता से ख़ुदा के साथ युद्ध मत करो तथा ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजो कि वह ख़ुदा और सृष्टि में माध्यम हैं तथा इन दोनों के कौस (धनुष) 'ख़ुदाई' और 'बन्दगी' में आप का अस्तित्व है। क्या मुझ से कभी कोई ऐसी बात सुनी है जो क़ुर्आन ने नहीं सुनाई या ईसा अलैहिस्सलाम को आकाश में देख लिया है जो तुम्हें बोझल मालूम होता है कि जो कुछ अपनी आँख से देख लिया है उसका इन्कार करो? या यह केवल अनुमान है और यह स्पष्ट है कि केवल अनुमान विश्वास का स्थानापन्न नहीं होता और निस्सन्देह तुम ने जान लिया कि क़ुर्आन ने ईसा अलैहिस्सलाम को मृत्यु दे दी है अब क़ुर्आन के बाद किस हदीस पर ईमान लाओगे। क्या हदीस के लिए क़ुर्आन का इन्कार करोगे कि जो ख़ुदा तआला की ओर से उतरा है। क्या उस अनुमान के लिए जिस ने तुम से पहली क़ौम यहूदियों को तबाह किया, विश्वास को त्याग दोगे? इस समय के उलमा पर बड़ा अफ़सोस है कि वे मेरे सहायक न हुए बल्कि सब से पहले मुझे कष्ट दिया।

لیتمّوا نَبَأَ الرسول بِاَلْسنھم وما روی عن خیر الوریٰ۔ وقال اظلمھم اقتلوا ھٰذا الرجل انّی اخاف اَنْ یُّبدل دینکم او یحطکم اذا علا ۔ یااھل الحسد والھوٰی ۔ویلکم لم تؤثرون ھٰذہ الحیٰوۃ الدنیا ۔ وان القراٰن یشھد انّ خاتم خلفاء ھٰذہ الامّۃ رجلٌ من الاُمّۃ وان المسیح من الموتٰی ۔ ومن اظلم ممن الذی عصی القراٰن وابٰی ۔ وھو الحَکَمُ من اللہ ولا حُکم الّا حکمہ الاجلٰی ۔ اولم تکفکم اٰیۃ فلمّا توفّیتنی اوعند کم صحفٌ اخرٰی ۔ وان سورۃ النّور تکذبکم والفاتحۃ تفتح علیکم باب الھدٰی ۔ فان اللہ بدء فیھا من المبدء وجعل اٰخر الازمنۃ زمن الضالین وانھم ھم النصارٰی ۔ کما جاء من نبیّنا المجتبٰی۔

ताकि उस भविष्यवाणी को अपने मुँह से पूरा करें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने की थी और एक व्यक्ति जो सब से बड़ा अत्याचारी था उसने मेरे बारे में कहा कि इस व्यक्ति को क़त्ल करो कि मैं डरता हूँ कि तुम्हारे धर्म में विघ्न डालेगा और इस से तुम्हारी प्रतिष्ठा एवं सम्मान में अन्तर आ जाएगा। हे ईर्ष्यालुओ! तुम पर अफ़सोस है कि तुम इस संसार के छोटे से जीवन को धारण करते हो और क़ुर्आन ने निश्चित तौर पर गवाही दी है कि इस उम्मत का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा इसी उम्मत में से हो और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं तथा उस व्यक्ति से अधिक अन्याय करने वाला कौन है जो क़ुर्आन की अवज्ञा करके मुँह फेर ले हालाँकि वह ख़ुदा की ओर से फैसला करने वाला है और उसी का आदेश-आदेश है। क्या आयत **فلمّا توفّیتنی** तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं, या तुम्हारे पास अन्य क़ुर्आन हैं। और सच यह है कि सूरह नूर तुम्हें झुठलाती है और सूरह फ़ातिहा तुम्हारे लिए हिदायत का मार्ग खोलती है। अत: ख़ुदा तआला ने इस में 'संसार के उद्गमे से' प्रारंभ किया है और संसार के इस सिलसिले को गुमराहों के युग पर समाप्त किया है और वह ईसाइयों का गिरोह है। जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सही हदीसों में आया है। अब बताओ

فاين فيها ذكر دجّالكم فاَروناه من القراٰنوقد هلك من ترك و القراٰن وعاداٰى اهلهٗ وقلٰى ۔ أَنسى الخبير العليم ماحفظتموه او افتريتم علٰى كتاب الله ومن اظلم ممّن افترٰى ۔ وانّهٗ لقولٌ فصلٌ لاغبار عليه وانّهٗ لبيانٌ اظهر و اجلٰى ۔ وان هٰذا لهو الحق و من اصدق من الله قيلًا ۔ ومن اعلم من ربّنا الاعلٰى ۔ ام عند كم حجةٌ تمنعكم من القراٰن فأتوا بها ان كنتم تتقون الله ولا تتبعون الهوٰى ۔ وتعلمون ان الفاتحة اُمّ الكتاب وانها تنطق بالحق وفيها ذكر اخيار اُمّةٍ خلت من قبل وذكر شرهم الذين غضب الله عليهم فى هٰذه الدنيا ۔ وذكر الذين اختتمت عليهم هٰذه السورة اعنى الضالّين ۔ وقد اقررتم بانّهم النصارٰى۔

तुम्हारे दज्जाल का वर्णन सूरह फ़ातिहा में कहाँ है। यदि है तो तुम क़ुर्आन में हमें दिखाओ, जिसने क़ुर्आन को छोड़ा और उनको दुश्मन समझा जो क़ुर्आन के सेवक हैं वह तबाह हो गए। क्या सर्वज्ञ एवं बहुत ख़बर रखने वाले ख़ुदा ने भुला दिया जो तुमने याद कर रखा है या ख़ुदा की किताब पर झूठ गढ़ते हो और झूठ गढ़ते वाले से अधिक अन्याय करने वाला कौन है और निस्सन्देह क़ुर्आन एक निर्णायक कथन है उस पर कोई धूल नहीं और वह रोशन (प्रकाशमान) एवं स्पष्ट बयान है और सच यही है। ख़ुदा से अधिक सच्चा और अधिक जानने वाला कौन है? क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है जो क़ुर्आन के अनुकरण से रोकता है वह प्रमाण हम को दिखाओ यदि ख़ुदा से डरते हो और लोभ-लालच का अनुकरण नहीं करते हो। तुम जानते हो कि सूरह फ़ातिहा उम्मुल क़ुर्आन (क़ुर्आन की मां) है जो कुछ सच है वही कहती है और इसमें उन नेक लोगों का वर्णन है जो मुसलमानों से पहले गुज़रे हैं और उन बुरे लोगों का भी वर्णन है जो मुसलमानों से पहले हुए हैं और ख़ुदा ने उन को दण्डित किया और उनका भी वर्णन है कि जिन पर इस सूरह को समाप्त किया गया है अर्थात् गुमराहों का फ़िर्क़ा और तुम इक़रार करते हो कि वह गुमराहों का फ़िर्क़ा ईसाई ही हैं।

واَخّرَ اللّٰہ ذکرھم فی ھٰذہ السورۃ لیعلم ان فتنتھم اٰخر الفتن فلم یبق لدجّالکم موضع قدمٍ یا اولی النّھٰی وا ٓن ھٰذہٖ فرقٌ ثلٰثٌ من اھل الکتٰب و کذالک منکم ثلٰثٌ شابہ بعضکم بعضھم وضاھا ۔ وحث اللّٰہ للمؤمنین علٰی ھٰذا الدعاء ثم وعد فی سورۃ النور وعدًا انہٗ لیستخلفنّ قومًا منھم کمثل الذین استُخْلِفُوْا من قَبْلُ لیبشر المؤمنین انّ الدعاء اجیب لبعضھم من الحضرۃ العلیا ۔ فایّ بیانٍ اظھر من ھٰذا البیان یا اولی النھٰی ۔ افشقّ علیکم ان یجییٔ مسیحکم منکم او اردتم ان تکذبوا وعدالمولٰی ۔ یاقوم انما فتنتم من ربّکم فلا تنقلوا الی الخطیات الخُطا ۔ وما قص علیکم اللّٰہ من نبأ عیسٰی ۔ الّا لیبشر ان مسیحًا یأتی منکم کمثل مسیح بنی اسراء یل

और ख़ुदा ने सब से बाद में इस सूरह के अन्त में उनका वर्णन किया है ताकि जान लो कि ईसाइयों का फ़ित्न: समस्त फ़ित्नों के पीछे है। अत: तुम्हारे दज्जाल के लिए क़दम रखने का स्थान नहीं रहा। और ये तीन फ़िर्क़े हैं अहले किताब के तथा इसी प्रकार तुम में भी तीन फ़िर्क़े हैं कि कुछ फ़िर्क़े (अन्य) फ़िर्क़ों के समान हो गए और इस दुआ पर ख़ुदा ने मोमिनों को प्रेरणा दिलाई है तथा इसके बाद सूरह नूर में वादा किया गया है कि मुसलमानों में से ख़लीफ़े बनाएगा उन ख़लीफ़ों के समान जो उनसे पहले हुए हैं ताकि मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे कि उन की दुआ स्वीकार हुई। अब कौन सा बयान उस बयान से अधिक स्पष्ट हो गया। क्या यह बात तुम्हें बुरी मालूम होती है कि तुम्हारा मसीह तुम में से ही हो या चाहते हो कि ख़ुदा के कलाम को झुठलाओ। हे मेरी क़ौम! ख़ुदा की ओर से इसमें तुम्हारी परीक्षा है। अब ग़लती की ओर क़दम मत उठाओ। ख़ुदा ने कोई ख़बर ईसा अलैहिस्सलाम की तुम को नहीं दी परन्तु इस उद्देश्य से कि तुम में से भी यह मसीह बनी इस्राईल के मसीह के समान अवश्य आएगा। अत: ख़ुदा के वादे पर प्रसन्न हो जाओ उस व्यक्ति के समान

فابشروا بظهور الوعد ولا تختصموا كالذى اعرض وتولىٰ۔ وقَد علمتم ان عيسٰى قد جاء فى اٰخر زمن اليهود و كذالك قدّر الله لمسيحكم اجلًا مُسَمًّى۔ ليتم المشابهة بينكم وبين الذين خلوا من قبل فمالكم تَسْلكون غير طريقٍ سلكه الله وتنسون امرًا اراده الله وقضٰى ۔ و اِنّ زماننا هٰذا هو اٰخر الازمنة كما كان لبنى اسرائيل زمان عيسٰى۔ وان عيسٰى كان علمًا لساعة اليهود و انا علمٌ للساعة التى تحشر الناس فيها و تُحيٰى كل نفسٍ لتجزٰى ۔ وقد ظهر اكثر علاماتها وذكرها القراٰن ذكرًا۔ وعُطّلت العشار ونُشرت الصحف والاسفار وجُمع القمر والشمس فى رمضان وفُجّرت البحار وفتحت الطرق وزُوّجت بنفوسكم نفوس بلادٍ قصوٰى ۔ وان الجبال نُسفت اكثرها فما

झगड़ा न करो कि जो मुँह फेरता और विमुख होता है। और तुम जानते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के अन्तिम युग में आए थे। इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने तुम्हारे मसीह के लिए समय निर्धारित किया जो बनी इस्राईली मसीह के युग के समान था ताकि वह समानता पूर्ण हो जो इस उम्मत को बनी इस्राईली उम्मत से है। तुम्हें क्या हो गया है जो तुम उस मार्ग को अपनाते हो कि जो ख़ुदा के मार्ग का विरोधी है तथा इस बात को भूल जाते हो जिस बात का ख़ुदा तआला ने इरादा किया है। निस्सन्देह यह हमारा युग अन्तिम युग है उस युग के समान जो ईसा अलैहिस्सलाम का बनी इस्राईल के लिए अन्तिम युग था। निस्सन्देह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम यहूदियों के विनाश की घड़ी के लिए प्रमाण थे और मैं क़यामत के लिए प्रमाण हूँ तथा बहुत से इस युग के लक्षण पवित्र क़ुर्आन में लिखे हैं और ऊँटनियाँ बेकार हो गईं तथा पुस्तकें असंख्य प्रकाशित हुईं और चन्द्र एवं सूर्य को रमज़ान में ग्रहण लगा तथा नहरें जारी हुईं और मार्ग खुल गए और दूरस्थ देशों के लोग आपस में मिलने लगे, और पर्वत अपने स्थान से हिल गए कि कोई ऊँचाई नीचाई शेष न रही और ऊंट सवारी और सामान ढोने

ترون فيها عوجًا ولا امتًا ۔ وتُرِكت القلاص فلا يحمل عليها ولا يُسعٰى ۔ فثبت ان زماننا هٰذا هو اٰخر الازمنة التي ذكرت في القراٰن ط وتَعَيَّنَ ان هٰذا الوقت هو وقت اٰخر الخلفاء لِاُمّة نبيّنا خير الورٰى ۔

وقد بلغ الثبوت كمالهٗ وماغادر الله شكًا ولا ريبًا ۔ وانا مُلئنا فيه معرفةً وعلمًا تامًا و نورًا مُبينًا ۔ حتّٰى لو رفع الحجاب لما ازددنا يقينًا ۔ أَترون من دوني في هٰذا الاَوَانِ رجلًا يقول اني انا المسيح الموعود ويأتي كمثلي بأياتٍ كبرٰى ۔ فمالكم لا تقبلون من جاء كم علٰى وقتهٖ وارا كم من الأيات ما ارٰى ۔ وقد جاء علٰى اجلٍ بعد نبيّه المصطفٰى كمثل اجلٍ بعث المسيح فيه بعد موسٰى ۔ وقد ذكرت غير مرةٍ يا اولي النهٰى ۔ اني انا المسيح الذي كان نازلًا من الحضرة العليا ۔ و كنت قدر ظهوري في اٰخر السلسلة

से छोड़ दिए गए। इस से सिद्ध हो गया कि यह युग वही अन्तिम युग है कि जिसका वर्णन क़ुर्आन में है और निर्धारित हो गया कि यह समय वही समय है कि जिसमें ख़ातमुल खुलफ़ा का अवतरित होना आवश्यक था।

और इस बात का सबूत अपनी पूर्णता को पहुँच गया और ख़ुदा तआला ने इसमें कोई सन्देह शेष नहीं छोड़ा और हम इस मामले में इतनी मारिफ़त दिए गए हैं कि यदि मध्य से पर्दा उठ जाए तो हमारे विश्वासों में वृद्धि नहीं होती। क्या मेरे अतिरिक्त किसी व्यक्ति को इस युग में देखते हो जो कहे कि मैं मसीह मौऊद हूँ और मेरे समान बड़े-बड़े निशान लाया हो। तुम्हें क्या हो गया है जो तुम उसे स्वीकार नहीं करते कि जो अपने ठीक समय पर आया और बहुत से निशान दिखलाए और उस समय आया कि जो उस युग के समान है कि जिस युग में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आए थे और मैंने बार-बार वर्णन किया है कि मैं वही मसीह हूँ कि जिसका प्रदुर्भाव मुहम्मदी सिलसिले के अन्त में निश्चित था, उस मसीह के समान जो मूस्वी

المحمدية كمثل المسيح الذى جاء فى اٰخر السلسلة الموسوية باذن المولىٰ ۔ ليتساوى السلسلتان و يتم الوعد والكريم اذا وعد وفا ۔ فالحمد للّٰه الذى مابخس هٰذه الامة حقها وما نقصهم قدرًا ۔ وأرى الامر كتطابق النعل بالنعل فما ترٰى ظلمًا ولا هضمًا ۔ فلا تكفر بما ثبت من القراٰن وقل ربّ زدنى علمًا ۔ ومالك لا تتبع ماقال اللّٰه وتتبع اقوالًا اخرٰى ۔ وان هدى اللّٰه هو الهدٰى ۔ واللّٰه صدقكم الوعد فاين تذهبون من وعده وتنحتون قصصًا شتّٰى ۔ وايىّ ؔ فائدةٍ لكم فى حيات المسيح ايها النوكٰى ۔ من غير انكم تنصرون به النصارٰى۔ افلا تنظرون الى الزمان وقد نزلت عليكم بليةٌ عظمٰى ۔ وتنصّر فوجٌ من قومكم واحبّاء كموهلكت البلاد والعباد ۔ واهتزّعرش الرحمٰن لما نزل فقضٰى ما قضٰى ۔ ولو

सिलसिले के अन्त में आया था ताकि दोनों सिलसिले समान हो जाएँ और ख़ुदा का वादा पूर्ण हो जाए। अत: समस्त विशेषताएं ख़ुदा के लिए हैं कि इस उम्मत के अधिकार को कम नहीं किया और समानता के मामले को परस्पर दोनों जूतियों के समान बराबर कर दिया। अत: तू कोई ज़ुल्म और कमी-बेशी को नहीं देखता। अत: उस चीज़ का इन्कार मत कर कि जो पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है। और दुआ कर कि हे ख़ुदा मेरे ज्ञान में वृद्धि कर। तूझे क्या हो गया है कि तू ख़ुदा के कलाम का अनुकरण नहीं करता तथा दूसरे कथनों के पीछे हो लिया है और हिदायत वही हिदायत है जो ख़ुदा की ओर से है। ख़ुदा ने अपना वादा सच्चा किया अब ख़ुदा के सच्चे वादे से कहाँ भागते हो और झूठे क़िस्से बनाते हो और मसीह अलैहिस्सलाम के जीवन में तुम्हें इसके अतिरिक्त क्या फ़ायदा है कि पादरियों की सहायता करते हो और युग की ओर दृष्टि नहीं डालते हो। और नहीं देखते हो कि कितने मुसलमान ईसाई हो गए और कितने ख़ुदा के बन्दे हलाक हो गए। ख़ुदा के बन्दों पर बड़ी आपदा आई यदि ख़ुदा का यही इरादा होता कि किसी को आकाश से उतारता जैसा कि तुम्हारा

اراد اللّٰہ اَن ینـزل احدًا من السَّمآء کما زعمتم لکان خیرًا لکم ان ینـزل نبیّکم المصطفٰی۔ اما قرء تم قولہٗ تعالٰیلو اردنا ان نتّخذ لھوًا لا تخذناہ من لدنا یعنی محمّدًا فانظروا نظرًا۔ ان السَّمٰوات والارض کانتا رتقًا فَفُتِقَتَا فی ھٰذا الزمان لیبتلی الصالحون والطالحون و کلٌّ بما عمل یجزٰی۔ فاخرج اللّٰہ من الارض ما کان من الارض وانزل من السَّماء ما کان من السَّمٰوات العُلٰی۔ ففریقٌ عُلّموا مکائد الارض وفریقٌ اعطوا ما اعطی الرُّسُل من الھُدٰی۔ وقُدِّر الفتح للسماویّین فی ھٰذا الوغٰی۔ وان تؤمنوا او لا تؤمنوا لن یترك اللّٰہ العبد الذی ارسلہٗ للورٰی۔ ولا تضاع الشمس لانکار الاعمٰی فریقان یختصمان فی الرشد والھوٰی۔ وفُتحت لفریقٍ

विचार है तो उचित यह था कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आकाश से उतारता। ख़ुदा ने जो कहा तुमने अब तक नहीं पढ़ा कि यदि हम बेटा बनाते तो अपने पास से बेटा बनाते अर्थात मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को। इस आयत पर विचार करो, पृथ्वी तथा आकाश दोनों बन्द थे। इस युग में दोनों खुल गए ताकि नेकों और बुरों की परीक्षा हो जाए। और प्रत्येक गिरोह अपने कर्मों का प्रतिफल पाए। अतः ख़ुदा तआला ने कुछ वस्तुएं पृथ्वी की पृथ्वी से निकालीं और जो कुछ आकाश से उतारना था उतारा। एक गिरोह ने ज़मीनी छल-कपटों से शिक्षा पाई और दूसरे गिरोह को वे वस्तुएं दीं जो रसूलों को दी थीं। इस युद्ध में आकाश वालों को विजय प्राप्त हुई। तुम चाहो ईमान लाओ या न लाओ ख़ुदा तआला अपने बन्दों को जिसे जनता है सुधार के लिए भेजा गया है हरगिज़ न छोड़ेगा तथा ख़ुदा तआला ऐसा नहीं है कि अंधे के इन्कार से सूर्य को नष्ट कर दे। सदस्य हैं जो आपस में झगड़ते हैं। एक गिरोह के लिए पृथ्वी के दरवाज़े खोले गए और दूसरे गिरोह के लिए आकाशीय दरवाज़े खोले गए, किन्तु जिस गिरोह के लिए ज़मीनी दरवाज़े खोले गए वह शैतान का अनुकरण करते हैं और वह गिरोह जिसके लिए आकाश के

ابواب الارض الیٰ تحت الثریٰ ۔ وللثّانی ابواب السماء الیٰ سدرة المنتهٰی ۔ اما الذین فُتحت علیهم ابواب الارض فهم یتّبعون شیطانهم الذی اغوٰی ۔ والذین فُتحت علیهم ابواب السّماء فهم ورثاء النبیین وقومٌ مطهّرون من کل شرٍّ وهوًی۔ یدعون قومهم الیٰ ربّهم ویمنعونهم مِمّا یُشرك بهٖ فی الارض والسَّمٰوات العلیٰ ۔ و انی بعثتُ فیکم من اللّٰہ الذی لا توقرونهٗ لانذرقومًا اطرء وا ابن مریم عیسٰی۔

दरवाज़े खोले गए वे नबियों के वारिस हैं तथा हर प्रकार से पवित्र और शुद्ध हैं। क़ौम को प्रतिपालक की ओर बुलाते है और उनको बुराइयों से बचाते हैं और कहते हैं कि ख़ुदा से साथ पृथ्वी एवं आकाश में किसी वस्तु को भागीदार नहीं बनाना चाहिए। मैं तुम में उस ख़ुदा तआला की ओर से अवतरित हुआ हूँ जिस का तुम सम्मान नहीं करते और मैं क़ौम को इसलिए डराता हूँ कि इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम के पक्ष में अतिश्योक्ति करते हैं।

الباب الثالث

یاقوم ماھٰذہ التماثیل التی انتم لھا عاکفون ۔ اتترکون کلام اللہ لاَ قَوَالٍ لا تعرفونھا اُفٍّ لکم ولما تنحتون ۔ وما تحقّقت عند کم تلک الاقوال ولا قائلھا وان انتم الّا تظنون۔ أَتؤثرون الظنّ علی الیقین والظنّ لا یغنی من الحق شیئًا ولا انتم بہٖ تبرء ون ۔ وقد وعد اللہ انہٗ یستخلف من ھٰذہ الامۃ ط أَفَاَنْتُمْ لہٗ منکرون ۔ وما وعد انہٗ ینزل مسیحکم من السماء وِاِن وعد فاخرجوہ لنا من القراٰن ان کنتم تصدقون ۔ وقد ثبت من وعدہٖ ان خاتم الخلفاء منّا أفَاَنْتُم فیہ تشکون ۔ فأیّ

तृतीय अध्याय

हे क़ौम! ये कैसे बुत हैं कि जिन पर तुम जमे बैठे हो। क्या ख़ुदा के कलाम को छोड़ते हो उन बातों के बदले में कि जिनकी वास्तविकता को तुम नहीं पहचानते। तुम पर और तुम्हारी स्वयं बनाई हुई बातों पर अफ़सोस! वह कथन और उनके कहने वाले तुम्हारे नज़दीक सिद्ध नहीं हैं और तुम भ्रम का अनुसरण करते हो। क्या अनुमान को विश्वास पर अपनाते हो। हालाँकि अनुमान सच से नि:स्पृह नहीं करता और तुम इसके कारण बरी नहीं हो सकते तथा ख़ुदा ने निस्सन्देह वादा किया है कि इसी उम्मत में से ख़लीफ़े नियुक्त होंगे क्या तुम इन्कार करते हो। और हरगिज़ वादा नहीं किया है कि तुम्हारा मसीह आकाश से उतरे और यदि वादा किया है तो हमें भी क़ुर्आन से दिखाओ यदि तुम सच्चे हो और ख़ुदा का वादा सच्चा हो चुका है कि ख़ातमुल ख़ुलफ़ा हम से होगा, क्या तुम इसमें सन्देह रखते हो, फिर कौन सी लड़ाई इसके बाद शेष

نزاعٍ بقی بعدہٗ مالکم لا تفکرون ۔ لا ترفعوا اصواتکم فوق کتاب اللہ و ان القراٰن قدحکم فی الذی کنتم فیہ تختلفون۔ اَلا ترضون بماقضی القراٰن واللہ احقّ اَنْ یقبل قولہٗ ان کنتم تؤمنون ۔ واللہ جعل اوّلکم واٰخرکم کسلسلۃ موسٰی فھل انتم تشکرون۔ انظروا الٰی مثیل موسٰی سید کم ونبیّکم فی اوّل السلسلۃ فاین مثیل عیسٰی فی اٰخرھا او بقیت السلسلۃ ناقصۃً ایّھا المتدبرون ۔ الا ترون فتن القوم الذین ھم من کل حدبٍ ینسلون ۔ وقد جعلتم تحت اقدامھم نکالًا من اللہ ثم انتم لا ترجعون ۔ عسٰی ربّکم ان یرحمکم فویحکم لم لا تسمعون ۔ أَتطمعون ان ینزل عیسٰی من السّماء ھیھات ھیھات لما تطمعون ۔ أَترجون ان یخلف اللہ وعدہٗ و یتبع اھواء کم ایھا

रह गई। तुम्हें क्या हो गया कि डरते नहीं। अपनी आवाज़ों को क़ुर्आन से ऊंचा न करो क़ुर्आन ने फैसला कर दिया है जिसमें कि तुम मतभेद करते थे। क्या तुम क़ुर्आन के फैसले पर सहमत नहीं होते तथा ख़ुदा ज़्यादा अधिकार रखता है कि उसका कथन स्वीकार किया जाए यदि तुम मोमिन हो। और ख़ुदा ने तुम्हारे प्रथम और अन्तिम को मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले के समान बनाया है, क्या तुम धन्यवाद करते हो सिलसिले के प्रारम्भ में तुम अपने सरदार और मूसा के समरूप नबी की ओर दृष्टि डालो। अत: ईसा का समरूप इस सिलसिले के अन्त में कहाँ है या सिलसिला अपूर्ण रह गया है। हे विचार करने वालो! क्या तुम उस क़ौम के उपद्रव को नहीं देखते कि प्रत्येक ऊँचाई से दौड़ते हैं और तुम्हें उनके पैरों के नीचे ख़ुदा ने बतौर दण्ड के डाल दिया है, फिर भी नहीं लौटते। निकट है कि तुम्हारा प्रतिपालक तुम पर दया (रहम) करे। अफ़सोस क्यों नहीं सुनते। क्या आशा रखते हो कि ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरें? यह तुम्हारी आशा कभी भी पूरी न होगी। क्या आशा रखते हो कि ख़ुदा तआला अपने वादे के विरुद्ध करे और तुम्हारी इच्छाओं का अनुकरण करे। हे झूठ के

المبطلون ۔ ولواتبع اللّٰہ اھواء الناس لضاع التوحید باسرہٖ و کثر الشرك والمشرکون۔ وان اللّٰہ لایبعث مرسلًا علی الارض الّا لیدفع المفاسد التی افسدتھا فانظروا الی المفاسد ایھا العاقلون ۔ یاحسرۃً علیھم انھم ینظرون مانزل علی الاسلام ثم لاینظرون ۔ ولئن سالتھم انّ رجلًا ن ادعٰی انّھٗمن اللّٰہ وانّہٗ ھوالمسیح وجاء فی زمن مفاسد الصلیب فکسر الصلیب کسرًا لایوجد مثلہٗ فیما مضٰی ولا یتوقع فی الازمنۃ الاٰتیۃ فبایّ اسمٍ سمّاہ رسول اللّٰہ ان کنتم تعلمون لیقولن انہٗ سُمّی مسیحًا وابن مریم علٰی لسان رسول اللّٰہ وبُیّن انّہٗ من ھٰذہ الامۃ قل الحمد للّٰہ علٰی ما اظھر الحق ولکن اکثر الناس لا یعلمون۔ ایّھا الناس انظروا الٰی کمال ایّام الضلال ولا تکفروا بایّام

पुजारियो! यदि ख़ुदा तआला लोगों की इच्छाओं का अनुकरण करता तो तौहीद (एकेश्वरवाद) बिलकुल मिट जाती और शिर्क फैल जाता तथा मुश्रिक बहुत हो जाते और ख़ुदा तआला किसी रसूल को पृथ्वी पर पैदा नहीं करता सिवाए इसके कि खराबी को दूर करे कि जिस ने पृथ्वी को तबाह कर रखा है। अत: ख़राबियों को ध्यानपूर्वक देखो। हे बुद्धिमानो! अफ़सोस इन पर कि यह लोग देखते हैं कि इस्लाम पर क्या आपदा उतर रही है फिर अनदेखा करते हैं और यदि उनसे प्रश्न किया जाए कि एक व्यक्ति ने दावा किया कि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ और मैं ही मसीह मौऊद हूँ फिर उसने सलीब को ऐसा तोड़ा कि उसका उदाहरण पहले युग में नहीं पाया जाता और न भविष्य में आशा है उसका नाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या रखा है? उत्तर देंगे कि उसका नाम मसीह और इब्ने मरयम ख़ुदा और उसके रसूल की जीभ पर निर्धारित हुआ है तथा वर्णन किया गया है कि वह इसी उम्मत में से होगा। कहो कि प्रशंसा ख़ुदा के लिए ही है जिसने सच्चाई को प्रकट किया, परन्तु बहुत से लोग नहीं जानते। हे लोगो! गुमराही के दिनों के कमाल की ओर देखो

اللہ ذی الجلال ان کنتم تتقون ۔ اما رء یتم کسوف الشمس والقمر فی رمضان فمالکم لا تھتدون ۔ اما رئیتم کیف اشیع الطاعون ۔ و کثر المنون ۔ فذالك و ھٰذا شھادۃٌ مّن السماء و الارض کما اخبر المرسلون ۔ وقد اجتمع کُلّ مَاجاء فی القراٰن من اٰثار اٰخر الزمان فمالکم لا تستیقظون ولما ثبت ان الزمان قد انتھٰی الیٰ اٰخرہٖ فأَین خلیفۃ اٰخر الزمان ان کنتم تعرفون ۔ ایّھا المنکرون اٰمنوا اولا تؤمنوا ان الذین اوتوا علم الکتاب وحظًّا من السعادۃ یقبلونی و ھم لایستأْخرون ۔ واذا رأوا علاماتٍ ذکرت فی القراٰن وخلیفۃٌ ینادی الی الرحمٰن خَرّوا علی الاذقان سُجّدًا وعلیٰ ما فرطوا یتندمون۔ و ترٰی اعینھم تفیض من الدمع بما عرفوا الحق وتنزل السکینۃ فی قلوبھم

और ख़ुदा के दिनों का इन्कार न करो यदि संयमी (मुत्तकी) हो। क्या तुम ने चन्द्र और सूर्य का ग्रहण रमज़ान के महीने में नहीं देखा। तुम क्यों हिदायत नहीं पाते। क्या तुम ने नहीं देखा कि प्लेग किस प्रकार फैल गया और मौतों की बढ़ोतरी हुई। फिर वह और यह आकाश तथा पृथ्वी की गवाहियाँ हैं जैसा रसूलों ने ख़बर दी थी और जो कुछ अन्तिम युग की ख़बरों के संबंध में क़ुर्आन में उसका वर्णन आया है सब एकत्र हो गए हैं। अब तुम क्यों नहीं जागते और जबकि सिद्ध हो गया है कि युग का अन्त हो गया है। फिर अन्तिम युग का ख़लीफ़ा कहाँ है यदि पहचानते हो। हे इन्कार करने वालो! ईमान लाओ या न लाओ वह लोग जिन्हें किताब का ज्ञान है और सौभाग्य से हिस्सा रखते हैं मुझे स्वीकार करते हैं और देर नहीं लगाते, जब वे क़ुर्आन के वर्णन किए हुए लक्षणों और ख़लीफ़ा को देखते हैं जो ख़ुदा की ओर बुलाता है तो सज्दा करते हुए औंधे गिर पड़ते हैं और अपनी ग़लतियों पर शर्मिंदा होते हैं। और देखते हो कि उनकी आँखें सच्चाई को पहचानने पर आंसू बहाती हैं और उनके दिल चैन पाते हैं और ख़ुदा के उतारे हुए पर ईमान लाते हैं तथा रोते हैं और कहते

ویؤمنون بما انزل اللّٰہ وھم یبکون ۔ ربّنا انّنا سمعنا منادیًا و عرفنا ھادیًا فاغفرلنا ذنوبنا انا تائبون۔

و قال اللّٰہ لا تثریب علیکم الیوم ستغفر و کیف یتمّ وعد اللّٰہ من دون ان یظھر المسیح منکم مالکم لا تفکرون فی اٰیات اللّٰہ ولا تتدبرون ۔ أَیَلِیْقُ بشان اللّٰہ ان یعد کم انّہٗ یبعث الخلفاء منکم کمثل الذین خلوا من قبل ثم ینسٰی وعدہٗ وینزل عیسٰی من السّماء سبحانہٗ وتعالٰی عمّا تفترون ۔ فمالکم انّکم تجادلون فی المسیح الموعود وتصرّون علٰی انّہٗ ھوالمسیح ابن مریم وتقرء ون کتاب اللّٰہ اراد لیدافع عن الّذین اٰمنوا ویدفع فتن بیننا وفَصّل الاٰیات لقومٍ یتّقون ۔

हैं कि हमारे रब्ब! हमने पुकारने वाले को सुना और पथ-प्रदर्शक को पहचान लिया अत: हमारे गुनाहों को माफ कर दे हम तौबा करते हैं।

और ख़ुदा कहता है कि आज तुम पर कोई डांट-डपट नहीं। तुम्हारे गुनाह क्षमा किए जाएंगे और प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित होगे। हे बुद्धिमानो! आशा न रखना कि कोई आकाश से उतरेगा। और जान लो कि यह वही दिन है जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था और ख़ुदा ने मोमिनों से वादा किया था कि उन को मूसा की शरीअत के ख़लीफ़ों के समान ख़लीफ़ा बनाएगा। यहाँ से अनिवार्य हुआ कि अन्तिम ख़लीफ़ा ईसा अलैहिसलम के क़दम पर आएगा और इसी उम्मत में से होगा और तुम क़ुर्आन पढ़ते हो क्या नहीं समझते कि यह ख़ुदा का वादा था। अत: ख़ुदा के वादों को झूठों के वादे की भांति न समझो। और ख़ुदा का वादा किस प्रकार पूरा हो बिना इस के कि मसीह तुम में से प्रकट हो। ख़ुदा की आयतों में क्यों सोच-विचार नहीं करते। क्या ख़ुदा की शान के यथायोग्य है कि तुम से वादा करे कि ख़लीफ़े तुम में से पैदा करेगा उनके समान जो पहले गुज़रे, फिर अपने वादे को भूल जाए और ईसा को आकाश से उतारे। ख़ुदा तआला तुम्हारे इन बनाए हुए झूठों से पवित्र और श्रेष्ठतर है। क्यों मसीह मौऊद के पक्ष

وانّہٗ الصّلیب فھل انتم تکرھون ۔ وقد جرت ثمّ تذھلون۔ وانّ اللہ قد حکم بینکم و عادتہٗ ان یّرسل عبادہٗ عند سیل الفتنفاسئلوا الّذین یعلمون ان کنتم ترتابون ۔ أَفطمعون ان یّأتی المسیح من السّماء کما ظننتم وقد خلت سنّۃ اللہ من قبل افلا تعلمون ۔ وما جاء مرسلٌبطریقٍ زعم الزّاعمون ۔ فکیف انتم تتوقّعون ۔ وقد زعم الیھود من قبلکم انّ مسیحھم لا یأتی الّا بعد ان یّنزل نبیٌّ مّن السّماء فما صدّق اللہ زعمھم فکفروا بابن مریم وھم یختصمون ۔ و کذالک زعموا انّ مثیل موسٰی من بنی اسرائیل فلمّا بعث من بنی اسماعیل کفروا بہٖ والٰی یومنا ھٰذا لا یؤمنون فتلک سنّۃٌ مّن سنن اللہ انّہٗ یری بعض اجزاء

में लड़ते हो और इस पर हठ करते हो कि वह वही मसीह इब्ने मरयम होगा। हालाँकि तुम ख़ुदा की किताब पढ़ते हो फिर लापरवाह हो। और ख़ुदा ने हम में और तुम में फैसला कर दिया है और संयमियों के लिए निशानों को स्पष्ट कर दिया है तथा ख़ुदा चाहता है कि मोमिनों की सहायता करे और सलीब के फ़ित्ने (उपद्रवों) को दूर करे, क्या तुम पसन्द नहीं करते। और ख़ुदा की यह आदत है कि अपने बन्दों को उपद्रवों के तूफ़ान के समय भेजता है। यह बात उलेमा से पूछ लो यदि सन्देह है। क्या तुम आशा रखते हो कि मसीह तुम्हारे अनुमान के अनुसार आसमान से उतरे और ख़ुदा की सुन्नत इस से पहले गुज़र चुकी, क्या तुम नहीं जानते। हरगिज़ कोई रसूल इस प्रकार से नहीं आया जिस प्रकार अनुमान लगाने वालों ने समझा, अत: तुम किस प्रकार आशा रखते हो। तथा तुम से पहले यहूदियों का विचार था कि उनका मसीह न आएगा जब तक कोई पैग़म्बर आकाश से न उतरे। ख़ुदा ने उनके इस विचार को सच्चा नहीं किया। इसलिए इब्ने मरयम का इन्कार किया और अब भी यही कहते हैं और इसी प्रकार सोचा कि मूसा का मसील बनी इस्राईल में से होगा परन्तु जिस समय वह मौऊद बनी इस्माईल में से पैदा हुआ उसे न माना और अब तक नहीं मानते। ख़ुदा की

نبأہٖ و یُخفی البعض فالّذین فی قلوبھم زیغٌ یجعلون ما اختفی
متّکأً لانکارھم وھم عمّا ظھر یعرضون۔ ولا یتفکّرون لعلّہٗ
فتنۃٌ لّھم وقد کثر الامثال فما یقرء ون۔ لا تسلکوا طریقًا
غیر طریق القراٰن یاأَھل الدّھاء ولا تقولوا انّ عیسٰی نازلٌ مّن
السّماء انتھوا خیر لّکم ایّھا المسلمون۔ انّکم اخترتم عقیدۃً
لانظیر لھا فی الانبیاء وانّا اخترنا عقیدۃً کثرت نظائرھا
فی الرّسل والاصفیاء فایّ الفریقین احقّ بالامن واقرب الی
الصّدق والصّفاء ایّھا العاقلون۔ ومانزل نبیٌّ مّن السّماء من
قبل فکیف انتم تترقّبون۔ و کان الیھود یعتقدون کمثلکم انّ
الیاس ینزل من السّماء قبل المسیح و کانوا علیہ یصرّون۔

आदतों में से एक यह आदत है कि भविष्यवाणी के कुछ भागों को प्रकट कर देता है और कुछ को गुप्त रखता है। अत: जिन लोगों के दिल टेढ़े होते हैं गुप्त भाग को अपने इन्कार के लिए प्रमाण बना लेते हैं और जो भाग प्रकट हुआ उस से मुँह फेरते हैं तथा विचार नहीं करते कि शायद वह उन के लिए परीक्षा हो और इस जैसी बहुत ही घटनाएँ हुईं परन्तु नहीं पढ़ते। हे बुद्धिमानो! क़ुर्आन के मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग न अपनाओ और यह न कहो की ईसा आसमान से उतरेगा। रुक जाओ यही तुम्हारे पक्ष में अच्छा है। हे मुसलमानो! तुमने तो वह आस्था अपनाई है जिसका उदाहरण नबियों में नहीं। और हम ने वह आस्था अपनाई है कि रसूलों और चुने हुए लोगों में इसके असंख्य उदाहरण हैं। अत: इन दोनों सदस्यों में से शान्ति का पात्र तथा सच्चाई एवं निष्ठा के निकट कौन सा है तथा इस से पहले कोई नबी आकाश से नाज़िल (उतरा) नहीं हुआ। तुम किस प्रकार प्रतीक्षा करते हो। यहूदी भी तुम्हारे समान आस्था रखते थे कि इल्यास मसीह से पहले आसमान से उतरेगा और इस आस्था पर हठ करते थे तथा जिस समय मसीह आया, उसको झुठलाया और कहा उसको कैसे स्वीकार करें क्योंकि अभी इल्यास नहीं उतरा और अवश्य है कि सच्चा मसीह इल्यास

فلمّاجاء المسیح کذّبہ القوم وقالوا کیف نقبلہٗ و مانزل الیاس ولا یأتی المسیح الصّادق الّا بعد نزولہٖ و انّا مازعموہ وقال انّ یح ۔ الّذی ارسل من لہٗ منتظرون ۔ فردّ عیسٰی قبلی ھو الیاس ان کنتم تقبلون ۔ فما قبلوا و کفروا بعیسی ابن مریم رسول اللہ فغضب اللہ علیھم ولعنھم وانزل علیھم رجزۃً بما کانوا یکفرون ۔ ثمّ اتّبعتم عقیدتھم بقولکم انّ المسیح ینزل من السّماء أَوصّٰکم الیھود ام تشابھت القلوب والعیون۔ فصارت اھواء کم کاھواء ھم وقرب أن تجزون کجزاء ھم فاتّقوا اللہ ولا تتّبعوا سنن المغضوب علیھم فیمسّکم العذاب وانتم تقرء ون الفاتحۃ الا تعلمون ۔ وقد سمّی اللہ تلک الیھود المغضوب علیھم وحذّرکم فی امّ الکتاب ان تکونوا کمثلھم

के उतरने के बाद उतरे और हम उसकी प्रतीक्षा में हैं। अत: ईसा ने उन का अनुमान अस्वीकार किया और कहा कि हज़रत यह्या जो मुझ से पहले भेजा गया है वही इल्यास है यदि स्वीकार करो। अत: स्वीकार न किया और हज़रत ईसा का इन्कार किया। अत: ख़ुदा उन पर प्रकोपित हुआ और उन पर लानत भेजी तथा उन के कुफ़्र पर प्लेग उन पर भेजी। इसके बावजूद फिर तुम ने यहूदियों की आस्था का अनुसरण किया कि मसीह आकाश से उतरेगा। क्या यहूदियों ने तुम्हें वसीयत की या दिल और आँख उन जैसे हो गए तुम्हारी और उनकी समान इच्छा हो गई और निकट है कि तुम्हें भी वही दण्ड मिले जो उनको मिला। अत: ख़ुदा से डरो और मग़्ज़ूब अलैहिम क़ौम के मार्ग पर न चलो अन्यथा तुम पर अज़ाब होगा और तुम सूरह फ़ातिहा को पढ़ते हो क्या तुम नहीं जानते कि ख़ुदा ने उन यहूदियों का नाम المغضوب علیھم रखा और सूरह फ़ातिहा में तुम्हें इस बात से डराया कि तुम उन के समान हो जाओ और तुम्हें स्मरण कराया कि वे प्लेग से मार दिए गए। तुम्हें क्या हो गया कि तुम ख़ुदा के आदेशों को भूल गए और उस से नहीं डरते। ख़ुदा तआला के कलाम पर विचार नहीं करते कि

وذكّركم انّهم اهلكوا بالطّاعون فما لكم تنسون وصايا الله ولا تتّقون ربّكم ولا تحذرون ۔ ولا تفكّرون فی قول الله غير المغضوب عليهم ولم يقل غير اليهود فانّهٗ اومٰی فی هٰذهٖ الٰی عذابٍ اصابهم والٰی عذابٍ يّصيبكم ان لّم تنتهوا فهل انتم منتهون ۔ وانّهٗ نبأٌعظيمٌ وقد ظهرت اٰثارهٗ وانّ فی هٰذا لاٰيةً لّقومٍ يّفكّرون ۔

وقد غضب الله علی اليهود بقولهم انّ موعودهم ينزل من السّماء ثمّ ياتی المسيح فقال الله علٰی لسان عيسٰی انّهم قومٌ مبطلون۔ فمالكم ترجون امرًا ابطله الله من قبل والمؤمن لايلدغ من جحرٍ وّاحدٍ مرّتين ويتّعظ بغيرهٖ لِئلّا يلومه اللّائمون۔ أَتكملون هٰذه المشابهة بالسنكم وغلوّكم علٰی عقيدة

غير اليهود (ग़ैरिल मग़ज़ूब अलैहिम) कहा غير المغضوب عليهم (ग़ैरिल यहूद) नहीं कहा, क्योंकि इसमें संकेत उस अज़ाब की ओर है जो उनको पहुंचा और जो तुम्हें पहुंचेगा यदि तुम न रुके। फिर क्या यह संभव है कि तुम सुरक्षित रहो और यह बड़ी सूचना है तथा इसके निशान प्रकट हो गए और इसमें उनके लिए निशान है जो विचार करते हैं।

और ख़ुदा यहूदियों पर इस बात से क्रोधित हुआ जब उनहोंने कहा कि हमारा मौऊद आकाश से उतरेगा फिर इसके बाद मसीह उतरेगा। अत: ख़ुदा ने ईसा के मुख से फ़रमाया कि यह झूठी क़ौम है। अब तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उसी बात के प्रत्याशी हुए हो जिसे ख़ुदा ने इस से पहले ग़लत ठहरा दिया और सिद्ध है कि मोमिन एक ही छेद से दो बार नहीं काटा जाता और यह कि दूसरों से सीख लेता है करता है ताकि भर्त्सना का लक्ष्य ना बने। क्या तुम इस समानता को अपने मुँह से और उतरने की आस्था पर अतिश्योक्ति करके पूर्ण करते हो और तुम जानते हो कि मसीह ने इस राय के विरुद्ध किया है। अत: क्या कारण है कि उस की दोस्ती का दम भरते हो परन्तु उसका आदेश नहीं मानते।

النّـزول وتعلمـون انّ المسـيح قـد خالـف هٰـذا الـرّأى فمالكـم تحبّونـهٗ ثـمّ تعصـون حكمـهٗ وتخالفـون ۔ وانّ الطّاعـون قريـبٌ مّـن داركـم وماتـدرى نفـسٌ مّايفعـل بهـافى سـنةٍ اٰتيـةٍ فـلا تكفـروا كلّ الكفـر وتوبـوا الى اللّٰه الّذى اليـه ترجعـون ۔ وتعلمـون انّـهٗ رجـزٌ نـزل عـلى اليهـود ثـمّ ينـزل عـلى الّذيـن يشـابهونهم غضبًـا مّـن اللّٰه و ذالـك هـو السّـرّ فى اٰيةايّهـا المتدبّـرون ۔ ياحسـرةً عـلى النّـاس انّـهم يـرون اٰيـات اللّٰه وايّامـهٖ ثـمّ يعرضـون۔ واذا قيـل لـهم اٰمنـوا بمـا وعـد اللّٰه فى سـورة النّـور والفاتحـة قالـوا أَنؤمـن كمـا اٰمـن الجاهلـون۔ الا انّـهم هـم الجهـلاء ولٰكـن لّايشـعرون ۔ و اذا قيـل لـهم اتّقـوا اللّٰه ولاتتّبعـوا اهـواء كـم قالـوا انّمـا نحـن متّقـون ۔ وقـد تركـوا القـراٰن ظلمًـا وّعلـوًّا واذا دعـوا الى الحـقّ فـهم يغضبـون۔

और प्लेग तुम्हारे घर के निकट पहुँच गई और कोई नहीं जानता कि अगले वर्ष में उसके सिर पर क्या गुज़रेगा। इसलिए कुफ़्र को इस सीमा तक न पहुँचाओ और ख़ुदा की ओर आओ कि उसी के पास जाना है। और तुम्हें ज्ञात है कि यह प्लेग वही अज़ाब है जो यहूदियों पर आया फिर उन लोगों पर यह अज़ाब ख़ुदा के प्रकोप से आएगा जो यहूदियों के समान हो जाएंगे غـير المغضـوب عـليهم की आयत में यही रहस्य है इन लोगों पर अफ़सोस जो ख़ुदा ने निशानों को और उसके दिनों को देखते हैं फिर मुँह फेरते हैं फिर जब उनसे कहा जाता है कि ख़ुदा के उस वादे पर जो सूरह नूर में और सूरह फ़ातिहा में वर्णित है, ईमान लाओ तो कहते हैं कि क्या हम मूर्खों की भांति ईमान लाएं। सावधान! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं। और जिस समय कहा जाए कि ख़ुदा से डरो और इच्छाओं के पीछे न चलो तो कहते हैं कि हम संयमी हैं हालाँकि क़ुर्आन को अन्याय एवं अहंकार से त्याग दिया है। और जिस समय उन्हें सच्चाई की ओर बुलाएँ क्रोध से भर जाते हैं। इस से अधिक और क्या मूर्खता है कि अस्त-व्यस्त बातों को माना हुआ है और क़ुर्आन के वादे को स्वीकार नहीं करते और

وایـیّ جهـالةٍ اکبر مـن انّـهم ذهبـوا الیٰ اقـوالٍ شـتّٰی وبوعـد القـراٰن لا یؤمنـون ۔ وانّـهٗ کتـابٌ لا یأتیـه الباطـل مـن بـین یدیـه ولا مـن خلفـه وهـل یسـتوی الیقـین والظّنـون ۔ وانّ الاحادیـث کلّهـا قـد جمعـت بعـد مائـةٍ او مأتـین وانّ فلاشـبهة فیـه وانّـهٗ هـو الّذی نـزل صدقًـا و حقًّـا عـلی نبیّنـا، وخـرج مـن فیـه، أأنتـم فیـه ترتابـون؟ فبـأی حدیـث بعـده تؤمنـون۔ أتؤثـرون الظـنّ عـلی الذی قـال اللّٰه فی شـأنه اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّکْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ۔ وقالـوا إنّـا وجدنـا آبـاء نـا عـلی طریـق وإنّـا عـلی آثارهـم سـالکون ۔ انظـرْ کیـف أقـرّوا بـترك القـرآن، ثـم انظـر کیـف یختصمـون ۔ وقالـوا إن الاحادیـث تفـرّون مـن حـقٍّ حصحـصَ، وإلامَ تجادلـون؟ أرأیتـم إن کنـتُ مـن عنـد اللّٰه ثـم کذّبتمـونی، فمـا بالکـم أیّهـا المکذّبـون؟ وإن اللّٰه قـد

क़ुर्आन एक ऐसी किताब है कि झूठ की इसमें किसी ओर से गुंजायश नहीं और क्या संभव है कि विश्वास और अनुमान समान हो जाएँ तथा सिद्ध है कि समस्त हदीसें एक सौ या दो सौ वर्ष के बाद एकत्र की गईं हैं तथा मुसलमानों के फ़िर्क़े (समुदाय) उनमें लड़ते झगड़ते हैं। और वास्तव में क़ुर्आन में कोई सन्देह नहीं और वही हमारे नबी पर उतरा है और उस के पवित्र मुँह से निकला है। क्या इस में तुम्हें सन्देह है? फिर क़ुर्आन के बाद किस हदीस पर ईमान लाते हो क्या इस किताब को छोड़ कर अनुमान को अपनाते हो जिस की शान में ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّکْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अलहिज्र - 10)

और कहते हैं कि हम ने अपने बुज़ुर्गों को एक मार्ग पर पाया है और हम उन के पद चिन्हों पर चलेंगे। देख कि किस प्रकार क़ुर्आन को छोड़ने का क़रार करते हैं फिर देख कि किस प्रकार लड़ते हैं और कहते हैं कि हदीसें हमारी आस्थाओं के बारे में सर्व सम्मत हैं। और वे इस बात में स्पष्ट तौर पर झूठे हैं और जानते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

أخبر عن موت المسيح فى سورة المائدة، والحديث أخبرنا أن عمره مائة وعشرون، وبشّرنا الله فى سورة النور بأن الخلفاء من هذه الامّة، فكان خاتمُ الخلفاء من المسلمين بالضرورة، وهو المسيح الموعود من غير الشك والشبهة، فقد فتح الله بيننا وبينكم إن كنتم تبصرون۔ وهل بقى بعد ذالك شكّ لقوم يتّقون؟ فقد أُوتينا حجّة بالغة من الله، وما فى أيديكم إلّا الذى نحت الخاطئون ۔ وقالوا إن المسيح ينزل بسِمْتِ شرقى من دمشقَ وهذا هو الحق إن كنتم تتفكرون ۔ وإنّ المسيح قد ظهر فى الارض الشرقية كما أنّ الدّجّال قد ظهر فيها، فالمسيح شرقى والدجّال شرقى، وفى الشِّرك كثُر المشركون ۔ وإن قريتى هذه شرقية من دمشقَ، فاسألوا من يعلمها إن كنتم لا تعلمون

बहुत सी हदीसें क़ुर्आन के अनुकूल होती हैं और जो अनुकूल नहीं होती वह निस्सन्देह बनावटी हैं और मासूम (निर्दोष) होना क़ुर्आन की ही विशेषता है तथा क़िस्से निरस्त नहीं जैसा कि तुम्हें स्वयं इक़रार है। अब प्रमाणित और स्पष्ट सच्चाई से कहाँ भागोगे और कब तक लड़ोगे। भला देखो तो कि यदि मैं ख़ुदा की ओर से हुआ और तुम मुझे झुठलाते रहे तो तुम्हारा अंजाम क्या होगा? और ख़ुदा तआला ने मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बारे में सूरह माइद: में ख़बर दी है और हदीस में है कि उन की आयु एक सौ बीस वर्ष की थी और ख़ुदा ने सूरह नूर में हमें ख़ुशख़बरी दी है कि ख़लीफ़े इस उम्मत में से होंगे। इसलिए अवश्य इसी पद्धति पर ख़ातमुल ख़ुलफ़ा मुसलमानों में से पैदा हुआ और वही बिना किसी सन्देह के मसीह मौऊद है फिर यदि तुम्हारी आँखें हैं तो ख़ुदा ने हमारे और तुम्हारे बीच फैसला कर दिया है। क्या अब इस सब के बाद संयमियों के लिए कोई सन्देह शेष रह गया है? हमें ख़ुदा ने ठोस प्रमाण दिया है और तुम्हारे हाथ में ग़लती करने वालों की बनाई हुई बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। और कहते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम दमिश्क़

۔ و إن هـذا المُلـك مُلـك الهنـد شـرقيٌّ مِـن حجـاز، فتـمَّ مـا أومـى النـبى إلى المشـرق للدجَّـال والمسـيحِ، وتـم وعـد الله صدقًـا وحقّـا، فـلا تحاربـوا الله أيهـا المسـتعجلون ۔ وإنكـم تـرون كيـف تنصّـرَ النـاس وارتـدّوا مـن ديـن الله، ثـم تقولـون مـا جـاء مرسـل مِـن عنـد الله، مـا لكـم كيـف تحكمـون ۔ وإن هـذه الارض فاقـتْ كلَّ أرض بفتنهـا أتعلمـون كمثلهـا أرضًـا أُخْـرٰى، فأَرُونـا تلـك الارض إن كنتـم تصدُقـون ۔ وقـد شـهدت السـماء والارض والزمـان والمكان عـلى صدقـى، ومضـى مـن هـذه، المائـة قريبًـا مـن خُمُسـها فبـأىّ شـهادةٍ بعدهـا تسـتيقظون؟ وقـد أَرَى الله آياتِـه قريبًـا منثـلاث مائـة، ورآهـا الشـهداء الذيـن كانـوا زهـاء مائـة ألـف أو يزيـدون۔ وإن كنتـم تظنـون أنـهم كذبـوا فأْتـوا بشـهداء كمثلـهم كاذبـين

के पूर्व की ओर उतरेगा और यही ठीक है यदि सोचो। और मसीह पूरब की धरती में प्रकट हुआ है जैसा कि दज्जाल भी उसी पृथ्वी में प्रकट हुआ है। अत: मसीह भी पूरब में हुआ और दज्जाल भी पूरब में और मुश्रिक शिर्क में बढ़ गए और हमारा यह गाँव दमिश्क़ के पूरब की ओर है कि भुगोलवेत्ता से पूछ लो यदि तुम स्वयं नहीं जानते। और यह हिंदुस्तान देश हिजाज़ देश से पूरब दिशा में है। अत: सच निकला जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि दज्जाल और मसीह पूरब में प्रकट होंगे और ख़ुदा का वादा सच और सही सिद्ध हुआ। अत: हे जल्दी करने वालो! ख़ुदा के साथ मत लड़ो तुम देखते हो कि लोग ईसाई हो गए और ख़ुदा के धर्म से फिर गए हैं। फिर कहते हो कि ख़ुदा की ओर से कोई रसूल नहीं आया। यह तुम्हारा कैसा फैसला है और यह हिन्दुस्तान की ज़मीन उपद्रव एवं झगड़ों में सब ज़मीनों से बढ़ गई है। क्या इस जैसी ज़मीन तुम्हें और कोई ज्ञात है? यदि सच्चे हो तो उस ज़मीन का पता दो और निस्सन्देह आकाश और पृथ्वी तथा समय और स्थान ने मेरी सच्चाई पर गवाही दी है और इस सदी में से लगभग पांचवां भाग

يشـهدوا لكـم إن كنتـم صادقـين فيمـا تدّعـون ۔ وإنّ نصـر الله أتا كـم فى وقتـه فهـل أنتـم تـردّون؟ وإن تعُـدّوا دلائـل صدقـى لا تحصوهـا، وإن الكاذبـين لا يُـؤتى لـهم آيـة ولا هـم يُنصَـرون۔ وإن الفاتحـة كَفَـتْ لسـعيدٍ يطلـب الحق ولا يمـرّ علينـا كالذيـن يسـتكبرون ۔ فـإن الله ذكـر فيـه فِرَقًا ثـلا ثـا خَلـوا مـن قبـلُ وهـم المنعـم عليـهم والمغضـوب عليـهم والضالـون، ثـم جعـل هـذه، الأُمّـةَ فرقـة رابعـةً وأومـأَ الفاتحـةُ إلىٰ أنّـهم ورثـوا تلـك الثـلا ۔ ثـة، إمّـا مـن المنعَـم عليـهم، أو مـن المغضـوب عليـهم، أو مـن الذيـن يضلّـون ويتنصّـرون، وأمَـر أن يسـأل المسـلمون ربّـهم أن يجعلـهم مـن الفرقـة الاولى ولا ولا يجعلـهم مـن الذيـن غضـب عليـهم ولا مـن الضالـين الذيـن يعبـدون عيسـى وبربّـهم يشـركون۔ و كان فى

गुज़र भी गया। अब इसके बाद कौन सी गवाही तुम्हें जगाएगी। और ख़ुदा ने लगभग तीन सौ निशान प्रकट कर दिए और उन निशानों को एक लाख से अधिक लोगों ने अपनी आँखों से देखा है और यदि उनको झूठा समझते हो तो उन जैसे गवाह लाओ जो तुम्हारे पक्ष में गवाही दें। यदि इस दावे में सच पर हो और निस्सन्देह ख़ुदा की सहायता ठीक समय पर तुमको पहुंची। क्या उसे अस्वीकार कर दोगे और मेरी सच्चाई के सबूत इतने हैं कि तुम उनको गिन नहीं सकते और निस्सन्देह झूठों को कोई निशान तथा कोई सहायता नहीं दी जाती। और सूरह फ़ातिहा उस सौभाग्यशाली के लिए जो सच्चाई को तलाश करता है तथा हमारे सामने से अहंकारी के समान नहीं गुज़रता, पर्याप्त है। क्योंकि ख़ुदा ने इस सूरह में तीन फ़िर्क़ों का वर्णन किया है जो पहले युग में गुज़रे और ये हैं **منعم عليهم** और **مغضوب عليهم** तथा **ضالين** फिर इस उम्मत को चौथा फ़िर्क़ा ठहराया और फ़ातिहा में संकेत किया कि वह इन तीन फ़िर्क़ों में से या तो **منعَم عليهم** के वारिस होंगे या **مغضوب عليهم** के वारिस होंगे या **ضالين** (गुमराहों) के वारिस होंगे तथा आदेश दिया है

هـذا أنبـاءٌ ثـلاث لقـوم يتفرّسـون۔

فلمّـا جـاء وقت هـذه الانبـاء بـدأ الله مـن الضالـين كمـا أنتم تنظـرون، فخـرج النصـارٰى مـن دَيْرهـم بقـوّة لا يـدانِ لهـا وهـم مـن كلّ حدَبٍينسـلون، وزُلزلـت الارض زلزالهـا وأخرجتأثقالهـا، وتنصّـرَ فـوج مـن المسـلمين كمـا أنتـم تشـاهدون۔ ثـم جـاء وقت النبـأ الثـانی۔ أعـنی وقـت خـروج المغضـوب عليـهم كمـا كان الوعـد الربّـانی، فصـار طائفـة مـن المسـلمين عـلی سـيرة اليهـود الذيـن غضـب الله عليـهم، وصارت أهـواؤهـم كأهـوائـهم وآراؤهـم كآرائـهم ورياؤهـم كريائـهم وشـحناؤهم كشـحنائهم وإباؤهـم كإبائـهم يكذبـون ويفسـقون، ويظلمـون ويسـتكبرون، ويحبّـون أن يسـفكوا الدمـاء بغـير حـق ومُلِئـتْ نفوسـهم شُـحًّا وبخـلًا وحسـدًا، وضُرِبـت عليـهم الذلّة فـهم لا يُكـرَمـون فی السّـماء ولا

कि मुसलमान अपने रब्ब से चाहें कि उसको पहले फ़िर्क़े में से बनादे और مغضوب عليهم तथा ضالين में से न बनाए, जो ईसा को पूजते हैं और अपने रब्ब के बराबर बनाते हैं। तथा उनके लिए जो विवेक से काम लेते हैं इसमें तीन भविष्यवाणियाँ हैं।

अतः जब इन भविष्यवाणियों का समय हो गया ख़ुदा ने गुमराहों से आरम्भ किया जैसा कि तुम देखते हो फिर ईसाई ऐसी शक्ति के साथ अपने गिरजों से निकले हैं कि कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता और वे प्रत्येक ऊँचाई पर से दौड़ते हैं और पृथ्वी हिलने लगी और अपने सब बोझ उगल दिए तथा मुसलमानों में से बहुत से ईसाई हो गए। फिर दूसरी ख़बर का समय पहुंचा अर्थात् مغضوب عليهم के निकलने का समय जैसा कि ख़ुदा ने वादा किया था। अतः मुसलमानों के एक गिरोह ने यहूदियों का मार्ग और आदर्श (नमूना) ग्रहण कर लिया जो ख़ुदा के प्रकोप के नीचे था और उनकी इच्छाएं और उनका दिखावा बैर दुश्मनी तथा उद्दण्डता बिलकुल उन जैसी हो गई। झूठ बोलते हैं

فی الارض، و کذالـك مُلئـت الارض ظلمـا وجـورًا وقَـلّ ومِـن کل بـاب یُطـرَدون۔ الصالحـون ۔ فنظـر اللہ إلی الارض فوجـد أهلهـا۔ فی ظلمـات ثـلاث ظلمـت الجهـل و ظلمـت الفسـق و ظلمـت الدّاعـین إلی التثلیـث والوسـواس الخنّـاس، فتذکّـرَ فضـلًا ورُحمًـا وعُـده الثالـث الذی یدعـون له الداعـون ، فأنعـمَ عـلی هـذه الاُمّـة بإرسـال مثیـل عیسـی، وهـل یُنکِـر إلّا العمـون؟ و إن الذیـن آمنـوا بأنبـاء القـرآن ومواعیـده و کفـروا بمـا خالفهـا، أولئـك هـم المؤمنـون حقّـا، وأولئـك الذیـن هـدی اللہ قلوبـهم، وأولئـك هـم المهتـدون ومـا نبیُّنـا إلا محمـدٌ، ومـا کتابنـا إلا القـرآن، فاطلبـوا الرشـد منـه أیهـا المسترشـدون۔ و إنا عُلّمنـا دعـوةً فی الفاتحـة، واسـتجابَها اللہ فی سـورة النـور، فمـا لکـم تترکـون لُـبَّ القـرآن وعـلی القشـر تقنعـون ۔ ولا غُمّـةَ فی مواعیـد القـرآن بـل هـو بیـان واضـح لقـوم

और विनाश करते हैं तथा अत्याचार और अहंकार करते हैं तथा अकारण ख़ून करने को प्रिय रखते हैं। और उनके दिल लोभ, लालच, कंजूसी और इर्ष्या से भर गए हैं और वे अपमानित हो गए हैं। न आकाश में उनका सम्मान है और न पृथ्वी में। और हर ओर से धिक्कारे जाते हैं तथा इसी प्रकार पृथ्वी अन्याय एवं अत्याचार से भर गई और नेक लोग कम हो गए। ऐसे समय में ख़ुदा ने पृथ्वी को देखा और पृथ्वी वालों को तीन प्रकार के अंधकार में पाया। एक मूर्खता का अंधकार, दूसरे पाप का अंधकार, तीसरे उन लोगों का अंधकार जो तस्लीस और शैतान की ओर लोगों को बुलाते हैं। अत: कृपा एवं दया करके तीसरे वादे को याद किया जिसके लिए दुआ करने वाले दुआ करते थे। अत: ईसा के मसील को भेज कर इस उम्मत पर इनाम किया और उसका अंधों के अतिरिक्त कोई इन्कार नहीं करता और वे लोग जो पवित्र क़ुर्आन की ख़बरों तथा उसके वादों पर ईमान लाये और जो उस के विरुद्ध था उस से इन्कार किया। ठीक मोमिन यही हैं और यही वे हैं जिनके दिलों को ख़ुदा ने हिदायत दी और यही हिदायत पाए हुए हैं और

يفهمون۔ فما لكم تـرُدّون نِعمَ الله بعد نزولها؟ ئَ أَنتم نَعَمٌ أو أُناس عاقلون؟ وما قصّ الله علينا الفِرَقَ الثلاث فی الفاتحة إلّا ليشير إلى أن هذه الامّة ورثتُهم فی كل قسم من الاقسام المذكورة، فقد ظهرتْ هذه الوراثة فی مُسْلِمِی زماننا الذی هو آخر الزمان بظهور تام، تعرفها كل نفسٍ من غير الحاجة إلى الإمعان كما لا يخفى على الذين ينظرون إلى مُسْلمی زمننا هذا وإلٰی ما يعملون ۔ ولكل فرقة من هذه الورثاء الثلاث درجاتٌ ثلاث۔ أما الذين ورِثوا المنعَمَ عليهم فمنهم رجال ما وجدوا حظًّهم من الإنعامإلا قليلا من العقائد أو الاحكام وهم عليه يقنعون، ومنهم مقتصدون وإنهم وقَفوا على مرتبة الاقتصاد وما يكمَّلون، ومنهم فردٌ اجتباه ربّه و كمّله وجعله سابقا فی الخيرات، وهو يجتبی اليه من يشآء ويخص بالدرجات، فذالك

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिना हमारा और कोई नबी नहीं तथा क़ुर्आन के अतिरिक्त हमारी और कोई किताब नहीं। हे सन्मार्ग के अभिलाषियो! उस से सन्मार्ग मांगो। और हमें फ़ातिहा में दुआ सिखाई गई है और उस दुआ को ख़ुदा तआला ने सूरह नूर में स्वीकार किया। अत: क्यों क़ुर्आन के बीज को छोड़ते हो और छिलके पर संतुष्ट होते हो। क़ुर्आन के वादों में कोई गोपनीयता नहीं बल्कि खुला बयान है उन लोगों के लिए जो समझते हैं। तुम्हें क्या हुआ कि ख़ुदा की नेमतों को उन के उतरने के बाद अस्वीकार करते हो क्या चौपाये हो या बुद्धि रखने वाले इन्सान। ख़ुदा ने फ़ातिहा में तीन फ़िर्क़ों का इसलिए वर्णन किया है ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि यह उम्मत कथित प्रकारों में से प्रत्येक प्रकार की वारिस होगी। अत: निस्सन्देह ये विरासत (उत्तराधिकार) हमारे युग में जो अन्तिम युग है ऐसे पूर्ण रूप से मुसलमानों में प्रकट हो गई है कि प्रत्येक व्यक्ति चिंता करने की आवश्यकता के बिना उसे पहचान रहा है। अत: यह बात उन लोगों पर छिपी नहीं जो हमारे युग के मुसलमानों और उनके कार्यों

المخصوص هو المسيح الموعود الذى ظهر فى القوم وهم لا يعرفون۔ وَ اَمَّا الذين ورثوا المغضوب عليهم من اليهود فمنهم رجال من المسلمين شابهوهم فى، ترك الفرائض والحدود، لا يصومون ولا، يصلّون، ولا يذكرون الموت ولا يبالون ومنهم قوم اتخذوا الدنيا معبودهم ولها فى ليلهم ونهارهم يعملون، ومنهم سابقون فى الرزائل، وأولئك الذين يتخذون أهل الحق سُخريًّا وعليهم يضحكون ۔ ويعادونهم۔ ويكفّرونهم ويشتمونهم، ويعملون رياءً وبطرًا ولا يخلصون ويصولون على مسيح الله وحزبه، ويجرّونهم إلى الحكام وفى كل طريق۔ يقعدون، ويقولون اقتلوهم فإنهم كافرون وإذا قيل لهم تعالوا إلى كلام الله واجعلوه حَكَمًا بيننا وبينكم ترى أعينهم تَحمرّ من الغيظ ويمرّون شاتمين وهم مشتعلون۔ و كأيّنْ مِن آيِ الله

की ओर देखते हैं और इन तीनों प्रकार के वारिसों में से प्रत्येक वारिस होने वाले फ़िर्क़े की तीन श्रेणियां हैं परन्तु जो इनाम प्राप्त लोगों के वारिस हुए उनमें से कुछ ने इनाम से हिस्सा नहीं पाया परन्तु थोड़ा सा भाग आस्थाओं एवं आदेशों में से उन को मिला और उसी पर उन्होंने सन्तोष किया और उनमें से कुछ मध्यम चाल वाले हैं और वे अपनी उसी चाल पर खड़े हो गए और पूर्णता एवं कमाल के स्तर तक नहीं पहुंचे। और उन में एक व्यक्ति है कि ख़ुदा ने उसे चुना और इमाम बनाया और नेकियों में पूर्ण किया और वह चुन लेता है जिसको चाहता है और श्रेणियों से विशिष्ट करता है। अत: वही विशिष्ट वही मसीह मौऊद है जो उस क़ौम में प्रकट हुआ और वे नहीं पहचानते लेकिन जो **مغضوب عليهم** के वारिस हुए उन में से वे मुसलमान हैं जो ख़ुदा के आदेशों तथा कर्त्तव्यों को छोड़ने में यहूदियों के समान हो गए। न नमाज़ पढ़ते हैं न रोज़ा रखते हैं और मौत को याद नहीं करते तथा निडर हैं और उनमें से ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने दुनिया को अपना उपास्य (मा'बूद) बनाया और रात-दिन उसी के लिए काम करते हैं। और

رأوها بأعينهم ثم۔ يمرّون مستكبرين كأنهم لا يبصرون ونبذوا كتاب الله وراء ظهورهم ظلمًا وعُلوًّا، وقالوا لا تسمعوا دلائله والغَوْا فيها لعلكم تغلبون ۔ وأمّا الذين ورثوا الضالين فمنهم قوم أحبّوا شِعار النصارى وسيرتهم وإليها يميلون ۔ وتجدهم يرغبون فى حُللهم وقُمصانهم وقلانسهم ونعالهم وطَرْزِ معيشتهم وجميع خصالهم، وعلى من خالفها يضحكون ويتزوّجون نسائً من قومهم وعليهن يعشقون۔ ومنهم قوم مالوا إلى الفلسفة التى أشاعوها وفى، أمر الدين يتساهلون ۔ و كم من كَلِمٍ تخرج من۔ أفواههم ويحقّرون دين الله ولا يبالون ومنهم قوم أكملوا أمر الضلالة، وارتدّوا من الإسلام وعادَوه

उनमें से ऐसे लोग भी हैं जो अधम एवं निकृष्ट आदतों में सब से आगे निकल गए यही लोग हैं जो सत्यनिष्ठ लोगों पर ठट्ठे मारते हैं। और उन से शत्रुता करते हैं और गालियाँ देते हैं तथा आंडबर और दिखावे के कार्य करते हैं तथा श्रद्धा नहीं रखते और ख़ुदा के मसीह पर तथा उसके गिरोह पर आक्रमण करते हैं और उनको हाकिमों की ओर खींचते हैं तथा प्रत्येक मार्ग के किनारे कष्ट देने के लिए बैठते हैं और कहते हैं कि इन को मार डालो क्योंकि ये काफ़िर हैं और जिस समय उनसे कहें कि ख़ुदा के कलाम की ओर आओ और उसको हमारे और अपने मध्य हकम बनाओ तो उनकी आँखें क्रोध से लाल हो जाती हैं और गालियाँ देते हुए गुज़र जाते हैं। बहुत से लोगों ने ख़ुदा के निशानों को अपनी आँखों से देखा फिर अहंकार करते हुए गुज़र जाते हैं जैसे अंधे हैं। ख़ुदा की किताब को पीठ के पीछे डाल दिया है तथा कहते हैं कि इसके तर्कों को न सुनो और इसके पढ़ने के समय शोर डाल दो ताकि विजयी हो जाओ, किन्तु जो ضالين (गुमराहों) के वारिस हुए उनमें से कुछ ईसाइयों की प्रकृति, आदत एवं व्यवहार को प्रिय रखते हैं और इस ओर झुक गए। लिबास कोट, पेन्ट, बूट और जीवन पद्धति एवं समस्त आदतों में ईसाइयों की नक़ल उतारते हैं और उन आदतों के विरोधियों पर हँसते हैं तथा

من الجهالة، و كتبوا كتبًا فی ردّه، وشتموا رسول الله وصالوا علی عرضه، وتلك أفواجٌ فی هذا المُلك بعدما كانوا يُسلِمون ۔ فتمّ ما أُشيرَ إليه فی الفاتحة، فإنّا لله وإنّا إليه راجعون ۔ وأوّلُ نبأ ظهَر من أنباءِ أُمّ الكتاب هو تنصُّر المسلمين وشتمهم وصَولهم كالكلاب كما تشاهدون ۔ ثم ظهر نبأ المغضوب عليهم، فترى حزبًا من العلماء ومَن تبعهم من أهل الدنيا والامراء والفقراء كيف يستكبرون ولا يتذلّلون، ويراءون ولا يخلصون، ويقولون ما لا يفعلون۔وأخلدوا إلى الارض وإلى الله لا يتوجهون۔ولا يؤمنون بأيّام الله، ويرون آيات الله ثم ينكرون ويريدون أن يدُسّوا الحق فی تراب، ويمزّقوا أذياله

ईसाइयों की स्त्रियों को अपने निकाह में लाते हैं और उनसे प्रेमालाप करते हैं। और उनमें से कई ईसाइयों के दर्शनशास्त्र की ओर आकृष्ट हुए जिस का इन शहरों में उन्होंने प्रचार किया है तथा धर्म के कार्यों में लापरवाही करते हैं बहुत ही अनुचित बातें बोलते हैं। और ख़ुदा के धर्म का तिरस्कार करते हैं और नहीं डरते और उनमें से कुछ पक्के गुमराह हो गए और मूर्खता से इस्लाम के साथ शत्रुता करते हैं तथा इस्लाम के खण्डन में पुस्तकें लिखीं और ख़ुदा के रसूल को बुरा कहा और उसके सम्मान पर प्रहार किया और इस प्रकार के लोग इस देश में बहुसंख्या में हैं और वे इस से पहले मुसलमान थे अत: जिस बात का सूरह फ़ातिहा में संकेत था वह प्रकट हो गई। इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। और पहली ख़बर जो उम्मुलकिताब (क़ुर्आन) की ख़बरों से प्रकट हुई वह मुसलमानों का ईसाई हो जाना और उन का कुत्तों की भांति आक्रमण करना है। जैसा कि देखते हो फिर मग़्ज़ूब अलैहिम की ख़बर प्रकट हुई जैसा कि तुम उलेमा के गिरोह और उनके अनुयायियों और सांसारिक लोगों, अमीरों, फ़क़ीरों, पीरों और दरवेशों में देखते हो कि कितना अहंकार करते हैं, विनम्रता ग्रहण नहीं करते दिखावा करते हैं निष्कपटता नहीं रखते और वे ऐसी बातें बताते हैं जो स्वयं नहीं करते। दुनिया पर ओंधे पड़े हुए हैं और

ككلاب، ولا يفكّرون فى ليلهم ولا نهارهم أنهم يُسْألون۔ولو تيسّرَ لهم قتلى لقتلونى ولاغتالونى لو يُسرّون مقتلى، ولكن الله خيّبهم فيما يقصدون ۔ يمكرون كل مكرٍ لإعدامى، فينزل أمرٌ من السماء فيجعل مكرهم هبائً وهم لا يعلمون ۔ وإنّ معى قادرٌ لا يبرح رَحْمتُه، لكن المخالفين لا يبصرون، بل يرونى ويعبِسون ويسبّون ويشتمون، ويحلفون حلفًا على حلف إنه كاذب ولا يبقى سرٌّ إلا يُبدَى، ولا قضية إلّا تُقضَى، فسيظهر ما فى قلبى وما فى قلبهم، ولا يُكتَم ما يكتُمون۔هذان حزبان من المغضوب عليهم وأهل الصلبان ذكَرهما الله فى الفاتحة، وأشار إلىٰ أنهما يكثُران فى آخر الزمان ويبلغان كمالهما فى الطغيان، ثم يقيم ربُّ السماء

ख़ुदा की ओर ध्यान नहीं देते तथा ख़ुदा के दिनों पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा के निशानों को देखते हैं और फिर इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि सच को मिट्टी के नीचे छिपा दें और उसके दामन को कुत्तों की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दें तथा अपने रात-दिन में विचार नहीं करते कि अन्तत: पूछे जाएंगे। यदि मुझ को क़त्ल कर सकते तो अवश्य क़त्ल करते, परन्तु ख़ुदा ने उनको असफ़ल एवं निराश रखा मुझे मिटाने में छल से काम लेते हैं तब आकाश से एक ऐसा आदेश आता है जो उन के छल को बरबाद कर देता है और वे नहीं जानते कि मेरे साथ एक ऐसा शक्तिमान है कि उसके निगरान मेरे घर से दूर नहीं होते और उसकी दया एक पल भी मुझको नहीं छोड़ती परन्तु विरोधी नहीं देखते बल्कि मुझे देखते हैं और अप्रसन्न होते हैं तथा गालियाँ देते हैं और क़सम पर क़सम खाते हैं कि मैं झूठा हूँ और ऐसा कोई रहस्य नहीं रहा जो प्रकट न हो तथा न कोई वादा जिसका निर्णय न हुआ हो।

निकट है कि जो मेरे दिल में है और जो कुछ उन के दिल में है प्रकट हो जाए। ये दो गिरोह मग़्ज़ूब अलैहिम और सलीब वालों में से हैं, कि ख़ुदा ने सूरह

حزبًا ثالثا فی تلك الاوان لتتمّ المشابهة بأُمّة أولی ولِتتشابهَ السلسلتان۔ فالزمانُ هٰذا الزمانُ، وتمّ کلّ ما وعد الرحمٰن، ورأیتم المتنصّرین من المسلمین و کثرتهم، موضعُ لَبِنةٍ أعنی المُنعَم علیه من هذه العمارةِ فأراد اللّٰه أن یُتمّ النبأ ویُکمِل البناء باللبنة الاخیرة، فأنا تلك اللبنة أیها الناظرون ۔ و کان عیسٰی عَلَمًا لبنی إسرائیل وأنا عَلَمٌ لکم أیها المفرطون۔ فسارِعوا إلی التوبة أیها الغافلون۔ ، وإنّی جُعِلْتُ فردًا أکمَلَ من الذین أُنعِمَ علیهم فی آخر الزمان، ولا فخر ولا ریاء واللّٰهُ فعَل کیف۔ أراد وشاء ، فهل أنتم تحاربون اللّٰه وتزاحمون وأنا المسیح الموعود الذی قُدّر مجیئُه فی آخر الزمان من اللّٰه الحکیم الدیّان، وأنا المنعَم علیه الذی أُشیرَ

फ़ातिहा में उन का वर्णन किया है तथा संकेत दिया है कि अन्तिम युग में बहुत बढ़ जाएंगे और उपद्रव में चरम सीमा को पहुँच जाएंगे। उस समय आकश का रब्ब तीसरे गिरोह को स्थापित करेगा, इसलिए कि पहली उम्मत से समानता पूर्ण हो जाए और इसलिए भी कि दोनों सिलसिले एक-दूसरे से समान हो जाएँ। अत: वह समय यही समय है और जो कुछ रहमान (ख़ुदा) ने वादा किया था वही प्रकट हुआ और तुम ने मुसलमानों में से ईसाई होने की प्रचुरता को देखा और इस उम्मत के यहूदी और उनके जीवन चरित्र को भी देखा तथा उस इमारत में एक ईंट का स्थान खाली था अर्थात् जिन पर इनाम हुआ अत: ख़ुदा ने इरादा किया कि इस भविष्यवाणी को पूरा करे और अन्तिम ईंट के साथ नींव की पूर्णता तक पहुंचा दे। अत: मैं वही ईंट हूँ और जैसा कि ईसा बनी इस्राईल के लिए निशान था उसी प्रकार मैं तुम्हारे लिए हे तौबा करने वालो! एक निशान हूँ। अत: हे लापरवाहो! तौबा की ओर जल्दी करो और मैं منعم علیهم (इनाम प्राप्त) गिरोह में से सर्वांगपूर्ण सदस्य बनाया गया हूँ और यह गर्व और आडंबर नहीं है। ख़ुदा ने जैसा चाहा किया। फिर क्या तुम ख़ुदा के साथ लड़ते हो और मैं वही

إليه فى الفاتحة عند ظهور الحزبين المذكورين وشيوع البدعات والفتن فهل أنتم تقبلون؟ وإن إنكارى حسراتٌ على الذين كفروا بى، وإن إقرارى بركاتٌ للذين يتركون الحسد ويؤمنون ۔ ولو كان هذا الامر والشأن من عند غير الله لمزَّق كلَّ ممزَّق ولجمَع علينا لعنةَ الارض ولعنة السماء ولافاز الله أعدائى بكلّ ما يريدون ۔ كلّا بل إنه وعدٌ من الله وقد تمّ صدقا وحقّا، وإنّه بُشرٰى للّذين كانوا ينتظرون ۔ وقد رُفِعَ قضيتنا إلى الله۔ يطلبون الحق وإليه يحفِدون، وقد ثبت منه أنه ستكون المغضوب عليهم منكم وسيكون الضالون منكم بتنصُّرهم، فكيف يمكن أن لا يكون الذى

मसीह मौऊद हूँ जिसका आना अन्तिम युग में ख़ुदा की ओर से मुक़द्दर था और मैं वह इनाम प्राप्त हूँ कि उसकी ओर फ़ातिहा में उन दो गिरोहों के प्रकट होने के समय संकेत था और बिदअतों तथा उपद्रवों के फैल जाने की ओर संकेत किया गया है। क्या तुम स्वीकार नहीं करोगे। और मेरा इन्कार करने वालों पर मानसिक खेद का कारण है और उनके लिए मेरा इक़रार पछताने का कारण है। और मेरा इक़रार उन के लिए जो ईर्ष्या को छोड़ते हैं तथा ईमान लाते हैं बरकतों का कारण है और यदि यह बात ख़ुदा की ओर से न होती तो यद्यपि यह कारख़ाना तबाह हो जाता और हम पर पृथ्वी तथा आकाश की लानत एकत्र हो जाती और शत्रु अपने हर इरादे में सफल हो जाते। हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि इस सिलसिले का ख़ुदा की ओर से वादा दिया गया था जो सच्चे तौर पर पूरा हो गया और ख़ुशख़बरी उन के लिए है जो प्रतीक्षा करते थे। अब हमारा यह मुक़द्दमा ख़ुदा की अदालत में पहुँच गया है और निकट है कि तुम्हारी विजय हो या तुम्हें पराजय हो। इसलिए सूरह फ़ातिहा स्पष्ट करती है कि यह उम्मत मध्यस्त की उम्मत है और उन्नति के लिए ऐसी योग्यता रखती है कि संभव है कि उनमें से कुछ अंबिया (नबी) हो जाएँ और उनमे यह भी योग्यता है कि यहाँ तक तुच्छ हो जाएँ कि कुछ उनमें से यहूदी और जंगलों के बन्दरों की भांति लानती

أُشير إليه وإلى جماعته فى قوله۔أَنْعَمْتَ المسيح الموعود منكم عَلَيْهِمْ۔فلا تفرّقوا فى الفِرق الثلاث الذين أنتم لهم وارثون۔لا يأتيكم يهودى من بنى إسرائيل، ولا نبى من السماء ، إنْ هى إلّا أسمائُ هذه الائمّة إن كنتم تعرفون ۔ أتعجبون أن يسمّى الله بعضكم يهوديا وبعضكم نصرانيا وبعضكم عيسٰى؟ فلا تكذّبوا كلام الله وفَكِّروا فيما۔ أومىٰ، وانظروا حق النظر أيها المخطئون أم يقولون إنا لا نرى ضرورة مسيح ولا مهدى و كفانا القرآن وإنا مهتدون ۔ ويعلمون أن القرآن كتابٌ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ فاشتدّت الحاجة إلى مفسِّر زُكِّىَ مِن أيدى الله وأُدخِلَ فى الذين يُبْصرون ۔

हो जाएँ या गुमराह हो जाएँ और ईसाई हो जाएँ तथा तेरे लिए यह दुआ जो तू पांच समय नमाज़ में पढ़ता है पर्याप्त है यदि सच्चाई की अभिलाषा तेरे दिल में है और इस से प्रकट हुआ कि निकट है कि तुम्हारे बीच में से **مغضوب علیهم** पैदा हों और उनके ईसाई होने के कारण **ضالین** (गुमराह) हो जाएँ। इस स्थिति में कैसे संभव है कि वह मसीह मौऊद तुम्हारे बीच में से न हो जिस की तथा और जिसकी जमाअत की ओर **أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ** में संकेत है। अत: अनिवार्य है कि तीन फ़िक़्रों में जिसके तुम वारिस हो पृथकता न करो संभव नहीं कि कोई और यहूदी बनी इस्राईल में से या कोई नबी आकाश से तुम्हारे पास आए बल्कि यह सब इसी उम्मत के नाम हैं क्या तुम को इस बात से आश्चर्य है कि ख़ुदा तुम में से कुछ का नाम यहूदी रखे और कुछ का नाम ईसाई तथा कुछ लोगों को ईसा के नाम से याद करे। अत: ख़ुदा के कलाम को न झुठलाओ और जिस बात का संकेत किया उस पर विचार करो तथा भली-भांति सोचो। कहते हैं कि हम को मसीह और महदी की कोई आवश्यकता नहीं बल्कि क़ुर्आन हमारे लिए पर्याप्त है और हम सीधे मार्ग पर हैं, हालाँकि जानते हैं कि क़ुर्आन ऐसी किताब है कि-

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल वाकिअ: - 80)

وَ يُحكم ۔ كيف تكذّبون كتاب الله و تكفرون بنبأه؟ أيأمركم إيمانكم أن تكفروا بأنباء الله إن كنتم تؤمنون؟ وقد خلت قوم من قبلكم ظنوا كظنكم فی رسلهم، فبلّغوا التكذيب والإهانة منتهاها و كانوا يعتدون، فأقبلَ المأمورون على ربهم واستفتحوا، فخاب الذين۔ كانوا يصُدّون عن سبيل الله ولا ينتهون فاتّقوا سُنَنَ الله وغضبه أيها المجترء ون۔ إنكم تركتم الله فترَككم، وفعلتم فعل اليهود واتّبعتم آراء هم، وقد أذاق الله اليهود جزاء هم، فتوبوا إلى بارئكم وتعالوا إلىٰ ما أقول لكم كما بدأكم تعودون، وبلِّغوا الامر إلى ملوككم إن استطعتم و كونوا أنصار الله لعلكم تُرحمون ۔ وما من

पवित्र लोगों के अतिरिक्त अन्य किसी की समझ उस तक नहीं पहुँचती। इस कारण से एक ऐसे मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) की आवश्यकता पड़ी कि ख़ुदा के हाथ ने उसे पवित्र किया हो और देखने वाला बनाया हो। अफ़सोस तुम पर, किस प्रकार ख़ुदा की किताब को झुठलाते हो और उसकी भविष्यवाणी पर ईमान नहीं लाते। क्या तुम्हारा ईमान तुम्हें आदेश देता है कि ख़ुदा की भविष्यवाणियों के साथ कुफ़्र करो। तुम जानते हो कि तुम से पहले ऐसी क़ौम थी जो यही कुधारणा जो तुम करते हो अपने रसूलों के बारे में की और झुठलाया तथा अपमान को सीमा से अधिक कर दिया अन्तत: मामूर लोग ख़ुदा की चौखट पर गिर पड़े और उसके आगे विनय और निष्ठा से सर रख दिया तथा उससे फैसला चाहा। अत: वे लोग जो ख़ुदा के मार्ग से लोगों को रोकते थे और नहीं रुकते थे असफ़ल और निराश हो गए। अत: हे साहस करने वालो! ख़ुदा के नियमों और उसके प्रकोप से डरो तुम ने ख़ुदा को छोड़ दिया और उसने इसके बदले में तुम्हें छोड़ दिया तथा तुम ने यहूदियों का काम किया और ख़ुदा ने उन को उनकी कर्तूत का स्वाद चखाया अब ख़ुदा की ओर लौटो। जो कुछ मैं कहता हूँ उसे स्वीकार करो। और याद रखो कि जिस प्रकार आरम्भ में ख़ुदा ने तुम्हें

قضيـة أصـرّ عليهـا ، أهـل الارض إلّا قُضيـتْ فى آخـر الامـر فى السـماء وتلـك سُـنّةٌ لا تبديـل لهـا أيهـا، الظالمـون ۔ ومـا كان الله ليـترك الحـق وأهـله حـتى يمـيز الخبيـث مـن الطيـب فمـا لكـم لا تبصـرون؟ وإنْ أَكُ كاذبـا فعلـيّ كـذبى، وإنْ أَكُ صادقًـا فأخـاف أن يمسّـكم نَصَـبٌ مـن الله، وإنّـه لا، يفلـح المعتـدون ۔ تُوبـوا توبـوا فـإن البـلاء عـلى، بابكـم وسـارِعوا إلى توّابكـم، وأَمهِلـوا بعـض هـذا، التدلّـل واحضُـروا الله مـن التذلّـل، أليـس المـوت بقريـب ونـكال الآخـرة أمـر مهيـب، ولا إصـلاح بعـد المـوت ولا ترجعـون ۔ وقـد أُوحىَ إلىّ مـن ربّى قبـل أن ينـزل الطاعـون أَنِ ۔ اصْنَـعِ الفُلْـكَ بِأَعْيُنِنَـا وَوَحْيِنَـا، وَلَا تُخَاطِبْنِيفـى الَّذِيـنَ

पैदा किया उसी प्रकार उसकी ओर लौटोगे और जो कुछ तुम को धर्म की बात सिखाई गई है यदि सम्भव हो सके तो अपने बादशाहों को भी इस की सूचना दो और ख़ुदा के धर्म के सहायक बन जाओ ताकि तुम पर दया की जाए और ऐसा प्रत्येक झगड़ा जिस में पृथ्वी वाले हठ करें अन्ततः आकाश में उसका फ़ैसला किया जाता है। हे अत्याचारियो! यह ख़ुदा की सुन्नत (नियम) है जो कभी नहीं बदलती। हरगिज़ संभव नहीं की ख़ुदा सच को और सच्चों को छोड़ दे जब तक अपवित्र को पवित्र से अलग न करे यदि मैं झूठा हूँ तो मेरे झूठ की विपदा मेरे सर पर पड़ेगी और यदि मैं सच्चा हूँ तो मैं डरता हूँ कि तुम पर ख़ुदा की ओर से अज़ाब उतरे और यह अटल बात है कि सीमा से निकल जाने वाला हरगिज़ सफलता नहीं पाता। रुक जाओ रुक जाओ। देखो आपदा तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ी है, ख़ुदा की ओर जल्दी करो और इस घमण्ड में से कुछ तो कम करो और ख़ुदा के सामने विनयपूर्वक उपस्थित हो जाओ मौत निकट है और आख़िरत का अज़ाब बड़ी भयानक बात है और मरने के बाद सुधार का समय नहीं है और न फिर दुनिया में लौट कर आना है। प्लेग के उतरने से पहले ख़ुदा तआला ने मुझे वह्यी की कि हमारी आँखों के सामने और हमारे

ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ۔ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ۔، وقد أشعتُ هذا الوحی من سنين، و يعلمه المحبّون والمعادون ۔ واللّٰهُ يأتی الارض ينقُصها من أطرافها، فتوبوا إلى الله أيها الغافلون۔ولا تفرّطوا فی حقوق اللّٰه وعباده، ولا تكونوا من الذين يظلمون، وتوبوا توبةً نَصوحًا لعلكم تُرحَمون۔ وقال ربّی۔ ۔إِنَّ اللّٰهَ لا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ۔ إِنَّهُ أَوَى الْقَرْيَةَ۔، يعنی من دخلها كان آمِنًا، وأخاف علی الذين لا يخافون اللّٰه ولا ينتهون۔ فقُوموا من مواضعكم خاشعين، واسجدوا توّابين و كونوا لنفوسكم ناصحين وفَكِّروا مرتعدين، ۔ ولا تكونوا كالذين يفسقون وهم يضحكون إن إنكار المأمورين شیء عظيم، ومن حاربهم فقد

आदेश से एक नौका तैयार कर तथा ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश प्रस्तुत न कर जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन के लिए अन्याय करना अपना सिद्धान्त बना लिया है क्योंकि वे तो डूबने से पहले ही गुनाहों में डूबे हुए हैं। और जो लोग तेरे हाथ में अपना हाथ देते हैं ख़ुदा का हाथ उनके हाथ के ऊपर है। वर्षों हुए कि मैंने इस वह्यी को प्रकाशित किया है जैसा कि मित्र और शत्रु सब उसे जानते हैं और ख़ुदा प्रतिदिन पृथ्वी को उसके किनारे से इस प्रकार से कम करता चला जाता है कि लोगों के समूह के समूह हर ओर से आ रहे हैं। अत: हे लापरवाहो ख़ुदा की ओर लौटो और ख़ुदा एवं उसके बन्दों पर अन्याय एवं अत्याचार न करो और शुद्ध तौबा करो ताकि तुम पर दया की जाए और ख़ुदा ने मुझ से फ़रमाया कि ख़ुदा कभी किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि स्वयं वे लोग अपनी आन्तरिक हालत को न बदलें और वास्तव में ख़ुदा ने इस गाँव को अपनी शरण में ले लिया है अर्थात् जो कोई इस में दाख़िल हुआ वह सलामत (सुरक्षित) रहा। हाँ मुझे उनकी चिन्ता है जो ख़ुदा से नहीं डरते और दुराचारों से नहीं रुकते। अत: चाहिए कि अपने स्थानों से विनयपूर्वक उठो

ألقٰى نفسه فى الجحيم، فلا خير فى هذه بالمسيح عيسى ابن مريم و كفّروه وآذوهءوحقّروه وأسروه وأرادوا أن يصلبوه ليحسب النّاس أنه أشقى الناس والملعون ففَكِّروا فى أُمّ الكتاب حقّ الفكر۔ لِمَ حذَّركم الله أن تكونوا المغضوبَ عليهم، ما لكم لا تفكّرون؟ فاعلموا أن السرّ فيه أنّ الله كان يعلم أنه سوف يبعث فيكم المسيح الثانى كأنه هو، و كان يعلم أن حزبًا منكم يكفّرونه ويكذّبونه ويحقّرونه ويشتمونه ويريدون أن يقتلوه ويلعنونه، فعلَّمكم هذا الدعاء رُحمًا عليكم وإشارةً إلى نبأٍ قدَّره، فقد جاء كم مسيحكم فإن لم تنتهوا فسوف تُسألون ۔

और तौबा के साथ सज्दे करो तथा अपने प्राणों की चिन्ता करो और सोच एवं भय के साथ चिन्तन करो और उनके समान न हो जाओ जो पापी हैं और ठट्ठे करते हैं। भली भांति जान लो कि मामूरों का इन्कार बड़ी भारी बात है। जो उन से लड़ा निस्सन्देह स्वयं को नर्क का ईंधन बनाया हे लड़ने वालो! उस लड़ाई में तुम्हारे लिए कोई अच्छाई नहीं तुम सूरह फ़ातिहा में उस क़ौम का वर्णन पढ़ते हो जिस पर ख़ुदा का प्रकोप इसलिए उतरा कि उन्होंने मसीह इब्ने मरयम का इन्कार किया और उसे तुच्छ समझा तथा कष्ट दिया और पकड़वाया और चाहा कि सूली दें। इसलिए कि लोग उसे लानती और दुर्भाग्यशाली समझें। चाहिए कि उम्मुल किताब में भली भांति विचार करो कि तुम्हें ख़ुदा ने उससे क्यों डराया कि तुम **مغضوبَ علیهم** हो जाओ जान लो कि इस में यह रहस्य था कि ख़ुदा जानता था कि दूसरा मसीह तुम में पैदा होगा और जैसे वह वही होगा और ख़ुदा जानता था कि तुम में से एक गिरोह उसे काफ़िर और झूठा कहेगा उसे गालियाँ देंगे और तुच्छ समझेंगे और उसके क़त्ल का इरादा करेंगे और उस पर लानत डालेंगे। अत: उसने दया करके तथा उस ख़बर की ओर जो प्रारब्ध थी संकेत के लिए तुम्हें यह दुआ सिखाई फिर तुम्हारा मसीह तुम्हारे पास आ गया

وثبت من هذا المقام أن المراد من المغضوب عليهم عند الله العلّام ★ هم اليهود الذين فرّطوا فى أمر عيسٰى رسول الله الرحمٰن، و كفّروه و آذَوه و لُعنوا على لسانه فى القرآن، و كذالك مَن شابَهَهم منكم بتكفير مسيح آخر الزمان و تكذيبه و إيذائه باللسان، و التمنّى لقتلهو لو بالبهتان، كما أنتم تفعلون۔ و المراد من قوله الضَّالِّينَ النصارى الذين أفرطوا فى أمر عيسٰى و أَطرَءوه و قالوا إن الله هو المسيح و هو ثالث ثلاثة يعنى الثالث الذى

अब यदि तुम अन्याय से न रुके तो अवश्य पकड़े जाओगे।

और इस स्थान से सिद्ध हुआ कि ख़ुदा के नज़दीक **مغضوب عليهم** से वे यहूदी ☆ अभिप्राय हैं जिन्होंने ईसा के मामले में अन्याय किया और उसे काफ़िर कहा तथा उसे कष्ट पहुंचाया और क़ुर्आन में उसकी जीभ पर लानत किए गए और इसी प्रकार तुम में से बहुत अन्तिम युग के मसीह को काफ़िर ठहराया और जीभ से उसे झुठलाया, कष्ट पहुँचाने तथा उसे क़त्ल करने की इच्छा के कारण उन यहूदियों के समान हो गए और **ضالين** से अभिप्राय ईसाई हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में सीमा से बढ़ गए और कहा कि मसीह ही ख़ुदा है और वह तीन में से एक है ऐसा कि दोनों उसके अस्तित्व में मौजूद हैं और **أَنعَمتَ عَلَيهِم** से वे अंबिया (नबी) और बनी इस्राईल

★حاشية :- ان لفظ المغضوب عليهم قد حذىٰ لفظ الضالين۔ اعنى وقع ذالك بحذاء هذا كما لا يخفٰى على المبصرين۔ فثبت بالقطع و اليقين ان مغضوب عليهم هم الذين فرّطوا فى امر عيسىٰ۔ بالتكفير والايذاء والتوهين۔ كما ان الضالين هم الذين اَفرطوا فى امره باتخاذه ربّ العالمين ۔ منه

☆ **हाशिया :-** शब्द 'मग़्ज़ूब अलैहिम' 'ज़ाल्लीन' के मुक़ाबले पर है अर्थात् वह शब्द इस शब्द के सामने है जैसा कि देखने वालों पर छिपा नहीं। अत: निश्चित रूप से सिद्ध हो गया कि 'मग़्ज़ूब अलैहिम' वे लोग हैं जिन्होंने हज़रत ईसा को कम आंका, काफिर क़रार दिया, कष्ट दिया तथा अनादर किया। और 'ज़ाल्लीन' से अभिप्राय वे लोग हैं जिन्होंने हज़रत ईसा के बारे में अतिशयोक्ति की और उनको ख़ुदा क़रार दे दिया। (इसी से)

يوجد فيه الثلاثة كما هم يعتقدون ۔ والمراد من قوله۔أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ هم النبيون والاخيار الآخرون من بنى إسرائيل الذين صدّقوا المسيح وما فَرّطوا فى أمره وما أفرطوا بأقاويل، و كذالك المراد عيسَى المسيحُ الذى خُتِمَتْ عليه تلك السلسلة وانتقلت النبوّة، وسُدَّ به مجرى الفيض كأنه العَرِمة، و كأنه لهذا الانتقال العلَمُ والعلامة أو الحشر والقيامة، كما أنتم تعلمون۔ و كذالك المراد من أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ فى هذه الآية هو سلسلة أبدال هذه الاُمّة الّذين صدّقوا مسيح آخر الزمان، وآمنوا به وقبلوه بصدق الطويّة والجَنان۔ أعنى المسيحَ الذى خُتِمَتْ عليه هذه السلسلة، وهو المقصود الاعظم من قوله أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ كما تقتضى المقابلة ولا ينكره المتدبّرون ۔ فإنّه إذا عُلِمَ بالقطع

के अन्तिम चुने हुए (लोग) अभिप्राय हैं जिन्होंने मसीह का सत्यपान किया और उसके बारे में कोई कमी कभी नहीं की तथा बातों से उस मसीह के बारे में अन्याय नहीं किया। और इसी प्रकार शब्द أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से अभिप्राय ईसा मसीह है जिस पर वह सिलसिला समाप्त हुआ और उसके अस्तित्व से वरदान का झरना बन्द हो गया जैसा कि उसका अस्तित्व उस स्थानांतरण के लिए एक निशानी या हश्र और क़यामत तथा इसी प्रकार أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से इस उम्मत के अब्दालों का सिलसिला अभिप्राय है जिन्होंने अन्तिम युग के मसीह का सत्यापन किया और सच्चे दिल से उसको स्वीकार किया अर्थात् उस मसीह को जिस पर यह सिलसिला समाप्त हुआ और أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से वही महान उद्देश्य है। क्योंकि मुकाबला उसी को चाहता है और विचार करने वाले उसका इन्कार नहीं कर सकते और مغضوب عليهم वही यहूदी हैं जिन्होंने मसीह को काफ़िर कहा और उस को लानती समझा जैसा कि الضَّالِّينَ का शब्द इस की ओर मार्ग-दर्शन करता है। इसलिए क्रम ठीक नहीं बैठता और क़ुर्आन के कलाम की व्यवस्था ठीक नहीं होती सिवाए इसके

واليقين والتصريح والتعيين أن المغضوبَ عليهم هم اليهود الذين كفّروا المسيح وحسبوه من الملعونين كما يدل عليه قرينة قوله الضَّالِّينَ فلا يستقيم الترتيب ولا يحسُن نظام كلام الرحمٰن إلا بأن يُعنٰى من أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مسيحَ آخر الزمان، فإن رعاية المقابلة مِن سُنن القرآن ومن أهمّ أمور البلاغة وحسن البيان، ولا ينكره البيّن التامّ أنه مَن قرأ هذا الدعاء فى صلاته أو خارجَ الصلاة فقد سأل ربّه أن يُدخِله فى جماعة المسيح الذى يكفّره قومه ويكذّبونه ويفسّقونه ويحسبونه شر المخلوقات ويسمّونه دجّالًا وملحدًا ضالاً كما سَمَّى عيسى اليهودُ الملعونَ۔ وإذا تَقرّرَ هٰذا فبَيِّنوا مَن قام فيكم من دونى يدّعى أنه هو المسيح الموعود وأنتم كفّرتموه وخاطبتموه

कि أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ से अन्तिम युग का मसीह अभिप्राय लिया जाए, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन का नियम है कि मुकाबले का ध्यान रखता है और मुकाबले का ध्यान रखना उच्च श्रेणी की सरसता और प्रभावी ढ़ंग से बात कहने में सम्मिलित है और मूर्ख के अतिरिक्त कोई इस अर्थ से इन्कार नहीं करता। इस स्थान से भली-भांति ज्ञात हुआ कि जो कोई नमाज़ में या नमाज़ से बाहर इस दुआ को पढ़ता है वह अपने प्रतिपालक (रब्ब) से प्रश्न करता है कि उसे उस मसीह की जमाअत में सम्मिलित करे जिसको उसकी क़ौम काफ़िर कहेगी और उसे झुठलाएगी तथा उसको सब सृष्टियों से अधिक बुरा समझेगी और उसका नाम दज्जाल और नास्तिक एवं गुमराह रखेगी जैसा कि लानती यहूदियों ने ईसा का नाम रखा था। अब बताओ कि वह कौन है जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है और तुमने उसको काफ़िर कहा तथा उन नामों से पुकारा और फ़त्वे लगाने के तीरों से उसे घायल किया। क्या तुम उस भविष्यवाणी को जिसे तुम ने स्वयं अपनी जीभ से पूरा किया, झुठलाते हो। क्या तुम को शर्म नहीं आती कि फ़ातिहा में अपने ख़ुदा से चाहते हो कि तुम को मेरी जमाअत में सम्मिलित करे।

بهذه الاسماء وجرحتموه بسهام الإفتاء ؟ أتكذّبون النبأ الّذى أتممتموه بألسنكم أيها السالقون؟ ألا تأخذ كم الحياء أنكم تدُعون ربكم فى الفاتحة أن يدخلكم فى جماعتى ثم تعرضون؟ و كنتم تقولون لا صلاة إلا بالفاتحة فلا تكونوا أوّلَ كافر بها أيها الموحّدون۔ والعجب منكم كل العجب أنكم هذا الدعاء فى السبع المثانى مع فهم المعانى فى تقرء ون أوقاتكم الخمسة ثم تنسونه وتعرضون۔ و ما هٰذا إلّا شقاوة توجب غضب الربّ لما هى إعراض عما تؤمرون ۔ وما أسألكم على ما جئتكم به من أجر ولا أقول أنِ انبِذوا مالًا من أيديكم فآخذُه، بل أوتيكم مالًا فهل أنتم تأخذون؟ أيهاالفقراء ما بقى فى أيديكم شيئٌ من الدنيا والآخرة، فلا تظلموا أنفسكم وأنتم تعلمون۔ وإن كنتم

फिर मुँह फेरते हो और तुम कहते थे कि बिना फ़ातिहा के कोई नमाज़ सही नहीं। अब हे एक ख़ुदा को मानने वालो! तुम स्वयं सर्वप्रथम इस का इन्कार मत करो। बड़ा आश्चर्य है कि पांच समय इस दुआ को फ़ातिहा में पढ़ते हो और उस के मायने भी समझते हो और भूलते हो और मुँह फेरते हो। इस दुर्भाग्य से ख़ुदा का प्रकोप भड़कता है क्योंकि यह ख़ुदा के आदेश से विमुख होना है। मैं उस चीज़ की जो तुम्हारे पास लाया हूँ कोई मज़दूरी नहीं मांगता और न यह कहता हूँ कि माल अपने हाथ से पृथ्वी पर फेंको और मैं उसे उठा लूँ बल्कि स्वयं तुम्हें माल देता हूँ क्या लेते हो? हे फ़कीरो! दुनिया और आख़िरत (लोक-परलोक) में से तुम्हारे पास कुछ नहीं रखा। अत: अपनी जान पर जान-बूझ कर ज़ुल्म (अन्याय) न करो और यदि मेरे बारे में तुम्हें कुछ सन्देह है तो मुझे जिस प्रकार चाहो परख लो और ख़ुदा के उस क़ानून को जो रसूलों के बारे में जारी है मत भुलाओ। भली भांति जान लो कि तुम ने बनी इस्राईल के क़दम पर क़दम मारा है (पद चिन्हों पर चलते हो) इसलिए यदि बुद्धिमान हो तो उस अज़ाब और दण्ड को मत भुलाओ जो उनको पहुंचा जैसा कि जानते हो कि ख़ुदा तआला यहूदियों

فی شكّ من أمری فامتحنونی كيف شئتم ولا تنسَوا سنن الله فی قوم يُرسَلون ۔ واعلموا أنكم خرجتم علی قدم بنی إسرائيل، فلا تنسَوا ما مَسَّهم إن كنتم تعقلون ۔ فإنّ الله قد غضب علی اليهود مرّتين ما غضب كمثلها من قبل ولا من بعد، وسمّاهم المغضوب عليهم ولعنهم مرّة علی لسان داوٗد و ثانية علی لسان عيسٰی، فتلك الغضب الاشد انحصرت فی المرّتين كما لا يخفی علی الذين يتدبّرون، وقال الله ۔

وَقَضَيْنَآ اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَاءِيْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا

فهل أنتم تتذكّرون؟ و كان المفسدة الآخرة الموجبة لغضب الربّ تكفيرَ المسيح و إرادة صلبه كما أُشير فی اللعنتين المذكورتين واتّفق عليه صحفُ الله والمؤرّخون ۔ فالذين سمّاهم الله المغضوب عليهم فی الفاتحة هم اليهود الذين كذّبوا المسيح و أرادوا أن يصلبوه و يعلمه العالمون ۔ و إنّ لفظ الضَّآلِّيْنَ

पर दो बार ऐसा क्रोधित हुआ कि कभी आगे-पीछे ऐसा क्रोधित नहीं हुआ और उनका नाम مغضوب عليهم रखा और एक बार दाऊद की जीभ से और दूसरी बार ईसा की जीभ से उन पर लानत की और वह कठोर प्रकोप दो बार पर आधारित हुआ जैसा कि विचार करने वालों पर गुप्त नहीं ख़ुदा तआला फ़रमाता है-

وَقَضَيْنَآ اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَاءِيْلَ فِی الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِی الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا (बनी इस्राईल - 5)

कि हम ने किताब में बनी इस्राईल से कहा कि तुम दो बार पृथ्वी में उपद्रव करोगे और सीमा का अतिक्रमण करोगे क्या तुम्हें यह याद है? और वह दूसरों का उपद्रव जो ख़ुदा के प्रकोप का कारण हुआ, मसीह को काफ़िर कहना और उसे सूली देने का इरादा था जैसा कि उन दो कथित लानतों में संकेत है। और ख़ुदा एवं इतिहासकारों की किताबों की इस पर सहमति है। इसलिए वे लोग जिन को ख़ुदा ने फ़ातिहा में مغضوب عليهم कहा है वही यहूदी हैं जिन्होंने मसीह

الذی وقع بعد ۔ اَلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ ۔ قرینة قطعیة علی هذا المعنی ولا یرتاب فیه إلا الجاهلون ۔ فإن الضّالین قومٌ أفرطوا فی أمر عیسٰی، فثبت من هذا أن المغضوب علیهم قوم فرّطوا فی أمره، وهذان اسمان متقابلان أیّها الناظرون۔ ثم خوّفکم اللّٰه أن تکونوا کمثلهم فیحلّ الغضب علیکم کما حلّ علی أعداء المسیح ومسَّهم لعنتُه المذکورة فی القرآن، وفی هذه تنبیه لکم أیها المنکرون ۔ وما ألزمَکم اللّٰه قراءةَ الفاتحة فی کل رکعة إلا لهذا الغرض أیها العاقلون ۔ فلا تُلقوا معاذیرکم، وقد تمّت حُجّة اللّٰه علیکم فأین تفرّون؟ وما کفَر الیهود بالمسیح إلا لِزعمهم أنه خالفَ عقیدتهم وما جاء کَمَا کانوا یترقّبون، ولِزعمهم أنه لیس من بنی إسرائیل وخانتْ أُمُّه فغضِب اللّٰه علیهم فهلك القوم المفسدون ۔ فاذکروا الفاتحة التی تقرء ونها فی کل رکعة ولیست الصلاة إلا بالفاتحة، فاحملوا ما حُمّلتم

को झुठलाया और चाहा कि उसे सूली दें और ज़ाल्लीन (ضالین) का शब्द जो مغضوب علیهم के बाद आया है उन अर्थों पर निश्चित प्रतीक है। इस पर मूर्ख के अतिरिक्त कोई सन्देह नहीं करता। क्योंकि ضالین वे लोग हैं जिन्होंने ईसा के बारे में अतिशयोक्ति की। यहाँ से सिद्ध हुआ कि مغضوب علیهم वे लोग हैं जिन्होंने उस के बारे में कमी की और यह दो नाम एक-दूसरे के सामने आए हैं फिर ख़ुदा ने तुम्हें इस बात से डराया कि तुम उनके समान हो जाओ और अन्ततः वैसा ही प्रकोप तुम पर उतरे जैसा कि मसीह के शत्रुओं पर उतरा और वह लानत उन के साथ संलग्न हुई जिसका क़ुर्आन में वर्णन है और हे इन्कार करने वालो! इस बयान में तुम्हारे लिए चेतावनी है और हर रकअत में फ़ातिहा के अनिवार्य करने से ख़ुदा तआला का उद्देश्य यही है। अब बहाना बनाते हो और ख़ुदा के समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हुआ और भागने का मार्ग तुम पर बन्द हुआ। यहूदियों ने मसीह के साथ कुफ़्र इस विचार से किया कि उसने उनकी

فيها ولا تكونوا كالذين يقولون ولا يفعلون ۔ ولا تقرَبوا الفاتحةَ وأنتم لا تعرفونها، ولا تقرَبوها وأنتم لا تعتقدون ۔ أحسِبتم قراءةَ الفاتحة وفى كل ركعةٍ تلاوتَها كعَملكُمْ بِهَا، ساء ما تزعمون ۔ ولستم على شيءٍ منها وما آمنتم بحرف من حروفها حتّى تؤمنوا بالمسيح الّذى بُعث بينكم منكم، و شهدتْ سورة النور عليه فهل أنتم تؤمنون ۔ وإن لم تؤمنوا بها ولم تعملوا فيحلّ عليكم غضب الله كما حلّ من قبلكم على اليهود ۔ واتّقوا الله الذى إن عصيتم ينْزع الدين والدولة منكم ويؤتيهما قوما يطيعون ۔ وتعرفون ما فُعِلَ باليهود بعد المسيح ولا تُعجِزه المجرمون ۔ واللّٰهُ غنىّ عن العالمين إن كانوا

आस्थाओं के विरुद्ध किया तथा उस प्रकार से नहीं आया जैसा कि उनको आशा एवं प्रतीक्षा थी तथा इस विचार से कि वह बनी इस्राईल में से नहीं और उसकी माँ ने बेईमानी की है। ख़ुदा उन पर प्रकोपित हुआ। अत: यह उपद्रवी क़ौम तबाह हो गई। अब इस फ़ातिहा को जिसे हर रकअत में पढ़ते हो याद करो और कोई नमाज़ फ़ातिहा के बिना सही नहीं होती। अत: अब अपनी पीठ पर उठाओ जो ख़ुदा ने तुम पर फ़ातिहा में डाला। और उनके समान न हो जाओ जो कहते हैं और नहीं करते और फ़ातिहा के निकट मत जाओ जब तुम उसे नहीं पहचानते और उसके निकट हरगिज़ न जाओ जब तुम्हें उस पर विश्वास नहीं। क्या तुम फ़ातिहा का पढ़ना और हर रकअत में उसकी क़िरअत करने को ऐसा ही समझते हो जैसा कि उस पर अमल करते हो। यह तुम्हारा विचार बहुत बुरा है। वास्तव में तुम्हारा फ़ातिहा से कुछ संबंध नहीं और उसके एक अक्षर पर भी ईमान नहीं लाते जब तक तुम उस मसीह पर ईमान न लाओ जो तुम में से और तुम्हारे बीच में से पैदा हुआ और सूरह नूर ने उसकी सच्चाई पर गवाही दी। क्या ईमान लाओगे और यदि फ़ातिहा पर ईमान नहीं लाओगे और न उस पर अमल करोगे तो ख़ुदा का प्रकोप तुम्हें उसी प्रकार पकड़ेगा जैसा कि यहूदियों को पकड़ा और उस ख़ुदा से डरो

لا ينتهون ۔ وما قلتُه من عند نفسی بل قاله *الله ربكم، أما قرأتم ۔ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ و ''اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ *''۔ ''اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ *''۔ فقد غيّرتم فسوف تعلمون وتقولون إنّا نحن المسلمون، والله يعلم ما تعملون أيها المتصلّفون ۔ ألم يأنِ أن تخشع قلوبكم وتخافوا وعيدَ الله وقد رأيتم أيّاما كأيّام اليهود أفلا تبصرون؟ توبوا توبوا قبل أن تهلكوا ولا تغضَبوا على داعى الله ولا تحاربوا ربّكم أتقدرون أن تردّوا ما أراد الله؟ ونعلم أنكم لا تقدرون ۔ فاتّقوا الله ولا تنسَوا المَنون ۔ وإنّ وعد الله حق، فاخشوا عواصف أيها المتّقون ۔ وإنه مالكٌ يؤتى المُلك من يشاء، وينزع المُلك ممّن

जो तुम्हारी अवज्ञा पर दीन (धर्म) और दौलत दोनों तुम्हारे हाथ से छीन ले और आज्ञाकारियों को दे दे और तुम जानते हो जो कुछ ख़ुदा ने मसीह के बाद यहूदियों से किया और अपराधी किसी समय उसे असमर्थ नहीं कर सकते और ख़ुदा लोगों से नि:स्पृह है यदि न रुके। मैंने यह सब अपनी ओर से नहीं कहा है अपितु तुम्हारे रब्ब ने कहा है। क्या तुम ने नहीं पढ़ा? अब ख़ुदा देखता है जो तुम किया करते हो। और जब ख़ुदा किसी बात को चाहता है कि हो जाए तो उसे केहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। ख़ुदा किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी हालत को न बदले। अब सावधान हो जाओ कि तुम ने अपनी हालत को बदल दिया है। निकट है कि तुम उसका परिणाम देखो। और कहते हो कि हम मुसलमान हैं। ख़ुदा जानता है तुम जो कुछ करते हो। हे पाखंडियो! क्या अभी वह समय नहीं आया कि तुम्हारे दिल विनम्र हो जाएँ और ख़ुदा के दण्ड के वादे से डरो हालाँकि तुम ने वे दिन देखे जो यहूदियों ने देखे थे। अत: तुम अन्धे हो? तौबा करो, तौबा करो इस से पहले कि तबाह हो जाओ। और ख़ुदा की ओर बुलाने वाले पर क्रोधित मत हो तथा अपने रब्ब से मत लड़ो। क्या तुम ख़ुदा के इरादे को रद्द कर सकते हो? हम भली-भांति जानते हैं कि तुम नहीं कर सकते।

يشـاء، ألا تنظـرون إلى قـول الله ـ ''فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ*''۔ فقـد قيـل لكـم مـا قيـل لليهـود وأنتـم تعلمـون مـآل أمرهـم ولا تجهلـون۔ اتقـوا اتقـوا، واتركـوا التكـبّر واخشـعوا، وادفعـوا الرُّجْـزَ وتَطهّـروا، وارحمـوا ذراريكـم ولا تظلمـوا، واتّقـوا الله الذى إليـه تُصرَفون۔ لااسمَ عـلى السـماء إلا اسـم المنقطعـين، فجاهِـدوا أن تُكْتَـب أسـماء كـم فى السـماء، ولا تفرحـوا بقشـر الإسـلام أيهـا المسـلمون۔ قـد اقتربـت أيّـام الله، وإنـه يذهـب بالفاسـقين منكـم، ويـأتى بقـوم يحبّـهم ويحبونـه۔ يذكـرون الله ويذكرهـم، ويُتـمّ عليـهم كل مـا وعدكـم منالنعـم، ولا تضرّونـه شـيئا، فمـا لكـم لا تتقـون؟ إن مثـل نبيّنـا عنـد الله كمثـل موسٰى، وإن موسٰى

अत: उस से डरो और मौत को याद करो। ख़ुदा का वादा निस्सन्देह सच्चा है। अत: तबाही की आँधियों से डरो वह मालिक है जिसको चाहे देश दे और जिस से चाहे छीन ले। क्या ख़ुदा तआला के कथन को नहीं देखते। वह तुम्हारे कामों को खूब देखता है। और तुम्हें वही कहा गया जो यहूदियों को कहा गया था और तुम उनका अंजाम भली भांति जानते हो कि क्या हुआ। डरो, डरो और अभिमान को छोड़ दो और विनम्रता धारण करो तथा गन्दगी और अपवित्रता को स्वयं से दूर करो तथा पवित्र हो जाओ और अपनी सन्तान पर दया करो, अत्याचार न करो और ख़ुदा से डरो क्योंकि अन्तत: उसके पास जाना है। आकाश के दफ्तर में उस का नाम लिखा जाता है जो शुद्ध रूप से ख़ुदा के हो गए हैं। अत: प्रयास करो कि तुम्हारा नाम आकाश के पटल पर लिखा जाए और हे मुसलमानो! इस्लाम के छिलके पर गर्व मत करो ख़ुदा के दिन निकट आ गए हैं तथा निकट है कि वह उन पापियों के बाज़ार की शोभा समाप्त कर दे जो तुम में से हैं और ऐसी क़ौम पैदा करे कि जो उससे प्रेम करे और वे उनसे प्रेम करें। वे उसे याद करें और वह उनको याद करे तथा नेमत के समस्त वादे जो उसने तुम से किए हैं उनके पक्ष में पूर्ण करे। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुंचा सकते। फिर क्यों नहीं डरते ख़ुदा के

وعد قومًا، وأَتَمَّه لقوم آخرين، وأهلكَ الله آباء هم فى الفلاة لِما كانوا قومًا عاصين۔ و كذٰلك يفعل بكم أيها المعتدون، ويرحمكم أيها الصالحون۔ فاصلِحوا ذات بينكم وأصلحوا ما أفسدتم، ولا تقعدوا مع الذين يستكبرون۔ أ تُعجِزون ربّ السماء ببطشكم أو تخدعونه بخديعتكم؟ كل بل إنكم على أنفسكم تظلمون۔ ولا أقول لكم عندى علم أو قوة۔ سبحان الله۔ ما أنا إلا عبدٌ ضعيف، وأنطقنى الذى يُنطِق رسلَه، فما لكم لا تفهمون؟ اترُكوا الفاتحة، أو اعملوا بها حيائً من الله إن كنتم قومًا تتّقون أتقرء ونها وهى لا تُجاوز حناجركم أيها المراء ون؟ و إن المغضوب عليهم هم اليهود الذين حذّركم الله من

नज़दीक हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मूसा अलैहिस्सलाम के समान हैं और तुम जानते हो कि मूसा ने एक क़ौम के साथ वादा किया परन्तु उस वादे को दूसरी क़ौम के पक्ष में पूर्ण किया और ख़ुदा ने उनके बापों को मैदान में तबाह किया क्योंकि अवज्ञाकारी क़ौम थी। और ख़ुदा यही मामला तुम्हारे साथ करेगा हे सीमा का अतिक्रमण करने वालो! और हे संयम धारण करने वालो! तुम पर दया करेगा। अब चाहिए कि सच्चाई और सुलह (मैत्री) अपनाओ और उस चीज़ को ठीक करो। जिसे तुम ने तबाह कर दिया है तथा घमंड करने वालों के साथ मत बैठो क्या संभव है कि अपने बल और शक्ति के साथ आकाश के रब्ब को थका दो बल्कि अपने प्राण पर ज़ुल्म करते हो मैं नहीं कहता कि मेरे हाथ में ज्ञान और शक्ति है। सुब्हान अल्लाह! बल्कि मैं एक असहाय व्यक्ति हूँ और मुझे उसी ख़ुदा ने वाक् शक्ति दी जिसने रसूलों को वाक् शक्ति प्रदान की। फिर क्यों नहीं समझते अब या तो फ़ातिहा को छोड़ो या ख़ुदा से शर्म कर के उस पर अमल करो। यदि तुम ख़ुदा से डरने वाली क़ौम हो। क्या बात है कि फ़ातिहा को पढ़ते हो और वह तुम्हारे गले से नीचे नहीं उतरती हे पाखंडियो! और सिद्ध हुआ कि **مغضوب** **عليهم** वही यहूदी हैं जिन के समान होने से ख़ुदा ने तुम्हें डराया और जिन्होंने

مضاهاتهم، الذين فَرّطوا فى أمر عيسٰى، فاسألوا أهل الذكر إن كنتم لا تعلمون۔ أتنتظرون من دونى مسيحًا الذى يُؤذَى كمثلى، فتكفّرونه وتكذّبونه وتشتمونه كمثلى، وكدتم تقتلونه، وكفاكم هذا الوِزْرُ الذى احتملتم بتكفيرى، فلا تجسّسوا مسيحًا آخر لتُكفِّروه، أتستطيعون أن تحملوا الوِزْرَين أيها المعتدون؟ ولا بُدّ لكم أن تُكفّروا المسيح الصادق ليتمّ نبأ اللّٰه وقد كفّرتمونى وتمّ ما قُدّرَ لكم، فلا تطلبوا تكفيرًا آخر إن كنتم تعقلون۔ وتفصيل المقام أن اللّٰه قد أخبر عن بعض اليهود فى السورة الفاتحة۔ إنهم كانوا محلّ غضب اللّٰه فى زمن عيسى ابنِ الصدّيقة، فإنّهم كفّروه وآذوه وأثاروا له كل نوع الفتنة، ثم أشار إلٰى أن طائفة منكم كمثلهم يكفّرون مسيحهم.

ईसा के बारे में कमी की। अत: यदि ज्ञान नहीं रखते तो ज्ञान रखने वालों से पूछो। क्या मेरे अतिरिक्त ऐसे मसीह की प्रतीक्षा करते हो जो मेरे समान कष्ट दिया जाए। फिर तुम उसको झुठलाओ और उसे काफ़िर कहो तथा मेरी तरह उस को गालियाँ दो और चाहो कि उसे मार डालो तथा यही गुनाह जो मुझे काफ़िर कहने के कारण तुम्हारे गले का हार हो गया है तुम्हारे लिए पर्याप्त है अब दूसरों को न ढूँढ़ो क्या तुम से हो सकता है कि दोहरा भार उठाओ और इस से चारा नहीं कि सच्चे मसीह को काफ़िर कहो ताकि ख़ुदा की भविष्यवाणी पूरी हो। और तुम ने मुझे काफ़िर कहा और जो तुम्हारे लिए प्रारब्ध था प्रकट हो गया। अब यदि बुद्धिमान हो तो दूसरे व्यक्ति के लिए कुफ़्र न मांगो। उस स्थान का विवरण इस प्रकार से है कि ख़ुदा तआला सूरह फ़ातिहा में उन कुछ यहूदियों के बारे में सूचना देता है जिन पर ईसा बिन सिद्दीका के युग में ख़ुदा का प्रकोप उन पर आया। क्योंकि उन्होंने उसे काफ़िर कहा और सताया तथा हर प्रकार का उपद्रव किया। फिर ख़ुदा तआला संकेत करता है कि तुम में से एक गिरोह यहूदियों के समान अपने मसीह को काफ़िर कहेगा।

و یکمّلون جمیع أنحاء المشابهة، و یفعلون به ما کانوا یفعلون۔ و أنتم تقرء ون آیة الْمَغْضُوبِ عَلَیْهِمْ، ثم لا تلتفتون۔ أعلَّمکم الله هذه عبثًا کوضع الشیئ فی غیر محلّه أو کتَبها لتذکیرِ السورة جریمة ترتکبونها ما لکم لا تُمعِنون؟ و ما غضِب الله علی تلك الیهود إلّا لما کَفّروا رسوله عیسی و کذّبوه وشتموه و کادوا أن یقتلوه من الحسد و الهوی، و قد کتب علیکم قدرُ الله أنکم تفعلون بمسیحکم کما فعل الیهود بمسیحهم، و قد فعلتم بی کمثله، فهل بقی هوًی لکم یا حزبَ العدا أن تُکفّروا و تکذّبوا و تؤذوا کمثلی نفسًا أخری؟ و قد شهدت ألسنکم و أقلامکم و مکائد کم أنکم أتممتم علیّ ما أُشیرَ إلیه فی سورة الفاتحة، فارحموا مسیحًا آخر و أَقِیلوه من

तथा हर प्रकार की समानता उन से पैदा कर लेंगे और उनके हाथों से वे सब काम होंगे जो यहूदियों ने किए और तुम **مغضوب علیهم** की आयत पढ़ते हो फिर उसकी ओर ध्यान नहीं देते। क्या ख़ुदा ने यों ही यह सूरह तुम को सिखाई जैसा कि कोई किसी वस्तु को ग़लत स्थान पर रख दे या इस सूरह को इसलिए उतारा कि तुम को वह गुनाह स्मरण कराए जो तुम्हारे हाथ से होगा, क्यों ध्यानपूर्वक नहीं देखते। और ख़ुदा उन यहूदियों पर ईसा को काफ़िर कहने के कारण और उसे झुठलाने तथा गालियाँ देने के कारण प्रकोपित हुआ और इसलिए भी कि वे लोभ और इर्ष्या के कारण चाहते थे कि उसे क़त्ल कर दें। ख़ुदा तआला का प्रारब्ध (तक़्दीर) तुम्हारे हक़ में इसी प्रकार जारी हुआ है कि तुम अपने मसीह से वही करो जो यहूदियों ने अपने मसीह से किया। अब तुमने उसी प्रकार मेरे साथ व्यवहार किया। हे दुश्मनों के गिरोह! क्या कुछ इच्छा तुम्हारे दिल में शेष है जो चाहते हो कि फिर दूसरी बार मुझ जैसे दूसरे व्यक्ति को काफ़िर और पापी कहो और उसे कष्ट दो हालाँकि तुम्हारी जीभों, तुम्हारी लेखनियों और तुम्हारे छल-प्रपंचों ने इस बात पर गवाही दे दी कि तुम ने मेरे हक़ में वह सब कुछ पूरा कर लिया

هـذه العـزّة أيهـا المنتظـرون۔ أمـا شـبعتم بهـذا القـدر؟ أتريـدون أن ينـزل عيسـى ابـن مريـم مـن السـماء ثـم تفعلـوا بـه مـا فعـل اليهـود بـه مـن قبـل، ويجتمـع عليـه القارعتـان والتكفـيران والذلّتـان ويـذوق اللعنـة مرّتـين، بـل ثـلاث مـرات★ ولـن يجمـع الله عليـه اللّعـان الثـلاث كمـا أنتـم تزعمـون۔ وقـد لعنتـم مسـيحًا جـاء كـم منكـم، وأتممتـم عليـه مـا كُتِـبَ فى كتـاب الله، فهـو

है जिसका सूरह फ़ातिहा में संकेत है। अत: हे प्रतीक्षा करने वालो! दूसरे मसीह पर दया करो और इस मान-समान से उसे अलग रखो। क्या इतने से तुम्हारा पेट नहीं भरा। क्या चाहते हो कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरे और उस से वही करो जो इस से पूर्व यहूदियों ने उसके साथ किया और इस प्रकार उस पर दो संकट, दो झुठलाने और दो अपमान इकट्ठे हो जाएँ तथा दो लानतें☆ बल्कि तीन लानतों का स्वाद चखे और ख़ुदा उस पर तीन लानतें हरगिज़ जमा नहीं करेगा जैसा कि तुम अनुमान करते हो तथा एक मसीह तो तुम्हीं में से तुम्हारे पास आ चुका और

★حاشية :- قد ثبت من مفهوم قوله تعالىٰ غير المغضوب عليهم ان المسيح الموعود قد قدّر له ان يلعنه الذين يقولون انا نحن المسلمون الذين غضب الله عليهم كما غضب على اليهود و هم لا يعلمون فان فرضنا ان المسيح الموعود هو المسيح الذى أُنزل عليه الانجيل فعند ذالك تجتمع عليه لعنات ثلٰث۔ لعنة من اليهود و لعنة من النصارىٰ و لعنة من المسلمين الذين يكفرونه عند نزوله و يُكذّبون۔ فكانّ السرّ فى انزال عيسٰى هو تكميل امر اللعن وادخال المسلمين فى الذين يلعنون۔منه

☆ **हाशिया :-** ख़ुदा तआला के इस कथन के मायने से सिद्ध हुआ कि मसीह मौऊद के लिए यह निश्चित था कि उस पर वे लोग लानत करेंगे जो अज्ञानतावश यह कहते हैं कि हम वे मुसलमान हैं जिन पर ख़ुदा तआला का प्रकोप हुआ जैसा कि यहूदियों पर हुआ था। अत: यदि हम यह मान लें कि मसीह मौऊद वही मसीह है जिस पर इंजील उतरी तो ऐसी स्थिति में उस पर तीन लानतें जमा हो जाएँगी। यहूदियों की लानत, ईसाइयों की लानत और मुसलमानों की लानत जो मसीह के नुज़ूल के समय उसे काफ़िर कहेंगे और झूठलायेंगे। मानो कि ईसा अलैहिस्सलाम के उतरने में रहस्य यह था कि लानत की पूर्णता और मुसलमानों का उनमें सम्मिलित करना है जो लानत करते हैं। (इसी से।)

المسيح الموعود إن كنتم تتفكّرون۔ سيقولون إنا لا نحضُره إلّا تذلّلا وطاعةً فكيف نكفّره ونؤذيه وإنّا به مؤمنون۔ قُلْ هذا قدرٌ من الله كُتِبَ على حزبٍ منكم فى الفاتحة، وإنّ قدر الله لا يبدَّل أيها الجاهلون۔ ألا تقرءون الفاتحة وقد كنتم تصرّون عليها أيها المحدِّثون؟ اليوم عادا كم الفاتحة وأنتم عاديتموها وصار التزامها عذاب أنفسكم كأنها جرعةٌ غير سائغ تبلَعونها ولا تستطيعون۔ ولا تتلون بعد ذالك هذه السورة إلا وأنتم تتألّمون ولا تتلون۔ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ إلّا وتغضبون على أنفسكم وتتندّمون۔ وترونها عذابا شديدا فى كل حين تقرءون۔ فحينئذ تحترق قلوبكم بلظَى الحسرة وربما تودّون لو كنتم تتركون۔

तुम ने उस पर भविष्यवाणी पूरी कर दी जो सूरह फ़ातिहा में थी। अत: वही मसीह मौऊद है जिस पर वह भविष्यवाणी पूरी हो गई, कहेंगे कि हम पूर्ण विनीतता एवं विनम्रतापूर्वक उसके पास उपस्थित होंगे। फिर क्योंकर हो सकता है कि हम उसे काफ़िर कहें और कष्ट दें जबकि हम उस पर ईमान लायें। कह दे कि यह ख़ुदा का प्रारब्ध है जो तुम में से एक गिरोह के बारे में सूरह फ़ातिहा में लिखा गया है और ख़ुदा का प्रारब्ध कभी नहीं बदलता हे हदीस का अनुकरण करने वालो! क्या अब सूरह फ़ातिहा को नहीं पढ़ते और तुम तो उस पर बहुत आग्रह किया करते थे। आज फ़ातिहा तुम से दुश्मनी करती है और तुम उस से करते हो और उसको अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना तुम्हारी जान पर कठोर अज़ाब हो गया है जैसे कि वह एक अप्रिय घूँट हो जिसे निगलना चाहते हो परन्तु निगल नहीं सकते तथा आशा है कि अब इसके बाद तुम उस सूरह को पीड़ा और कष्ट के बिना न पढ़ोगे और जब غَيْرِ الْمَغْضُوبِ का शब्द पढ़ोगे तो तुमको अपने ऊपर बहुत क्रोध आएगा और पछताओगे तथा जिस समय उसे पढ़ोगे तुम्हारे प्राण उस से कठोर अज़ाब महसूस करेंगे उस समय तुम्हारे दिल पाश्चाताप की आग से भुन रहे होंगे और बहुत चाहोगे कि काश कि हम सूरह फ़ातिहा का पढ़ना छोड़ देते।

اَلْبَاب الرَّابِعُ

إن الذين يزعمون أن عيسى صعد إلى السماء ليس عندهم سلطان وإنّ هم إلّا يكذبون۔ أكتَبه الله فى القرآن فيتّبعونه، أو قاله الرسول فيقولونه كلّا بل هم يفترَون۔ ولن تجد آية فى هذا الباب، ولا حديثا من نبيّنا المستطاب، ولا يقبَله العقل السليم أيها العاقلون۔ وقالوا إن المسيح رُفع إلى السماء الثانية وصُلب مقامَه رجل آخر، فانظر إلى كذبٍ ينحِتون۔ أكانوا حاضرين عند هذه الواقعة لنا إن كانوا يصدُقون۔ كلّا بل إنهم يفترون أو وجدوها فى الكتاب والسنّة، فليُخرجوها على الله ورسوله ولا يتّقون۔ ولا يفكّرون فى أنفسهم أن العقل

चतुर्थ अध्याय

जिन का यह गुमान है कि ईसा अलैहिस्सलाम आकाश पर गए उनके हाथ में कोई प्रमाण नहीं बल्कि वे झूठ बोलते हैं। क्या यह बात ख़ुदा ने क़ुर्आन में लिख दी है इसलिए उसका अनुकरण करते हो या यह बात रसूल ने कही है इसलिए वे भी कहते हैं, हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि वे स्वयं बात बनाते हैं। इस बारे में कोई आयत और हदीस नहीं पाई जाती और इस बात को न सद्‌बुद्धि स्वीकार करती है। और कहते हैं कि मसीह दूसरे आसमान पर उठा लिया गया और उसके स्थान पर एक दूसरा व्यक्ति सूली दिया गया। इस झूठ को देखो जो उन्होंने बनाया है। क्या वे इस घटना के घटित होने के समय उपस्थित थे या उसको क़ुर्आन और हदीस में देखा है? चाहिए कि वह स्थान हमें भी दिखाएँ यदि सच कहते हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं अपितु ख़ुदा और उसके रसूल पर झूठ बाँधते हैं तथा नहीं डरते और अपने दिल में नहीं सोचते। बुद्धि इस किस्से की विरोधी है और बुद्धिमान उसका हरगिज़ सत्यापन

يخالف هذه القصّة ولا يصدّقها المتفرّسون۔ فإنّ الذی صُلب فی مصلب عیسٰی إنْ کان من المؤمنین فکیف صلَبه الله و قد قال فی التوراة إنه مَن صُلب فهو ملعون۔ أَلَعَنَ عبدًا و یعلم أنه مؤمن، سبحانه و تعالٰی عمّا یصفون۔ و قد لعن الله فی التوراة کلَّ مَن صُلب فاسأل أهل التوراة إن کنت من الذین لا یعلمون۔ و إن کان المصلوب من أعداء عیسٰی و من الکفار فکیف سکت المصلوب عند صلبه و ما برّأ نفسه، و کیف بقی أمره کالمکنون؟ و کان المصلوبون لا یموتون إلا إلٰی ثلاثة أیام أو یزیدون۔ فکانت المهلة کافیة، فاسأل الذین یصلبون عدوًّا من أعداء عیسٰی کیف سکت المصلوب إلٰی هذا الإمد أیقبله العاقلون؟ ألم یبق له شهداء مِن أُمّه و زوجه و إخوانه و جیرانه و أحبابه و أصحابه و من الذین کان أودعَهم أسرارَه و کانوا

नहीं करते क्योंकि वह सलीब पर मारा गया व्यक्ति जो ईसा के स्थान पर सूली दिया गया यदि वह मोमिन था तो ख़ुदा ने उसे किस प्रकार छोड़ दिया कि वह सूली दिया जाए। हालाँकि तौरात में ख़ुदा ने फ़रमाया है कि जो सूली देकर मार दिया जाए वह लानती है। क्या ख़ुदा ने ऐसे व्यक्ति को लानती किया जिस के बारे में जानता था कि वह मोमिन है उसका अस्तित्व इन बातों से पवित्र है जिसे वे उस की ओर सम्बद्ध करते हैं। और ख़ुदा तौरात में प्रत्येक सलीब पर मरने वाले को लानती ठहराता है यदि तुम नहीं जानते तो तौरात वालों से पूछो। और यदि वह सलीब पर मारा गया व्यक्ति ईसा के दुश्मनों में से था और काफ़िर था तो सलीब के समय क्यों चुप रहा तथा अपने आप को बरी सिद्ध क्यों न किया और उस की बात क्यों गुप्त रही? सलीब दिए जाने वाला सलीब पर तीन दिन तक बल्कि तीन दिन से अधिक तक जीवित रह सकता था। अत: इतनी मोहलत इस जांच-पड़ताल के लिए पर्याप्त थी। अब उन लोगों से जिन्होंने ईसा के एक शत्रु को फाँसी दी पूछो कि वह सलीब दिया जाने वाला इतने दिनों तक क्योंकर

يعرفونه ۔ هيهات هيهات لما تزعمون۔ وشتّان بين الحق وبين هذه المفتريات، أمَا بقى عندكم مثقال ذرّة من عقل به تعقلون؟ بل هذه القصص خرافات لا أصل لها، ولا تقبلها الفطرة الصحيحة، ولا توجد إليها الإشارة الجليّة أو الخفيّة فى كتاب الله ولا فى أثر رسوله، فالذين يتّبعونها لا يتّبعون إلا سَمُرًا وإنْ هم إلا يعمهون۔ وأما نزول عيسٰى فاعلم أن لفظ النزول عربٌ يُستعمل فى محل الإكرام والإجلال، وتعلمون معنى النزيل أيها المتفقّهون وما رأينا فى كتب الحديث خبرًا من رسول اللّٰهؐ مرفوعًا متّصلا يُفهَم منه أن عيسٰى ينزل من السماء، وما وجدنا لفظ السماء فى أحد من الاحاديث

चुप रहा क्या बुद्धिमान इसे स्वीकार करते हैं? क्या इसके लिए उसकी माँ और पत्नी तथा भाई और पडोसी एवं दोस्त गवाह न बने? और क्या उन्होंने भी गवाही न दी जो उसके राज़दार और उसके पहचानने वाले थे? इस गुमान पर जो तुम करते हो अफ़सोस है। सच्चाई में और इन झूठों में बड़ा अन्तर है। क्या तुम्हारे अन्दर थोड़ी सी बुद्धि शेष नहीं रही कि जिस से बात की तह तक पहुँच जाओ यह सब बेकार किस्से हैं उन की कुछ वास्तविकता नहीं और सही स्वभाव इसे स्वीकार नहीं करता तथा उनके बारे में और क़ुर्आन करीम में कोई गुप्त और स्पष्ट संकेत तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में नहीं पाया जाता। अत: जो लोग उन का अनुसरण करते है वे वास्तव में झूठ का अनुसरण करते हैं और भटकते फिरते हैं, लेकिन जहां तक ईसा के उतरने का सम्बन्ध है तो तू जान ले कि नुज़ूल का शब्द अरबी शब्द है जो किसी के सम्मान और आदर के लिए प्रयोग किया जाता है और नज़ील के अर्थ विद्वान जानते हैं और हम ने हदीस की पुस्तकों में ऐसी कोई मर्फ़ू मुत्तसिल हदीस नहीं देखी जिस से यह प्रकट हो कि ईसा आकाश से उतरेगा और न हमने 'समा' (आकाश) का शब्द किसी हदीस सही सदृढ़ में पाया और यह बात हदीस के विद्वान भली भांति

الصحيحة القوية، وهذا أمر بديهيٌّ يعلمه المحدِّثون، ولا ينكره إلا الذى جهل أو تجاهل، ولا ينكره إلا العمون۔ ومع ذالكإنّه أمرٌ خالفَ القرآنَ وعارضه، فبأىّ حديث بعد القرآن تؤمنون؟ وقد قال الله سبحانه مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ ★ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ فصرّح بأن الانبياء الذين كانوا من قبل ماتوا كلهم والمرسلون۔ وهذه آية تلاها أبو بكر الصديق رضى الله عنه۔ إذ كان الاصحاب يختلفون۔ أعنى إذا اختلف بعض النّاس من الصحابة فى موت رسول الله صلى الله عليه و سلم، وقال عمر

जानते हैं और इस बात का इन्कार उसके अतिरिक्त कोई नहीं करता जो मूर्ख हो या स्वयं को मूर्ख प्रकट करे या जो अन्धा हो तथा इसके अतिरिक्त यह बात क़ुर्आन के विरुद्ध तथा उसके विपरीत है। अत: क़ुर्आन के अतिरिक्त कौन सी हदीस है जिस पर ईमान लाते हो। और ख़ुदा फरमाता है कि

مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान - 145)

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रसूल हैं और उन से पहले रसूल गुज़र चुके ☆ हैं। यह आयत बताती है कि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं। इसी आयत को हज़रत अबू बकर सिद्दीक ने समस्त सहाबा को सुनाया। जब उन्होंने मतभेद किया अर्थात् जब कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु में मतभेद किया और हज़रत उमर ने कहा कि आंहज़रत

★حاشية :- قد جرت سُنّة اهل اللسان فى لفظ خلا۔ انهم اذا قالوا مثلاخلا زيد من هٰذه الدار او من هٰذه الدنيا فيريدون من هٰذا القول انه لا يرجع اليها ابدا۔ وما اختار الله هذا اللفظ الا اشارة الى هذه المحاورة كما لا يخفٰى۔ منه

☆**हाशिया :-** अरब लोगों का 'ख़ला' शब्द के बारे में यह नियम प्रचलित है कि उदाहरणतया जब वे यह कहें कि ज़ैद इस घर या इस दुनिया से गुज़र गया तो इस कथन से उन का अभिप्राय यही होता है कि वह इस दुनिया की ओर कभी भी नहीं लौटेगा और यह बात स्पस्ट है कि ख़ुदा तआला ने भी इस शब्द को इसी मुहावरा की ओर संकेत करने के लिए ग्रहण किया है। (इसी से।)

إنه سيرجع كما يرجع عيسٰى، و كذالك قال بعضهم الذين كانوا يخطئون۔ فسمع أبو بكر كلامهم وما كانوا يزعمون، فقام على المنبر واجتمع الصحابة حوله وتلا الآية المذكورة وقال اسمعونِ۔ و كانوا مجتمعين كلهم لموت رسول الله صلى الله عليه و سلم فسمعوا وتأثّروا بأثر عجيب كأن الآية نزلت فى ذالك اليوم و كانوا يبكون و يصدّقون۔ وما بقى أحد منهم فى ذالك اليوم إلا أنه آمن بصميم القلب أن الانبياء كلهم قد ماتوا وقد أدركهم المنون۔ فما بقى لهم أسف علىٰ موت رسولهم ولا محلّ غبطة لحبيبهم، وتنبّهوا على موته، وفاضت عيونهم وقالوا إنا لله و إنا إليه راجعون۔ و كانوا يتلون هذه الآية فى السكك والاسواق والبيوت ويبكون۔ وقال حسّان بن

उसी प्रकार वापस आएंगे जैसा कि ईसा वापस आएगा और इसी प्रकार कुछ अन्य ग़लती करने वालों ने कहा तो उस समय हज़रत अबू बकर ने उनकी बात सुनी और उनके विचार से परिचित हुए। तब मिम्बर पर खड़े हुए और सहाबा उन के चारों ओर एकत्र हो गए फिर कथित आयत पढ़ी और फ़रमाया – सुनो! और सब लोग रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु पर इकट्ठे थे जब (उन्होंने) यह आयत सुनी तो अपने दिलों में अद्भुत प्रभाव पाया और समझे कि जैसे यह आयत आज ही उतरी है। उसको सुन कर उन्होंने रोना आरम्भ किया और सत्यापन किया। उस दिन ऐसा कोई व्यक्ति न रहा जो उस पर ईमान न लाया हो कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं अब उनको अपने रसूल की मौत पर कोई शोक-संताप और अपने प्यारे के लिए कोई पछताने और अफ़सोस करने का स्थान न रहा और उसकी मौत पर सावधान और अवगत हो गए तथा आंसुओं के दरिया आँखों से बहाए और इन्ना लिल्लाह कहा तथा इस आयत को गली-कूचों और घरों में पढ़ते थे तथा रोते थे। अत: हस्सान बिन साबित ने हज़रत अबू बकर के ख़ुत्बे के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ثابت وهو يرثى لرسول الله صلى الله عليه وسلم بعد خطبة أبي بكر كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِي فَعَمِي عَلَيْكَ النَّاظِرُ مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيَمُتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أُحَاذِرُ فلا أبالي أن يموت موسٰى أو عيسٰى فانظروا إليهم كيف أحبّوا نبيّهم و كيف كان تصدر منهم آداب المحبّة و آثارها أيها المجادلون۔ يريد أن خوفي كله كان عليك، وانظروا كيف اقتضتْ غيرتهم أنهم ما رضوا فإذا متَّ بحياة نبي بعد موت رسول الله، فهُدُوا إلى الصراط كما يُهدَى العاشقون۔ واجتمعت قلوبهم على مفهوم آية قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وآمنوا به و كانوا به يستبشرون۔ ثم أتيتم ما تقولون۔ أتأمركم محبّتكم بنبيّكم أن يّبقٰى بعدهم۔ ما قدّرتم نبيّكم حقّ قدره وتقولون عيسٰى على السماء حيًّا

के शोक-गीत में-कहा तू मेरी आंख की पुतली था अब तेरे चले जाने से मैं अँधा हो गया। तेरे मरने के बाद जो चाहे मरे मुझे तो तेरे ही मरने का डर था अर्थात् मुझे तो समस्त डर यही था कि कहीं तू न मर जाए परन्तु अब जबकि तू ही मर गया तो अब मुझे कुछ परवाह नहीं कि मूसा मरे या ईसा मरे। अत: विचार करो कि वे अपने नबी को कितना प्यार करते थे और किस प्रकार प्रेम के नियम और निशान उन से प्रकट होते थे। और यह भी विचार करो कि उनके स्वाभिमान ने हरगिज़ न चाहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात् किसी नबी के जीवित रहने पर राज़ी हो जाएँ। अत: ख़ुदा ने उनको इस प्रकार से सच्चाई का मार्ग-दर्शन किया जिस प्रकार प्रेमियों का मार्ग-दर्शन करता है और उन के दिलों ने قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُل की आयत के अर्थ पर सहमति की। और उस पर ईमान लाए तथा उस पर प्रसन्न हुए। फिर सहाबा के बाद तुम्हारी बारी आई। तुम ने अपने नबी को वह महत्ता नहीं दी जो कि महत्ता देनी चाहिए थी और ऐसी बातें करते हो। क्या तुम्हारा प्रेम वैध रखता है कि ईसा आकाश पर जीवित हो और हमारे नबी चौदह सौ

وقد مضٰى ألفٌ وقريب مِن ثُلُثه على موت رسول الله؟ ساء ما تحكمون۔ أرَضِيتم بأن يكون نبيكم مدفونًا فى التراب فى المدينة، وأمّا عيسٰى فهو حيّ إلٰى هذا الوقت؟ اتقوا الله أيها المجترءون۔ قد كان إجماع الصحابة على موت عيسٰى أوّلَ إجماع انعقد فى الإسلام باتفاق جميعهم، وما كان فرد خارجًا منه كما أنتم تعلمون۔ وهذا منّة من الصدّيق رضى الله عنه على رقاب المسلمين كلهم أنه أثبتَ بنصّ القرآن موتَ الانبياء كلهم وموتَ عيسٰى، فهل أنتم شاكرون؟ ثم خلَف مِن بعدهم خلفٌ يتركون القرآن ويخالفون الرحمٰن وعلى الله يفترون۔ وقد علموا أن القرآن تَوفَّى المسيح، وكرّر البيان الصريح، ومنعه من الصعود إلى السماء، وبشَّر ينتظرون؟ وقالوا ما نرى ضرورة

वर्ष से मृत्यु प्राप्त हों? क्या तुम इस बात पर प्रसन्न हो कि तुम्हारे नबी मदीना में धरती के नीचे दफ़्न किए हुए हों किन्तु ईसा इस समय तक जीवित हो? हे उद्दण्डो! ख़ुदा से डरो। यह पहला इज्मा था जो समस्त सहाबा की सहमति से इस्लाम में आयोजित हुआ और कोई व्यक्ति भी इस इज्मा (सर्व सहमति) से बाहर न रहा और यह हज़रत सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो का सम्पूर्ण मुसलमानों की गर्दन पर उपकार है कि उन्होंने समस्त नबियों की मौत को और ईसा की मौत को क़ुर्आन से सिद्ध किया। क्या तुम कृतज्ञ हो? फिर उन के स्थान पर वे लोग बैठे जो क़ुर्आन को छोड़ते हैं और रहमान (कृपालु) के विरुद्ध करते हैं और ख़ुदा पर झूठ बांधते हैं तथा भली-भांति जानते हैं कि क़ुर्आन मसीह को मृत्यु देता है और उसे दोबारा स्पष्ट तौर पर वर्णन करता है और आकाश पर चढ़ने से उसे रोकता है और मुसलमानों को ख़ुशख़बरी देता है कि ख़ातमुल खुलफ़ा और इस उम्मत का मसीह इसी उम्मत में से होगा। अब इसके बाद कौन से मसीह की प्रतीक्षा करते हो और कहते हैं कि हम को मसीह की आवश्यकता नहीं और क़ुर्आन हमारे लिए पर्याप्त है। ये जान बूझ कर ख़ुदा की किताब को

مسیح و کفانا القرآن، وقد کذّبوا کتاب اللّٰہ وھم یعلمون۔ ولو کانوا یتّبعون القرآن لما کذّبونی، لان القرآن یشھد لی ولکنھم کذّبوا، فثبت أنھم یتصلّفون وبالقرآن لا یؤمنون ۔ وتکذِب ألسنھم، ولیس فی قلوبھم إلا الدنیا، وإلیھا یتمایلون۔ ویرون أن المُلک قد زُلزل و حلَّ السّامُ وھدَّر الحِمامُ ثم لا یرجعون۔ أفلم ینظروا إلی مفاسد الارض فتکون لھم قلوب یعقلون بھا، ولکنھم قوم یستکبرون۔ أیکفرون بآدم ھذا الزمان وقد خُلق علی الارض مِن کل نوع دابۃ أفلا ینظرون؟ وتراءی بعض الناس کالکلاب، وبعضھم کالذئاب، وبعضھم کالخنازیر، وبعضھم کالحمیر، وبعضھم کالافاعی یلدغون۔ وما مِن حیوان إلا وظھر کمثلہ حزبٌ من النّاس وھم حقَّ فَتْقھا، ألم یأنِ أن

झुठला रहे हैं और यदि क़ुर्आन का अनुकरण करते तो मुझे न झुठलाते क्योंकि क़ुर्आन मेरी गवाही देता है। परन्तु वे झुठलाते हैं यहाँ से सिद्ध हुआ कि वे व्यर्थ डींगे मारते हैं और क़ुर्आन पर उन का ईमान नहीं और उनकी जीभ झूठ बोलती है तथा उनके दिल में संसार के प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं और उसकी ओर झुके हुए हैं तथा देखते हैं कि देश में भूकम्प आ गया है और सार्वजनिक मौत पड़ रही है तथा मौत कबूतर की तरह आवाज़ें कर रही हैं फिर लौटते नहीं। काश! पृथ्वी के उपद्रवों को देखते तब उनकी आंखें खुलतीं और बुद्धि आती परन्तु यह एक घमंडी क़ौम है क्या इस युग के आदम का कुफ़्र करते हैं हालाँकि पृथ्वी की पीठ पर हर एक प्रकार का कीट पैदा हो गया है क्या नहीं देखते? बहुत लोग कुत्तों की तरह हो गए हैं और कुछ भेड़ियों की तरह, कुछ सूअरों की तरह और कुछ गधों की तरह तथा कुछ साँपों की तरह डंक मारते हैं और ऐसा कोई जानवर नहीं जो लोगों में से एक गिरोह उस जैसा न हो गया हो और कार्यों में उसके समान न हो तथा ऐसा ही पृथ्वी भी ऐसी फटी जैसा कि फटनी चाहिए थी। क्या अब तक समय नहीं आया कि उन प्राणियों के बाद

يخلق الله آدم بعدها كمثلها يعملون۔ و كذالك فتَقَتِ الارض وينفخ فيه روحه، ولا تبديلَ لسُنّة الله أيها العاقلون۔ وإذا قيل لهم سارِعوا إلى خليفة الله، واتّبعوا ما كشف الله عليه، لعلكم تُرحمون، رأيتَهم تحمرّ أعيُنهم من الغيظ، وقالوا ما كان لنا أن نتّبع جاهلا ونحن أعلم منه، فعليه أن يبايعنا، أنُبايع الذى لا يعلم شيئا وإنّا لعالمون۔ فليصبروا حتى يرجعوا إلى ربهم ويطّلعوا على صورهم، وذَرُهم وما يكيدون۔ وقد وسَم الله على خراطيمهم، وأظهر حقيقة علومهم، ثم لا يتندّمون۔ وإذا دُعوا إلى الحق تعرف فى وجوههم المنكَر، ويمرّون علينا وهم يسبّون۔

أولئك الذين طبع الله على قلوبهم، وأعمى أبصارهم،

आदम को पैदा करे। और अपनी रूह उसमें फूंके। हे बुद्धिमानो! भली भांति जान लो कि अल्लाह की सुन्नत हरगिज़ नहीं बदलती और जिस समय उनसे कहा जाए कि बहुत शीघ्र ख़ुदा के ख़लीफ़ा की सेवा में उपस्थित हो जाओ और उसके इल्हामों का अनुकरण करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाए। उन की आँखें क्रोध से लाल हो जाती है। और कहते हैं कि हमें क्या हुआ कि हम एक मूर्ख का अनुकरण करें हालाँकि हम उससे अधिक विद्वान हैं बल्कि उन्हें हमारी बैअत करनी चाहिए। क्या हम ऐसे व्यक्ति की बैअत करें कि उसे ज्ञान से कुछ हिस्सा नहीं और हम विद्वान हैं। अत: सब्र करना चाहिए यहाँ तक कि अपने प्रतिपालक के पास जाएँ और अपनी सूरतों से परिचित हों। और उनको तथा उनकी दुर्भावनाओं को जाने दे। और प्रकट हो गया है कि ख़ुदा ने उन की नाकों पर दाग़ दिया है और उनके ज्ञान की वास्तविकता को सब में फैला दिया है तथा इस सब के बावजूद शर्मिन्दा एवं लज्जित नहीं होते। और जिस समय उनको सच्चाई की ओर बुलाया जाए त्यौरी चढ़ाते हैं और गलियां देते हुए गुज़र जाते हैं।

ये सब लोग हैं जिनके दिलों पर ख़ुदा ने मुहर लगाई और उनकी आँखों

وطمس وجوههم، فهم لا يؤانسون۔ وإنهم ينتظرون المسيح من السماء، ويفرحون بكلمات مدسوسة أُدخلت فى الإسلام بسبب النصارى عندما كانوا يُسلِمون۔ و كيف ينزل الذى أُنزلَ عليه الإنجيل وقد قال القرآن۔مِنْكُمْ ★، فهل يُهلَك إلا الكاذبون۔ أ نُزِّلَ عليهم قرآن آخر، أو شابهوا اليهودَ فحرّفوا كما كانوا يحرّفون؟ وإن القرآن قد تَوفَّى المسيح، والمسيحُ أقرّ به فى القرآن، ألا يتدبّرون قوله فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنى، أم على القلوب أقفالها أم هم عمون؟ وإن القرآن أشار فى أعداد سورة العصر إلى وقتٍ مضٰى من آدم إلىٰ نبينا بحساب القمر، فعُدّوا إن كنتم تشكّون ۔ وإذا تقرّرَ هذا فاعلموا أنّى خُلقتُ فى الألف

को अँधा किया और उनके मुंहों को औंधा कर दिया। वे प्रेम को नहीं अपनाते और वे आकाश से एक मसीह के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा उन बातों पर प्रसन्न होते हैं और गर्व करते हैं जो बातें ईसाइयों ने इस्लाम लाने के बाद इस्लाम में सम्मिलित कीं। और कैसे संभव है कि वह मसीह आए जिस पर इन्जील उतरी थी हालाँकि क़ुर्आन 'मिनकुम' कहता है★ अत: झूठा ही तबाह होता है। क्या उन पर दूसरा क़ुर्आन उतरा है या यहूदियों के समान हो कर अक्षरांतरण (अक्षरों में परिवर्तन करना) का पेशा अपनाया है तथा सिद्ध है कि क़ुर्आन मसीह को मृत्यु देता है तथा मसीह क़ुर्आन में अपनी मृत्यु का इक़रार करता है क्या उसके कथन فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنى पर कुछ विचार नहीं करते। उन के दिलों पर ताले लग गए हैं या अन्धे हैं और क़ुर्आन सूरह अस्र की संख्या में चन्द्रमा के अनुसार उस समय

★**हाशिया :-** मैंने सुना है कि कुछ मूर्ख कहते हैं कि महदी बनी फ़ातिमा में से होगा, यह व्यक्ति कैसे कहता है कि मैं महदी मा'हूद हूँ जबकि वह बनी फ़ातिमा में से नहीं है। इसका उत्तर यह है कि वंश और नस्ल की वास्तविकता ख़ुदा जानता है, इसके बावजूद मैं ही महदी और मसीह मौऊद हूँ जिसकी प्रतीक्षा थी। यह कहीं नहीं आया कि वह बनी फ़ातिमा में से होगा। इसलिए ख़ुदा और क़यामत से डरो। (इसी से।)

السادس فی آخر أوقاته کما خُلق آدم فی الیوم السادس فی آخر ساعاته، فلیس لمسیحٍ مِن دونی موضعُ قدم بعد زمانی إن کنتم تفکّرون ولا تظلمون۔ فأنا صاحب الزمان لا زمان بعدی، فبأی زمان تُنزِلون مسیحکم المفروض أیها الکاذبون؟ و قد اتّفق علی هذه العِدّة التوراةُ والإنجیل والقرآن، فاسألوا أهل الکتاب إن کنتم ترتابون۔ وقد مضٰی آخر الالف السادس، وما بقی وقتُ نزول المسیح بعده، وإن فی هذا لآیة لقوم یطلبون ۔ و کان هذا مِن معالم الموعود فی القرآن و یعلمها المتدبّرون ۔ وإن الالف السادس کالیوم السادس الذی خُلق فیه آدم، وإنّ یومًا عند ربك کألف سنةٍ ممّا تعُدّون۔

की ओर संकेत करता है जो आदम से हमारे नबी तक गुज़रा है। फिर यदि संकेत है तो गिन लो और यह निश्चित हो गया है तो जान लो कि मैं छठे हज़ार के अन्तिम समय में पैदा किया गया हूँ जैसा कि आदम छठे दिन में उसकी अन्तिम घड़ी में पैदा किया गया। अत: मेरे अतिरिक्त दूसरे मसीह के लिए मेरे युग के बाद क़दम रखने का स्थान नहीं यदि विचार करो और अन्याय को न अपनाओ। अत: मैं समय पर आने वाला मौऊद हूँ और मेरे बाद कोई युग नहीं। और हे झूठो! वह कौन सा युग होगा जिसमें तुम अपने काल्पनिक और अवास्तविक मसीह को उतारोगे और उस युग पर तौरात, इन्जील तथा क़ुर्आन सब सहमत हैं। यदि सन्देह है तो अहले किताब से पूछ लो निस्सन्देह छठे हज़ार का अन्त गुज़र गया और इसके बाद मसीह के उतरने के लिए कोई समय और अवसर न रहा, यद्यपि इसमें अभिलाषियों के लिए एक निशान है। और यह बात क़ुर्आन में उस मौऊद की निशानियों में से थी और उसको विचार करने वाले जानते हैं तथा यद्यपि छठा हज़ार उस छठे दिन की भांति है जिस में आदम पैदा किया गया था जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है कि एक दिन तेरे प्रतिपालक के नज़दीक हज़ार वर्ष के समान है तुम्हारे हिसाब से।

اَلْبَابُ الخامِس

يـا أهـل الدهـاء والاتّقـاء مـن الناظريـن ۔ اعلمـوا أن زماننـا هـذا هـو آخـر الزمان★ وأنـا مـن الآخِريـن۔ وإن يومنـا هـذا يـوم الجمعـة حقيقـةً، وقـد جُمعـت فيـه أنـاسُ ديـارٍ وأرضـين، وجُمعـتْ كل مـا تحتـاج إليـه نفـوس النـاس مـن سـعادة الدنيـا والديـن ومـن أنـواع العلـوم والمعـارف وأسـرار الشـرع المتـين، وزُوّجـت النفـوس، فـترى كلَّ بابـورة تـأتى عنـد إصباحهـا وإمسـائها بأفواج

पंचम अध्याय

हे ख़ुदा से डरने वाले बुद्धिमान पाठको! अवगत रहो कि यह युग वही अन्तिम युग है★ और मैं बाद में आने वालों (आख़िरीन) में से हूँ। और हमारा यह दिन वास्तव में जुमे (शुक्रवार) का दिन है क्योंकि इसमें हर देश और हर पृथ्वी के लोग एकत्र किए गए हैं तथा इस दिन में संसार और धर्म के सौभाग्य में प्रत्येक चीज़ एकत्र की गई है जिसकी लोगों को आवश्यकता होती है और हर प्रकार की विद्याएँ, अध्यात्मज्ञान और ठोस तर्क वाली शरीअत के रहस्य एकत्र हो गए हैं और आपस में लोगों के संबंध बढ़ गए हैं जैसा कि देखते हो

★لا يقـال ان سـاعة القيامـة مخفيـةٌ فـلا يجـوز ان يقـال لزمـان انـه هو اٰخـر الازمنة فانـا لا نعـيّن السـاعة بـل نقـول انهـا غير معـين فى هٰـذه السـاعات المعينة۔ولا شـك انّ القـران شـبّه الـوف الدنيـا بايـام الخلقـة فيسـتنبط مـن هـذا كل مـا قلنـا كمـا لا يخفـى عـلى ذوى الفطنة۔منه

अनुवाद- यह नहीं कहा जा सकता कि क़यामत की घड़ी छुपी हुई है और न ही यह वैध है कि किसी ज़माने को कहा जाए कि वह अंतिम ज़माना है। अत: हम क़यामत का निर्धारण नहीं करते अपितु हम यह कहते हैं कि वह उन निर्धारित घड़ियों में अनिर्धारित है। और निसंदेह पवित्र कुरान ने संसार के हज़ारों वर्षों की सृष्टि निर्माण के दिनों से समानता वर्णन की है। अत: हमारा हर कथन इसी से उद्धृत होता है जैसा कि बुद्धिमानों पर स्पष्ट है।

من المشرّقين والمغرّبين، وجُمعتْ بها ثمار المشرق والمغرب بإذن الله أرحم الراحمين، وفى آخر الامر يجمع الله فيه شَمْلَ ديننا رحمةً على هذه الامّة وعلى العالمين، ويُنجّى الخَلق من شفا حُفرة كانوا عليها۔ وعدٌ من الله وهو أصدق الصادقين، ويظهر الإسلام على الاديان كلها، وترى جمعًا من كل قوم يدخلون فيه توّابين ۔ فلا شكّ أن زمننا هذا جُمعةٌ، تشهد الارض والسماء عليه، وقد جُمع فيه كل ما تفرّقَ فى الاوّلين ۔ وإنى خُلقتُ فى هذه الجمعة فى ساعة العَصر والعُسر للإسلام والمسلمين، كما خُلق آدم صفىُّ الله فى آخر ساعة الجمعة ۔ وإن

कि प्रत्येक रेलगाड़ी सुबह-शाम पूरब और पश्चिम से समूह के समूह लोग लाती है तथा इसके कारण पूरब और पश्चिम के मेवे ख़ुदा की आज्ञा से एकत्र हो गए हैं। और आशा है कि अन्ततः दयालु ख़ुदा हमारे धर्म की उथल-पुथल को दूर कर देगा और सृष्टि को उस गढ़े के किनारे से हटा लेगा जिसके किनारे पर वे खड़े हैं। यह ख़ुदा का वादा है और वह समस्त सच बोलने वालों से अधिक सच बोलने वाला है। और इस्लाम समस्त धर्मों पर विजयी होगा। और प्रत्येक क़ौम के गिरोह तौबा और निष्कपट दिल के साथ उसमें सम्मिलित होंगे। अतः निस्सन्देह यह हमारा ज़माना जुम्अः है और आसमान तथा पृथ्वी इस पर गवाही देते हैं और इसमें हर एक चीज़ एकत्र हो गई है जो पहले लोगों में अस्त-व्यस्त थी। और मैं इस जुम्अः (शुक्रवार) में असर के समय तथा ऐसे समय में जबकि इस्लाम और मुसलमानों को तंगी ने घेर लिया था पैदा किया गया हूँ। जैसा कि आदम सफ़ीयुल्लाह जुम्अः के अन्तिम समय में पैदा किया गया और आदम का युग इस समय के लिए नमूने के तौर पर था तथा उसके अस्त्र का समय इस अस्त्र के लिए साए (प्रतिबिम्ब) के तौर पर था और इसमें इस्लाम का गला घोंटा गया तथा हमारे धर्म पर संकट आए और निकट है कि धर्म का सूर्य अस्त हो जाए और स्पष्ट है कि इन दिनों इस्लाम का प्रकाश

زمانہ کان نموذجا لھذا الحین، و کان وقت عصرہ ظلاً لھذا العصر الذی عُصِرَ الإسلام فیہ وصُبّتْ مصائب علی دیننا، و کادت أن تغرب شمس الدین ۔ وترون فی ھذہ الایام أن نور الإسلام قد عُصر من کثرۃ الظلام واللئام وصَولِ المخالفین بالاقلام والمکذّبین و کاد أن لا یبقٰی أثر منہ لو لم یتدارکہ فضلُ اللّٰہ الکریم المُعین ۔ فاقتضتْ غیرۃُ اللّٰہ أن یبعث فیہ مجدِّدًا یشابہ آدمَ، فخلَقنی فی ھٰذا الیوم فی وقت العصر أعنی ساعۃ العسر وعلّمنی من لدنہ وأکرمَ، وأدخلَنی فی عبادہ المکرمین، وجعلنی حَکَمًا للاقوام الذین یختلفون وھو أحکم الحاکمین۔

अंधकार की अधिकता और कमीन लोगों के बाहुल्य और शत्रुओं के आक्रमणों से जो क़लम (लेखनी) के साथ है और झुठलाने वालों के कारण कम हो गया है तथा निकट था कि उसका कुछ निशान भी शेष न रहता यदि कृपाल ख़ुदा का फ़ज़्ल (कृपा) उसका निवारण न करता। अत: इसी कारण जब ख़ुदा के स्वाभिमान (ग़ैरत) ने चाहा कि इसमें एक मुजद्दिद को पैदा करे जो आदम के समान हो। अत: उस दिन अस्त्र के समय अर्थात् तंगी के समय मुझे पैदा किया और मुझे अपने पास से सिखाया तथा सम्मान दिया और अपने महान लोगों के सिलसिलों में मुझे सम्मिलित किया और मुझे उनके लिए जो मतभेद करते हैं हकम बनाया और वह हाकिमों का सब से बड़ा हाकिम है और लोगों ने खुले तौर पर देख लिया है कि ख़ुदा तआला मेरी सहायता करता है और हर बात में मेरा समर्थन करता है तथा लोगों ने मुझे निकाल दिया, परन्तु उसने मुझे अपने पास जगह दी और वे मुझ पर टूट पड़े परन्तु उसने मुझे सुरक्षित रखा और मेरी जमाअत में वृद्धि की और मेरे सिलसिले को शक्ति दी। अत: कुधारणा और ख़ुदा के फ़ज़्ल ने जो मुझ पर था उनको आश्चर्य में डाला और कहा कि क्या ख़ुदा ऐसे व्यक्ति को ख़लीफ़ा बनाता है जो पृथ्वी में ख़राबियाँ करे और ख़ून करे तो ख़ुदा ने उनको मेरे माध्यम से उत्तर दिया कि मैं वह जानता हूँ जो तुम

ورأى القـومُ أن الله نصـرنى، وفى كل أمـرٍ أيّـدنى، وطـرَدوا فـآوانى، وصالـوا فحمـانى، وزاد جماعـتى وقـوَّى سلسـلتى، فألقاهـم فى التحيّر فضـلُ الله علىّ، وزاده سـوءُ ظَنّـهم، وقالـوا أيجعـل الله رجـلا خليفـة فى الارض وهـو يفسـد فيهـا ويسـفك الدمـاء، فأجابـهم الله بواسـطتى فقـال إنّى أعلـم مـا لا تعلمـون۔ وقالـوا قُتِـل فـلان مظلومـا، وأُريـدَ قتـلُ فـلان مـن المتنصّريـن، ونسـبوا القتـلَ إلىّ ليُدخِلـونى فى الذيـن يفسـدون فى الارض ويقتلـون النـاس ظلمًـا وفسـادًا، والله يعلـم أنى بـرىء منهـا، وإنّ كلماتـهم هـذه ليسـت إلا بهتـان علىّ، والله عليـم بالظالمـين، وهنـاك أوحى الله إلىّ حكايةً عـن قولهم ’’أتجعل فيها‘‘ إلى قـوله ’’إنى أعلـم مـا لا تعلمـون‘‘، عـبرةً للمجترئـين۔ ومـا جـرتْ هـذه الاقـوال عـلى ألسـنهم إلا ليُتمّـوا نبـأ الله الذى سـبق مـن قبـل

नहीं जानते और कहा कि अमुक पीड़ित मारा गया और अमुक ईसाई के क़त्ल का इरादा किया गया है तथा क़त्ल को मेरी ओर सम्बद्ध किया ताकि मुझे उन लोगों में सम्मिलित करे जो पृथ्वी में दंगा करते हैं तथा अत्याचार और दंगा-फ़साद से लोगों को मार डालते हैं। तथा ख़ुदा जानता है कि मैं उन से बरी हूँ और उनकी ये बातें जो मेरे बारे में हैं बिल्कुल झूठी और झूठा आरोप है। और ख़ुदा अत्याचारियों को भली भांति जानता है और इसीलिए ख़ुदा ने मेरी ओर उन्हीं के कथन की वह्यी की कि "क्या तू ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाता है इस आयत तक कि إنى أعلـم مـا لا تعلمـون (अलबक़र: - 31) और यह इसलिए कहा कि साहस करने वालों को सीख मिले। और ये बातें उन की जीभ से इसलिए निकलीं ताकि ख़ुदा तआला की इस ख़बर को पूरा करें जो पहले वर्णन हो चुकी और इसलिए कि मेरी समानता आदम से उपद्रव और रक्तपात के झूठे आरोप में सिद्ध करें। अत: ख़ुदा ने उनको अपनी वह्यी के द्वारा उत्तर दिया और यह वह्यी उस मुश्रिक (ख़ुदा का भागीदार बनाने वाला) के क़त्ल से पहले जिसके बारे में उनका विचार है कि मैंने उसे क़त्ल किया है और उस

وليُثبِتوا مضاهاتى بآدم فى تهمة الفساد وسفك الدماء، فأجابهم الله بوحيه وقد طُبع وأُشيعَ هذا الوحى قبلَ قتل المشرِك الذى يزعمون فيه كأنى قتلتُه وقبلَ موتِ نصرانيٍّ يزعمون فيه كَأنَّ أصحابى صالوا لقتله، فالحمد لِلّٰه الذى دافعَ عنى بكلمات قيلت فى آدم وهو خير المدافعين۔ هو الذى ردَّ بى شمسَ الإسلام بعدما دنت للغروب، فكأنّها طلعتْ من مغربها وتجلّت للطالبين۔ وإن مَثلى عند ربّى كمثل آدم، وما خُلقتُ إلا بعدما كثرتْ على الارض النَّعَمُ والسباع والدود والضباع وكثر كل نوع الدواب على ظهرها، وخالفَ بعضها بعضا، وما كان آدم ليملكهم ويكون حَكَمًا عليهم وفاتحا بينهم،

فجعلنى الله آدمَ وأعطانى كل ما أعطى لابى البشر، وجعلنى

ईसाई की मौत से पहले, जिसके बारे में उनका विचार है कि मेरे दोस्तों ने उसके क़त्ल के लिए उस पर आक्रमण किया, छपकर प्रकाशित हो चुकी थी। अत: प्रशंसा हो उस ख़ुदा की जिस ने मेरी ओर से इन बातों के साथ बचाव किया जो आदम के बारे में कही गई थीं और ख़ुदा सब प्रतिरक्षा करने वालों से उत्तम है वही ख़ुदा जिसने मेरे माध्यम से इस्लाम के सूर्य को जिस समय वह अस्त हो रहा था फिर लौटाया जैसे फिर अपने पश्चिम से उदय किया और अभिलाषियों के लिए झलक दिखलाई (आभा प्रकट की) और निस्सन्देह मेरे प्रतिपालक के नज़दीक मेरा उदाहरण आदम का उदाहरण है और मैं पैदा नहीं किया गया परन्तु इसके बाद की पृथ्वी पर चौपाए और दरिन्दे तथा चींटियाँ और बूढ़े भेड़िए बड़ी संख्या में फैल गए तथा हर प्रकार के अशिष्ट लोगों ने, जहाँ तक उन से हो सका एक-दूसरे के साथ लड़ाई-झगड़े की बुनियाद डाली और कोई आदम न था कि उन के अधिकार की लगाम को हाथ में लाये। और उन पर हक़म है तथा उन के झगड़ों में फैसले का मार्ग निकाले।

निस्सन्देह ख़ुदा ने मुझे आदम बनाया और मुझे वे सब चीज़ें दीं तथा मुझे

بُـروزًا لخاتـم النبيـين وسـيد المرسـلين۔ والسـرّ فيـه أن الله كان قضـى مـن الازل أن يخلُـق آدم الذى هـو خاتـم الخلفـاء فى آخـر الزمـان كمـا خلـق آدمَ الذى هـو خليفتـه الاول فى شـرخ بالفاتحـة، وليكـون هـذا التشـابه للتوحيـد الاوان، لتسـتدير دائـرة الفطـرة، ولِيُشـابهَ الخاتمـةُ كسـلطان مبـين، ولِيـدُلَّ المصنـوع عـلى صانعـه بـالدلالة الصوريّـة، فـإن الهيئـة المسـتديرة تُضاهـى الوحـدةَ، بـل تشـتمل عـلى معـنى الوحـدة، و لذالـك يوجـد اسـتدارةٌ فى كل مـا خُلـق مـن البسـائط، ولا يوجـد بسـيط خارجًـا مـن الكُرَويـة ذالـك ليعلـم النـاس أن الله هـو الاحـد الفـرد الذى صبّـغ كلّ مـا خلقـه بصبـغ الاحديـة، وليعرفـوا أنـه هـو ربّ العالمـين۔ وحاصـل الـكلام أن الله وتـرٌ يحـبّ الوتـر، فاقتضـتْ وَحْدتُـه أن يكـون

ख़ातमुन्नबिय्यीन और नबियों के सरदार का बुरूज़ बनाया और भेद इसमें यह है कि ख़ुदा ने आरंभ से इरादा किया था कि उस आदम को पैदा करेगा जो अन्तिम युग में ख़ातमुल ख़ुलफ़ा होगा जैसा कि युग के प्रारंभ में उस आदम को पैदा किया जो उसका प्रथम ख़लीफ़ा था और यह सब कुछ इसलिए किया ताकि प्रकृति का दायरा गोल हो जाए और इसलिए की यह समानता तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए एक स्पष्ट सबूत बन जाए और इसलिए की उत्पाद बाह्य मार्ग-दर्शन के साथ अपने रचयिता का पता दे क्योंकि गोल वस्तु की आकृति वहदत (एकत्व) के समान हो जाती है बल्कि वहदत के अर्थों पर आधारित होती है। इसीलिए अमिश्रित प्रकार के पदार्थों की पैदायश में गोलाई पाई जाती है। और कोई अमिश्रित पदार्थ गोलाई से बाहर नहीं है। और यह इसलिए है कि लोग जान लें कि ख़ुदा एक अद्वितीय है जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को अद्वितीयता के रंग में रंग दिया है और इसलिए ताकि पहचान लें कि समस्त संसारों का प्रतिपालक वही है और निष्कर्ष यह कि ख़ुदा अकेला है और एक होने को पसंद करता है। इसलिए उसके अद्वितीय होने ने चाहा कि वह इन्सान जो ख़लीफ़ों का ख़ातम (अन्तिम)

الإنسان الذى هو خاتم الخلفاء مشابهًا بآدم الذى هو أوّل مَن أُعطىَ خلافةً عُظمٰى و أوّلُ مَن نُفخ فيه الروح من رَبّ الورىٰ، ليكون زمان نوع البشر كدائرة يتصل النقطة الآخرة بنقطتها الاولىٰ، وليدل على التوحيد الذى دُعى إليه الإنسان۔ والتوحيد أحبُّ الاشياء إلى ربّنا الاعلى، فاختار وَضْعًا دوريًّا فى خلق الإنسان، فلذالك ختَم على آدم كما كان بدأ من آدم فى أوّل الاوان، و إن فى ذالك لآية للمتفكّرين۔ وإنّ آدم آخر الزمان حقيقةً هو نبيّنا صلّى الله عليه و سلم، والنسبة بينى وبينه كنسبة مَن علّم وتعلَّمَ، وإليه أشار "سبحانه فى قوله "وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ففَكِّرْ فى قوله "آخَرِينَ" وأنزل الله علىّ فيض هذا الرسول فأتمَّه وأكملَه، وجذَب إلىَّ لطفه وجُودَه، حتّى صار

हो उस आदम के समान हो जो सब ख़लीफ़ों का प्रथम था और सृष्टि में प्रथम व्यक्ति था जिस में ख़ुदा ने रूह फूंकी थी और यह इसलिए किया ताकि मानव जाति का युग उस दायरे के समान हो जाए जिसका अन्तिम बिन्दु उसके पहले बिन्दु से मिल जाता है और तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्गदर्शन करे कि जिसकी ओर इन्सान को बुलाया गया है। और तौहीद हमारे प्रतिपालक को सब चीज़ों से अधिक प्यारी है। इसलिए इन्सान की पैदायश में दौरी बनावट (चक्र लगाने वाली बनावट) को ग्रहण किया और इसी कारण से आदम पर ख़त्म किया जैसा कि प्रारंभ में आदम से आरम्भ किया और विचार करने वालों के लिए इसमें बहुत बड़ा निशान है, और अन्तिम युग का आदम वास्तव में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और मेरा संबंध उसके साथ गुरू और शिष्य का संबंध है और ख़ुदा तआला का यह कथन कि

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुमअ: - 4)

में इसी बात की ओर संकेत है। अत: آخَرِينَ के शब्द पर विचार करो। और ख़ुदा ने मुझ पर उस रसूल करीम का वरदान उतारा और उसे पूर्ण बनाया

وجودی وجودَہ، فمَن دخل فی جماعتی دخل فی صحابۃ سیدی خیر المرسلین۔ وھذا ھو معنی وَآخَرِینَ مِنۡھُمۡ کما لا یخفٰی علی المتدبّرین۔ ومَن فَرّق بینی و بین المصطفٰی، فما عرفنی وما رأی۔ وإن نبیّنا صلّی اللّٰہ علیہ و سلم کان آدمَ خاتمۃِ الدنیا ومنتھی الایام، وخُلِق کآدم بعد ما خُلق علی الارض کلّ نوع من الدواب و کلّ صنف من السباع والانعام، ولمّا خلَق اللّٰہ ھذہ الخلیقۃ من أنواع النَّعَم والسباع والدود علی الارضین؛ أعنی کلَّ حزب من الفاجرین والکافرین، والذین آثروا الدنیا علی الدین، وخلَق فی السماء نجومھا وأقمارھا وشموسھا أعنی النفوس المستعدّۃ من الطاھرین المنوّرین، خلَق بعد ھذا آدمَ الذی اسمہ محمد وأحمُد، وھو سیدُ وُلْدِ آدمَ وأتقی وأسعدُ،

और उस नबी करीम की दया एवं दानशीलता को मेरी ओर खींचा, यहाँ तक कि मेरा अस्तित्व उसका अस्तित्व हो गया अत: जो व्यक्ति मेरी जमाअत में सम्मिलित हुआ वह वास्तव में मेरे सरदार ख़ैरुलमुर्सलीन के सहाबा में सम्मिलित हुआ और यही अर्थ وَآخَرِینَ مِنۡھُمۡ के शब्द के भी हैं जैसा कि विचार करने वालों पर छिपा नहीं और जो व्यक्ति मुझ में और मुस्तफ़ा में पृथक करता है उस ने मुझे नहीं देखा और नहीं पहचाना है और निस्सन्देह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम संसार के अन्त के आदम और युग के दिनों के अन्तिम थे और आंहज़रत स.अ.व आदम के समान पैदा किए गए इसके पश्चात् कि पृथ्वी पर हर प्रकार के कीड़े-मकोड़े, चौपाए और दरिन्दे पैदा हो गए। जिस समय ख़ुदा ने उस सृष्टि (मख़्लूक़) को अर्थात् जानवरों, दरिन्दों और चींटियों को पृथ्वी पर पैदा किया। अर्थात् दुष्टों, काफ़िरों, दुनियादारों के प्रत्येक समूह को पैदा किया और आकाश में सितारे, चन्द्रमा और सूर्यों अर्थात् पवित्र लोगों को प्रकटन में लाया तो इसके बाद उस आदम को अस्तित्व रूपी लिबास पहनाया जिसका नाम मुहम्मद और अहमद है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और वह आदम की सन्तान का सरदार

و إمـامُ الخليقـة . و إليـه أشـار الله فى قـوله وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً و بعـزة الله و جـلاله أنّ لفـظ إِذْ يـدلّ بـدلالة قطعيـة على هـذا المقصـود، و يـدل عليـه سـياق الآ يـة و سـباقها إن كنـتَ لسـت كاليهـود ـ فـلا شـك أنـه آدمُ آخـر الزمـان، و الاُمّـةُ كالذُرّيـة لهـذا النـبى المحمـود، و إليـه أشـار فى قوله إِنَّـا أَعْطَيْنَـاكَ الْكَوْثَـرَ ـ فأمعِنْ فيـه و تَفكّـرْ، ولا تكـن مـن الغافلـين۔و إن زمـان روحانيـة نبيّنـا عليـه السـلام قـد بـدأ مـن الالـف الخامـس و كمُـل إلى آخـر الالـف السـادس، و إليـه أشـار فى قـولِه لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ و تفصيـل المقـام أن نبيّناصـلى الله عليـه وسـلم قـد جـاء عـلى قـدمِ آدم، و أن روحانيـة آدم قـد طلعـت فى اليـوم الخامـس لِمَـا خُلـق إلى هـذا اليـوم كلّ

और जनता का इमाम, सर्वाधिक संयमी और नेक (सौभाग्यशाली) है और उसकी ओर ख़ुदा तआला का यह कथन संकेत करता है-

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً

ख़ुदा के सम्मान और प्रताप की कसम कि إِذْ अर्थात जब का शब्द ठोस मार्ग-दर्शन के साथ इस उद्देश्य का मार्ग-दर्शन करता है और यदि तू यहूदियों के समान नहीं तो आयत का अगला-पिछला प्रसंग तुझ पर इस रहस्य को खोल देगा अत: सन्देह नहीं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्तिम युग के आदम हैं और उम्मत उस प्रशंसनीय नबी की सन्तान के स्थान पर है और उसकी ओर ख़ुदा तआला के इस कथन का संकेत है- إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ अत: इन अर्थों पर सोच-विचार कर और लापरवाहों में से मत हो तथा हमारे नबी की रूहानियत का युग पांचवें हज़ार से आरम्भ और छठे हज़ार के अन्त तक पूर्ण हुआ और उसकी ओर ख़ुदा तआला का कथन संकेत करता है कि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ और उस मुक़ाम का विवरण यह है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आदम के क़दम पर आए और आदम की रूहानियत ने पांचवें दिन उदय किया

ما كان من أجزاء هويّته وحقيقة ماهيّته، فإن الارض بجميع مخلوقاتها و السماء بجميع مصنوعاتها كانت حقيقةَ هويّةِ آدم، كَأَنَّ مادّتَه قد انتقلت من الحقيقة الجمادية إلى الحقيقة النباتية، ثم من الحقيقة النباتية إلى الهويّة الحيوانيّة، ثم بعد ذالك انتقلت من حيث الروحانية من الكمالات الكوكبية إلى الكمالات القمرية، ومن الانوار القمرية إلى الاشعّة الشمسية، و كانت هذه الانتقالات كلها مَظاهِرَ ترقّياتِ العالم إلى معارج الحقيقة الإنسانية ۔ كَأَنَّ الإنسان كان فی وقتٍ جمادًا،وفی وقتٍ آخر نباتا، وبعد ذالك حيوانا، وبعد ذالك كوكبًا وقمرا وشمسا حتی جُمِع فی من القوی الارضية والسماوية بفضل الله أحسن اليوم الخامس كلّ ما اقتضت فطرتُه الخالقين ۔

क्योंकि उस दिन तक सब कुछ जो उसकी आकृति के अंगों से और उसकी बनावट की वास्तविकता से था से पैदा हो गया, क्योंकि पृथ्वी अपनी सम्पूर्ण सृष्टि के साथ तथा आकाश अपने सम्पूर्ण उत्पादों के साथ आदम की वास्तविकता थे मानो आदम का तत्त्व जमादी (जड़ संबंधी) वास्तविकता से वनस्पति वास्तविकता की ओर गया और जड़ संबंधी वास्तविकताओं से वनस्पति वास्तविकताओं की ओर तथा वनस्पति वास्तविकता से हैवानियत की ओर गया फिर रूहानियत (आध्यात्मिकता) के तौर पर नक्षत्रीय उत्कृष्टता से चन्द्रमा संबंधी उत्कृष्टताओं की ओर तथा चन्द्र प्रकाशों से सूर्य संबंधी किरणों की ओर गया और ये सब एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाना संसार के विकास-कर्मों के द्योतक की मानवीय वास्तविकता के सोपानों की ओर थे और इस रहस्य को दूसरे शब्दों में इस प्रकार समझना चाहिए कि मनुष्य एक समय जमाद (जड़ पदार्थ) था और दूसरे समय नबात (वनस्पति) और उसके बाद प्राणी (जीवधारी) और उसके बाद नक्षत्र, चन्द्रमा और सूर्य था यहाँ तक कि पांचवे दिन वह सब कुछ जो उसकी पार्थिव प्रकृति एवं आकाशीय शक्तियों से मांग करती थी अत्युत्तम स्रष्टा (ख़ुदा) की कृपा से एकत्र हो गया।

فكان الخَلق كله فردًا كاملا لآدم، أو مِرآةً لوجوده الذى أعزّه الله وأكرم ۔ ثم أراد الله أن يُرِىَ هذه الخفايا على وجه الكمال فى شخصٍ واحدٍ هو مظهر جميع هذه الخصائفتجلّت روحانيةُ آدم بالتجلّى الجامع الكامل فى الساعة الآخرة من الجمعة، أعنى اليوم الذى هو السادس من الستّة ۔ فكذالك طلعَتْ روحانيةُ نبيّناصلى الله عليه وسلم فى الالف الخامس بإجمال صفاتها، وما كان ذالك الزمان منتهى ترقّياتها، بل كانت قدمًا أولى لمعارج كمالاتها، ثم كمُلتْ وتجلّت تلك الروحانية فى آخر الالف السادس، أعنى فى هذا الحين كما خُلق آدم فى آخر اليوم السادس بإذن الله أحسن الخالقين ۔ واتخذتْ روحانيةُ نبيّنا خير الرسل مَظهرًا مِن أُمّته لتبلغ كمالَ

अत: समस्त पैदायश आदम के लिए एक पूर्ण पुरुष था या उसके अस्तित्व का दर्पण था जिसे ख़ुदा ने प्रतिष्ठित एवं आदरणीय बनाया फिर इरादा किया कि गोपनीयताओं को पूर्ण रूप से एक ही व्यक्ति में प्रकट करे जो उन आदतों का द्योतक हो। अत: आदम की रूहानियत ने सर्वांगपूर्ण आभा के साथ जुमअ: के दिन अन्तिम क्षण में चमकार दिखाई अर्थात् उस दिन जो छ: का छठा है। इसी प्रकार हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहानियत ने पांचवें हज़ार में इज्माली विशेषताओं के साथ प्रकटन किया और वह युग उस रूहानियत की उन्नति का अन्त न था बल्कि उसने कौशलों के चरमोत्कर्ष (मेराज) के लिए पहला क़दम था फिर उस रूहानियत ने छठे हज़ार के अन्त में अर्थात् उस समय पूर्ण रूप से आभा प्रकट की जैसा कि आदम छठे दिन के अन्त में अत्युत्तम स्रष्टा (ख़ुदा) की आज्ञा से पैदा हुआ और खैरुर्रुसुल की रूहानियत अपने प्रादुर्भाव के कौशल के लिए और अपने नूर (प्रकाश) की विजय के प्रभुत्व के लिए एक द्योतक बनाया जैसा कि ख़ुदा तआला ने किताबे मुबीन (क़ुर्आन) में वादा किया था। अत: मैं वही द्योतक हूँ इसलिए ईमान ला और काफ़िरों में से न हो और यदि चाहता है तो उस ख़ुदा के

ظهورها وغلبةَ نورها كما كان وعد الله فى الكتاب المبين۔ فأنا ذالك المظهر الموعود والنور المعهود، فآمِنْ ولا تكنْ من الكافرين ۔ وإن شئتَ فاقرء قوله تعالىٰ هُوَالَّذِیْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّیْنِ كُلِّهٖ وفَكِّرْ كالمهتدين۔ فهذا وقت الإظهار، ووقت كمال ظهور الروحانية من الجَبّار، يا معشر المسلمين ولاجل ذالك جاء فى الآثار أنه عليه السلام بُعث فى الالف السادس مع أنّ بعثه كان فى الالف الخامس بالقطع واليقين۔ فلا شك أن هذه إشارة إلى وقت التجلّى التام و استيفاء المرام و كمال ظهور الروحانية و أيام تموُّج الفيوض المحمّدية فى العالمين، وهو آخر الالف السادس الذى هو الزمان المعهود وإن هذا الزمان هو موطأُ قدمه عليه السلام من الحضرة الاحدية، كما يُفهَم

कथन को पढ़ هُوَالَّذِیْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّیْنِ كُلِّهٖ और विचार कर अत: हे मुसलमानों की जमाअत यह अभिव्यक्त करने का समय और रूहानियत के प्रकटन की खूबी का समय है। और इसीलिए 'आसार' में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छठे हज़ार में अवतरित हुए, हालाँकि आंजनाब का अवतरण अटल एवं निश्चित तौर पर पांचवें हज़ार में था अत: सन्देह नहीं कि यह संकेत है पूर्ण आभा के समय की ओर और उद्देश्य की पूर्ण रूपेण पूर्ति की ओर रूहानियत (आध्यात्मिकता) के पूर्ण प्रकटन की ओर और संसार में मुहम्मदी वरदानों के मौज मारने के दिनों की ओर और यह छठे हज़ार का अन्त है जो समय मसीह मौऊद के उतरने के लिए निर्धारित है जैसा कि नबियों की किताबों से समझा जाता है और यह युग निस्सन्देह ख़ुदा तआला की ओर से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम रखने का स्थान है जैसा कि आयत وَآخَرِينَ مِنْهُمْ और पवित्र पुस्तकों की दूसरी आयतों से समझा जाता है। अत: यदि तू बुद्धिमान है तो विचार कर और जान ले कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा कि पांचवें हज़ार में अवतरित हुए, इसी प्रकार मसीह मौऊद छठे हज़ार के अन्त

من آية "وَآخَرِينَ مِنْهُمْ" وآيات أخرى من الصحف المطهّرة، ففكّرْ إن كنت من العاقلين۔ واعلم أن نبيّناصلى الله عليه وسلم كما بُعث فى الالف الخامس كذالك بُعث فى آخر الالف السادس باتخاذه بروز المسيح الموعود، وذالك ثابت بنص القرآن فلا سبيل إلى الجحود، ولا ينكره إلا الذى كان من العمين۔ ألا تفكّرون فى آية "وَآخَرِينَ مِنْهُمْ"، و كيف يتحقّق مفهوم لفظ "مِنْهُمْ" مِن غير أن يكون الرسول موجودًا فى الآخِرين كما كان فى الاوّلين۔ فلا بد من تسليم ما ذكرناه ولا مَفَرَّ للمنكرين۔ و من أنكر من أنّ بعْث النبى عليه السلام يتعلّق بالالف السادس كتعلّقه بالالف الخامس، فقد أنكر الحق ونصَّ الفرقانِ، وصار من الظالمين۔ بل الحق أن روحانيتهٗ عليه السّلام كان فى آخر

में बुरूज़ी रूप धारण कर के अवतरित हुए और यह क़ुर्आन से सिद्ध है कि इसमें इन्कार की गुंजायश नहीं और अंधों के अतिरिक्त कोई इस अर्थ से मुँह नहीं फेरता। क्या مِنْهُمْ آخَرِينَ की आयत पर विचार नहीं करते और किस प्रकार مِنْهُمْ के शब्द का अर्थ निश्चित हो यदि रसूले करीम آخَرِينَ में मौजूद न हों जैसा कि पहलों में मौजूद थे। अत: जो कुछ हमने वर्णन किया है स्वीकार करने से चारा नहीं और इन्कार करने वालों के लिए भागने का मार्ग बन्द है और जिसने इस बात से इन्कार किया कि नबी अलैहिस्सलाम का अवतरण छठे हज़ार से संबंध रखता है जैसा कि पांचवें हज़ार से संबंध रखता था तो उसने सच्चाई और क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश का इन्कार किया अपितु सच यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहानियत छठे हज़ार के अन्त में अर्थात् इन दिनों में उन वर्षों की अपेक्षा सुदृढ़ सर्वांगपूर्ण और अधिक है बल्कि चौदहवीं रात के चन्द्रमा के समान है और इसलिए हम तलवार और लड़ने वाले गिरोह के मुहताज नहीं और इसलिए ख़ुदा तआला ने मसीह मौऊद के अवतरण के लिए सदियों की गणना को रसूले करीम की हिजरत (प्रवास) के बद्र (चौदहवीं के चन्द्रमा) की रातों की गणना के समान अपनाया ताकि वह गणना इस

الالف السادس أعنى فى هذه الايام أشدَّ وأقوٰى وأكملَ من تلك الاعوام، بل كالبدر التامّ، ولذالك لا نحتاج إلى الحُسام، ولا إلى حزبٍ من محاربين، و لاجل ذالك اختار الله سبحانه لبعث المسيح الموعود عِدّةً من المئات كعِدّة ليلةِ البدر من هجرة سيدنا خير الكائنات لتدلّ تلك العِدّة على مرتبة كمال تام من مراتب الترقّيات و هى المائة الرابع بعد الالف من خاتم النبيين، ليتم وعد إظهار الدين الذى سبق فى الكتاب المبين، أعنى قوله "وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ"، فانظرْ إلى هذه الآية كالمُبْصرين فإنها تدل على البدرَيْن باليقين ۔ بدرٌ مضت لنصر الاوّلين، وبدرٌ كانت آية لّلآخِرين۔

فلا شك أن فى هذه الآية إشارة لطيفة إلى الزمان الآتى الذى يُشابه ليلةَ البدر عِدّةً۔ أعنى سنة أربع مائة بعد الالف وهى ليلة

पद पर जो उन्नति की समस्त श्रेणियों से सर्वांगपूर्ण सम्पन्न है, सिद्ध करे वह चार सौ की गणना ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के बाद है ताकि धर्म की विजय का वादा जो किताब-ए-मुबीन (क़ुर्आन) में पहले हो चुका था पूर्ण हो जाए अर्थात् ख़ुदा तआला का यह कथन कि-

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले इमरान - 124)

अत: देखने वालों की तरह इस आयत को देख क्योंकि यह आयत निस्सन्देह दो चौदहवीं के चन्द्रमाओं का पता देती है। प्रथम वह बद्र (चौदहवीं के चन्द्रमा) जो पहलों की सहायता के लिए गुज़रा और दूसरा वह बद्र बाद में आने वालों के लिए एक निशान है।

अत: निस्सन्देह यह आयत भावी युग की ओर एक बारीक संकेत करती है जो गणना की दृष्टि से चन्द्रमा की चौदहवीं रात के समान हो और वे चार सौ (400) वर्ष हज़ार वर्ष के बाद है और यही रूपक के तौर पर ख़ुदा तआला के नज़दीक चौदहवीं चाँद रात है और इन सबके बावजूद हमें यह भी इक़रार है कि इस आयत

البدر استعارةً عند ربّ العالمين، و إنْ كان للآية معنى آخر يتعلق بالزمان الماضى مع هذا المعنى كما لا يخفٰى على العالِمين۔ فإنّ للآية وجهين، والنصر نصران، والبدر بدران، بدرٌ تتعلق بالماضى، وبدرٌ تتعلق بالاستقبال من الزمان عند ذلّة تصيب المسلمين كما ترون فى هذا الاٰوان، و كان الإسلام بدأ كالهلال و كان قُدّر أنه سيكون بدرًا فى آخر الزمان والمآل بإذن الله ذى الجلال، فَاقتضت حكمةُ الله أن يكون الإسلام بدرًا فى مائة تشابهُ البدر عِدّةً ۔ فإليه أشار فى قوله "لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ"، ففكّرْ فكرة كاملة ولا تكن من الغافلين۔وإن لفظ "لَقَدْ نَصَرَكُمْ" قد أتى هنا علٰى وجهٍ آخر أعنى بمعنى ينصركم كما لا يخفى على العارفين۔فحاصل الكلام أن الله كان قدقدّرللإسلام العزّتين بعدالذلّتين على رغم اليهودالذين كان قدّر لهم الذلّتين بعدالعزّتين

के अन्य अर्थ भी हैं जो गुज़रे हुए युग से संबंध रखते हैं। जैसा की उलेमा को मालूम है क्योंकि इस आयत के दो मुख हैं (अर्थात् दो मुखी हैं) और सहायता, दो सहायताएं और बद्र दो बद्र हैं। एक बद्र गुज़रे युग से संबंध रखता है और दूसरा बद्र भविष्य-युग से उस समय जब मुसलमानों को अपमान पहुंचे जैसा कि इस युग में देखते हो। और इस्लाम हिलाल (नव चन्द्र) की भांति आरम्भ हुआ और प्रारब्ध था कि अन्तत: बद्र हो जाए अन्तिम युग में वैभवशाली ख़ुदा की आज्ञा से अत: ख़ुदा तआला की दूरदर्शिता ने चाहा कि इस्लाम उस सदी में बद्र का रूप धारण कर ले जो गणना की दृष्टि से बद्र के समान हो। अत: इन्हीं अर्थों की ओर संकेत है ख़ुदा तआला के इस कथन में कि لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ (आले इमरान-124) अत: इस बात पर बारीक दृष्टि से विचार कर और लापरवाह लोगों में से न हो और निस्सन्देह لَقَدْنَصَرَكُمْ का शब्द यहाँ अन्य कारण की दृष्टि से ينصركم के अर्थों में आया है जैसा कि अध्यात्म ज्ञानियों पर प्रकट है। कलाम का सारांश यह है कि ख़ुदा तआला ने इस्लाम के लिए दो अपमानों के बाद दो सम्मान रखे थे यहूदियों के विपरीत कि उनके लिए

نکالامن عنده کما تقرء ون فی سورة بنی إسرائیل قصة الفاسقین منهم و الظالمین ۔ فلمّا أصاب المسلمین الذلّةُ الاولی فی مکّة و عَدهم الله بقوله "اُذِنَ لِلَّذِیۡنَ یُقٰتَلُوۡنَ بِاَنَّہُمۡ ظُلِمُوۡا وَ اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی نَصۡرِہِمۡ لَقَدِیۡرُ"، و أشار فی قوله "عَلَی نَصۡرِهِم" أنّ العذاب یصیب الکفّار بأیدی المؤمنین، فأنجز الله هذا الوعد یوم بدرٍ و قتل الکافرین بسیوف المسلمین۔ ثم أخبر عن الذلّة الثّانیّة بقوله "حَتّٰۤی اِذَا فُتِحَتۡ یَاۡجُوۡجُ وَ مَاۡجُوۡجُ (یعنی یکون لهم الغلبة و الفتح لا یدانِ بهم لاحد) وَ هُمۡ مِّنۡ کُلِّ حَدَبٍ یَّنۡسِلُوۡنَ"... وَتَرَکۡنَا بَعۡضَهُمۡ یَوۡمَئِذٍ یَّمُوۡجُ فِیۡ بَعۡضٍ"★ و المراد من

दण्ड के तौर पर दो सम्मानों के बाद दो अपमान निर्धारित किए थे जैसा कि सूरह बनी इस्राईल में उनके पापियों और अत्याचारियों का क़िस्सा पढ़ते हो। जिस समय मुसलमानों को पहला अपमान मक्का में पहुंचा, ख़ुदा ने उन से अपने कथन में वादा किया था (आयत के अंतिम तक) और عَلَی نَصۡرِهِم के कथन से संकेत किया कि मोमिनों के हाथ से काफ़िरों पर अज़ाब उतरेगा। अत: ख़ुदा तआला का यह वादा बद्र के दिन प्रकट हुआ और काफ़िर मोमिनों की तेज़ तलवार से क़त्ल किए गए। फिर दूसरे अपमान की सूचना दी अपने उस कथन से حَتّٰۤی اِذَا فُتِحَتۡ یَاۡجُوۡجُ وَ مَاۡجُوۡجُ (अलअंबिया - 97) (अर्थात् उनको ऐसा प्रभुत्व और ऐसी विजय प्राप्त होगी कि उनके साथ कोई मुक़ाबला न कर सकेगा) और इस कथन से

وَ هُمۡ مِّنۡ کُلِّ حَدَبٍ یَّنۡسِلُوۡنَ ... (अलअंबिया - 97) और

وَتَرَکۡنَا بَعۡضَهُمۡ یَوۡمَئِذٍ یَّمُوۡجُ فِیۡ بَعۡضٍ (अल कहफ़ - 100)

★الحاشیة - قد اشار الله فی اٰیات بعدهٰذه الاٰیةمن غیر فصلٍ الیٰ انّ یاجوج و ماجوج هم النصاریٰ۔الا تریٰ قوله افحسب الذین کفروا ان یتخذوا عبادی من دونی اولیاء۔ و کذالك قوله قل هل ننبّئکم بالاخسرین اعمالا ۔الذین ضلّ سعیهم فی الحیٰوة الدنیا وهم یحسبون انّهم یحسنون صُنعا۔و کذالك قوله قل لوکان البحر مدادًا لکلمات ربّی۔ولاشكّ ان النصاریٰ قوم اتخذوا المسیح معبودًا من دون الله و تمایلوا علی الدنیا و سبقوا غیرهم فی ایجاد صنایعها و قالوا ان المسیح هو کلمة الله و المخلوق کله من هذه الکلمة فهذه الاٰیات ردّ علیهم۔منه

''كُلِّ حَدَبٍ'' ظفرُهم وفوزهم بكل مرادوعروجُهم إلى كل مقام و كونُهم فوق كل رياسة قاهرين ۔ والمراد من قوله ''بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ'' أن نار الخصومات تستوقد فى ذالك الزمان فى كل فرقة من فرق أهل الاديان، و ينفقون الذهب والفضّة كالجبال لتكذيب الإسلام والإبطال وارتداد المسلمين، ويُؤلّفون كتبًا مملوءة من التوهين۔وقد أشار الله فى كثير من المقام أن تلك الايّام أيّام الغُربةِ للإسلام، وهناك يكون المسلمون كالمحصورين، وتهبّ عليهم عواصفُ التفرقة فيكونون كعِضِين . فأمّا قوله ''بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ'' فيريد منه أن فِرقة تأكل فِرقة أخرٰى، وتعلُو يأجوج ومأجوج وتسمعون أخبار خروجهم فى الارضين۔

और हर एक बुलन्दी से दौड़ने से अभिप्राय यह है कि हर एक कामना और उद्देश्य में सफ़लता और प्रसन्नता उनको प्राप्त होगी और हर एक सत्ता और रियासत उनके कब्ज़े में आ जाएगी और بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ से अभिप्राय यह है कि उस ज़माने में समस्त फ़िर्क़ों में युद्ध की आग भड़क उठेगी और पर्वतों के बराबर सोना-चांदी इस्लाम को मिटाने के लिए तथा मुसलमानों को इस्लाम के दायरे से निकालने के लिए ख़र्च करेंगे और इस्लाम के अपमान से भरी हुई पुस्तकें लिखी जाएँगी और बहुत से स्थानों में ख़ुदा तआला ने संकेत किया है कि वे दिन इस्लाम की ग़रीबी के दिन होंगे और मुसलमान उस युग में क़ैदियों की भांति जीवन व्यतीत करेंगे और फूट एवं अस्त-व्यस्त होने की हवाएं उनके सर पर चलेंगी। अत: वे बिखर जाएंगे और अस्त-व्यस्त हो जाएंगे और بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ से अभिप्राय यह है कि एक फ़िर्का दूसरे फ़िर्क़े को खा जाएगा तथा याजूज माजूज गौरवान्वित होंगे और समस्त पृथ्वी पर उनके निकलने की ख़बरें सुनने में आएंगी और उन दिनों में इस्लाम बूढ़ी स्त्री की भांति होगा और उसमें किसी प्रकार की शक्ति एवं सम्मान नहीं रहेगा और उसे अपमान पर अपमान पहुंचेगा और निकट होगा कि मुर्दे को कपड़े और नहलाने के बिना पृथ्वी में गाड़ दिया जाएगा। और उसके ऊपर

وفی تلك الایام لا یکون الإسلام إلا کعَجوزةٍ، ولا یبقی له من قوة و لا من عزّة، و تصیبه ذلّة علی ذلّة، و کاد أن یُقبَر من غیر التجهیز والتکفین، وتُصَبّ علیه مصائب ما سمعتْ أذنٌ مثلها من قبل، و یخرج من الدین أفواج من الجاهلین، لاعنین ومحقِّرین ومکذِّبین، وتُقلَب الامور کلها، وتنزل المصائب علی الشریعة وأهلها، ویُرَدّ قمرها کعُرجونٍ قدیم فی أعین الناظرین، وهذه ذلّة ما أصابت الملّة من قبل ولن تصیب إلی یوم الدین ۔ فعند ذالك تنزل النصرةُ من السماء ومعالِمُ العزّة ذالك تنزل النصرةُ من السماء ومعالِمُ العزّةمن حضرة الکبریاء،مِن غیر سیف وسنان ومحاربین★ ۔

ऐसे संकट आएँगे कि उस युग में किसी कान ने उस जैसा न सुना होगा और मूर्खों के समूह के समूह धर्म के दायरे से बाहर निकल जाएंगे और धर्म में से मूर्ख लोगों के समूह के समूह लानत करते हुए तथा झूठा कहते हुए निकल जाएंगे और समस्त मामले तहस-नहस किए जाएंगे तथा शरीअत और शरीअत वालों पर शोक और कष्ट उतरेंगे और उसका चन्द्रमा देखने वालों की दृष्टि में पुरानी टहनी की तरह दिखाई देगा। और यह वह अपमान है कि इससे पहले उम्मत को नहीं पहुंचा और न क़यामत तक पहुंचेगा। जब इस सीमा तक मामला पहुँच जाएगा तब आकाश से सहायता तथा ख़ुदा तआला की ओर से बिना तलवार तथा बिना भाले और लड़ने वालों के, ★ सम्मान के

★الحاشیة :-انّ عیسٰی بن مریم ماقاتل وماامر بالقتال۔فکذالك المسیح الموعود فانّه علیٰ نموذجه من اللّٰه ذی الجلال۔والسرّ فیه ان اللّٰه اراد اَنْ یُّرْسِلَ خاتم خلفاءٍ بنی اسرائیل وخاتم خلفاء الاسلام۔من غیر السنان

★**हाशिया**- हज़रत ईसा इब्ने मरियम ने न तो स्वयं जंग की और न जिहाद का आदेश दिया। अत: इसी प्रकार मसीह मौऊद, महा प्रतापी ख़ुदा की ओर से उसी (मसीह) के आदर्श पर होगा। और इसमें भेद यह है कि अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि बनी इस्राईल के ख़ातमुल ख़ुलफा और इस्लाम के ख़ातमुल ख़ुलफा को बिना तलवार और भालों के अवतरित करे ताकि

و إليـه إشـارة فى قـوله تعـالٰى ''وَّنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَجَمَعۡنٰهُمۡ جَمۡعًا''، وهـو مـراد مـن بعـث المسـيح الموعود يامعشـر العاقلين★۔و فى لفـظ النـــزول الذى جـاء فى الاحاديـث إيمـاءٌ إلى أن الأَمـر و النصـر

निशान उतरेंगे और इसी की ओर ख़ुदा तआला के इस कथन में संकेत है-

وَّنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَجَمَعۡنٰهُمۡ جَمۡعًا (अल कहफ़- 100)

हे बुद्धिमानों के गिरोह!★ मसीह मौऊद के अवतरित होने से यह अभिप्राय है और हदीसों में जो नुज़ूल का शब्द आया है उसमें यह संकेत है कि मसीह मौऊद के

والحسـام ۔ليُزِيۡلَ شـبهات نَشَـأَتۡ مـن قبـلُ فى طبائـع العوام ۔وليعلـم الناسُ انّ اشـاعةالدين بامرٍ مـن الله لابضـرب الاعنـاق وقتۡـلِ الاقوام ۔ثـم لمـا كان اليهـود فى وقـت عيسٰـى والمسـلمون فى وقـت المسـيح الموعـود ۔قدخـرج اكثرهـم مـن التقـوىٰ وعصوا احـكام الـربّ الودودِ ۔فـكان بعيـدًا مـن الحكمـة الالٰهيّـة ۔ان يقتـل الكافريـن لهـذه الفاسـقين۔ فتدبّر حق التدبّـر ولا تكـن مـن الغافلين ۔منـه

उन सन्देहों का निवारण किया जाए जो पहले से लोगों के मन में पैदा हो चुके थे और ताकि लोग जान लें कि धर्म का प्रचार ख़ुदा के आदेश से हुआ है न कि गर्दन काटने और क़ौमों का क़त्ल करने से। फिर ईसा के समय में यहूदियों और मसीह मौऊद के समय में मुसलमानों की अधिकता संयम से वंचित हो गई और वदूद (अर्थात सबसे अधिक प्रेम करने वाले) ख़ुदा के आदेशों की अवज्ञा करने लगी तो ख़ुदा तआला की हिकमत से यह बात दूर थी कि इन अवज्ञाकारियों के बदले काफिरों को क़त्ल किया जाए। अत: अच्छी तरह विचार कर और लापरवाहों में से न बन।

★الحاشـية :- و كذالـك اشـير الى المسـيح الموعـود فى الكتـاب الكريم اعـنى فى سـورةالتحريم وهو قـوله تعـالٰى، وَمَرۡيَـمَ ابۡنَـتَ عِمۡـرٰنَ الَّـتِىۡۤ اَحۡصَنَـتۡ فَرۡجَهَـا فَنَفَخۡنَـا فِيۡـهِ مِنۡ رُّوۡحِنَـا۔ ولاشـك ان المرادمـن الـروح هٰهناعيسٰـى ابـن مريـم۔

★हाशिया :- और इसी प्रकार मसीह मौऊद की ओर पवित्र क़ुरआन में भी संकेत किया गया है अर्थात सूरत तहरीम में और वह इलाही फरमान यह है-

وَ مَرۡيَمَ ابۡنَتَ عِمۡرٰنَ الَّتِىۡۤ اَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِنَا (सूर: तहरीम - 12)

(अर्थात - और इमरान कि बेटी मरयम का उदाहरण दिया है जिस ने अपनी सच्चरित्रता को बचाए रखा तो अपने उस (बच्चे) में अपनी रूह में से कुछ फूंका-अनुवादक) निसंदेह रूह से यहां अभिप्राय ईसा इब्ने मरियम हैं।

ينـــزل كله مـن الســماء فى أيـام المسـيح مـن غـير توسُّـل أيـدى الإنســان ومِـن غـير جهـاد المجاهديـن، وينــزل الامـر مـن الفـوق مِـن غـير تدبـير المدبّريـن ۔ كأن المسـيح ينــزل كالمطـر مـن السـماء واضعـا يديـه عـلى أجنحـة المـلا ئكـة لَا عـلٰى أجنحـة حِيَـلِ الدنيـا والتدابـير الإنســانية، وتَبْلُـغُ دعوتُـه وحجّتـه إلى أقطـار الارضبأسـرع أوقـاتٍ كـبرق يبـدو مـن جهـة فـإذا هـى مشـرقة فى جهـات ۔ فكذالـك يكـون فى هٰـذا الزمـان، فليسـمعْ مـن يكـن له أُذُنـان، و يُنفَـخُ فى الصُّـور لإشـاعة النـور و ينـادى الطبائعُ السـليمة

युग में आदेश और सहायता मानवीय हस्तक्षेप के बिना और मुजाहिदों के जिहाद के बिना आकाश से उतरेगी और विचारकों के यत्न के बिना समस्त वस्तुएं ऊपर से नीचे आएँगी मानो मसीह वर्षा की भांति फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रख कर आकाश से उतरेगा, मानवीय उपायों एवं सांसारिक बहानों के कन्धों पर उस का हाथ न होगा और उस का निमंत्रण तथा हुज्जत पृथ्वी पर चारों ओर बहुत शीघ्र फैल जाएगी उस बिजली की तरह जो एक दिशा में प्रकट होकर एक क्षण में समस्त दिशाओं में चमक जाती है। यही हाल इस युग में होगा। अत: सुन ले (वह) जिसको दो कान दिए गए हैं। और प्रकाश के प्रसारण के लिए बिगुल फूँका जाएगा और स्वस्थ स्वभाव हिदायत पाने के लिए पुकारेंगे उस समय पूरब

فحاصلالاٰيـة ان الله وعدانّـه يجعـل اخشـى النـاس مـن هٰـذه الامـة مسـيح ابـن مريـم و ينفـخ فيـه روحهبطريـق الـبروز فهـذه وعـد مـن الله فى صـورة المثـل لاتقـى النـاس مـن المسـلمين فانظركيـف سـمّى الله بعـض افرادهٰـذه الامـة عيسـى بـن مريـم ولا تكـن مـن الجاهلين۔منـه

अत: आयत का निष्कर्ष यह है कि अल्लाह तआला ने वादा किया है कि इस उम्मत में मसीह इब्ने मरियम को लोगों में से सबसे अधिक ख़ुदा का भय रखने वाला बनाए और उसमें प्रतिरूप के तौर पर अपनी रूह डालेगा और यह उदाहरण के तौर पर मुसलमानों में सबसे अधिक संयमी के लिए अल्लाह ताला का वादा है। अत: विचार कर कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने इस उम्मत के कुछ लोगों को ईसा इब्ने मरियम के नाम से नामित किया है और मूर्खों में से न बन।

للاهتداء، فيجتمع فِرق الشرق والغرب والشمال والجنوب بأمرٍ من حضرة الكبرياء، فهناك تستيقظ القلوب وتنبت الحبوب بهذاالماء،لا بنارالحرب وسفك الدماء،ويُجذَب الناس بجذبة سماوية مطهّرة من شوائب الارض لما هو نموذج ليوم القضاء من مالك يوم الدين۔ وقد وعد الله عند الفتنة العظمى فى آخر الزمان، والبليّة الكبرى قبل يوم الديّان، أنه ينصر دينه من عنده فى تلك الايام، وهناك يكون الإسلام كالبدر التام، وإليه أشار الله سبحانه فى قوله "وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعًا" و قد أخبر فى آية هى قبل هذه الآية من تفرقة عظيمة "تَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ" ثم بشَّر بقوله "وَنُفِخَ فِي الصُّور" بجمع بعد التفرقة، فلا يكون هذا الجمع إلّا فى مائة البدر ليدلّ الصورةُ على معناها كما كانت النصرة الاولى ببدر۔ فهاتان بشارتان للمؤمنين، و

और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के फ़िर्क़े ख़ुदा के आदेश से एकत्र हो जाएंगे। अत: उस समय दिल जाग जाएंगे और दाने उस पानी से उगेंगे न कि युद्ध की आग और रक्त-पात से तथा लोग आकाशीय आकर्षण से खींचे जाएंगे जो पृथ्वी की मिलावट से पवित्र होगा। यह ख़ुदा की ओर से प्रतिफल के दिन का नमूना होगा। और ख़ुदा ने वादा किया है कि जब अन्तिम युग में बहुत बड़ा उपद्रव और आपदा क़यामत से पहले प्रकट होगी उन दिनों में अपनी ओर से अपने धर्म की सहायता एवं समर्थन करेगा और उस युग में इस्लाम पूर्णिमा के चन्द्र के समान हो जाएगा और इस कथन में अर्थात وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جمعًا इसी की ओर संकेत है और इस आयत के द्वारा एक बड़ी फूट की सूचना दी जहाँ यह फ़रमाया है कि وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ फिर نُفِخَ فِي الصُّور के कथन से ख़ुशख़बरी दी कि इस उथल-पुथल के बाद एकता प्राप्त होगी। यह एकता बदर की सदी (अर्थात चौदहवीं सदी-अनुवादक) में प्राप्त होगी ताकि सूरत अपने मायने को सिद्ध करे जैसा कि पहली सहायता बदर में

تبرُقان کدُرّةٍ فی الکتاب المبین ۔ و قد مضی وقتُ فتح مبین فی زمن نبیّنا المصطفٰی، وبقی فتحٌ آخر وھو أعظم وأکبر وأظھر من غلبة أولٰی، وقُدّر أن وقتہ وقت المسیح الموعود من اللّٰہ الرء وف الودود وأرحم الراحمین، وإلیہ أشار فی قولہ تعالٰی ''سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ'' ففکِّرۡ فی ھذہ الآیة ولا تمرّ کالغافلین وإن فی لفظ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ولفظ ''الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصٰی'' الذی جُعِل من وصفہ جملة ''بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ'' إشارة لطیفة للمتفکّرین، وھو أن لفظ ''الۡحَرَامِ'' یدل علی أن الکافرین قد حُرّم علیھم فی زمن النبی علیہ السلام أن یضرّوا الدین بالمکائد أو یأتوہ کالصائد، وعصَم اللّٰہ نبیّہ ودینہ وبیتہ من صوۡل الصائلین

पहुंची। अत: ये दो ख़ुशख़बरियां मोमिनों के लिए हैं और मोती की तरह क़ुर्आन में चमकती हैं और ज़ाहिर है कि स्पष्ट विजय का समय हमारे नबी करीम के युग में गुज़र गया और दूसरी विजय शेष रही जो पहली विजय से बहुत बड़ी तथा अधिक स्पष्ट है और मुक़द्दर था कि उस का समय मसीह मौऊद का समय हो और इसी की ओर ख़ुदा तआला के इस कथन में संकेत है-

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ (बनी इस्राईल - 2)

अत: इस आयत पर विचार कर और लापरवाहों की भांति उसके आगे से न गुज़र और मस्जिद हराम के शब्द में और मस्जिद अक़्सा के शब्द में जिस की विशेषता में بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ (हमने उसके इर्द-गिर्द को बरकत दी है) का वर्णन हुआ है, सूक्ष्म संकेत है और उनके लिए जो विचार करते हैं। और वह यह है कि हराम शब्द प्रकट करता है कि काफ़िरों पर यह बात अवैध की गई थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में धर्म को छल और प्रपंचों से हानि पहुंचाएं या उस पर शिकारियों की भांति टूट पड़ें। और ख़ुदा ने अपनी

وجور الجائرين ۔ وما استأصل الله فی ذالك الزمن أعداء الدين حق الاستيصال، ولكن حفِظ الدين من صَولهم وحَرّم عليهم أن يغلبوا عند القتال ۔ فبُدِئَ أمرُ تأييد الدين من المسجد الحرام أعنی مِن ذَبِّ اللئام، ثم يتمّ هذا الامر على المسجد الاقصى الذی يبلغ فيه نور الدين إلى أقصى المقام كالبدر التام، ويلزَمه كلُّ بركة يُتوقَّع ويُتصوَّر عند كمالٍ ليس فوقه كمال، وهذا وعدٌ من الله العلّام ۔

فكان المسجد الحرام يُبشّر بدفع الشر والحفظ من المكروهات، وأما المسجد الاقصى فيشير مفهومه إلى تحصيل الخيرات وأنواع البركات والوصول إلى أعلى الترقّيات، فبُدِئَ أمرُ ديننا مِن دفع الضير، ويتم على استكمال الخير، وإنّ

नबी को तथा अपने धर्म और अपने घर को आक्रमणकारियों के आक्रमणों और अन्याय करने वालों के अन्याय से सुरक्षित रखा तथा उस युग में धर्म के शत्रुओं को जैसा कि चाहिए था जड़ से नहीं उखाड़ा परन्तु धर्म को उनके आक्रमण से सुरक्षित रखा और हराम कर दिया कि वे लड़ाई में विजयी रहें। इसलिए धर्म के समर्थन का मामला मस्जिद-ए-हराम से अर्थात् कमीनों को हटाने से आरंभ हुआ। फिर यह मामला मस्जिद अक़्सा पर पूर्ण होगा। यह वह मस्जिद है जिसमें धर्म का प्रकाश अक़्सा के स्थान तक पूर्ण चन्द्रमा की भांति पहुंचेगा। तथा प्रत्येक बरकत जो ऐसी विशेषता के समय में कि जिस से बढ़कर कोई विशेषता न हो, कल्पना में आए उस के साथ संलग्न होती है और यह सर्वज्ञ ख़ुदा का वादा है।

अत: मस्जिद-ए-हराम बुराई के दूर होने और घृणित बातों से सुरक्षित रहने का उपहार देती है परन्तु मस्जिद अक़्सा का अर्थ इस बात की ओर संकेत करता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार की बरकतें और खैरात (दान) तथा उच्चतम उन्नति प्राप्त हों। अत: हमारे धर्म का मामला हानि दूर करने से आरंभ हुआ और भलाई को पूर्ण करने पर समाप्त होगा और इस बयान में विचार करने वालों के लिए

فيه آيات للمتدبّرين۔ثم إن آية الإسراء تدلّ على نُكتة وجَب ذكرُها للإصدقاء ليزدادوا عِلمًا ويقينًا، وإن خير الاموال العلم واليقين، وهو أن الإسراء من حيث الزمان كان واجبًا كوجوب الإسراء من حيث المكان، ليتمّ سيرُ نبيِّنا زمانا ومكانا، وليكمُلَ أمرُ معراج خاتم النبيين ۔ ولا شكّ أن أقصى الزمان للمعراج الزماني هو زمان المسيح الموعود، وهو زمان كمال البركات ويقبله كل مؤمن من غير الجحود، ولا شك أن مسجد المسيح الموعود هو أقصى المساجد من حيث الزمان من المسجد الحرام، وقد مُلِءَ مِن كلّ جنب بركةً ونورًا كالبدر التام، ليكمُل به دائرة الدين، فإن الإسلام بُدِئَ كالهلال من المسجد الحرام، ثم صار قمرًا تامًّا عند بلوغه إلى المسجد الاقصٰى، ولذالك ظهر المسيح فی عِدّة البدر إشارةً إلى هذا

निशान है। फिर 'अस्रा' की आयत एक अद्भुत रहस्य रखती है इसलिए उसका वर्णन करना दोस्तों के लिए आवश्यक है ताकि ज्ञान और विश्वास में वृद्धि हो और यह भली-भांति प्रकट है कि सब से उत्तम धन-दौलत ज्ञान और विश्वास है और वह यह कि 'अस्रा' समय एवं स्थान की दृष्टि से दोनों प्रकार से उचित और अनिवार्य था। इस पहलू से कि हमारे नबी का यात्रा करना समय और स्थान की दृष्टि से पूर्ण हो और मे'राज का मामला पूर्ण हो तथा इसमें सन्देह नहीं कि नबी करीम के सामयिक मे'राज के लिए अन्तिम युग मसीह मौऊद का युग है। और वह बरकतों के पूर्ण होने का युग है तथा उसे प्रत्येक मोमिन इन्कार किए बिना स्वीकार कर सकता है और इसमें सन्देह नहीं कि मसीह मौऊद की मस्जिद मस्जिद हराम की अपेक्षा युग की दृष्टि से अक़्सा मस्जिद है। और निस्सन्देह इस मस्जिद का प्रत्येक पहलू बरकत और नूर से पूर्ण चन्द्रमा की भांति भर गया है ताकि उसके माध्यम से धर्म का दायरा पूर्ण हो जाए। क्योंकि इस्लाम पहली रात के चाँद के समान मस्जिद-ए-हराम से प्रकट हुआ

المقام۔ ثم هنا دليل آخر على وجوب الإسراء الزمانى من الامر الربّانى وهو أن الله تعالى قد أشار فى قوله ''وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ'' إلى أنَّ جماعة المسيح الموعود عند الله من الصحابة مِن غير فرق فى التسمية، ولا يتحقّق هٰذه المرتبة لهم من غير أن يكون النبى صلى الله عليه وسلم بينهم بقوته القدسية والإفاضة الروحانية كما كان فى الصحابة، أعنى بواسطة المسيح الموعود الذى هو مظهرٌ له أو كالحُلّة۔ فقد ثبت من هذا النصّ الصريح من الصحف المطهّرة أن معراج نبيّنا كما كان مكانيًّا كذالك كان زمانيًّا، ولا يُنكره إلّا الّذى فقد بصره وصار من العمين۔ ولا شك ولا ريب أن المعراج الزمانى كان واجبًا تحقيقًا لمفهوم هذه الآية، ولو لم يكن لبطل مفهومها كما لا يخفى على أهل الفكر والدّراية، فثبت من هذا أن المسيح الموعود

फिर जब मस्जिद अक़्सा तक पहुंचा तो पूर्ण 'बदर' (चौदहवीं का चाँद) हो गया इसीलिए मसीह मौऊद पूर्णिमा की गणना (अर्थात चौदहवीं सदी) में प्रकट हुआ। फिर दूसरा तर्क युग का 'अस्त्रा' के अनिवार्य होने पर यह है कि ख़ुदा तआला

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल जुम्अः - 4)

के कथन में संकेत करता है कि मसीह मौऊद की जमाअत ख़ुदा के नज़दीक सहाबा की एक जमाअत है और इस नाम रखने में कुछ अन्तर नहीं और यह श्रेणी मसीह की जमाअत को कदापि प्राप्त नहीं होती जब तक कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के मध्य क़ुव्वत-ए-क़ुद्सी और अपने रूहानी लाभ के साथ मौजूद न हों जैसा कि सहाबा के अन्दर मौजूद थे अर्थात् मसीह मौऊद के माध्यम से, क्योंकि वह नबी करीम का द्योतक या उनके के लिए लिबास के समान है। अतः इस स्पष्ट आदेश से प्रकट हुआ कि हमारे नबी का मे'राज स्थान एवं समय दोनों प्रकार से था और इस रहस्य का अन्धे के अतिरिक्त और कोई इन्कार नहीं करता और सन्देह नहीं कि इस

مظهرٌ للحقيقة المحمّدية، ونازل فى الحُلل الجلالية، فلذالك عُدَّ ظهوره عند الله ظهورَ نبيّه المصطفٰى، وعُدَّ زمانه منتهى المعراج الزمانى للرسول المجتبٰى، ومنتهى تَجلّى روحانيةِ سيّدِنا خيرالورى، و كان هذا وعدًا مؤكّدًا من رب العالمين ۔ ولما كان المسيح الموعود لوجود نبيّنا كالمرآة ومُتمِّمَ أمره بإشاعة البركات و إظهار الإسلام على الاديان كلها بالآيات، شكَر النبيُّ صلى الله عليه وسلم سعيه كشكر الآباء للإبناء ، وأوصى ليُقرَأ سلامُه عليه إشارةً إلى السلامة والعلاء ۔ ولو كان المراد من المسيح عيسى ابنَ مريم الذى أُنزلَ عليه الإنجيل لفسُد وصيّةُ تبليغ السلام وما كان إليها السبيل، فإن عيسٰى عليه السلام اذا نزل بقولكم من السّماء فلا شك

आयत का अर्थ अनिवार्यत: सामयिक मे'राज को चाहता था। और यदि वह निश्चित न होता तो इस आयत का अर्थ असत्य हो जाता। अत: इस रहस्य को सोच-विचार करने वाले समझते हैं। यहाँ से सिद्ध हुआ कि मसीह मौऊद मुहम्मदी वास्तविकता का द्योतक है और प्रतापी लिबासों में अवतरित हुआ है इसीलिए ख़ुदा के नज़दीक उस का प्रादुर्भाव नबी-ए-मुस्तफ़ा का प्रादुर्भाव माना गया है। और उस का युग रसूले करीम के सामयिक मे'राज का अन्त और सृष्टि में सर्वोत्तम की रूहानी आभा (तजल्ली) का अन्तिम सिरा समझा गया है। और संसार के प्रतिपालक का यह अटल वादा था और चूंकि मसीह मौऊद नबी करीम के अस्तित्व का दर्पण और बरकतों का प्रसारण और समस्त धर्मों पर इस्लाम की विजय से आंहज़रत के आदेश को सम्पन्न करने वाला था। इसलिए नबी करीम ने उसके प्रयास को पसन्द किया जैसा कि बाप-बेटों के प्रयास का धन्यवाद करते हैं। और वसीयत की कि आंजनाब का सलाम उसको पहुँचाया जाए और इस सलाम में यह संकेत है कि सलामती और बुलन्दी मसीह के साथ होगी और यदि मसीह मौऊद से इंजील वाला ईसा इब्ने मरयम अभिप्राय

أنـه كان يَعرفـه رسـولنا كالاحبّـاء ، بـل كان يسـلِّم بعضُهمـا عـلى البعض عنـد اللقـاء ، فيكـون عنـد ذالـك إيـداعُ أمانـةِ السـلام لغوًا وعَبثًـا كالاسـتهزاء لِمـا هـو وقَـع فى السـماء مـرارا و كان معلومًـا قبـل الإعـلام و الإدراء ۔ ثـم مـن المعلـوم أنـه عليـه السـلام قـد لقـىَ عيسٰـى ليـلةَ المعـراج وسـلّم عليـه، فـلا شـك إليـه ۔ ومـا معـنى وصيّـةِ السَّـلام لرجـل رآه رسـول الله صـلى الله عليـه وسـلم غـيرَ مـرّة قبـل الوفـاة و بعـد الوفـاة ۔ وَ سَـلَّمَ عليـه ليـلة المعـراج ومـا فارقَـه بعـد المـوت فى وقـت مـن الاوقـات ۔ أكان هـذا الامـر غـيرَ ممكـن إلّا بواسـطة بعـض أفـراد الامّـة ؟ ففكّـرْ إن كنـتَ مـا مَسَّـك طائـفٌ مـن الجِنَّـة ۔ أمـا تـرى أن النـبىّ مـا مَسَّـك طائـفٌ مـن الجِنَّـة۔ أمـا تـرى أن النـبىّ صـلى الله عليـه وسـلم لمـا مـات تيسّـرَ له لقـائُ

हो तो सलाम पहुँचाने की वसीयत बेकार हो जाती है और उस तक कोई मार्ग नहीं रहता क्योंकि जब तुम्हारे कहने के अनुसार ईसा आकाश से उतरा तो इसमें सन्देह नहीं कि रसूले करीम और वह दोनों आपस में दोस्तों की तरह जान-पहचान रखते होंगे तथा मुलाक़ात (भेंट) के समय एक-दूसरे को सलाम करते होंगे। अत: इस स्थिति में सलाम को अमानत की भांति रखना एक व्यर्थ कार्य होगा, क्योंकि सलाम अनेक बार आकाश में हुआ और सतर्क करने से पहले मालूम था। इसके अतिरिक्त स्पष्ट है कि रसूले करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने मे'राज की रात हज़रत ईसा को देखा और उस पर सलाम कहा। अत: कोई सन्देह नहीं कि आंजनाब ने सलाम की वसीयत ऐसे व्यक्ति के लिए की है कि उसको नहीं देखा है और उसके इच्छुक रहे। और उस व्यक्ति के लिए सलाम की वसीयत के क्या मायने हैं जिस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई बार स्वर्गवासी होने से पूर्व और स्वर्गवास के पश्चात् देखा और मे'राज की रात उस पर सलाम कहा और मृत्यु के पश्चात् किसी समय उस से अलग न हुए? क्या यह बात बिना किसी उम्मती मनुष्य के माध्यम के संभव न थी।

عیسٰی فی کلّ حین من الاحیان، و قد رأی عیسٰی لیلۃ الإسراء، فکانت أبواب السَّلام مفتوحۃً من غیر توسُّطِ أبناء السَّلام مفتوحۃً من غیر توسُّطِ أبناء ھذا الزمان، فلا تجعلْ سَلَامَ رسول اللّٰہ لغوًا، و أمعِنْ حقّ الإمعان۔ ربّ بَلِّغْہ سلامًا مِّنّا، و إنّ ھٰذا خاتمۃ البیان۔

تمّت

अत: विचार कर यदि पागल नहीं। क्या तू विचार नहीं करता कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस संसार से चले गए तो आंजनाब को हज़रत ईसा की मुलाक़ात का अवसर हर समय मिलता था इस से पहले 'अस्रा' की रात में आपस में मुलाक़ात हुई थी और इस कारण से सलाम का दरवाज़ा इस युग के लोगों के माध्यम के बिना खोला गया था। अत: रसूलुल्लाह के सलाम को व्यर्थ एवं निरर्थक न समझ और उसके अर्थों में पूर्णतया ध्यानपूर्वक विचार कर। हे हमारे प्रतिपालक! हमारा सलाम उस पर भेज।

समाप्तम

القَصيدهلِكُلِّ قريحةٍسعيدة

(प्रत्येक सत्प्रकृति के लिए एक क़सीदा)

أرى سـيلَ آفـاتٍ قضاهـا المقـدِّرُ وفـى الخَلْـق سَـيّات تُـذاع وتُنشَـرُ

मैं उन आपदाओं के सैलाब (बाढ़) को देख रहा हूं जिन को तक़दीर बनाने वाले ख़ुदा ने मुक़द्दर किया है और सृष्टि में ऐसी बुराइयां (विद्यमान) हैं जो फैलाई और प्रसारित की जा रही हैं।

وفـى كلّ طـرف نـارُ شـرٍّ تَأَجّجَـتْ وفـى كلّ قلـب قـد تَـرائَ ى التحجُّـرُ

और हर ओर फ़साद तथा उपद्रव की अग्नि भड़क उठी है और प्रत्येक हृदय में कठोरता प्रकट हो गई है।

وقـد زُلزلـتْ مِـن هـذه الريـح دَوحـةٌ تُظِـلُّ بظـلٍّ ذى شـفائٍ وتُثْمِـرُ

और उस वायु से वह वृक्ष हिल गया है जो रोग से मुक्ति देने वाला और छाया देने वाला तथा फ़लदार था।

أرى كلَّ محجـوبٍ لدنيـاه باكِيًـا فمَـن ذا الـذى يبكـى لديـنٍ يُحقَّـرُ

मैं देखता हूं कि प्रत्येक लापरवाह अपनी दुनिया के लिए रो रहा है। फिर कौन है जो धर्म के लिए रोए, जिसका तिरस्कार किया जा रहा है।

وللديـن أطـلالٌ أراهـا كلاهِـفٍ ودمعـى بذكـرِ قُصـوره يَتحَـدَّرُ

और धर्म के खंडरात हो चुके हैं जिन्हें मैं शोकग्रस्त के समान देख रहा हूं और मेरे आंसू उस के महलों की याद में बह रहे हैं।

تـراء تْ غوايـاتٌ كريـحٍ مُجيحـةٍ وأرخَـى سـديلَ الغـيِّ ليـلٌ مُكـدِّرُ

उन्मूलन करने वाली वायु के समान गुमराहियां प्रकट हो गई हैं और अंधकारमय रात ने गुमराही का पर्दा लटका दिया है।

أرى ظلماتٍ ليتني مِتُّ قبلها وذقتُ كؤوسَ الموت أو كنتُ أُنصَرُ

मैं अंधकारों को देखता हूं। काश मैं उन से पहले ही मर जाता और मौत के प्याले चख लेता या फिर मेरी सहायता की जाती।

تهبّ رياحٌ عاصفات كأنّها سِباعٌ بأرض الهند تعوى وتَزْأَرُ

तेज़ हवाएं इस प्रकार चल रही हैं जैसे कि वे हिन्द की सरज़मीन में दरिन्दे हैं जो चीख रहे और दहाड़ रहे हैं।

أرى الفاسقين المفسدين وزُمْرَهم وقلّ صلاحُ الناس والغيُّ يكثُرُ

मैं दुराचारी उपद्रवियों और उनके गिरोहों को ही देख रहा हूं और लोगों की नेकी कम हो गई और गुमराही बढ़ गई है।

أرى عينَ دين الله منهم تكدّرتْ بها العِينُ والآرامُ تمشى وتَعبُرُ

मैं देखता हूं कि ख़ुदा के धर्म का चश्मा (स्रोत) उनके कारण गन्दा हो गया है और उसमें नील गाय तथा मृग चल रहे हैं और उसे पार कर रहे हैं। (अर्थात् उस का मालिक एवं वारिस कोई नहीं रहा)

أرى الدين كالمرضى على الأرض راغمًا وكلّ جهولٍ فى الهوى يَتبَخْتَرُ

मैं धर्म को रोगियों के समान पृथ्वी पर मिट्टी में सना हुआ पाता हूं और प्रत्येक अज्ञानी अपनी तामसिक इच्छा में मटक-मटक कर चल रहा है।

وما هَمُّهم إلّا لِحَظِّ نفوسهم وما جُهْدُهم إلّا لعيشٍ يُوفَّرُ

और उनकी सम्पूर्ण चिन्ता उन के अपने आनन्द के लिए ही है और उनका समस्त प्रयास ऐसे ऐश्वर्य के लिए ही है जिसे बढ़ाया जाए।

نسُوا نَهْجَ دين الله خُبْثًا وغَفْلَةً وقد سَرَّهم بَغْيٌ وفسق ومَيسِرُ

वे अपवित्रता और लापरवाही से अल्लाह के धर्म का मार्ग भूल गए हैं और उन्हें उद्दण्डता, दुराचार और जूआ खेलना पसन्द आ गया है।

فَلَمَّـا طَغَـى الفسـق المبيـدُ بسـيله تمنَّيـتُ لـو كان الوبـاء المتبِّـرُ

जब विनाशकारी बुराई के सैलाब में उफ़ान आ गया तो मैंने चाहा कि घातक महामारी आ जाए।

فـإنّ هـلاک النـاس عنـد أولـی النُّهٰـی أحَـبُّ و أَولٰـی مِـن ضـلالٍ يُدمِّـرُ

क्योंकि बुद्धिमानों के निकट लोगों का मर जाना विनाशकारी गुमराही से अधिक रुचिकर और उत्तम है।

صبرْنـا علـی ظلـم الخلائـق كلِّهـم ولكـنْ علـی سـيل الشـقا لا نصبـرُ

हमने सब लोगों के अत्याचार पर सब्र किया है परन्तु हम दुर्भाग्य के सैलाब पर सब्र नहीं कर सकते।

وقـد ذاب قلبـی مِـن مصائـب ديننـا وأعلَـمُ مـا لا تعلمـون وأُبصِـرُ

और अपने धर्म के संकटों से मेरा दिल पिघल गया है और मैं वह कुछ जानता और देखता हूं जो तुम नहीं जानते।

وبَثِّـی وحُزنـی قـد تجـاوزَ حـدَّه ولـولا مِـن الرحمٰـن فضـلٌ أُتبَـرُ

और मेरा रंज-व-ग़म अपनी सीमा से बढ़ गया है और यदि रहमान ख़ुदा की कृपा न होती तो मैं मर जाता।

وعنـدی دمـوع قـد طلعـنَ المآقيـا وعنـدی صُـراخٌ لا يـراه المُكَفِّـرُ

और मेरे आंसू आंख के कोने से बाहर निकल आए हैं और मैं ऐसी चीख़-व-पुकार करता हूं जिसे काफ़िर ठहराने वाला नहीं देखता।

ولـی دعـواتٌ يَصْعَـدَنَّ إلٰـی السَّـما ولـی كلمـاتٌ فـی الصَّلايـة تَقْعَـرُ

और मेरी दुआएं ऐसी हैं जो आकाश पर जाती हैं और मेरे वाक्य पत्थर पर प्रभाव करते हैं।

وأُعطيتُ تأثيرًا من الله خَالقى فتأوى إلى قولى جَنانٌ مُطهَر

और मुझे अपने स्रष्टा ख़ुदा की ओर से तासीर (प्रभाव) प्रदान की गई है। अत: पवित्र हृदय मेरे कथन की ओर शरण लेता है।

وإنّ جَنانى جاذبٌ بصفائهِ وإن بيانى فى الصُّخور يُؤَثِّرُ

और निस्सन्देह मेरा हृदय साफ़ होने के कारण आकृष्ट करने वाला है और निस्सन्देह मेरा ईमान चट्टानों पर भी प्रभावकारी है।

حفَرتُ جبالَ النفس مِن قوّة العُلٰى فصار فؤادى مثلَ نهرٍ تُفَجَّرُ

मैंने ख़ुदाई सामर्थ्य से नफ़्स के पहाड़ों को खोदा है जिससे मेरा दिल नहर की तरह हो गया जो जारी की जाती है।

وأُعطيتُ رعبًا عند صَمْتى من السّما وقولى سِنان أو حُسام مُشهَّرُ

और अपनी ख़ामोशी के समय मुझे आकाश से रोब दिया गया है और मेरा कथन भाला या नंगी तलवार है।

فهذا هو الأمر الذى سَرَّ مالكى وأرسلَنى صدقًا وحقًّا فأُنذِرُ

अत: यह वह बात है जिसने मेरे मालिक को प्रसन्न किया और उसने मुझे हक़ एवं सच्चाई देकर भेजा ताकि मैं सचेत करूं।

إذا كذَّبَتْنِى زُمْرُ أعدائِ مِلّتى فقلتُ اخْسَأُوا إنّ الخفايا ستَظهَرُ

जब मेरे धर्म के शत्रुओं के गिरोह ने मुझे झुठलाया तो मैंने कह दिया "दूर हो जाओ" गुप्त बातें शीघ्र ही प्रकट हो जाएंगी।

فريقٌ من الأحرار لا يُنكِروننى وحزب من الأشرار آذَوا وأنكرُوا

सुशील लोगों का गिरोह मेरा इन्कार नहीं करता और दुष्ट लोगों के गिरोह ने मुझे कष्ट दिया है और मेरा इन्कार किया है।

وقـد زاحمـوا فـی کلّ أمـرٍ أردتُـه   فأیّدنـی ربّـی ففَـرُّوا وأدبـرُوا

और उन्होंने प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप किया जिसका भी मैंने इरादा किया इस पर मेरे रब्ब ने मेरा समर्थन किया तो वे भाग गए और पीठ फ़ेर ली।

وکیـف عصَـوا واللہ لـم یُـدْرَ سِـرُّها   وکان سـنا صدقـی مـن الشّـمس أظهَـرُ

अल्लाह की क़सम! इस का भेद समझ नहीं आया कि उन्होंने कैसे अवज्ञा की। हालांकि मेरी सच्चाई का प्रकाश सूर्य से भी अधिक स्पष्ट था।

لزِمـتُ اصطبـارًا عنـد جَـورِ لئامِهـم   وکان الأقـارب کالعقـارب تأبَـرُ

इन में से नीच लोगों के अत्याचार के समय मैंने सब्र कर लिया और मेरे निकट संबंधी भी बिच्छुओं के समान डंक मार रहे थे।

وهـذاعلـی‌الإسـلام‌إحـدی‌المصائـبِ   یُکـذَّب مثلـی بِالهـوٰی ویُکفَّـرُ

और इस्लाम पर समस्त संकटों में से यह भी एक संकट है जो मेरे जैसे व्यक्ति को तामसिक इच्छाओं के कारण झुठलाया और काफिर ठहराया जा रहा है।

فأقسـمتُ بـاللہ الـذی جـلَّ شـأنُهُ   عَلٰـی أنـه یُخـزِی العِـدا وأُعـزَّرُ

और मैंने अल्लाह की क़सम खाई है जिसकी शान बुलन्द है, इस बात पर कि वह शत्रुओं को बदनाम करेगा और मुझे श्रेष्ठता दी जाएगी।

ولِلْغَـیِّ آثـارٌ وللرشـد مثلُهـا   فقومـوا لتفتیـش العلامـات وانظُـروا

और गुमराही की कुछ निशानियां हैं और हिदायत की भी उसी की तरह कुछ निशानियां हैं। तो तुम निशानियों की खोज के लिए उठो और विचार करो।

تظنّـون أنـی قـد تقوَّلـتُ عامِـدًا   بمکـرٍ وبعـضُ الظـنّ إثـمٌ ومُنکَـرُ

तुम यह समझ रहे हो कि मैंने षड्यंत्र करके जान बूझ कर झूठा कथन गढ़ लिया है। हालांकि कुछ अवधारणाएं पाप और घृणित होती हैं।

وكيف وإنّ الله أبدَى بَرَائَ تِىْ وجاء بآيات تلُوح وتَظهَرُ

और यह क्योंकर हो सकता है जबकि ख़ुदा ने मेरा बरी होना प्रकट कर दिया है और वह ऐसे निशान ले आया है जो स्पष्ट तथा प्रकट हो रहे हैं।

ويأتيک وعدُ الله مِن حيث لا تَرى فتعرِفه عينٌ تُحَدُّ وتُبصِرُ

और तेरे पास ख़ुदा का वादा इस प्रकार आ जाएगा कि तू देख नहीं रहा होगा। तो उसको वही आँख पहचाती है जो तेज़ होती है और ख़ूब देखती है।

وليس لعَضْبِ الحقّ فى الدَّهر كاسرًا ومَن قام للتكسير بخلًا فيُكسَرُ

और सच की तलवार को युग में कोई तोड़ने वाला नहीं और जो कृपणता से तोड़ने के लिए खड़ा होगा वह स्वयं तोड़ दिया जाएगा।

ومَن ذا يعادينى وربّى يحبّنى ومَن ذا يُرادِينى إذا اللهُ ينصُرُ

और कौन है जो मुझ से शत्रुता करे जबकि मेरा रब्ब मुझ से प्रेम करता है और कौन मुझे मार सकता है जबकि अल्लाह मुझे सहायता दे रहा है।

ويعلَم ربّى سِرَّ قلبى وسِرَّهم وكلُّ خفىّ عنده مُتَحَضِّرُ

और मेरा रब्ब मेरे दिल के भेद और उनके भेद को जानता है और प्रत्येक गुप्त चीज़ उसके पास उपस्थित है।

ولو كنتُ مردودَ المليک لضَرَّنى عداوةُ قوم كذّبونى وحقَّروا

और यदि मैं ख़ुदा की ओर से जो मेरा मालिक है, धिक्कृत होता तो झूठा कहने वाली और अपमानित करने वाली क़ौम की शत्रुता मुझे अवश्य हानि पहुंचाती।

ولكننى صافَيتُ ربّى فجاء نى من الله آياتٌ كما أنت تنظُرُ

परन्तु मैंने अपने रब्ब से निष्कपट दोस्ती की तो अल्लाह की ओर से निशान जैसा कि तू देख रहा है, मेरे पास आ गए।

وما كان جَوْرُ الخَلْق مستحدَثًا لنا فإنّ أذاهم سنّةٌ لَا تُغَيَّرُ

और सृष्टि का अत्याचार हमारे लिए कोई नई बात नहीं थी क्योंकि उन का दुख देना एक अपरिवर्तनीय सुन्नत है।

إِذَا قِيْل إنّک مرسَلٌ خِلتُ أنّنی دُعيتُ إلی أمرٍ عَلی الخَلْق يَعسِر

जब मुझे कहा गया कि तू रसूल है तो मैंने सोचा कि मैं एक ऐसी बात की ओर बुलाया गया हूं जो सृष्टि पर कठिन गुज़रेगी।

أمُكْفِرِ مَهْلًا بعضَ هٰذا التحكُّمِ وخَفْ قَهْرَ رَبٍّ قال لَا تَقْفُ فَاحْذَرْ

हे मुझे काफ़िर कहने वाले! इस ज़बरदस्ती करने से कुछ रुक जा और ख़ुदा के प्रकोप से डर जिसने कहा है ‹لَا تقفُ› अत: सावधानी से काम ले।

و إذ قلتُ إنّی مسلم قلتَ كافرٌ فأين التُقٰی يَا أيها المُتهوِّر

जब मैंने कहा कि मैं मुसलमान हूं तूने कहा कि काफ़िर है। तो तक़्वा (संयम) कहां गया? हे अनुचित दिलेरी करने वाले!

وإنْ كنتَ لا تخشٰی فقُلْ لست مؤمنا ويأتی زمانٌ تُسأَلَنَّ وتُخبَرُ

और यदि तू डरता नहीं तो तू कहता रह कि तू मोमिन नहीं और वह समय आ रहा है कि तू पूछा जाएगा और तुझे सूचित किया जाएगा।

وإنی تركتُ النفسَ والخَلْقَ والهوٰی فلا السبُّ يؤذينی ولا المدح يُبطِرُ

और मैंने नफ़्स, सृष्टि और नफ़्स की इच्छा को त्याग दिया है इसलिए अब न गाली मुझे कष्ट देती है और न प्रशंसा गर्व दिलाती है।

وَكَمْ مِن عَدوٍّ بعدما أكملَ الأذٰی أتانی فلم أَضْعَزْ وما كنتُ أصعَرُ

और बहुत से शत्रु हैं जो कष्ट को चरम सीमा तक पहुंचाने के पश्चात् मेरे पास आए तो मैंने न विमुखता का व्यवहार किया और न ही विमुखता मेरा आचरण था।

أرى الظلـمَ يبقـى فـى الخراطيـم وَسْـمُهُ وأمّـا علامـات الأذٰى فتُغيَّـرُ

मैं देखता हूं कि अत्याचार का निशान नाकों पर शेष रह जाता है परन्तु कष्ट उठाने की निशानियों का जहाँ तक सम्बन्ध है तो वे तो परिवर्तित हो जाया करती हैं।

وَوَاللهِ إنّـى قـد تبِعـتُ مُحَمَّـدًا وفـى كل آنٍ مِـن سـناه أُنـوَّر

और ख़ुदा की क़सम! मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया है और मैं प्रतिपल उन्हीं के प्रकाश से प्रकाशित किया जाता हूं।

عجبـتُ لِأَعْمٰـى لا يـداوى عيونَـهُ ومنّـا بجَـوْرِ الجهـل يلـوى ويَسـخَرُ

मुझे उस अंधे पर आश्चर्य है जो अपनी आंखों का इलाज नहीं करता और जहालत से पैदा हुए अत्याचार के कारण वह हम से झगड़ता और उपहास करता है।

أَتَنسـى نجاسـاتٍ رضِيـتَ بأكلهـا وتَهمِـزُ بهتانًـا بَرِيًّـا وتذكُـرُ

क्या तू उन मलिनताओं को भूल रहा है जिन के खाने को तू पसन्द कर चुका है और तू एक निष्पाप व्यक्ति पर इल्ज़ाम लगाता है और उसकी चर्चा करता रहता है।

إذا قَـلَّ عِلـم المَـرء قَـلَّ اتقـاؤه فيسـعٰى إلٰـى طـرق الشّـقا ويُـزَوِّرُ

जब मनुष्य का ज्ञान कम हो जाता है तो उसका संयम भी कम हो जाता है। अत: वह दुर्भाग्य के मार्गों पर दौड़ता और छल से काम लेता है।

ومـا أنـا ممـن يمنَـع السـيفُ قصـدَه فكيـف يخوّفنـى بشـتمٍ مكفِّـرُ

और मैं उन लोगों में से नहीं हूं कि तलवार उनके इरादे को रोक सके। तो एक काफ़िर कहने वाला मुझे गालियों से कैसे भयभीत कर सकता है।

لنـا كلَّ يـوم نصـرةٌ بعـد نصـرةٍ فمُـتْ أيهـا النّـارى بنـارٍ تُسـعّر

हमें प्रतिदिन सहायता पर सहायता मिल रही है। तो हे ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले! उस अग्नि के द्वारा नष्ट हो जा जिसे तू स्वयं ही भड़क रहा है।

وُعِدْنا مِنَ الرَّحْمٰن عِزًّا وسُؤْدَدًا   فقُمْ وَامْحُ هذا النقش إنْ كنتَ تقدِرُ

हमें रहमान ख़ुदा की ओर से सम्मान एवं सरदारी का वादा दिया गया है। अत: उठ यदि तू सामर्थ्य रखता है तो उस नक़्श को मिटा दे।

ألا إنما الأيام رَجَعتُ إلى الهدٰى   هنيئًا لكم بعثى فبَشُّوا وأَبْشِروا

सुन लो ज़माना हिदायत की ओर लौट पड़ा है। तुम्हारे लिए मेरा अवतरण मुबारक हो। अत: प्रसन्न हो जाओ और ख़ुशी मनाओ।

دَعُوا غيرَ أمرِ الله واسعَوا لأمرِهِ   هو الله مولانا أَطِيعوه واحضُروا

ख़ुदा के अतिरिक्त जो भी है उसके आदेश को त्याग दो और ख़ुदा के आदेश (के आज्ञापालन) का प्रयास करो। अल्लाह ही हमारा मौला है उस का आज्ञापालन करो और उपस्थित हो जाओ।

ألا ليس غيرُ الله فى الدهر باقيًا   وكلُّ جليس مَا خَلَا الله يهجرُ

सुनो! ख़ुदा के अतिरिक्त ज़माने में कोई शेष रहने वाला नहीं और अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक साथ बैठने वाला जुदा कर दिया जाएगा।

تمّت

समाप्तम

☆

حاشية متعلقة بالخطبة الإلهامية

ما الفرق بين آدم و المسيح الموعود

إن الله خلق آدم لينقل الناس من العدم إلى الوجود، ومن الوحدة إلى الكثرة، و جعَلهم شعوبا و قبائل و فِرقا و طوائف ليُرى ألوانَ القدرة، وليبلو أيُّهم أحسنُ عملا ومن السابقين. وجعل آدم مظهرًا الاسمه الذى هو مبدئٌ للعالم. أعنى الاوّل كما جاء قوله "هُوَ الاوَّلُ" فى الكتاب المبين. ولاجل أن الاوّلية تقتضى ما بعدها اقتضتْ نفسُ آدم رجالا كثيرا ونسائً، فنزَل الامر و أضنَأَت النسائُ و كثُر الناس و مُلئت الارض من المخلوقين. ثم طال عليهم الامد و كثرت فِرقهم و آراؤهم، و تخالفتْ أمانيهم و أهواؤهم، و كان أكثرهم

ख़ुत्बा इल्हामिया के बारे में हाशिया

आदम और मसीह मौऊद में क्या अन्तर है

अल्लाह तआला ने आदम को पैदा किया ताकि मनुष्यों को अनस्तित्व से अस्तित्व की ओर तथा एकत्व से अधिकता की ओर ले आए। उसने उन्हें विभिन्न ख़ानदानों, क़बीलों, गिरोहों और जमाअतों के रूप में बनाया ताकि क़ुदरत के रंग दिखाए और परखे कि उनमें से कौन कर्म की दृष्टि से अच्छा और आगे बढ़ने वालों में से है। अल्लाह ने आदम को अपनी उस पहली विशेषता का द्योतक बनाया, जो संसार का स्रोत है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में उसका कथन "हुवल अव्वल" (वही सबका आदि है) वर्णित है। और इस कारण से कि प्राथमिकता अपने बाद कुछ और की मांग करती है स्वयं आदम ने भी पुरुषों और स्त्रियों की मांग की। तो आदेश उतरा और स्त्रियों की बहुत सन्तान हुई तथा लोगों की प्रचुरता हो गई और पृथ्वी मख़्लूक़ से भर गई। फिर उन पर समय लम्बा हो गया और उन के गिरोह तथा उनकी रायें बहुत अधिक हो गईं और उनकी तमन्नाएं एवं इच्छाएं परस्पर विरोधी हो गईं और उन में से अधिकतर पापी हो गए। परिणाम स्वरूप उन में से कुछ अन्य पर आक्रमण करने लगे और वे पाप

فاسقین۔ فطفقوا یصول بعضھم علی بعض، وزادوا فسقًا وطغوی، وأرادوا أن یأکل قویّھم ضعیفھم کدودۃ تأکل دودۃ أخری وکانوا غافلین۔ حتی إذا اجتمعت فیھم کل ضلالۃ کانت من لوازم زمن المسیح الموعود، وصُبّتْ علی الإسلام کل مصیبۃ، وصار کالحیّ المؤءُوْد، وبلغت الإیّامُ منتھاھا وصارت کاللیالی فی الظلمات، واقتضی الزمان حربًا ھی آخر المحاربات★۔ فھناك أرسل اللّٰہ مسیحہ لھذہ الحرب، لیجلو غیاھبَ الکفر ویدمّر الظالمین بالحُجّۃ

एवं उद्दण्डता में बढ़ गए। उन्होंने चाहा कि उन में से शक्तिशाली कमज़ोर को खा जाए जैसे कि एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खा जाता है और वे लापरवाह थे। यहाँ तक कि जब उनमें हर वह गुमराही इकठ्ठी हो गई जो मसीह मौऊद के युग के लिए अनिवार्य थी और इस्लाम पर हर प्रकार की मुसीबत टूट पड़ी और वह ज़िन्दा दफन कर दिए गए के समान हो गया और ज़माना अपनी पराकाष्ठा को पहुंच गया और अंधेरों में रातों के समान हो गया और ज़माने ने इस जंग की मांग की जो जंगों में से अंतिम है, तब उस समय अल्लाह ने अपने मसीह को उस जंग के लिए भेजा ताकि कुफ्र के अंधेरों को दूर कर दे और अत्याचारियों

★الحاشیۃ۔ کان اللّٰہ قد قدر من الازل ان تقع الحرب الشدید مرتین بین الشیطان والانسان۔ مرۃ فی اوّل الزمن و مرۃ فی اٰخر الزمان۔ فلمّا جاء وعد اولٰھما اغوی الشیطان الذی ھو ثعبان قدیم حواء۔ واخرج اٰدم من الجنۃ ونال ابلیس مرادا شاء۔ وکان من الغالبین۔ ولما جاء وعد الاٰخرۃ اراداللّٰہ ان یرد لاٰدم الکرۃ علی ابلیس وفوجہ ویقتل ھٰذاالدجال بحربۃ منہ فخلق

अल्लाह ने अनादिकाल से ही यह निर्धारित कर रखा था कि शैतान और मनुष्य के मध्य दो बार भयानक जंग होगी एक बार प्रारंभिक ज़माने में और दूसरी बार अंतिम ज़माने में. अत: जब इन दोनों जंगों में से पहली का समय आया तो शैतान ने जो पुराना सांप है, हव्वा को गुमराह कर दिया और आदम को जन्नत से निकलवा दिया और इब्लीस ने अपनी मनचाही मुराद को पा लिया और विजेताओं में से हो गया. और जब अंतिम वादे का समय आया तो अल्लाह ने चाहा कि फिर आदम को इब्लीस और उसकी सेना पर विजय प्रदान करे और अपनी ओर से प्रदान किए हुए हथियार से उस दज्जाल को क़त्ल करे, तो उसने मसीह मौऊद

لا بالطعن والضرب، ويقطع دابر الكافرين، وليرجع الناس إلى الاتّحاد والمحويّة بعد ما كانوا متخالفين. فثبت من هذا المقام أن المسيح الموعود قد قابلَ آدم في هذه الصفات كضدٍّ تقابلَ ضدًّا آخر في الخواص والتأثيرات، وإن في ذالك لآية للمتقين. ثم اعلم أن هذا التضاد بين آدم والمسيح الموعود ليس مخفيا ومن النظريات، بل هو أظهرُ الأشياء ومن أجلى البديهيات. فإن آدم أتى ليخرج النفوسَ إلى هذه الحياة الدنيا وليوقد بينهم نارَ الاختلاف

को भाले और तलवार के वार से नहीं बल्कि दलील के दृष्टिकोण से समाप्त कर दे। और ताकि काफिरों की जड़ काट दे और ताकि लोग परस्पर विरोधी हो जाने के बाद फिर एकता और फना की तरफ लौट आएं। अत: इस मुकाम से सिद्ध हुआ के मसीह मौऊद इन विशेषताओं में उसी प्रकार आदम के सामने है जैसा कि विशेषताओं और प्रभावों में एक विरोधी चीज़ दूसरी के सामने होती है। निस्संदेह इसमें संयमियों के लिए एक निशान है। फिर स्पष्ट हो कि आदम और मसीह के मध्य यह विरोधाभास छुपा हुआ या केवल दृष्टिकोण नहीं है बल्कि

المسيح الموعود الذى هو اٰدم بمعنى ليدمر هٰذا الثعبان و يُتبرّ ما علا تتبيرا۔ فكان مجئ المسيح واجبا ليكون الفتح لاٰدم فى اٰخر الامر و كان وعدا مفعولا۔ وقد اشار الله سبحانه الى هذا الفتح العظيم وقتل الدجال القديم الذى هو الشيطان فى قوله قال۔ يعنى لا يقع امر استيصالك التام۔ وتتبير ما علوت من انواع الشرك والكفر والفسق الا فى اٰخر الزمن وقت المسيح الامام۔ فافهم ان كنت من العاقلين۔ منه۔

को जो एक अर्थों में आदम है, पैदा किया ताकि वह उस सांप को और उसकी उद्दंडता को नष्ट और बर्बाद कर दे। अत: मसीह का आगमन अनिवार्य था ताकि अंतिम विजय आदम की हो और यह पूरा होकर रहने वाला वादा था। अल्लाह तआला अपने कथन में उस महान विजय और उस प्राचीन दज्जाल अर्थात शैतान के क़त्ल की ओर संकेत कर चुका है अर्थात तेरी पूर्णता पराजय का और जो तू भिन्न-भिन्न प्रकार के शिर्क, कुफ्र, दुराचार के द्वारा विजय प्राप्त कर चुका है उसको तबाह करने का काम केवल अंतिम ज़माने में और ज़माने के इमाम मसीह के समय में ही होगा। अगर तू अकलमंदो में से है तो समझ ले। इसी से।

والمعاداة، وأتى مسيحُ الامم لِيرُدّهم إلى دار الفناء، ويرفع مِن بينهم الاختلاف والتشاجر والشحناء، وأصل التفرقة والشتات، ويجرّهم إلى الاتحاد والمحويّة ونفيِ الغير والمصافاة. وإن المسيح.. مَظهرُ لاسم الله الذى هو خاتم سلسلة المخلوقات، أعنى "الآخِر" الذى أُشِير إليه فى قوله تعالى "هُوَ الآخِرُ" لِما هو علامة لمنتهى الكائنات، فلاجل ذالك اقتضتْ نفس المسيح خَتْمَ سلسلة الكثرة بالممات، أو بِرَدِّ المذاهب إلى دين فيه موتُ النفوس من الاهواء والإراداتِ والاسلاك على الشريعة الفطرية التى تجرى تحت المصالح الإلهيّة وتخليصُ الناس من ميل النفس بهواها إلى العفو والانتقام والمحبّة والمعاداة. فإن الشريعة الفطرية التى تستخدم قوى الإنسان كلها لا ترضى بأن تكون خادمةً لقوّة واحدة، ولا تقيِّد أخلاق الإنسان فى

यह एक स्पष्ट बात है और रोशन सच्चाइयों में से है। आदम इसलिए आया था ताकि लोगों को इस सांसारिक जीवन की ओर निकाल लाए और उनके मध्य मतभेदों और शत्रुता की आग भड़काए जबकि तमाम उम्मतों का मसीह इसलिए आया है ताकि उन्हें फिर से फना के घर की तरफ लौटा दे और उनके मध्य से मतभेद, परस्पर झगड़े और शत्रुता तथा आपसी फूट की जड़ को समाप्त कर दे और उन्हें एकता, फना, अन्य उपास्यों के इन्कार और शुद्ध मित्रता की ओर ले आए। मसीह मौऊद अल्लाह के नाम "अलआखिर" का द्योतक है जो कि सृष्टि के सिलसिला का अंतिम है जिसकी ओर ख़ुदा तआला के कथन "हुवल आखिर" में इशारा किया गया है। क्योंकि यह नाम ब्रह्मांड के अंत की निशानी है इसलिए मसीह के नफ्स ने मौत के द्वारा अक्सरियत के सिलसिले के अंत की मांग की या बहुत से धर्मों को एक ऐसे धर्म की ओर ले आने की मांग की जिस में लोगों की ताम्सिकी इच्छाओं की मौत हो और जिसमें स्वाभाविक शरीयत पर चलाना हो जो ख़ुदाई हितों के अंतर्गत जारी है। और जिस में नफ्स की इच्छाओं के मैलान के परिणामस्वरूप क्षमा और बदला तथा मुहब्बत और शत्रुता से लोगों

دائـرة العفـو فقـط، ولا فى دائـرة الانتقـام فقـط، بـل تحسـبه سـجيّةً غـير مرضيـة، وتـؤتى كلَّ قـوة حقَّهـا عند مصلحـة داعيـة وضـرورة مقتضية، و تغـيّر حكـمَ العفـو والانتقـام والمصافـاة والمعـاداة بحسـب تغـيّرات المصالـح الوقتيـة.

وهـذا هـو المـوت مـن النفـس والهـوى والجذبـات النفسـانية ودخـولٌ فى الفانين. فحاصـل الـكلام إن المسـيح الموعـود ينقـل النـاسَ مـن الوجـود إلى العـدم، ويذكّرهـم أيّـامَ البيـت المنهـدم، وينقلـهم إلى مثـوى الميّتـين.. إمّـا بالإماتـة الجسـمانية بأنـواع الاسـباب مـن الحـوادث السـماوية والارضيـة، وإمـا بإماتـة النفـس الامّـارة والموتِ الذى يَـرِدُ عـلى أهـل النشـأة الثانيـة بإخـراج بقايـا الغيريـة وغياهـب النفسـانية وتكميـل مراتـب المحويّـة، وإن فيـه لهـدًى للمتفكّريـن.

को मुक्ति दिलाना हो क्योंकि फ़ितरती शरीयत जो समस्त मानवीय अंगों को प्रयोग में लाती है वह इस बात पर राज़ी नहीं होती कि केवल किसी एक शक्ति की सेवक बने और न ही मानवीय व्यवहार को केवल क्षमा करने या केवल बदला लेने के दायरे में सीमित करती है बल्कि उसे एक अप्रिय व्यवहार समझती है। और हर शक्ति को यथाअवसर, परिस्तिथि और आवश्यकता के अनुसार उसका पूर्ण अधिकार देती है। और समय की परिस्तिथियों के परिवर्तनों के अनुसार क्षमा एवं बदला और सच्ची दोस्ती एवं शत्रुता का आदेश बदलती रहती है।

यह है नफ्स और इच्छाओं और आंतरिक भावनाओं की मृत्यु और फ़ना हो चुके लोगों में सम्मिलित हो जाना। अत: कहने का अर्थ यह है कि मसीह मौऊद लोगों को हस्त से नेस्त की ओर ले जाएगा और उन्हें गिरे हुए घर के दिन याद दिलाएगा और उन्हें मुर्दों के ठिकाने की ओर ले जाएगा, चाहे आसमानी और सांसारिक घटनाओं के विभिन्न प्रकार के संसाधनों से शारीरिक तौर पर मारने से संबंध हो या नफ्से अम्मार: (तामसिक वृत्ति) को मारने से और उस मौत से जो नया जीवन पाने वालों पर अन्य के शेष प्रभावों को स्वयं से निकाल देने, भौतिकता

ثـم اعـلـم أن المسـيح الموعـود فى كتـاب الله ليـس هـو عيسـى ابـن مريـم صاحـب الإنجيـل وخـادم الشـريعة الموسـوية، كمـا ظـنَّ بعض الجهـلاء مـن الفَيـج الاعـوج والفئـة الخاطئـة، بـل هـو خاتـمُ الخلفـاء مـن هـذه الامّـة، كمـا كان عيسٰـى خاتـمَ خلفـاء السلسـلة الكليميّـة، وكان لهـا كآخـر اللبنـة وخاتـمِ المرسـلين. وإنّ هـذا لهـو الحـق، فويـل للذيـن يقـرءون القـرآن ثـم يمـرّون منكريـن. وإن الفرقـان قد حكـم بيـن المتنازعـين فى هـذه المسـألة، فإنـه صـرّح فى سـورة النـور بقـوله "مِنۡكُمۡ" بـأن خاتـم الائمّـة مـن هـذه الملّة، وكذالـك صـرح هـذا الامـر فى سـورة التحريـم والبقـرة والفاتحـة، فأيـن تفـرّون مـن النصـوص القطعيـة البيّنـة؟ وهـل بعـد القـرآن حاجـة إلى دليـل لذوى

के अंधेरों को चीरने और फ़ना के मर्तबों को पूर्ण करने से आती हो। निस्संदेह इसमें विचार करने वालों के लिए मार्गदर्शन है। साथ ही स्पष्ट हो कि अल्लाह की पुस्तक (क़ुर्आन) में मसीह मौऊद से अभिप्राय वह ईसा इब्न मरयम नहीं जिस पर इन्जील उतरी थी और जो मूसा अलैहिस्सलाम की शरीयत का सेवक है जैसा कि फैज ए आवज़ (गुमराही का दौर) और गुनाहगार गिरोह के कुछ मूर्खों ने समझ लिया है बल्कि वह इस उम्मत में से ख़ातमुल ख़ुलफ़ा है जैसा कि ईसा अलैहिस्सलाम मूसवी सिलसिला के ख़ातमुल ख़ुलफ़ा, ख़ातमुल मुरसलीन और उसकी अंतिम ईंट के समान था। निस्संदेह यही सच है। अतः तबाही है उन लोगों के लिए जो क़ुर्आन पढ़ते हैं फिर भी इन्कार करते जाते हैं। निस्संदेह क़ुर्आन इस विषय में दोनों झगड़ने वालों के मध्य निर्णय कर चुका है। उसने सूरः अन्नूर में अपने कथन "मिन्कुम" से स्पष्ट कर दिया कि 'ख़ातमुल इमाम' इसी उम्मत में से होगा। इसी प्रकार क़ुर्आन ने इस विषय को सूरः अत्तहरीम, सूरः अल बक़रः और सूरः फातिहा में भी विस्तार से वर्णन किया है। अतः तुम स्पष्ट अटल क़ुर्आनी आयत से कहाँ भाग रहे हो? और क्या बुद्धिमानों के लिए क़ुर्आन

الفطنة؟ فبأى حديث تؤمنون بعد هذه الصحف المطهَّرة؟ وقد وعد الله المؤمنين فى سورة التحريم فى قوله "فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا" أن يخلق ابنَ مريم منهم، وهو يرِث هذا الاسم ويكون عيسى مِن غير فرقٍ فى الماهية، فقد تقررَ فى هذه الآية وعدًا من الله أن فردًا من هذه الامّة يسمَّى ابنَ مريم ويُنفَخ فيه روحه بعد التقاة التامة . فأنا ذالك المسيحالذى لُمْتُمونى فيه، ولا مبدِّلَ لكلمات الله ذى الجبروت والعزّة. أتجعلون رِزقكم مِن وعد الله أن تكونوا يهودا كيهود أمّة موسٰى فى الخبث والتمرّد العظيم، ولا تريدون أن يكون المسيح منكم كمسيح سلسلة الكليم؟ وَيْحَكُمْ! إنكم

के बाद भी किसी दलील की आवश्यकता है! इन पवित्र पुस्तकों को छोड़ कर तुम किस बात पर ईमान लाओगे? अल्लाह तआला सूरः अत्तहरीम की आयत- فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا (सूरः अत्तहरीम - 13) में मोमिनों से यह वादा कर चुका है कि उनमें से इब्न मरयम पैदा करेगा। वह उस नाम का वारिस होगा और माहियत में किसी अंतर के बिना ईसा होगा। अतः इस आयत में अल्लाह तआला की ओर से वादा के तौर पर यह तय पा चुका है कि इस उम्मत में से एक व्यक्ति को इब्न मरयम का नाम दिया जाएगा और पूर्ण संयम के बाद उसमें उस (ईसा अलैहिस्सलाम) की रूह फूंकी जाएगी। अतः मैं ही वह मसीह हूँ जिसके कारण तुम ने मुझे बुरा-भला कहा और सम्मान एवं प्रतिष्ठा वाले ख़ुदा की बातों को परिवर्तित करने वाला कोई नहीं। क्या तुम अल्लाह के वादे में से अपना भाग्य यह बनाते हो कि तुम दुष्टता और बड़ी निरंकुशता में मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के यहूद के समान यहूद बन जाओ और तुम नहीं चाहते कि कलीमुल्लाह (अर्थात मूसाअ॰) के सिलसिले के मसीह के समान तुम में से भी मसीह हो। तुम पर खेद! तुम बुराई और नुक्सान में समानता पर तो सहमत हो परन्तु तुम भलाई में समानता पर सहमत नहीं। अल्लाह की क़सम

رضيتم بمماثلة الشر والضير، ولا ترضون أن تكون لكم مماثلة في الخير. فو الله لا يفعل عدوّ بعدوّ ما تفعلون بأنفسكم، وقد نبذتم كلام الله وراء ظهوركم، وذكّرنا فتناسيتم، وأرينا فتعاميتم، ودعونا فأبيتم، وتبِعتم أمّارتكم في كل ما مارَيتم يا حزبَ العِدا. أتُترَكون سُدًى؟ أو يُغفَر لكم كلُّ ما اجترحتم من الهوى؟ ما لكم لا تفكّرون في القرآن ولا ترون ما قال ربّكم بأحسن البيان؟ ألم يكفِ لكم آية سورة التحريم، أو أعرضتم عن كلام الله الكريم؟ انظروا كيف ضرب الله مثلَ مريم لهذه الامّة في هذه السورة، ووعَد في هذه الحُلّة أن ابن مريم منكم عند التقاة الكاملة. وكان من الواجب لتحقيق هذا المَثل المذكور في

शत्रु अपने शत्रु से वह व्यवहार नहीं करता जो तुम ने स्वयं से किया है, तुम ने अल्लाह के कलाम (क़ुर्आन) को अपनी पीठों के पीछे फेंक रखा है, हम ने तुम्हें याद दिलाया परन्तु तुम जान-बूझ कर भूल गए और हमने तुम्हें दिखाया परन्तु तुम अंधे बन बैठे और हमने तुम्हें बुलाया परन्तु तुमने इन्कार कर दिया। हे शत्रुओं के समूह! तुमने प्रत्येक उस विषय में जिस में तुमने विरोध किया, अपनी तामसिक वृत्ति का अनुसरण किया, क्या तुम बेलगाम छोड़ दिए जाओगे या तुमने स्वेच्छा से जो गुनाह कमाए हैं वे क्षमा कर दिए जाएंगे? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम क़ुर्आन पर चिन्तन-मनन नहीं करते और तुम्हारे रब्ब ने जो कुछ अत्यंत सरस रूप से वर्णन किया है तुम उस पर नज़र नहीं डालते। क्या तुम्हारे लिए सूरः अत्तहरीम की आयत पर्याप्त नहीं है या तुम दयालु ख़ुदा के कलाम से मुंह फेरते हो। देखो कि किस प्रकार अल्लाह ने इस सूरः में इस उम्मत के लिए मरयम का उदहारण प्रस्तुत किया है और इस सन्दर्भ में यह वादा किया है कि पूर्ण संयम से युक्त तुम लोगों में से ही इब्न मरयम होगा। इस आयत में वर्णित इस उदाहरण के सिद्ध करने के लिए आवश्यक था कि इस उम्मत में से एक व्यक्ति ईसा पुत्र मरयम हो, ताकि यह उदाहरण बिना

هـذه الآيـة بـأن يكـون فـرد مـن هـذه الامّـة عيسـى ابـنَ مريـم ليتحقّـق المثـل فى الخـارج مـن غـير الشـك والشـبهة، وإلّا فيكـون هـذا المثـل عبثـا و كذبـا ليـس مِصداقـه فـرد مـن أفـراد هـذه المـلّة، وذالـك ممـا لا يليـق بشـأن حضـرة التقـدّس والعـزّة. هـذا هـو الحـق الذى قـال الله ذو الجـلال، فمـاذا بعـد الحـق إلا الضـلال؟ وأمـا عيسـى الذى هـو صاحـب الإنجيـل فقـد مـات وشـهد عليـه ربّنـا فى كتابـه الجليـل، ومـا كان له أن يعـود إلى الدنيـا ويكـون خاتـم الانبيـاء، وقـد خُتِمـت النبـوة عـلى نبيّنـا صـلى الله عليـه وسـلم، فـلا نـبى بعـده إلا الذى نُـوِّرَ بنـوره و جُعـل وارثَـه مـن حضـرة الكبريـاء۔ اعلمـوا أن الختميـة أُعطيـتْ مـن الازل لمحمّدصلى الله عليـه وسـلم، ثـم أُعطيـتْ لمـن علَّمـه روحُـه

किसी संदेह के ज़ाहिरी रूप से भी पूरा हो जाए अन्यथा यह उदाहरण बेकार और झूठ होता और इस उम्मत के लोगों में से कोई व्यक्ति भी इसका पात्र न होता। और यह बात तो ऐसी है जो प्रतिष्ठावान ख़ुदा की शान के अनुकूल नहीं और यही सत्य है जो प्रतापवान ख़ुदा ने कहा है। अत: सत्य को छोड़ कर गुमराही के अतिरिक्त और क्या है और जहाँ तक उस ईसा अलैहिस्सलाम का संबंध है जिसको इंजील मिली थी तो वह मृत्यु पा चुका और हमारा रब्ब अपनी प्रतापी किताब (क़ुर्आन) में इस की गवाही दे चुका है। उस ईसा के लिए यह संभव नहीं कि संसार में वापस आए और ख़ातमुल अम्बिया बन जाए जबकि नुबुव्वत हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त कर दी गई है। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं सिवाए इसके जो आपके प्रकाश से प्रकाशित हो और अल्लाह तआला की ओर से आपका वारिस बनाया जाए। जान लो कि ख़ातमीयत का मक़ाम (पद) अनादिकाल से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया है फिर उसे दिया गया जिसे आप की रूह ने शिक्षा दी और उसे अपना प्रतिरूप बना लिया। अत: बहुत ही सौभाग्यशाली है वह जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा पाई। अत:

وجعَله ظلَّه، فتبارَكَ من علّم وتعلّم ★. فإن الختمية الحقيقية كانت مقدَّرة فى الإلف السادس الذى هو يوم سادس من أيّام الرحمٰن، ليشابه أبا البشر هو خاتمَ نوع الإنسان. واقتضت مصالح أخرٰى أن يُبعث رسولنا فى اليوم الخامس. أعنى فى الإلف الخامس بعد آدم، لِما كان اليوم الخامس يومَ اجتماع العالَم الكبير، وهو

निस्संदेह वास्तविक ख़ातमीयत छठे हज़ार में मुक़द्दर थी जो कि ख़ुदा-ए-रहमान के दिनों में से छठा दिन है ताकि जो मानवजाति का ख़ातम है वह अबुल बशर (आदम) के समरूप हो जाए। साथ ही कुछ अन्य हितों ने चाहा कि हमारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पांचवें दिन में अर्थात आदम के बाद पांचवें हज़ार में अवतरित किए जाएँ क्योंकि पांचवां दिन आलमे कबीर (संसार) के इकठ्ठे होने

★الحاشية۔ هٰذه اشارة الٰى وحى من الله كُتب فى البراهين الاحمدية وقدمضٰى عليه ازيد من عشرين سنة من المدة فان الله كان اوحٰى الىّ وقال: كل بركة من محمّدٍ صلى الله عليه وسلم فتبارك من علّم وتعلّم۔ يعنى ان النبى صلى الله علّمك من تاثير روحانيته وافاض اناء قلبك بفيض رحمته ليدخلك فى صحابته وليشركك فى بركته وليتم نَبَأُ الله وآخرين منهم بفضله ومنّته۔ ولمّا كان هٰذا النبأ الاصل المحكم والبرهان الاعظم علٰى دعوٰى فى القرآن اشار الله سبحانه اليه فى البراهين ليكون ذكره هٰذا حجةً على الاعداء من جهة طول الزمان۔منه۔

अनुवाद- यह अल्लाह की उस वह्यी की ओर संकेत है जो बराहीन अहमदिया में लिखी गई है और उस पर बीस बर्ष से अधिक समय बीत चुका है। अल्लाह ने मेरी ओर वह्यी की थी और फ़रमाया था कि प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से है। अत: बड़ा मुबारक है वह जिसने शिक्षा दी और जिसने शिक्षा ग्रहण की। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आध्यात्मिकता से तेरा शिक्षण किया है और तेरे दिल का जाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी रहमत के फैज़ (वरदान) से भर दिया है ताकि तुझे अपने सहाबा में सम्मिलित कर लें और तुझे अपनी बरकत में सम्मिलित कर लें और ताकि अल्लाह की "व आख़रीना मिन्हुम" वाली भविष्यवाणी उसकी कृपा और उपकार से पूरी हो जाए। और चूंकि यह भविष्यवाणी क़ुर्आन में वर्णित दावे का दृढ़ आधार और उस पर सबसे बड़ी दलील थी इसलिए अल्लाह तआला ने उसकी ओर बराहीन अहमदिया में संकेत कर दिया ताकि उसका यह वर्णन लम्बा समय बीत जाने की दृष्टि से शत्रुओं पर दलील हो। इसी से।

ظِـلٌّ لآدم الذى أعـزّه الله وأكـرمَ، فـإن آدم جمـع فى نفسـه كلَّ مـا تفـرّقَ فيـه ووصـل كلمـا تجـذَّمَ، فـلا شـك أن العالَـم الكبـير قـد نـزل بمنـزلة خِلقـةٍ أولىٰ لآدم فى صُـوَرٍ متنوّعـة، فقـد خُلِـق آدم بهـذا المعـنى فى اليـوم الخامـس مـن غـير شـك وشـبهة، ثـم أراد الله أن يُنشِـأَ نبيَّنـا الذى هـو آدم خلقًـا آخـر فى الألـف السـادس بعـد خِلقتـه الأولىٰ، كمـا أنشـأ مِـن قبـل صفيَّـه آدمَ فى آخـر اليـوم السـادس مـن أيـام بدو الفطـرة ليتـمّ المشـابهة فى الأولى والأخـرى، وهـو يـوم الجمعـة الحقيقيـة، وكان جمعـةُ آدم ظـلاًّ له عنـد أولى النُهَـى، فاتّخـذَ عـلى طريـق البـروز مظهـرًا له مِـن أمّتـه، وهـو له كالعـين فى اسـمه وماهيّته، وخلَقـه الله فى اليـوم السـادس بحسـاب أيام بدو نشـأة الدنيـا لتكميل

का दिन है और वह आदम का प्रतिरूप है जिसे अल्लाह ने सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की क्योंकि आदम ने अपने अंदर वह सब कुछ जमा कर रखा है जो इस लोक में विभिन्न रूप में मौजूद है और उसे जोड़ कर समेट लिया है जो अलग होकर बिखरा हुआ है। अत: इसमें कोई संदेह नहीं कि आलमे कबीर (अर्थात संसार) विभिन्न सूरतों में आदम की पहली पैदाइश के तौर पर है। अत: आदम निस्संदेह इन अर्थों के अनुसार पांचवें दिन पैदा किया गया। फिर अल्लाह ने चाहा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को, जो आदम हैं, छठे हज़ार में आपकी पहली पैदाइश के पश्चात एक नए रंग में पैदा करे जैसा कि पहले उसने अपने चयनित मनुष्य आदम को सृष्टि के प्रारंभिक दिनों में से छठे दिन के अन्त पर पैदा किया था ताकि पहली और अंतिम पैदाइश में समानता पूर्ण हो जाए और यही वास्तविक जुमा का दिन है। जबकि आदम का जुमा बुद्धिमानों के निकट इसका प्रतिरूप था। फिर अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से बुरूज़ी रूप में आप का एक मज़हर* बनाया जो नाम और माहीयत (गुण) में असल के समान ही है और अल्लाह ने समरूपता की पूर्णत:

---

* **मज़हर -** द्योतक (अनुवादक)

مماثلته۔أعنی فی آخر الالف السادس لیشابه آدم فی یوم خلقته، وهو الجمعة حقیقةً، لان الله قدّر أنه یجمع الفِرق المتفرّقة فی هذا الیوم جمعًا برحمةٍ کاملةٍ، وینفَخ فی الصور۔یعنی یتجلّی الله لجمعهم فإذا هم مجتمعون علی ملّة واحدة إلّا الذین شقُوا بمشیئة وحبَسهم سجنُ شِقوة، وإلیه أشار سبحانه فی قوله "واٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ" فی سورة الجمعة، إیمائً إلی یوم الجمعة الحقیقیة۔ وأراد من هذا القول أن المسیح الموعود الذی یأتی من بعد خاتم الانبیاء هو محمد صلی الله علیه وسلم من حیث المضاهاة التامة، ورفقاءه کالصحابة، وأنه هو عیسی الموعود لهذه الامّة، وعدًا من الله ذی العزّة فی سورة التحریم و النور والفاتحة۔ قولَ الحق الذی فیه

के लिए उसे सृष्टि के प्रारंभिक दिनों के हिसाब से छठे दिन में पैदा किया अर्थात छठे हज़ार के अंत में ताकि वह अपनी पैदाइश के दिन के हिसाब से आदम के समरूप हो और यही वास्तव में जुमे का दिन है क्योंकि अल्लाह ने मुक़द्दर कर रखा है कि वह उस दिन में अपनी पूर्ण रहमत से समस्त विभिन्न समूहों को इकठ्ठा करेगा और बिगुल फूंका जाएगा। अर्थात अल्लाह उनको इकठ्ठा करने के लिए चमकार दिखाएगा तो तुरंत ही वे मिल्लत-ए-वाहिदा (एक धर्म) पर इकट्ठे हो जाएँगे सिवाए उनके जो ख़ुदा की नज़र में दुर्भाग्यशाली ठहरे और दुर्भाग्य की क़ैद ने उन्हें रोके रखा। इसी की ओर अल्लाह तआला ने सूरः जुमा में वास्तविक जुमा की ओर ध्यानाकर्षित कराते हुए अपने आदेश 'व आख़रीन मिन्हुम' में संकेत किया है। इस कथन से अल्लाह की इच्छा यह है कि वह मसीह मौऊद जो ख़ातमुल अम्बिया के पश्चात् आएगा वह पूर्ण समरूपता की दृष्टि से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही होगा और उसके साथी सहाबा के समान होंगे और वही इस उम्मत के लिए कथित ईसा होगा। यह अल्लाह तआला की ओर से सूरः अत्तहरीम, सूरः अन्नूर और सूरः फ़ातिहा में वादा है, यह वह सच्ची बात है जिसमें लोग संदेह कर रहे हैं। किसी नबी के लिए ख़ातमुल अम्बिया के

يمترون۔ما كان لنبي أن يأتى بعد خاتم الانبياء إلا الذى جُعل وارثَه مِن أُمّته، وأُعطىَ مِن اسمه وهويّته، ويعلمه العالمون۔فذالك مسيحكم الذى تنظرون إليه ولا تعرفونه، وإلى السماء أعينَكم ترفعون۔أتظنّون أن يردّ الله عيسى ابن مريم إلى الدنيا بعد موته وبعد خاتم النبيين؟ هيهات هيهات لما تظنون۔ وقد وعد الله أنه يُمسِك النفسَ التى قضى عليها الموت، و الله لا يخلف وعده ولكنكم قوم تجهلون. أ تزعمون أنه يُرسِل عيسى إلى الدنيا، ويوحى إليه إلى أربعين سنة، ويجعله خاتم الانبياء وينسى قوله "وَ لٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ" سبحانه وتعالى عمّا تصِفون! إنۡ تتّبعون إلا ألفاظا لا تعلمون حقيقتها، ولو رددتموها إلى حَكَمٍ

बाद आना संभव नहीं सिवाए उसके जो आपकी उम्मत में से आपका वारिस बनाया गया हो और उसे आपके नाम और जौहर से हिस्सा दिया गया हो। और ज्ञान रखने वाले इस बात को जानते हैं। अत: यह है तुम्हारा मसीह जिसे तुम देख तो रहे हो परन्तु पहचान नहीं रहे और आकाश की ओर नज़रें उठाए हुए हो। क्या तुम सोचते हो कि अल्लाह ईसा पुत्र मरयम को उसकी मृत्यु के पश्चात और ख़ातमुन्नबिय्यीन के पश्चात् संसार में लौटा देगा। दूर की बात है बहुत दूर की बात है जो तुम सोचे बैठे हो। अल्लाह वादा कर चुका है कि जिस जान के लिए वह मौत का फैसला कर देता है वह उसे रोक कर रखता है और अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता परन्तु तुम एक मूर्ख क़ौम हो। क्या तुम समझते हो कि वह ईसा को संसार में भेजेगा और चालीस वर्ष उसकी ओर वह्यी करता रहेगा और उसे ख़ातमुल अम्बिया बना देगा और अपने कथन-

وَ لٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ (सूर: अहज़ाब- 41)

को भूल जाएगा। वह पवित्र है और उससे बहुत बुलंद है जो तुम वर्णन करते हो। तुम केवल इन शब्दों का अनुसरण कर रहे हो जिनकी वास्तविकता तुम्हें ज्ञात नहीं अगर तुम उनको अल्लाह की ओर से आने वाले निर्णायक के समक्ष,

من الله الذى أُرسلَ إليكم لكان خيرا لكم إن كنتم تعلمون. يا حسرة عليكم! إنكم جعلتم عِلم الدين سَمُرًا، وتجادلون عليه بُخْلًا وحَسَدًا، وطبع الله على قلوبكم فلا تبصرون. ألا ترون إلى السلسلتين المتقابلتين، أو غلبتْكم شِقوتكم فلا توانسون؟ وتقولون ليس ذكر المسيح الموعود فى القرآن، وقد مُلِإَ القرآن من ذكره ولكن لا يراه العمون. ألا إن لعنة الله على الكاذبين الذين يكذّبون كتاب الله ويحرّفونه ولا يخافون. وإذا قيل لهم تعالوا نبيّن لكم حُجج الله قالوا إنّا نحن المهتدون. وما فى أيديهم إلا قصص باطلة ولا يتّقون. ويسخرون من الذين آمنوا وهم يعلمون. وما كان مجيئى فى آخر السلسلة المحمدية إلّا لإكمال المماثلة

जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, प्रस्तुत कर देते तो यह तुम्हारे लिए बेहतर होता अगर तुम जानते हो। खेद है तुम पर तुमने किस्से कहानियों को ही धर्म का ज्ञान बना लिया और तुम लालच और ईर्ष्या के कारण उनकी बुनियाद पर झगड़ते हो। अल्लाह ने तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दी है इसलिए तुम देख नहीं सकते। क्या तुम उन दो परस्पर सिलसिलों (अर्थात मुहम्मदी सिलसिला और मूसवी सिलसिला) की ओर नहीं देखते या तुम पर तुम्हारा दुर्भाग्य हावी हो गया है और तुम महसूस नहीं करते और तुम कहते हो कि मसीह मौऊद का वर्णन क़ुर्आन में नहीं है हालांकि क़ुर्आन उसके वर्णन से भरा हुआ है परन्तु अंधे उसे नहीं देख सकते। सावधान! उन झूठों पर अल्लाह की लानत है जो अल्लाह की किताब को झुठलाते और उसमें तहरीफ़ (शाब्दिक या आर्थिक परिवर्तन) करते हैं और डरते नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ हम तुम्हारे लिए अल्लाह के तर्क स्पष्ट रूप से वर्णन करें तो कह देते हैं कि हम तो हैं ही सन्मार्गप्राप्त, हालांकि उनके हाथों में झूठे किस्सों के अतिरिक्त कुछ नहीं और वे संयम से युक्त नहीं हैं। और वे जानते बूझते हुए ईमान लाने वालों से उपहास करते हैं। मेरा मुहम्मदी सिलसिले के अंत में आना केवल समानता को पूर्ण करने और मुक़ाबले के वज़न को पूर्ण

ولتوفية وزن المقابلة، وليُردَّ الكَرّة لآدم بعد الكَرّة الشيطانية،★ فما لهم لا يتفكّرون! أ كان عسيرا على الله أن يخلق كعيسى ابن مريم عيسٰى آخرَ، سبحانه، إذا قضى أمرًا فإنما يقول له كن فيكون. هو الله الذى بعث مثيلَ موسٰى فى أوّل السلسلة المحمّدية، فظهر منه أنه كان يريد أن يخلق مثلَ عيسٰى فى آخرها ليتشابه السلسلتان بالمشابهة التامة، فما لكم لا تؤمنون؟أيها

करने के लिए है। और इसलिए है ताकि शैतान के प्रभुत्व के पश्चात आदम को फिर प्रभुत्व प्रदान किया जाए। अत: उन्हें क्या हो गया है कि वे विचार नहीं करते। क्या अल्लाह के लिए ईसा पुत्र मरयम जैसा कोई अन्य ईसा पैदा करना कठिन है? वह पवित्र है जब वह किसी बात का निर्णय कर ले तो उसे केवल इतना कहता है कि हो जा तो वह होने लगता है और होकर रहता है। वह अल्लाह ही है जिसने मुहम्मदी सिलसिला के आरम्भ पर मूसा के समरूप को अवतरित किया। अत: इस से प्रकट हुआ कि वह चाहता है कि इस सिलसिला के अंत में

★الحاشية۔ان الله خلق اٰدم وجعله سيدا وحاكما واميرا على كل ذى روح من الانس والجان۔ كما يفهم من اٰية "اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ" ثم ازلّه الشيطان واَخرجه من الجنان۔ وردالحكومة الى هٰذاالثعبان۔ ومس اٰدم ذلة وخزى فى هٰذه الحرب والهوان۔ وان الحرب سجال۔ وللا تقياء مال عندالرحمٰن۔ فخلق الله المسيح الموعود ليجعل الهزيمة على الشيطان فى اٰخر الزمان۔ و كان وعدًا مكتوبا فى القرآن۔ منه۔

★ अल्लाह ने आदम को पैदा किया और उसे मनुष्यों तथा जिन्नों में से प्रत्येक जीवित का सरदार, निर्णायक और अमीर बनाया जैसा कि आयत اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ (अलबक़र: - 35 अर्थात आदम को सजदा करो) से समझ आता है। फिर शैतान ने उसे बहका दिया और उसे जन्नतों से निकलवा दिया और साम्राज्य उस अजगर को दे दिया गया और इस लड़ाई में आदम अपमानित, तिरस्कृत और लज्जित हुआ। लड़ाई में विजय कभी एक की होती है कभी दूसरे की और रहमान ख़ुदा के निकट अच्छा परिणाम मुत्तकियों का ही है। अत: अल्लाह ने मसीह मौऊद को पैदा किया ताकि युग के अंत में शैतान को पराजित करे। यह वह वादा है जो क़ुर्आन में लिखा हुआ है। इसी से।

الناس!آمِنوا أو لا تؤمنوا إن الله لن يترك هذه السلسلة حتى يُتمّها ولن يترك حيّةَ آدم حتى يقتلها، فرُدُّوا ما أراد الله إن كنتم تقدرون۔أتَرُدّون نعمة الله بعد نزولها أيها المحرومون؟ وقد تم وعد الله صدقا وحقا، فلا تشتروا الضلالة أيها الخاسرون۔ أ تبخلون بما أنعم الله على عبد من عباده؟ أتُعجِزون الله بألسنكم وحِيلِكم ومكائدكم؟ فاجمعوا كلّ مكركم، وادعوا الذين سبقوكم مكرًا و زورًا، واقعدوا فی کل طریق ولا تُمهِلونِ۔ وستنظرون أن الله يخزيكم ويردّ عليكم كيدكم ولا تضرّونه شيئا ولا تُنصَرون؟ أحسبتم أن إنسانا فعَل فعلًا مِن تلقاء نفسه؟

ईसा का समरूप पैदा करे ताकि दोनों सिलसिलों में पूर्ण समानता हो जाए। अत: तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ईमान नहीं लाते। हे लोगो! तुम ईमान लाओ या ईमान न लाओ अल्लाह इस सिलसिला को कदापि नहीं छोड़ेगा यहाँ तक कि इसे पूरा कर ले और आदम के सांप को मारे बिना कदापि न छोड़ेगा। अत: यदि तुम सामर्थ्य रखते हो तो अल्लाह के इरादे को टाल कर दिखाओ। हे वंचितो! क्या तुम अल्लाह की नेमत को उसके उतरने के बाद रद्द करते हो जबकि अल्लाह का वादा सच्चाई से पूरा हो चुका है। हे नुक्सान उठाने वालो गुमराही न खरीदो। क्या अल्लाह ने अपने बन्दों में से एक बन्दे पर जो नेमत उतारी है तुम उस पर ईर्ष्या करते हो। क्या तुम अपनी ज़बानों, बहानों और चालाकियों से अल्लाह को लाचार कर सकते हो? अत: तुम अपनी समस्त चालाकियां एकत्र कर लो और उन लोगों को बुला लो जो धोखा देने और झूठ बोलने में तुम से भी आगे बढ़ गए हों और हर मार्ग पर बैठ जाओ और मुझे मोहलत न दो। तुम अवश्य देखोगे कि अल्लाह तुम्हें अपमानित करेगा और तुम्हारे धोखे तुम पर उल्टा देगा और तुम उसे कोई हानि न पहुंचा सकोगे और न तुम्हारी सहायता की जाएगी। क्या तुम यह विचार करते हो कि एक इंसान ने अपनी ओर से यह काम कर लिया है, कदापि नहीं। बल्कि यह अल्लाह ही है जो धरती का उसके बिगड़ने

كلا بــل هــو الله الذى يُصلِـح الارض بعــد فســادها، أليســت الارض مُنجَّسَــة مــن فســاد، فمــا لكــم لا تنظــرون؟ إنكــم تركتــم الصــراط، فتركـكــم الله وذهــب بنــور قلوبكــم، و كذالــك يُجــزَى المجرمــون۔ أعجبتــم أن جـاء كـم إمـام مـن أنفسـكم فى آخـر الازمنـة ليتسـاوى السلسـلتان ككَفَّـتَى الميـزانِ، مـا لكـم كيـف تعجبـون؟ كذالـك ليتـمّ وعـدُ الله فى التحريـم والنـور والفاتحة والبقـرة، ما لكـم لا تفكّرون؟ وقـد نزلـت الآيـات وحصحـص الحـق وظهـرت البيّنـات ثـم أنتـم تُعرِضـون۔ ومـا طلبتـم مـن حُجّـة إلّا أُعطـىَ لكـم فـوج منهـا ثـم لا تنتهـون ألا تـرون إلى أرضكـم كيـف ينقُصهـا الله مـن أطرافهـا،

के बाद सुधार करता है। क्या धरती उपद्रव से अपवित्र नहीं हो गई थी। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम देखते नहीं। निस्संदेह तुमने सही मार्ग को छोड़ दिया है तो अल्लाह ने भी तुम्हें छोड़ दिया और तुम्हारे दिलों का नूर ले गया है और मुजरिमों को इसी तरह बदला दिया जाता है। क्या तुम आश्चर्य करते हो कि अंतिम युग में तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक इमाम आ गया है ताकि दोनों सिलसिले तराज़ू के दो पलड़ों की तरह परस्पर बराबर हो जाएं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम किस तरह आश्चर्य कर सकते हो? इसी तरह हुआ ताकि सूरह तहरीम, सूरह नूर, सूरह फ़ातिहा और सूरह बक़र: में वर्णित अल्लाह का वादा पूरा हो जाए। तुम्हें क्या हुआ है कि तुम विचार नहीं करते? निशानियां उतर रही हैं और सच्चाई खुल चुकी है और रोशन दलीलें प्रकट हो चुकी हैं फिर भी तुम मुंह फेर रहे हो। तुमने जो दलील भी मांगी तुम्हें उसकी फौज प्रदान की गई फिर भी तुम बाज़ नहीं आते, क्या तुम अपनी धरती की ओर नहीं देखते कि अल्लाह कैसे उसे उसके किनारों से कम करता चला जा रहा है और गर्दनें मेरे इस क़दम के नीचे झुकी हुई हैं और हर एक रास्ते से लोग मेरे पास इकट्ठे हो रहे हैं। अगर यह मामला अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से होता है तो मैं अपने दावे के बाद तुम्हारे बीच 30 वर्ष तक जीवित रहा हूं जैसा कि तुम देख रहे हो और जिस प्रकार

والرقاب تحت قدمی هذه تتذلل، والناس مِن کل فَجٍّ یجتمعون؟ ولو کان هذا الامر من عند غیر الله لما لبِثتُ فیکم إلی ثلاثین سنة بعد دعوتی کما أنتم تشاهدون۔ و لَاَهلکتُ کما یُهلَک المفترون أجئتُ شیئًا فرِیًّا و کنتم من قبل تنتظرون؟ وقد ابتهلتم کل الابتهال، لیُهلِکنی ربّی کأهل الضلال، فأُعطیتُ لی برکةٌ علی برکة، ولُعِنَتْ کلماتُکم، وضُربتْ علی وجوهکم دعواتُکم، فأصبحتم مُحقَّرین مُهانین بما کنتم تُهینون ما کان الله لیُهلِکنی قبل أن یتمّ أمری، ولی سرٌّ بربّی لا یعلمه الملائکة، فکیف تعرفونی أیها الجاهلون الحاسدون؟ ولیس لی مقامی عنده بظاهر الاعمال ولا بأقوال، ولا بعلم واستدلال، بل بسرٍّ فی قلبی

मुफ्तरी (झूठ गढ़ने वाले) तबाह किए जाते हैं अवश्य मैं भी तबाह किया जाता। क्या मैंने कोई झूठ गढ़ा है हालांकि तुम तो पहले ही प्रतीक्षा कर रहे थे। तुमने हर प्रकार से गिड़गिड़ा कर दुआ की कि मेरा रब मुझे गुमराहों के समान तबाह कर दे परंतु मुझे बरकत पर बरकत दी गई और तुम्हारे शब्दों पर लानत की गई और तुम्हारी दुआएं तुम्हारे मुंह पर मारी गईं। अत: तुम अपमानित और तिरस्कृत हो गए क्योंकि तुम उपहास करते थे। अल्लाह मेरा मिशन पूरा करने से पहले मुझे तबाह नहीं करेगा। मेरा अपने रब के साथ वह राज़ (भेद) है जिसे फरिश्ते भी नहीं जानते। अत: हे मूर्खो, ईर्ष्यालुओ! तुम मुझे कैसे पहचान सकते हो। उसके निकट मेरा मुक़ाम न ज़ाहिरी कर्मों और न कथनों और न किसी ज्ञान और दलील के कारण है बल्कि मेरे दिल में मौजूद उस भेद के कारण है जो उसके निकट पहाड़ों से भी अधिक भारी है। निस्संदेह मेरा भेद मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वीरान बंजर भूमि में वनस्पति उगाता है और निशान दिखाता है। अत: क्या बुद्धिमानों में से कोई इच्छुक है और क्या कोई क़ौम खोज करने वाली है। मैं निस्संदेह अपने रब्ब की ओर से इस्लाम के लिए एक निशान और सर्वज्ञानी ख़ुदा की ओर से एक दलील बनाया गया हूँ। अत: इंकार करने वाले शीघ्र जान लेंगे।

هــو أثقــل عنــده مــن جبــال۔ و إن ســرّی یُحیِــی الاموات، و یُنبِــت المَــوات، و یُــرِی الآ یــات، فهــل مــن طالــب مــن ذوی الحصــات، و هــل مــن قــوم یطلبــون؟ و إنی جُعِلــتُ مــن ربّی آ یــةً للإســلام، و حُجّــةً مــن اللّٰه العــلّام، فســوف یعلــم المنکرون۔ أَسمِعۡ بــهم و أَبۡصِــرۡ یــومَ یأتونــه، وقــد أنفــدوا الاعمــار فی هــذه عمیًــا، و یُذ کّــرون فــلا یبالــون۔ و إنی جئــتُ لانقُــل النــاس مــن الوجــود إلی العــدم بحکــمِ ربّ العــزّة ★، و أُرِیَ الســاعةَ قبــل الســاعة، و تــرون أن الامــراض تُشــاع و النفــوس تُضــاع، و ســیذوق النــاس موتًــا هــو مــوت مــن أهــواء الغَیریّــة و جئــتُ لانقــل النــاس مــن الکثــرة إلی الوحــدة، و إلی الا تّفــاق مــن المخالفــة،

जिस दिन वे उसके पास आएंगे उस दिन वे क्या ख़ूब सुनने वाले और क्या ख़ूब देखने वाले होंगे। उन्होंने इस संसार में अन्धों के समान उम्रें समाप्त कर दीं और उन्हें स्मरण कराया जाता रहा लेकिन वे परवाह नहीं करते। मैं इसलिए आया हूँ ताकि ख़ुदा तआला के आदेश से लोगों को वजूद से फ़ना की ओर ले जाऊं और क़यामत से पहले क़यामत दिखाऊँ। तुम देख रहे हो कि बीमारियाँ फ़ैल रही हैं और जानें व्यर्थ जा रही हैं और निकट ही लोग उस मौत का मज़ा चखेंगे जो

★الحاشــیة۔ قد قلنــا غیره مــرّة ان النقل من الوجــود الی العدم۔ لیس بالســیف و الســنان۔ بــل بامــرٍ مــن اللّٰه الدیّان۔ فــان اللّٰه کتــب فی کتبه ان علامة ظهور المســیح الموعــود ان تســمعوا اخبار المحاربــات فی الاٰفــاق و الاقطار۔ و اخبار شــیوع الوبــاء فی الدیار۔ ثــم مــن علامــة المســیح انــه یجــذب النــاس الی کمــال نقطــة التقــاة۔ و ان هــو الا نــوع مــن الممات۔ منه

★हमने बहुत बार यह कहा है कि वजूद से फ़ना की ओर परिवर्तन तलवार और तीर से न होगा बल्कि प्रतिफल के मालिक ख़ुदा के आदेश से होगा अल्लाह तआला ने अपनी किताबों में लिखा है कि मसीह मौऊद के प्रकटन की निशानी यह है कि तुम कई दिशाओं और कई क्षेत्रों में जंगों की ख़बरें और कई शहरों में वबा फैलने की ख़बरें सुनोगे। फिर मसीह की एक निशानी यह है कि वह लोगों को तक्वा की पराकाष्ठा की ओर खींच लाएगा और यह मौत की ही एक ख़बर है। इसी से।

وإلى الاجتماع من التفرقة، ولذالك خُلِقَ أسبابُها، وفُتِح أبوابُها۔ ألا ترون إلى الطُرق كيف كُشفتْ؟ وإلى الوابورة كيف أُجريتْ؟ وإلى العِشار كيف عُطّلتْ؟ وإلى الاخبار كيف يُسِّرَ إيصالُها، والخيالات تبادلتْ؟ وإلى النفوس كيف زُوّجتْ؟ وترون أن الناس يُنقَلون من هذه الدنيا إلى دار الفناء بمحاربات أوقدتْ نارها بين الملوك وبأنواع الوباء ثم بإشاعة لُبِّ تعليم القرآن، وحقيقةِ كتاب الله الرحمٰن، الذى أُرسلتُ له فى هذا الزمان، فإن هذا التعليم يدعو إلى الموت۔ أعنى إلى موتٍ يَرِدُ على النفس بترك الغَيريّة والهوٰى، ويدعو إلى محويّةٍ فى الشريعة الفطريّة وحالةٍ كحالةِ مَن مات وفنٰى، ويجرّ إلى تعطُّلٍ تامّ من حركات الاختيار، وموافقةٍ

अल्लाह के अतिरिक्त (समस्त चीज़ों) की इच्छाओं की मौत है। मैं इसलिए आया हूँ ताकि लोगों को अनेकत्व से एकत्व की ओर लाऊं और विरोध से सहमति की ओर तथा विभिन्नता से एकता की ओर ले आऊँ। और इसी के लिए साधन उत्पन्न कर दिए हैं और उनके द्वार खोल दिए गए हैं। क्या तुम मार्गों की ओर नहीं देखते कि वे कैसे स्पष्ट कर दिए गए हैं और धुएँ वाले जहाज़ों को नहीं देखते कि वे कैसे चलाए गए हैं और दस महीने की गर्भवती ऊँटनियाँ कैसे बेकार छोड़ दी गईं। और विचार नहीं करते कि ख़बरों को पहुंचाना कैसे सरल बना दिया गया है और किस प्रकार विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है और लोगों को कैसे मिला दिया गया है। तुम देखते हो कि लोग इन जंगों के कारण जिनकी अग्नि बादशाहों के मध्य भड़काई गई है और विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण इस संसार से परलोक की ओर भेजे जा रहे हैं, फिर क़ुर्आन की शिक्षा के मग़्ज़ और रहमान ख़ुदा की किताब की हक़ीक़त के प्रचार से भी जिसके लिए मैं इस युग में भेजा गया हूँ। क्योंकि यह शिक्षा मौत की ओर बुलाती है अर्थात उस मौत की ओर जो शिर्क और तामसिक इच्छाओं को छोड़ने से इंसान पर आती है और फ़ितरती शरीयत में खो जाने की ओर तथा उस व्यक्ति की हालत

بالفتاوى التى تحصُل للقلب فى كل حين من الله مُنزّلِ الاقدار۔ وفى هذه الحالة يكون الإنسان مستهلكةَ الذات غيرَ تابعٍ لامر النفس والجذبات، حتى لا يُنسَب إليه سَكون ولا حركة ولا ترك ولا بطش ويتعالٰى شأنه عن التغيرات، ولا يوجد فيه من القصد والإرادة أثر، ولا من المدح والمذمّة خبر، ويصير كالاموات۔ فهذا نوع من الموت، فإنه لا يملك أهلُ هذا الموت حركةً ولا سُكونًا، ولا ألَمًا ولا لذّة،لا راحةً ولا تعبًا، ولا محبّة ولا عداوة، ولا عفوًا ولا انتقامًا، ولا بُخلًا ولا سخاوة، ولا جُبنًا ولا شجاعة، ولا غضبًا ولا تحنُّنًا، بل هو ميّتٌ فى أيدى الحىّ القيّوم، ما بقى فيه حركةٌ ولا هوى، ولا يُنسَب إليه شىء من هذه العوارض كما لا يُنسَب إلى

के समान हालत की ओर बुलाती है जो मर गया और फ़ना हो गया। और आत्मनिर्भरता की क्रियाओं से पूर्णत: वान्चित्य की ओर तथा उन फत्वों से समानता की ओर खींचती है जो भाग्य के रचयिता अल्लाह की ओर से दिल को हर पल प्राप्त होते हैं। इस हालत में इन्सान अपने वजूद को मार कर आत्मा और भावनाओं के अधीन नहीं रहता यहाँ तक कि उसकी ओर न कोई ठहराव सम्बद्ध हो सकता है और न कोई क्रिया और न छोड़ना और न पकड़ना। उसकी शान परिवर्तनों से मुक्त हो जाती है और उसमें अपने संकल्प तथा इच्छा का कोई निशान तक नहीं रहता और न किसी प्रशंसा और निंदा की ख़बर होती है और वह मुर्दों के समान हो जाता है। अत: यह मौत की एक प्रकार है उस मौत का मर्तबा पाने वाला न किसी प्रतिक्रिया की शक्ति रखता है और न किसी दु:ख तथा आनंद की, न किसी आराम और थकावट की तथा न किसी प्रेम और शत्रुता की, न क्षमा की, न प्रतिशोध की और न किसी कंजूसी तथा दान की, न किसी बुज़दिली और न बहादुरी की और न क्रोध की और न करुणा की बल्कि वह हय्यो क़य्यूम (ख़ुदा) के हाथ में एक मुर्दा होता है जिसमें न कोई प्रतिक्रिया शेष रही होती है और न कोई इच्छा और न ही उन अवस्थाओं में से कोई उसकी ओर सम्बद्ध की जाती

الموتٰی۔ ولا شك أن هذه الحالة موت وإنها منتهی مراتب العبودیة، والخروج من العیشة النفسانیة، وإلیها تنتهی سیر الاولیاء الذاهبین إلی الحضرة الاحدیة۔ هذا تعلیم القرآن، وکلُّ تعلیم دون ذالك فی الجذب إلی الرحمٰن، ولیس بعده مرتبة من مراتب السلوك والعرفان عند ذوی العقل والفکر والإمعان۔ وإن التوراة أمال الناسَ إلی الانتقام، وعنده لا مفرَّ للظالم ولا خلاصَ، وإن عیسٰی شرّع لامّته أنّ أحدهم إذا لُطِم فی خدّه وضَع الخدّ الآخر لمن لطمه ولا یطلب القصاصَ۔ فلا شك أن هذین الحزبین لا یشاورون الشریعة الفِطریّة، ولا یتّبعون إلّا الاوامر القانونیة وأما الرجل المحمّدی فقد أُمر له أن یتّبع الشریعة الفطریة کما

है जैसा कि वह मुर्दों की ओर सम्बद्ध नहीं की जाती। और निस्संदेह यह अवस्था एक मौत है और मरातिब-ए-अबूदियत (बंदगी के मरतबों) की पराकाष्ठा और सांसारिक मोह-माया से निकल जाना है और इसी पर ख़ुदा-ए-वाहिद की ओर जाने वाले औलिया की यात्रा पूर्णता को पहुँचती है। यही क़ुर्आन की शिक्षा है और शेष हर शिक्षा रहमान ख़ुदा की ओर ले जाने में इससे निम्नतर है। बुद्धिमानों और चिन्तन-मनन करने वालों के निकट साधना और अध्यात्मज्ञान के मर्तबों में से उसके बाद अन्य कोई मर्तबा नहीं। तौरात ने लोगों को प्रतिशोध की ओर प्रेरित कर दिया। उसके निकट अत्याचारी के लिए बच निकलने का और मुक्ति का अब कोई मार्ग नहीं और ईसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत के लिए आदेश दिया कि उन में से किसी के एक गाल पर यदि थप्पड़ मारा जाए तो वह अपना दूसरा गाल भी थप्पड़ मारने वाले के आगे रख दे और बदला न मांगे। निस्संदेह ये दोनों समूह फ़ितरती शरीयत के अनुकूल नहीं और केवल क़ानूनी आदेशों का अनुसरण करते हैं जबकि मुहम्मदी व्यक्ति (मुसलमान) को यह आदेश दिया गया है कि वह जैसे क़ानूनी शरीयत (अर्थात क़ुर्आन) का अनुसरण करता है ऐसा ही वह फ़ितरती शरीयत का भी अनुसरण करे और किसी भी मामले का अंतिम

يتبع الشريعة القانونية، ولا يقطَع أمرًا إلا بعد شهادة الشريعة الفطرية، ولذالك سُمِّيَ الإسلام دينَ الفطرة للزوم الفطرة لهذه الملّة، وإليه أشار نبيّناصلى الله عليه وسلم استَفْتِ قلبَك ولو أفتاك المُفتون۔ فانظرْ كيف رغَّب فى الشريعة الفطرية ولم يقنع على ما قال العالمون۔ فالمسلم الكامل من يتّبع الشريعتين، وينظر بالعينين، فيُهدٰى إلى الصراط ولا يخدعه الخادعون۔ ولذالك ذكر الله فى محامد الإسلام أنه شريعة فطرية، حيث قال "فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا "وهذا من أعظم فضائل هذه الملّة ومناقبِ تلك الشريعة فإنه يوجد فى هذا التعليم مدار الامر على القوة القُدسية القاضية الموجودة فى النشأة الإنسانية المُوصِلة إلى

निर्णय फ़ितरती शरीयत की गवाही के पश्चात ही किया जाए। इस उम्मत की फितरत से वाबस्तगी के कारण इस्लाम को दीन-ए-फितरत (फ़ितरत पर आधारित धर्म) का नाम दिया गया है। इसी की ओर इशारा करते हुए हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि चाहे फ़त्वा देने वाले तुझे फ़त्वा देते रहें तब भी اِسْتَفْتِ قَلْبَك (इस्तफ्ति क़ल्बक) तू अपने दिल से पूछ। अत: तू देख कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस प्रकार फ़ितरत शरीयत की ओर प्रेरणा दिलाई है और उलमा के कथनों पर ही अंत नहीं किया। अत: पक्का मुसलमान वह है जो दोनों शरीयतों का अनुसरण करता है और दोनों आँखों से देखता है अत: उसका सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन किया जाता है और धोखेबाज़ उसे धोखा नहीं दे सकते। इसीलिए अल्लाह ने इस्लाम की विशेषताएँ वर्णन करते हुए फ़रमाया कि वह दीन-ए-फ़ितरत है जैसा कि फ़रमाया-

فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ٭

यह बात इस उम्मत की विशेषताओं और इस शरीयत की उत्तम खूबियों में से

٭ **अनुवाद -** अल्लाह की फितरत को अपनाओ (वह फितरत) जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया। (अर्रूम - 31)

كمال تام فى مراتب المحويّة، فلا يبقى معها مَنْفَذ للتصرّفات النفسانية، لِما فيه عملٌ على الشهادة الفطرية۔ وأمّا التوراة والإنجيل فيتركان الإنسان إلى حدّ هو أبعدُ من الشهادة الفطرية القدسية، وأقربُ إلى دخل إفراط القوة الغضبيّة، أو تفريط القوة الواهمة، حتى يمكِن أن يُسمَّى المنتقم فى بعض المواضع ذئبًا مؤذيًا عند العقلاء، أو يُسمَّى الذى عفا فى غير محلّه وأغضٰى مثلًا عند رؤية فسقِ أهله دَيُّوثًا وقيحًا عند أهل الغيرة والحياء۔ ولذالك ترى فى بعض المواضع رجلًا سَرَّه تعليمُ العفو يترُك حقيقةَ العفو والرحمة، ويجاوز حدود الغيرة الإنسانية۔ فإن العفو فى كل محلّ ليس بمحمود عند العاقلين، و كذالك الانتقام فى كل مقام ليس

महानतम है क्योंकि इस (क़ुर्आन की) शिक्षा में हर मामले का आधार इस निर्णय करने वाली कुव्वत-ए-क़ुदसिया (पवित्र शक्ति) पर है जो मनुष्य की बनावट में ही मौजूद है और फ़ना के मर्तबों में पराकाष्ठा तक पहुंचाती है। इसकी उपस्थिति में तामसिक इच्छाओं के हस्तक्षेप की कोई गुन्जाइश नहीं रह जाती क्योंकि इस में फ़ितरत की गवाही के अनुसार काम किया जाता है। जबकि तौरात और इंजील मनुष्य को उस सीमा पर छोड़ जाती हैं जो पवित्र फ़ितरत की गवाही से बहुत दूर है और क्रोध शक्ति की अधिकता या भ्रम शक्ति की न्यूनता के हस्तक्षेप के बहुत निकट है यहाँ तक कि बुद्धिमानों के निकट कुछ अवस्थाओं में प्रतिशोध लेने वाले को कष्टदायक भेड़िया कहना भी संभव होगा, या अवसर के विपरीत उदाहरणस्वरूप पत्नी के कुकर्म को देख कर क्षमा और अनदेखा करने वाले को भी अधम और निर्लज कहना, स्वाभिमानी और लज्जावान व्यक्ति के निकट उचित होगा। इसलिए कुछ अवसरों पर तू उस व्यक्ति को जिसे क्षमा की शिक्षा बहुत पसंद है, देखता है कि वह क्षमा और दया की वास्तविकता को छोड़ बैठता है और मानवीय स्वाभिमान की सीमाओं से बाहर निकल जाता है क्योंकि बुद्धिमानों के निकट हर अवसर पर क्षमा कर देना प्रशंसनीय नहीं है। इसी प्रकर

بخير عند المتدبّرين۔ فلا شك أنه مَن أوجب العفو على نفسه فى كل مقام بمتابعة الإنجيل فقد وضَع الإحسان فى غير محلّه فى بعض الحالات، ومَن أوجب الانتقام على نفسه فى كل مقام بمتابعة التوراة فقد وضع القصاص فى غير محلّه وانحطّ من مدارج الحسنات۔ وأمّا القرآن فقد رغّب فى مثل هذه المواضع إلى شهادة الشريعة الفطرية التى تنبع من عين القوة القدسية، وتنزل من روح الامين فى جَذْرِ القلوب الصافية، وقال "جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ" فانظرْ إلى هذه الدقيقة الروحانية، فإنه أمَر بالعفو عن الجريمة بشرط أن يتحقق فيه إصلاحُ لنفسٍ، وإلّا فجزاء السيئة بالسيئة۔ ولما كان القرآن خاتم

चिंतन-मनन करने वालों के निकट हर अवसर पर प्रतिशोध लेना भी अच्छा नहीं। अत: निस्संदेह जिसने भी इंजील का अनुसरण करते हुए हर अवसर पर क्षमा करना अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया हो तो कुछ अवस्थाओं में उसने अवसर के प्रतिकूल उपकार किया और जो तौरात के अनुसरण में हर स्थान पर प्रतिशोध लेना ही अपने ऊपर अनिवार्य कर ले तो उसने अवसर के प्रतिकूल प्रतिशोध लिया और नेकियों के मर्तबों से नीचे गिर गया। जबकि क़ुर्आन ने इस प्रकार के अवसरों पर इस फ़ितरती शरीयत की गवाही की ओर प्रेरणा दिलाई है जो अध्यात्म शक्ति के स्रोत से फूटती है और फ़रिश्ते की ओर से पवित्र दिलों की गहराई में उतरती है। क़ुर्आन कहता है-

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ✲

अत: तू इस रूहानी सूक्ष्म विषय पर विचार कर कि उसने किसी जुर्म पर क्षमा का आदेश इस शर्त के साथ दिया है कि उसमें व्यक्ति का सुधार होता हो वरना बुराई का बदला की गई बुराई के बराबर है क्योंकि क़ुर्आन समस्त किताबों का

✲ **अनुवाद -** बुराई का बदला उतनी ही बुराई होती है और जो क्षमा करे और सुधार को दृष्टिगत रखे तो उसको बदला देना अल्लाह के ज़िम्मे होता है। (अश्शूरा-41)

الكتبِ وأكملَها وأحسن الصحف وأجملَها، وَضَع أساس التعليم على منتهى معراج الكمال، وجعَل الشريعة الفطرية زوجًا للشريعة القانونية فى كل الاحوال، ليعصم الناس من الضلال، وأراد أن يجعل الإنسان كالميت لا يتحرّك إلى اليمين ولا إلى الشمال، ولا يقدر على عفو ولا على انتقام إلا بحُكم المصلحة من الله ذى الجلال۔ فهذا هو الموت الذى أُرسِلَ له المسيح الموعود ليُكمِله بإذن الربّ الفعّال، ولاجل ذالك قلتُ إن المسيح الموعود ينقل الناسَ من الوجود إلى العدم، فهذا نوع من النقل وقد سبق قليل من هذا المقال۔ وشتّان بين هذا التعليم الجليل وتعليم التوراة والإنجيل، فاسأل الذين قبِلوا وساوس الدجّال۔ إن هذا التعليم يهدى لِلّتى هى أقوَمُ، ليس فيه إفراط ولا تفريطٌ ولا ترك مصلحة

ख़ातम और अकमल (पूर्ण) है और समस्त पुस्तकों से बेहतरीन और अत्यंत सुंदर है। इसलिए उसने अपनी शिक्षा का आधार मेराजे कमाल की पराकाष्ठा पर रखा है और समस्त परिस्तिथियों में फितरती शरीयत को कानून-ए-शरीयत का साथी बनाया ताकि लोगों को गुमराही से बचाए। और चाहा कि इंसान को उस मुर्दा की तरह बना दे जो न दाएं ओर हरकत करता है और न बाएं ओर तथा प्रतापवान ख़ुदा के हितकारी आदेश के बिना न क्षमा करने का अधिकार रखता है और न बदला लेने का। अत: यही वह मौत है जिसके लिए मसीह मौऊद को भेजा गया है ताकि फ़आ'ल (सर्वदा सक्रीय) ख़ुदा के आदेश से उसको पूरा करें और इसीलिए मैंने कहा है कि मसीह लोगों को अस्तित्व से अनस्तित्व की ओर परिवर्तित करेगा तथा यह परिवर्तन की एक प्रकार है और इस वार्तालाप का थोड़ा सा भाग बीत चुका है। इस महान शिक्षा तथा तौरात और इंजील की शिक्षा के मध्य बहुत अन्तर है। अत: तू उन लोगों से पूछ ले जिन्होंने दज्जाल के भ्रमों को स्वीकार कर लिया है। निस्संदेह यह शिक्षा उस मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है जो सबसे अधिक न्याययुक्त है न उसमें अधिकता है और न न्यूनता, न हित और विवेक को छोड़ना

وحكمة، ولا ترك مقتضى الوقت والحالعبل هو يجرى تحت مجارى الاوامر الشريعة الفطرية وفتاوى القوة القدسية ولا يميل عن الاعتدال۔ وقد قُدّر من الازل أن المسيح الموعود يُشيع هذا التعليم المحمود حق الإشاعة، ليُميت السعدائَ قبل موت الساعة، فهناك يموت الصالحون من كمال الإطاعة، وهذا الموت يُعطٰى للقلوب السليمة الصافية، ويشربون كأس المحويّة، ويغيبون فى بحر الوحدة بعد نَضْوِ لباس الغَيريّة۔ وأمّا الذين شقُوا فيرد عليهم فى آخر الامر رجس من السماء بأنواع الوباء ، أو بالمحاربات وسفك الدماء ، فيسرى بينهم الإقعاصُ والقَعْص كقُعاص الغنم تقديرًا من حضرة الكبرياء ، ويكثُر المحاربات على الارض فتختتم حرب وتبدو أخرى، وتسمعون من كل طرف

है और न समय और वर्तमान की मांग को नज़रअंदाज़ करना है बल्कि वह स्वाभाविक शरीयत के आदेशों और सात्विक शक्ति की मांग के अंतर्गत चलती है और न्याय से नहीं हटती। और आदिकाल से यह निर्धारित किया जा चुका है कि मसीह मौऊद इस प्रशंसा योग्य शिक्षा का वैसा प्रचार करे जैसा कि होना चाहिए ताकि सौभाग्यशालियों को क़यामत वाली मौत से पहले ही मौत दे दे। अत: इस अवसर पर नेक लोग पूर्ण आज्ञापालन के द्वारा (मानो) मर जाएंगे और यह मौत स्वच्छ और पवित्र दिलों को ही नसीब होती है। वे फ़ना का जाम पीते हैं और दोगलेपन के वस्त्र उतार फैंकने के बाद एकेश्वरवाद के समुद्र में खो जाते हैं। और वे लोग जो दुर्भाग्यशाली हुए अंतत: उन पर विभिन्न प्रकार की आपदाओं के द्वारा या जंगों तथा रक्तपात के द्वारा आसमान से अज़ाब आएगा। और ख़ुदा तआला की तक़दीर के तौर पर उन में यकायक मौत और ऐसी बीमारी का सिलसिला जारी हो जाएगा जो भेड़ों में फैल कर उनको तुरंत मार देती है। धरती पर जंगें बहुत होंगी और एक जंग समाप्त होगी तो दूसरी का आरंभ हो जाएगा और तुम हर ओर से मरने वालों के समाचार सुनोगे। यह सब कुछ मसीह के अस्तित्व की विशेषता के

أخبار الموتٰى۔ وذالك كله لخاصيةِ وجود المسيح، فإن الله نزّله كالمُجِيح، وهذا من أكبر علاماته وخواص ذاته، فإنه قابلَ آدم فى هذه الصفات، مع بعض أمور المضاهات، أما المضاهاة فتوجد فى نوع الخِلقة، فإن آدم خُلق منه حوّائُ كالتَوئَم مِن يد القدرة، و كذالك خُلق المسيح الموعود تَوْئَمًا وتولّدتْ معه صبيةٌ مسمّاة بالجَنّة، وماتت إلى ستة أشهر من يوم الولادة وذهبت إلى الجنّة، وما ماتت حوّاء لتكون سببًا للكثرة، فإن آدم قد ظهر لينقل الناس من العدم إلى الوجود، فكان حقُّ تَوْئَمِه أن يبقى لينصره على تكميل المقصود، وأمّا المسيح الموعود فقد ظهر لينقل الناس من الحيٰوة إلى المَنيّة، فكان حقُّ توءِمِه أن ينقل من

कारण होगा। निस्संदेह अल्लाह ने उसे एक संहारक के समान उतारा है और यह उसकी बड़ी निशानियों में से और उसके अस्तित्व की विशेषताओं में से है। अत: वह उन विशेषताओं में समानता के कुछ पहलुओं के साथ आदम के मुकाबले पर भी है। जहां तक समानता का संबंध है तो वह जन्म में पाई जाती है जैसा कि ख़ुदा के हाथ से आदम से हव्वा एक जुड़वां की तरह पैदा की गई, इसी प्रकार मसीह मौऊद भी जुड़वां पैदा हुए और उसके साथ एक लड़की 'जन्नत' नामक भी जन्मी जो जन्म के दिन से 6 महीने बाद मृत्यु को प्राप्त हो गई और जन्नत में चली गई जबकि हव्वा की मृत्यु न हुई ताकि वह जनसंख्या वृद्धि का कारण बने क्योंकि आदम इसलिए प्रकट हुआ था ताकि लोगों को अनस्तित्व से अस्तित्व की ओर ले आए इसलिए उसकी जुड़वां के लिए आवश्यक था कि वह जीवित रहे ताकि उद्देश्य की पूर्ति में आदम की सहायता करे और जहां तक मसीह मौऊद का संबंध है तो वह लोगों को जीवन से (सांसारिक मोह माया की) मृत्यु की ओर ले जाने के लिए प्रकट हुआ। इसलिए उसकी जुड़वा का यह अधिकार था कि उसे इस लोक से स्थानांतरित कर दिया जाए ताकि वांछित उद्देश्य के लिए इरहास (मार्ग प्रशस्त कर्ता) हो। फिर आदम जुमा के दिन पैदा हुआ और इसी

هـذه الدار ليكـون إرهاصًـا لـلإرادة المَنُويّـة۔ ثـم إنّ آدم خُلـق فى يـوم الجمعـة، و كذالـك وُلد المسـيح الموعـود فى هـذا اليـوم فى السـاعة المباركة۔ثـم إن آدم خُلِـق فى اليـوم السـادس، و كذالـك المسـيح الموعـود خُلـق فى الالـف السـادس۔وأما الآفـات الـتى قُـدّر ظهورهـا فى وقـت المسـيح۔فمِن أعظمهـا خـروج يأجـوج ومأجـوج، وخـروج الدجّـال الوقيـح، وهـم فتنـة للمسـلمين عنـد عصيانـهم وفرارهـم من الله الـودود، وبـلاء عظيـم سُـلّط علـيهم كمـا سُـلّط علـى اليهـود واعلم أن يأجـوج ومأجـوج قومـان يسـتعملون النـار وأجيجـه فى المحاربـات وغيرهـا مـن المصنوعـات، ولذالـك سُـمّوا بهذيـن الاسـمين، فـإن الاجيـج صفـة النـار و كذالـك يكـون حربـهم بالمـوادّ الناريـات،

तरह मसीह मौऊद भी उसी (जुमा के) दिन की एक पवित्र घड़ी में पैदा हुआ। फिर आदम छठे दिन में पैदा हुआ और इसी तरह मसीह मौऊद छठे हज़ार में पैदा हुआ और वे आपदाएं जिनका प्रकटन मसीह के समय में निर्धारित किया गया था उनमें से बड़ी-बड़ी आपदाएं याजूज-माजूज का निकलना और निर्लज्ज दज्जाल का प्रकटन है। ये लोग, मुसलमानों की अवज्ञाओं और ख़ुदा तआला से दूरी के समय फ़ित्ना (परीक्षा) के तौर पर और एक बड़ी बला के तौर पर हैं जो उन (मुसलमानों) पर हावी कर दी गई है जैसा कि यहूदियों पर हावी कर दी गई थी। स्पष्ट हो कि याजूज-माजूज दो क़ौमें हैं जो जंगों और अन्य उपकरणों में अग्नि और उसके शोलों का प्रयोग करती हैं। इसी कारण उन को यह दो नाम दिए गए हैं। الاَجِيْج (अल-अजीज) अग्नि की विशेषता है। इसी प्रकार उनकी जंग अग्नि आधारित उपकरणों से होती है और जंग के इस तरीक़े से वे समस्त संसार पर विजयी होते जाते हैं और वे हर ऊंचाई से दौड़ते चले आते हैं। न समुद्र उनके मार्ग में रोक बनता है और न कोई पहाड़। बादशाह भय के मारे उनके आगे गिरे जाते हैं, किसी में उनका सामना करने की शक्ति बाकी नहीं रही और वे सब उन (अर्थात याजूज-माजूज) के नीचे निर्धारित अवधि तक

ويفوقون كلَّ من في الارض بهذا الطريق من القتال، ومِن كل حدَبٍ ينسِلون، ولا يمنعهم بحر ولا جبل من الجبال، ويخرّ الملوك أمامهم خائفين، ولا تبقى لاحدٍ يدُ المقاومة، ويُداسَون تحتهم إلى الساعة الموعودة۔ ومَن دخل في هاتين الحجارتين ولو كان له مملكة عظمٰى، فطُحن كما يُطحَن الحَبُّ في الرَحى، وتُزلزَل بهما الارض زلزالها، وتُحرَّك جبالها، ويُشاع ضلالها، ولا يُسمَع دعاءٌ ولا يصل إلى العرش بكاءٌ، ويصيب المسلمين مصيبة تأكل أموالهم وإقبالهم وأعراضهم، وتهتك أسرار ملوك الإسلام، ويظهَر على الناس أنهم كانوا مَورِدَ غضبِ الله من العصيان والإجرام۔ ويُنزَع منهم رعبهم وإقبالهم وشوكتهم وجلالهم بما كانوا لا يتّقون۔ ويبارون الاعداء من طريق وينهزمون من سبعة

कुचले जाते रहेंगे। जो कोई भी उन दो पत्थरों के बीच में आएगा चाहे उसका महान साम्राज्य ही क्यों न हो तो वह इस प्रकार पीस दिया जाएगा जिस प्रकार दाना चक्की में पीसा जाता है। और धरती उन दोनों के कारण भयंकर कम्पन में डाली गई है, उसके पहाड़ों को हिला दिया गया है और उसकी गुमराही फैला दी गई है, न कोई दुआ सुनी जाती है और न कोई रोना-धोना आसमान तक पहुंचता है। मुसलमानों को वह मुसीबत पहुंच रही है जो उनके मालों और शानो-शौकत और सम्मान को खाती जाती है। मुसलमान बादशाहों का तिरस्कार किया जा रहा है और लोगों पर प्रकट हो रहा है कि वह अपनी अवज्ञा और जुर्म करने के कारण अल्लाह के क्रोध के भागी बन रहे हैं। उनसे उनका रोब, प्रभुत्व और शानो-शौकत और प्रताप इसी कारण छीन लिया गया है कि वे संयम धारण नहीं करते। वे एक प्रकार से शत्रुओं से मुकाबला करते हैं और सात प्रकारों से पराजय का सामना करते हैं क्योंकि वे नेक लोग नहीं हैं। वे लोगों के सामने दिखावा करते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी सुन्नत का अनुसरण नहीं करते और न ही धर्म को सही रूप से अपनाते हैं। वे केवल सूरतें

طُرق بما كانوا لا يحسنون۔ يراءون الناس ولا يتّبعون رسول الله وسُنّته ولا يتديّنون۔ وإنّهم إلا كالصور ليس الروح فيهم، فلا ينظر إليهم الله بالرحمة ولا هم يُنصَرون۔ وكان الله يريد أن يتوب عليهم إن كانوا يتضرّعون، فما تابوا وما تضرّعوا فنزَل على المجرمين وبالهم إلا الذين يخشعون۔ ويرون أيام المصائب ولياليها كما رأى الملعونون۔ فعند ذالك يقوم المسيح أمام ربه الجليل، ويدعوه فى اللّيل الطويل، بالصراخ والعويل، ويذوب ذوبان الثلج على النار، ويبتهل لمصيبة نزلتْ على الديار، ويذكُر اللهَ بدموع جارية وعبرات متحدّرة، فيُسمَعُ دعاؤه لمقامٍ له عند ربه، وتنُزل ملائكة الإيواء، فيفعل الله ما يفعل، وينجّى الناس من الوباء۔ فهناك يُعرَف المسيح فى الارض كما عُرِفَ فى السماء،

हैं जिनमें आत्मा कोई नहीं इसलिए अल्लाह उन पर कृपादृष्टि नहीं करता और न उनकी सहायता की जाती है। यदि वे विलाप करते तो अल्लाह उनकी तौबा (पश्चात्ताप) स्वीकार करना चाहता है परंतु न उन्होंने तौबा की और न विलाप से काम किया। अत: मुजरिमों पर उनका वबाल उतरा है सिवाय उनके जो विनम्रता धारण करते हैं। वे कठिनाई के दिन और रात देखेंगे जैसा कि लानती लोगों ने देखा तब ऐसी अवस्था में मसीह अपने प्रतापी रब्ब के समक्ष खड़ा होगा और लम्बी रात में उसे रोते-गिड़गिड़ाते हुए पुकारेगा और अग्नि पर बर्फ के पिघलने के समान पिघलेगा और इस मुसीबत पर जो देशों पर आई है गिड़गिड़ा कर दुआ करेगा और बहते आंसुओं और टिप-टिप गिरते अश्कों से अल्लाह को याद करेगा तो उसके इस मुक़ाम के कारण जो उसे उसके रब के समक्ष प्राप्त है, उसकी दुआ सुनी जाएगी और शरण देने वाले फरिश्ते उतरेंगे और अल्लाह वह काम करेगा जो वह करेगा और लोगों को इस आपदा से मुक्ति देगा। तब मसीह धरती पर भी वैसे ही पहचाना जाएगा जैसा कि वह आसमान पर पहचाना गया है और समाज के सामान्य तथा विशेष वर्ग के दिलों में उसकी स्वीकार्यता बिठा

و يوضع له القبول فى قلوب العامة و الامراء، حتى يتبرّك الملوك بثيابه۔ و هذا كله من الله و من جنابه و فى أعين الناس عجيب۔ ففكِّرْ فى القرآن و الاحاديث إن كنت تريب۔ و ما قلتُ من عندى بل هو عقيدة الجمهور من الصلحاء المسلمين، و مكتوبٌ فى كتاب ربّ العالمين۔

★ ★ ★

दी जाएगी यहां तक कि बादशाह उसके कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे। यह सब कुछ अल्लाह की ओर से और उसकी तरफ से होगा और लोगों की नज़र में विचित्र होगा। अत: अगर तुझे संदेह है तो क़ुर्आन और हदीस पर विचार कर। मैंने यह बातें अपनी ओर से नहीं कहीं बल्कि यह मुसलमान सुलहा में से सब की आस्था है और रब्बुलआलमीन (ब्रह्माण्ड के पालनहार) की पुस्तक में लिखा हुआ है।

★ ★ ★

وَالحَالَةُ المَوْجُوْدَةُ تدعو المسيح الموعُودَ
وَالمَهْدى المَعْهُودَ

إن الارض مُلِئت ظلمًا وجَورًا، وأحاط الفساد نجدًا وغَورا، والحقائق زالت عن أماكنها، والدقائق تحوّلت عن مراكزها ونضت الملّة لباس زينتها، وأغمدت الشريعة سيف شوكتها، وأُضيعَ أسرار بطنها ورموز هويّتها، وأُريقَ دماء أبنائها وحفدتها، حتى إن السماء بكت على ثُكلها وغربتها، وما بقى جارحة من جوارحها إلّا سقمتْ، وما مُضنِئة من مضنئاتها إلا عقمتْ، فالآن هى عجوز فقدت قواها، وشيخة غيّرت صورتها وسناها، وفى لسانها لُكَنة أظهرتها، وفى أسنانها قلوحة علتّها

वर्तमान अवस्था मसीह मौऊद और महदी माहूद को पुकार रही है

निस्संदेह धरती अत्याचार से भर गई है और उपद्रव ने हर स्थान को घेर लिया है वास्तविकताएं अपने स्थान से हट गईं और सूक्ष्म ज्ञान अपने केंद्र से जुदा हो गए हैं। उम्मत ने अपने सौन्दर्य की वेशभूषा उतार दी है और शरीयत ने अपनी शानो-शौकत की तलवार मियान में रख ली है। उसके आंतरिक भेद और गोपनीय रहस्य नष्ट हो गए हैं। उसके पुत्रों और पौत्रों का वध किया गया है यहाँ तक कि आसमान भी उसके पुत्रों के मर जाने और उसके परदेसी होने पर रो रहा है। उसका हर अंग बीमार हो चुका है और उसकी हर स्त्री बाँझ हो चुकी है। अत: अब वह एक बुढ़िया है जो अपनी समस्त शक्तियाँ खो बैठी है और एक अत्यंत वृद्ध स्त्री है जिसकी शक्ल व सूरत और चमक-दमक फीकी पड़ चुकी है और उसकी जीभ में तोतलापन है जिसका बार-बार इज़हार होता है और उसके दांतों पर पीलापन छाया हुआ है। क्या यह धर्म वही धर्म है जो

أهـذه الملة هـى الملّة الـتى أتٰى بهـا خاتـم النبيـين وأكملَهـا ربّ العالمـين؟ كلا بـل هـى فسـدت كل الفسـاد مـن أيـدى المبتدعـين الذيـن جعلـوا القـرآن عِضِـين، وضلّـوا وأضلّـوا ومـا كانـوا متفقهـين إنـهم قـوم لا يملكـون غـير القشـرة، ولا يـدْرون مـا لُـبّ الحقيقـة، ثـم يزعمـون أنـهم مـن العالِمـين، بـل مـن مشـايخ الديـن ولا تجـرى علٰى ألسـنهم إلا قصـص نحتـتْ آبـاءهـم، ومـا بقـى عندهـم إلا أمانيـهم وأهـواءهـم، واحتفلـت جوامعـهم مـن قـوم لا يعلمـون سـرّ العبوديـة، ويجادلـون بألفـاظ سـمعوها مـن الفئـة الخاطئـة، ومـا وطئـتْ قدمـهم سـكك الروحانيـة يصلّـون ولا يـدرون حقيقـة الصلٰـوة، ويقـرءون القـرآن ولا يفهمـون كلام ربّ الكائنـات، وظهـر الحـق فـلا

हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लाए थे और जिसे रब्बुल आलमीन ने पूर्ण किया था? कदापि नहीं, बल्कि यह उन बिदअतों के हाथों हर प्रकार से बिगड़ चुका है जिन्होंने क़ुर्आन को टुकड़े-टुकड़े बना रखा है। वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया और वे समझ-बूझ रखने वाले नहीं। ये वे लोग हैं जिनके पास सिवाए छिलके के कुछ नहीं और वे वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं फिर भी दावा करते हैं कि वे उलमा में से अपितु धर्म के मशाइख (पीर लोगों) में से हैं। उनकी ज़बानों पर केवल वे किस्से हैं जो उनके बाप-दादा ने गढ़ लिए थे उनके पास सिवाए आशाओं और इच्छाओं के और कुछ नहीं रहा। उनकी जामा मस्जिदें ऐसे लोगों से भरी हुई हैं जो उपासना के तरीक़ों से अनभिज्ञ हैं। वे उन शब्दों को लेकर झगड़ते हैं जो उन्होंने ग़लती करने वालों से सुने हैं और उनके क़दम आध्यात्मिकता के घर में नहीं पड़े। वे क़ुर्आन पढ़ते हैं लेकिन ब्रहमाण्ड के पालनहार के उपदेश को नहीं समझते। सत्य प्रकट हो गया लेकिन वे उसे नहीं पहचानते। अल्लाह ने अपने मसीह को अवतरित कर दिया है परन्तु वे उसे स्वीकार नहीं करते और उसका तिरस्कार करते हैं और सम्मान नहीं करते और न मोमिन होकर उसकी सेवा में आते हैं। जब सत्य उनके पास

يعرفونه، وبعث الله مسيحه فلا يقبلونه، ويحقّرونه ولا يوقّرونه، ولا يأتونه مؤمنين وجحدوا بالحق لما جاءهم وكانوا من قبل منتظرين وإذا قيل لهم بادِروا الخير أيها الناسءولا تتّبعوا خطوات الخنّاس، قالوا إنكم من الضالين وكذّبونى وما فتّشوا حق التفتيش، ولا يمرّون علىّ إلّا مستكبرين ونسوا كُلّ ما ذكّرهم القرآن، ولا يعلمون ما أنزل الرحمٰن، ويُنفِدون الاعمار غافلين ولو عرفوا القرآن لعرفونى، ولكنهم نبذوا كتاب الله وراء ظهورهم وكانوا مجترئين ويقولون لستَ مرسلا، وكفى بالله وآياته شهيدًا لو كانوا طالبين ووقفوا ألسنهم على السب والتوهين، واستظهروا على مخالفة القرآن بأخبار ضعيفة ما

आया तो उन्होंने हठपूर्वक उसका इंकार किया जबकि इससे पहले वे इसकी प्रतीक्षा में थे। जब उनसे कहा जाता है कि हे लोगो! भलाई की ओर दौड़ो और भ्रम उत्पन्न करके पीछे हट जाने वाले शैतान के कदमों पर न चलो तो कहते हैं कि तुम गुमराहों में से हो। उन्होंने मुझे झुठलाया और जैसा चाहिए था छानबीन न की और मेरे पास से इन्कार करते हुए ही गुज़रते हैं और जो भी क़ुर्आन ने उन्हें उपदेश किया था उसे भूल गए हैं और नहीं जानते कि रहमान ख़ुदा ने क्या उतारा है और अपनी आयु व्यर्थ की बातों में गंवा रहे हैं। अगर वे क़ुर्आन का विवेक रखते तो अवश्य मुझे भी पहचान लेते लेकिन उन्होंने अल्लाह की किताब को अपनी पीठों के पीछे बड़ी दिलेरी से फेंक रखा है। वे कहते हैं कि तू अवतार नहीं है यदि वे सच्चाई के इच्छुक होते तो अल्लाह और उसके निशान गवाह होने के दृष्टिकोण से पर्याप्त हैं। उन्होंने अपनी ज़बानें गाली-गलौज और अपमान करने के लिए वक़्फ़ कर रखे हैं। उन्होंने क़ुर्आन के विरुद्ध उन कमज़ोर रिवायतों से सहायता चाही है जिन्हें विश्वास का कोई झोंका नहीं छुआ। अल्लाह ने सत्य को प्रकट कर दिया है परंतु वे नहीं सुनते हैं, भेद के ऊपर से पर्दा हटा दिया है परंतु वे नहीं लौटते। उन्होंने क़ुर्आन को पढ़ा परंतु उसके छुपे हुए ख़ज़ाने के

مسَّــها نفحــةُ اليقــين و إن الله قــد جــلّى الحــق فــلا يســمعون، و كشَــف السـرّ فـلا يلتفتـون قـرء وا الفرقـان ومـا اطّلعـوا عـلى أسـرار دفائنـه، وصُفِّـدوا فى ألفـاظ القـرآن ومـا أُعطـوا أغـلاق خزائنـه فكيـف كان مـن الممكـن أن يرجعـوا سـالمين مـن هـذا الطريـق؟ فلإجـل ذالـك زاغـوا مـن محجّـة التحقيـق، ومـا ذاقـوا جرعـة مـن هـذا الرحيـق، ومـا كانـوا مسـتبصرين ثم لَمّـا جعلـنى الله مسـيحًا موعـودًا وبعثـنى صدقـا وحقـا عنـد وقت الضـرورة، طفقـوا يكذّبونـنى ويكفّرونـنى ويذكرونـنى بأقبـح الصـورة، ومـا كانـوا منتهـين وقـد وافت شـمسُ الزمـان غروبَهـا، وحيّـة الحيـات قصـدتْ دُروبهـا، ومـا بقِـى مـن الدنيـا إلّا قليـل مـن حـين أيريـدون أن يطـول أجـلُ الشـيطان؟ وإن

भेद पर सूचना नहीं पाई। वे क़ुर्आन के शब्दों में जकड़े गए हैं और क़ुर्आन के बंद ख़ज़ानों की चाबियां उनको नहीं दी गईं तो फिर किस प्रकार संभव है कि वे उस मार्ग से सही सलामत वापस आ सकें। इसलिए वे टेढ़े हो कर छानबीन के मार्ग से हट गए हैं और उस उत्तम शराब से एक घूंट भी नहीं चखा और न वे आध्यात्मिक दृष्टि रखने वाले हैं। फिर जब अल्लाह ने मुझे मसीह मौऊद बनाया और आवश्यकता के समय मुझे सच्चाई और इन्साफ के साथ भेजा तो वे मुझे झुठलाने और काफिर ठहराने और सबसे बुरे रंग में मेरा वर्णन करने लग गए और वे उससे रुकने वाले नहीं। ज़माने का सूर्य अस्त होने को है और जीवन का सांप अपने मार्गों का इरादा कर चुका और दुनिया का केवल थोड़ा सा समय ही शेष रह गया है। क्या वे चाहते हैं कि शैतान की निर्धारित अवधि और लंबी कर दी जाए। निस्संदेह हमारा यह ज़माना ही अन्तिम ज़माना है और उसने इस समय तक बहुत से लोग नष्ट कर दिए हैं। इससे पूर्व आदम जंग के मैदान में गिर गया था और शैतान ने उसे पराजित कर दिया था और छः हज़ार साल तक उसने प्रभुत्व न देखा। उस की औलाद तहस-नहस कर दी गई और विभिन्न दिशाओं में बिखर गई तो फिर कब तक शैतान को मोहलत दी जाएगी?

زماننا هذا هو آخر الزمان، وقد أهلكَ كثيرا مّن الناس إلى هذا الاوان و إن آدم هوٰى مِن قبل فى مَصاف، وهزمه الشيطان فما رأَى الغلبة إلى ستة آلاف، ومُزّقتْ ذُرّيّته وفُرّقت فى أطراف، فإلى كم يكون الشيطان من المنظَرين؟ ألم يُغْوِ الناس أجمعين إلا قليلًا من عباد الله الصالحين؟ فقد أتمّ أمره و كَمَّل فعله وحان أن يُعان آدم من ربّ العالمين ولا شك ولا شبهة أنّ إنظار الشيطان كان إلى آخر الزمان، كما يُفهَم من القرآن، أعنى لفظ الإنظار الذى جاء فى الفرقان، فإن الله خاطبه وقال "فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ-اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ"، يعنى يوم البعث الذى يُبعث الناس فيه بعد موت الضلالة بإذن الحيّ القيّوم ولا شك أن هذا اليوم يوم

क्या उसने अल्लाह के थोड़े से नेक बंदों (सदात्माओं) के सिवा शेष सब लोगों को गुमराह नहीं कर दिया? अत: वह अपना मामला पूरा कर चुका और अपना काम पूरा कर दिया और अब समय आ गया है कि समस्त ब्रह्मांड के पालनहार की ओर से आदम की सहायता की जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि शैतान को दी गई मोहलत अंतिम ज़माने तक थी जैसा कि क़ुर्आन में वर्णित शब्द इन्ज़ार (मोहलत दिए जाने) से समझा जा सकता है। अल्लाह तआला ने शैतान को संबोधित करके फरमाया -

فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ-اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ❊

अर्थात पुन: उठाए जाने के दिन तक जिसमें हय्यो क़य्यूम ख़ुदा के आदेश से लोग गुमराही की मौत के बाद दोबारा उठाए जाएंगे। निस्संदेह यह दिन ऐसा दिन है जो आदम के जन्म दिवस के समान है क्योंकि उसमें अल्लाह ने इरादा किया है कि आदम के समरूप पैदा करे और फिर धरती में उसकी आध्यात्मिक संतान फैला दे और उन्हें हर उस व्यक्ति पर प्रभुत्व प्रदान करे जिसने अल्लाह से संबंध तोड़ लिया और उससे कटकर अलग हो गया। अंतिम ज़माने में द्वितीय आदम

❊ **अनुवाद -** निस्संदेह तुझे मोहलत दी गई है एक निर्धारित समय के दिन तक। (साद- 81, 82)

يشابه يومَ خلقةِ آدم بما أراد الله فيه أن يخلق مثيل آدم، ثم يبث فى الارض ذرّيّة الروحانية و يجعلهم فوق كل من قطع من الله وتجذّمَ واشتدّت الحاجة إلى آدم الثانى فى آخر الزمان، ليتدارك ما فات فى أوّل الاوان، وليتمّ وعيد الله فى الشيطان، فإن الله جعله من المنظَرين إلى آخر الدنيا وأشار فيه إلى إهلاكه، وإخراجه من أملاكه، وما معنى الإنظار مِن غير وعيد القتل بعد أيام الإمهال وعيثِه فى الديار؟ و كان الإهلاك جزاءه بما أهلك الناس بالفتن الكبار و كان الالف السابع لقتله أجلًا مسمّى، فإنه أدخل الناس فى جهنّم من سبعة أبوابها ووفّى حق العَمى، فالسابع لهذه السبعة أنسب وأوفى و كتب الله أنه يُقْتل فى آخر حصّة الدنيا، ويُحيٰى

(के आगमन) की आवश्यकता बहुत बढ़ गई है ताकि जो आरम्भ में खो गया था वो उसकी भरपाई करे और ताकि शैतान के बारे में अल्लाह की भविष्यवाणी पूरी हो जाए क्योंकि अल्लाह ने उसे दुनिया के अंत तक छूट दी है और उसमें उसे नष्ट करने और अपने साम्राज्य से निकाल बाहर करने की ओर इशारा किया था। उसे छूट दिए जाने के दिनों के बाद और संसार में उसके चीर-फाड़ करने के बाद उसके वध की भविष्यवाणी के बिना उसे ढील देने का अर्थ ही क्या है? नष्ट होना ही उसका दण्ड है क्योंकि उसने बड़े बड़े फ़ित्नों से लोगों को नष्ट किया है। सातवां हज़ार उसका वध किए जाने के लिए एक निर्धारित अवधि थी क्योंकि उसने लोगों को सात द्वारों से नर्क में प्रविष्ट कराया था और अंधेपन का अधिकार पूर्णत: अदा किया था। अत: इन सात (द्वारों) के दृष्टिकोण से सातवां (हज़ार) अधिक उचित और अधिक सच्चा है। अल्लाह ने निर्णय कर रखा है कि वह (शैतान) दुनिया के अंतिम भाग में क़त्ल किया जाएगा और महान ख़ुदा की ओर से रहमत के तौर पर उस समय मनुष्यों को जीवन दिया जाएगा और बहुत बड़ी पराजय शैतान पर मुसल्लत (आच्छादित) कर दी जाएगी जैसे आरम्भ में आदम पर डाली गई थी। अत: उस समय जान के बदले जान और सम्मान के बदले सम्मान का प्रतिशोध

هناك أبناء آدم رحمةً من حضرة الكبرياء، ويجعل عليه هزيمة عظمى كما جعل على آدم فى الابتداء فهناك تُجزَى النفس بالنفس والعِرض بالعرض، وتُشرِق الارض بنور ربّها، وتهوى عدوُّ صفى الله، وكذالك جزاء عداوة الاصفياء وكان هذا الفتح حقًّا واجبا لآدم بما أذلّه الشيطان، فى حلية الثعبان، وألقاه فى مغارة الهوان وهدّم بعدما أعزّه الله وأكرمَ وما قصد إبليس إلا قتله وإهلاكه واستيصاله، وأراد أن يعدمه وذرّيته وآله، فكُتب عليه حُكم القتل من ديوان قضاء الحضرة بعد أيام المهلة، وإليه أشار سبحانه فى قوله إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ كما يعلمه المتدبّرون وما عُنِيَ بهذا القول بعث الاموات، بل أُريدَ فيه بعث الضالّين بعد الضلالات ويؤيده

लिया जाएगा, धरती अपने रब्ब के नूर से चमक उठेगी। आदम सफिउल्लाह का शत्रु नष्ट हो जाएगा, प्रतिष्ठित बन्दों से शत्रुता का दण्ड ऐसा ही होता है। यह विजय आदम का स्वयं सिद्ध अधिकार था क्योंकि जब अल्लाह ने उसे मान-सम्मान प्रदान किया था तो शैतान ने सांप के रूप में आकर उसे बहका दिया, बहुत अपमानित किया और उसकी कमर तोड़ दी थी। इब्लीस ने आदम का वध करने, नष्ट करने और उसको बर्बाद करने का ही इरादा किया था और चाहा था कि उसे और उसकी औलाद और उसके खानदान को नष्ट कर दे। अत: अल्लाह तआला के दरबार से उसके विरुद्ध मोहलत के दिन बीत जाने पर क़त्ल किए जाने का आदेश हुआ। इसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने कथन - 'इला यौमे युबअसून' ☆ में इशारा किया है जैसा कि विचार करने वाले जानते हैं। इस कथन से वास्तविक मुर्दों को जीवित करना अभिप्राय नहीं बल्कि इससे पथभ्रष्टों को गुमराही के बाद पुन: जीवन दिए जाना अभिप्राय है। इसका समर्थन क़ुर्आन करीम में अल्लाह का कथन- لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ✳ करता है जैसा कि बुद्धिमान और विवेकी

☆ **इला यौमे युब'असून-** उस दिन तक जिस दिन वे फिर से उठाए जाएंगे- (अनुवादक)

✳ ताकि वह इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे (अस्सफ़-10)

قوله تعالىٰ فی القرآن "لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ"، كما لا يخفى على أهل العقل والعرفان فإن إظهار الدين على أديان أخرى، لا يتحقق إلّا بالبيّنة الكبرى، والحجج القاطعة العظمٰى، وكثرة أهل الصلاح والتقوٰى ولا شك أن الدين الذى يعطى الدلائل الموصلة إلى اليقين، ويزكّى النفوس حق التزكية وينجّيهم من أيدى الشيطان اللعين هو الدين الظاهر الغالب على الاديان، وهو الذى يبعث الاموات من قبور الشك والعصيان، ويحييهم عِلمًا وعملًا بفضل الله المنّان وكان الله قد قدّر أن دينه لا يظهر بظهور تام على الاديان كلها ولا يرزق أكثر القلوب دلائل الحق، ولا يعطى تقوى الباطن لاكثرها إلا فى زمان المسيح الموعود والمهدى المعهود وأمّا الازمنة التى هى قبله فلا تعمّ فيها التقوى ولا الدراية، بل يكثر الفسق

लोगों पर गोपनीय नहीं। निस्संदेह किसी धर्म की अन्य धर्मों पर विजय बहुत बड़े रौशन चमत्कार और बड़े अकाट्य तर्कों और नेक तथा संयमी लोगों की अधिकता से ही सिद्ध होती है। वह धर्म जो विश्वास तक पहुंचाने वाले तर्क उपलब्ध करता है और लोगों को यथायोग्य पवित्र करता है और उन्हें धुत्कारे हुए शैतान के पंजों से मुक्ति दिलाता है निस्संदेह वही धर्म सब धर्मों से श्रेष्ठ और विजेता धर्म है और वही मुर्दों को संदेह और अवज्ञा की क़ब्रों से उठाता है और अनन्त उपकार करने वाले ख़ुदा के फज़ल से ज्ञान एवं कर्म के तौर पर जीवन प्रदान करता है। अल्लाह तआला ने यह निर्धारित कर रखा था कि उसके धर्म को समस्त धर्मों पर पूर्ण आधिपत्य न होगा और न अधिकतर दिलों को सच्ची दलीलें दी जाएंगीं और न अधिकतर लोगों को आंतरिक संयम प्रदान किया जाएगा जब तक कि मसीह मौऊद और महदी माहूद का समय न आ जाए, जहाँ तक मसीह मौऊद से पहले युगों का संबंध है तो उनमें संयम और समझ-बूझ सामान्य न होगी बल्कि दुराचार और गुमराही बहुत हो जाएगी। अत: सारांश यह है कि व्यापक मार्गदर्शन और पूर्ण अकाट्य तर्क अल्लाह तआला

والغواية فالحاصل أن الهداية الوسيعة العامّة، والحجج القاطعة التامّة، تختص بزمان المسيح الموعود من الحضرة، وعند ذالك الزمان تنكشف الحقائق المستترة، وتُكشَف عن ساق الحقيقة، وتهلك الملل الباطلة والمذاهب الكاذبة، ويملك الإسلام الشرق والغرب، ويدخل الحقُّ كل دارٍ إلّا قليل من المجرمين، ويتمّ الامر، ويضع الله الحرب، وتقع الامَنةُ على الارض، وتنزل السكينة والصلح فى جذور القلوب، وتترك السباع سبعيّتَها والافاعى سُمّيّتَها، وتتبيّن الرشد وتهلك الغىّ، ولا يبقى من الكفر والشرك إلا رسم قليل، ولا يلتزم الفسقَ والفاحشة إلا قلبٌ عليل، ويُهدى الضالون، ويُبعث المقبورون فهذا هو معنى قوله إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ فإن هذا البعث بعث ما رآه الاوّلون ولا المرسلون السابقون ولا

की ओर से मसीह मौऊद के समय से विशेष संबंध रखते हैं। उस समय में गोपनीय वास्तविकताएं खुल जाएंगी और सच्चाई से पर्दा उठा दिया जाएगा। झूठे धर्म नष्ट हो जाएँगे और इस्लाम का पूर्व एवं पश्चिम में आधिपत्य स्थापित हो जाएगा और कुछ मुजरिमों को छोड़ कर सत्य हर घर में प्रवेश कर जाएगा और समस्त कार्य पूर्ण हो जाएगा और अल्लाह जंगों को स्थगित कर देगा, धरती पर शान्ति की स्थापना होगी और दिलों की गहराइयों में संतोष तथा संधि का आगमन होगा। हिंसक पशु अपनी हिंसा और सांप अपने विषैलेपन को छोड़ देंगे। सन्मार्ग स्पष्ट हो जाएगा और गुमराही नष्ट हो जाएगी। कुफ़्र और शिर्क का केवल मामूली सा निशान रह जाएगा और केवल बीमार दिल ही दुराचार और कुकर्म से चिपका रह जाएगा। गुमराहों को सन्मार्ग प्रदान किया जाएगा और जो क़ब्रों में पड़े हैं उठाए जाएँगे। अल्लाह के कथन- 'इला यौमे युबअसून' का यही अर्थ है। यह 'बअस' (अर्थात उठाया जाना) वह 'बअस' है जिसे न पहले लोगों ने देखा और न ही समस्त गुज़रे हुए रसूलों और नबियों (अवतारों) ने। और जो अल्लाह का धर्म है यद्यपि उसका मामला आरम्भ से

النبيون أجمعون و إن دين الله و إن كان غالبا من بدو أمره على كل دين من حيث القوة و الاستعداد، و لكن لم يتّفق له من قبل أن يبارى الأديانَ كلّها بالحجة و الإسناد، و يهزمها كلَّ الهزم و يُثبِت أنها مملوءة من الفساد، و يخرج كالأبطال بأسلحة الاستدلال، حتى يعمّ في جميع الديار و البلاد و كان ذالك تقديرا من الله الودود، بما سبق منه أن الغلبة التامة و الصلاح الأكبر الأعم يختص بزمان المسيح الموعود و لذالك استمهل الشيطانُ إلى هذا الزمان المسعود، فمهّله الله ليتمّ كل ما أراد للعالمين فأغوى الشيطان مَن تبِعه أجمعين، فتقطّعوا بينهم أمرَهم، و كان كل حزب بما لديهم فرحين و ما بقِي على الصراط إلا عباد الله الصالحين۔

و السرّ فيه أن الزمان قُسّم على ستّة أقسام، مِن الله الذى خلَق

ही शक्ति और सामर्थ्य की दृष्टि से समस्त धर्मों पर विजयी था परन्तु इससे पूर्व उसके लिए यह संयोग न हुआ था कि वह दलील और प्रमाणों की दृष्टि से समस्त धर्मों से मुकाबला करे और उन्हें पूर्णत: पराजित कर दे और सिद्ध कर दे कि वे सब बुराइयों से भरे हुए हैं और यह (सच्चा धर्म) तर्क के हथियारों से लेस होकर पहलवानों की भान्ति निकले यहाँ तक कि समस्त शहरों और देशों में फ़ैल जाए। यह अत्यंत प्रेम करने वाले ख़ुदा की ओर से निर्धारित था क्योंकि उसकी ओर से पहले से ही यह फरमान जारी हो चुका था कि पूण आधिपत्य, व्यापक और सबसे बड़ी भलाई मसीह मौऊद के समय के लिए ही विशिष्ट है। इसी कारण शैतान ने इस बाबर्कत समय तक छूट मांगी थी। अत: अल्लाह ने उसे छूट दे दी ताकि वह सब कुछ पूरा हो जाए जिसका उसने समस्त ब्रह्माण्ड के लिए इरादा किया है। अत: शैतान ने अपने समस्त अनुयायियों को गुमराह कर दिया और उन्होंने अपने मामले को आपस में टुकड़े-टुकड़े करके बाँट लिया और समस्त गिरोह, उस पर जो उनके पास था, इतराने लगे और सही रास्ते पर केवल अल्लाह के नेक बन्दे ही रह गए।

इसमें भेद यह है कि उस ख़ुदा की ओर से जिसने संसार को 6 समयों

العالم فی ستة أیام فهو زمان الابتداء، وزمان التزاید والنّماء، وزمان الکمال والانتهاء، وزمان الانحطاط وقلّةِ التعلّق باللّٰه وقلّةِ الارتباط، وزمان الموت بأنواع الضلالات وزمان البعث بعد الممات فإنّ مَثل الناس عند اللّٰه مِن وقت آدم إلی آخر الزمان کزرعٍ أخرج شَطْأَه فآزرَه فاستغلظ فاستوی علیٰ سوقه، ثم اصفرّ فطفق تتساقط بإذن اللّٰه، ثم حُصِد فبقیت الارض خاویة، ثم أحیاها اللّٰه بعد موتها فإذا هی راویة، وأنبتَ فیها نباتًا مترعرعًا مخضرًّا، وعیونَ الزُرّاع أقرَّ، کذالك ضرب اللّٰه مثلا للعالمین فثبت من هذا المقام أن زمان الموت الروحانی کان مقدَّرا من ربّ العالمین و کان قُدّر أن الناس یضلّون کلهم فی الالف السادس إلّا قلیل من الصالحین، فلاجل ذالك قال الشیطان لَاُغوینّهم أجمعین، ولو لم یکن هذا

में पैदा किया है, ज़माने को 6 भागों में विभाजित किया है जो ये हैं- आरम्भ का ज़माना, बढ़ने और उन्नति करने का ज़माना, पूर्णता और पराकाष्ठा का ज़माना, अवनति और अल्लाह से संबंध और लगाव में कमी का ज़माना, विभिन्न प्रकार की गुमराहियों के कारण मौत का ज़माना और मौत के बाद उठाए जाने का ज़माना। निस्संदेह अल्लाह के निकट आदम के समय से अंतिम ज़माने तक लोगों का उदाहरण उस खेती के सामान है जो अपनी कोंपल निकाले फिर उसे सुदृढ़ करे फिर वह मोटी हो जाए और अपने तना पर खड़ी हो जाए फिर सुर्ख हो जाए और फिर अल्लाह के आदेश से झड़ने लग जाए और फिर फसल काटी जाए और धरती खाली हो जाए। फिर अल्लाह उसे उसकी मौत के बाद जीवित करे तो वह हरी-भरी हो जाए और वह उसमें लहलहाती हरियाली उगाए और किसानों की आँखों को ठंडा कर दे। इसी प्रकार अल्लाह ने समस्त ब्रह्माण्ड के लिए उदाहरण वर्णन किए हैं। यहाँ से सिद्ध हुआ कि रूहानी मौत का ज़माना रब्बुल आलमीन की ओर से निर्धारित था और यह भी निर्धारित था कि थोड़े से नेक बन्दों के अतिरिक्त शेष सब लोग छठे हज़ार में गुमराह हो जाएँगे। इसीलिए शैतान

التقدير لما اجترأ على هذا القول ذالك اللعين ولمّا كان يعلم أن الله قفّى هذه الازمنةَ بزمان البعث والهداية والفهم والدراية، قال إلىٰ يَوْمِ يُبعَثون فالحاصل أن آخر الازمنة زمان البعث كما يعلمه العالمون فكأنّ الله قسّم الالوف الستّة على الازمنة الستّة، وأودعَ بعضَ حصص السابع للقيامة ولمّا جاء الالف السادس الذى هو زمان البعث من الله الكريم، تمّ أمرُ الإضلال وصار الناس فِرَقًا كثيرة من الشيطان اللئيم، وزاد الطغيان وتموّجَ الفِرق كتموّج الامواج الثقال، وشمَخ الضلالة كالجبال، ومات الناس بموت الجهل والفسق والفواحش وعدم المبالاة، وعمّ الموتُ فى جميع الاقوام والديار والجهات فهناك رأى الله أن وقت البعث قد أتى،

ने कहा था कि मैं अवश्य उन सबको गुमराह करूँगा। अगर यह तक़दीर न होती तो वह लानती कभी यह बात करने की हिम्मत न करता और क्योंकि वह जानता था कि अल्लाह ने उन ज़मानों के बाद उठाए जाने व हिदायत और दिरायत का ज़माना रखा हुआ है। इसलिए उसने 'इला यौमे युबअसून' कहा था। अत: सारांश यह है कि ज़मानों में से अंतिम ज़माना 'बअस' (उठाए जाने) का ज़माना है जैसा कि ज्ञानी लोग जानते हैं। मानो कि अल्लाह ने छ: हज़ार वर्षों को छ: ज़मानों में विभाजित किया था और सातवें (हज़ार) के एक भाग में क़यामत को रख दिया। जब छठा हज़ार आया जो कि रहीम ख़ुदा की ओर से बअस का ज़माना है तो गुमराह करने का काम पूर्ण हो गया और दुष्ट शैतान के कारण लोग कई फ़िर्क़ों में बट गए। उद्दंडता बढ़ गई और विभिन्न समूह इस प्रकार ठाठें मारने लगे जैसे भारी लहरें ठाठें मारती हैं और गुमराही पहाड़ों के समान बढ़ गई और लोग अज्ञानता, दुराचार, निर्लज्जता और लापरवाही की मौत मर गए और मौत हर क़ौम, क्षेत्र और दिशा में सामान्यता फ़ैल गई। तब अल्लाह ने देखा कि बअस का समय आ पहुंचा है और मौत का समय अपनी पूर्णता को पहुँच चुका है तो उसने अपना रसूल भेजा ताकि मुर्दों को जीवित करे जैसा कि पहली सदियों में

ووقت الموت بلغ إلى المنتهٰى، فأرسل رسوله كما جرت سُنّته فى قرون أولٰى، ليحى الموتٰى، و كان وعدًا مفعولًا من ربّ الوَرى فذالك هو المسيح خاتم الخلفاء، ووارث الانبياء، والإمام المنتظر من حضرة الكبرياء ، وآدم الذى بدَأ الله منه مرةً ثانية سلسلةَ الإحياء وإن الله سمّاه أحمد بما يُحمَد به الربّ الجليل فى الارض كما يُحمَد فى السّماء وسمّاه عيسى ابن مريم بما خلق روحانيته من لدنه، وما كان على الارض شيخ له كالآباء وأُعطى له لقب عيسى الذى هو المسيح بما ختَم عليه خلافة نبيِّ الامم خيرِ الاصفياء، كما خُتم على عيسٰى خلافة سلسلة موسٰى من حضرة الكبرياء، وبما قُدّر أن اسمه يمسَح الارض ويُذكَر فى كل قوم بالعزّة والعلاء

उसकी सुन्नत जारी रही है और यह सृष्टि के पालनहार की ओर से एक पूरा होकर रहने वाला वादा था। अत: यह मसीह ही ख़ुदा तआला की ओर से ख़ातमुल खुलफ़ा, वारिस-ए-अम्बिया और इमामुल मुन्तज़र है साथ ही वह आदम भी है जिससे अल्लाह ने (आध्यात्मिक) जीवन प्रदान करने का सिलसिला दोबारा आरम्भ किया और अल्लाह ने उसका नाम अहमद रखा क्योंकि उसके कारण महाप्रतापी ख़ुदा की संसार में इसी प्रकार प्रशंसा की जाएगी जैसा कि आसमान में उसकी प्रशंसा की जा रही है। और अल्लाह ने उसका नाम ईसा इब्न मरयम इसलिए रखा है कि उसकी रूहानियत को अल्लाह ने अपनी ओर से पैदा किया था और संसार में बाप-दादाओं के समान उसका कोई रूहानी शिक्षक न था। ख़ुदा तआला की ओर से जो मसीह है उसे ईसा की उपाधि इसलिए दी गई कि उस पर समस्त उम्मतों के नबी 'खैरुल अस्फिया' सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िलाफ़त समाप्त हुई जैसा कि ईसा अलैहिस्सलाम पर मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िलाफ़त समाप्त हुई। और इसलिए भी उसका नाम मसीह है क्योंकि मुक़द्दर था कि उसका नाम धरती में फ़ैल जाएगा और हर क़ौम में सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ उसका वर्णन किया जाएगा। वह एक दिशा में बिजली के समान प्रकट

،ويبدو كالبرق من جهة ثم يبرق فى جهات أخرى وينير كل فضاء السّماء، وبما كتب من الازل أنه يمسح السماء بكشف الحقائق فلا تبقٰى فى زمنه نكتة فى حيّز الاختفاء فهذه ثلاثة أوجه لتسمية المسيح الذى هو خاتم الخلفاء، ففكّرْ فيه إن كنت من أهل الدهاء وإنه مستفيض من نبيّه الذى ملَك هذه الصفات الثلاث بالاستيفاء ،فاتركْ ذكر عيسٰى وآمنْ بظِلّ خيرِ الرسل وخاتم الانبياء وكان من أهم الامور عند الله أن يجعل آخر الازمنة زمانَ البعث أعنى زمان تجديد سلسلة الإحياء، وإنه الحقّ فلا تجادل كالجهلاء وكذالك كان من أعظم مقاصد الله أن يُهلك الشيطان كل الإهلاك، ويردّ الكَرّةَ لآدم ويملاِ الارض قِسْطًا وعدلا ومن أنواع البركات والآلاء

होगा और फिर दूसरी दिशाओं में भी चमकेगा और समस्त वायुमंडल को प्रकाशमान कर देगा और इसलिए भी कि अनादिकाल से यह लिख दिया गया था कि वह वास्तविकताओं से पूर्णत: पर्दा उठा देगा और उसके समय में कोई विषय परदे में छुपा नहीं रहेगा। अत: वह जो ख़ातमुल ख़ुलफ़ा है उसका नाम मसीह रखे जाने के ये तीन कारण हैं। यदि तू बुद्धिमान है तो इस पर विचार कर। और निस्संदेह वह अपने उस नबी से वरदान प्राप्त है जो कि उन तीनों विशेषताओं का पूर्णत: मालिक है। अत: तू ईसा अलैहिस्सलाम के वर्णन को छोड़ और खैरुर्रुसुल एवं ख़ातमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप पर ईमान ला। अल्लाह के निकट महत्त्वपूर्ण विषयों में से एक यह था कि वह ज़मानों में से अंतिम को ज़माना-ए-बअस अर्थात जीवन प्रदान करने के सिलसिला के नवीनीकरण का ज़माना बनाएगा। यह निश्चित रूप से सत्य है अत: तू मूर्खों के समान न झगड़। और इसी प्रकार अल्लाह के बड़े बड़े उद्देश्यों में से यह भी था कि वह शैतान को पूर्णत: नष्ट कर देगा और आदम को पुन: प्रभुत्व प्रदान करेगा और संसार को न्याय और विभिन्न प्रकार की बरकतों और नेमतों से भर देगा और समस्त वास्तविकताओं से पर्दा हटा देगा।

،و يكشف الحقائق كلها و يُشيع الامر و المأمور فى جميع الانحاء، و يُظهر فى الارض جلاله و جماله و لا يغادر فى هذا الباب شيئا من الاشياء فأقام عبدًا من عنده لهٰذا الغرض و لتجديد الشريعة الغرّاء، و جعله من حيث الآباء من أبناء فارس و من حيث الامهات من بنى فاطمة، ليجمع فيه الجلال و الجمال، و يجعل فيه نصيبا من أحسن سجايا الرجال، و نصيبا من أجمل شمائل النساء، فإن فى بنى فارس شجعانا يردّون الإيمان من السّماء، و لذالك سمّانى الله آدمَ و المسيحَ الذى أرى خَلْقَ مريمَ، و أحمدَ الذى فى الفضل تقدّمَ، ليُظهر أنه جمَع فى نفسى كل شأن النبيين على سبيل الموهبة و العطاء، فهذا هو الحق الذى فيه يختلفون لا يعود إلى الدنيا آدم، و لا نبينا

अपने आदेश और आदेशित को समस्त संसार में शोहरत देगा, धरती पर अपना तेज और सौन्दर्य प्रकट करेगा और इस बारे में किसी पहलू से कोई कमी न करेगा। अत: उसने इस उद्देश्य के लिए और उज्ज्वल शरीयत के नवीनीकरण के लिए अपनी ओर से एक बन्दा खड़ा किया और बाप-दादा की ओर से उसे फारसियों में से और ननिहाल की ओर से बनी-फ़ातिमा (हज़रत फ़ातिमा[रज़ि०] की सन्तान) में से बनाया ताकि उसमें तेज और सौन्दर्य जमा कर दे तथा उसमें एक भाग बेहतरीन मर्दाना स्वभाव का और एक भाग बेहतरीन औरतों के स्वभाव का रख दे क्योंकि फारसियों में वह बहादुर होंगे जो ईमान को आसमान से वापस ले आयेंगे इसीलिए अल्लाह ने मेरा नाम आदम रखा जिसने मरयम वाली सृष्टि का उदाहरण दिखाया। साथ ही मेरा नाम अहमद रखा जो प्रतिष्ठा में अधिकता रखता है ताकि प्रकट करे कि उसने अनुदान के तौर पर मेरे अस्तित्व में नबियों की हर शान इकट्ठी कर दी है। अत: यह है वह सच्चाई जिसके बारे में वे परस्पर मतभेद रखते हैं। इस संसार में न आदम वापस आएगा न हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और न मृत्यु प्राप्त ईसा अलैहिस्सलाम जिस पर आरोप लगाया गया था। अल्लाह उससे पवित्र और बुलंद है जो वे झूठ

الاكرم، ولا عيسى المتوفى المتّهم سبحان الله وتعالىٰ عما يفترون أليس هذا الزمان آخر الازمنة ما لكم لا تفكّرون؟ أما اقتربت الساعة بظهور نبيّنا وجاءت أشراطها فأين تفرّون؟ ما لكم تَدُعُّون الاخبار مِن مقرِّ أوقاتها وتؤخّرونها وأنتم تعلمون؟ أنسيتم حديث بُعثتُ أنا والساعة كهاتين، فما لكم لِمَ تكفُرون؟ فامسَحوا السبّابة وما لحِقها، وتَذكّروا وعد الله، وما يتذكّر إلا الذين يُنيبون وما جئتُ إلا في الالف السادس الذي هو يومُ خلق آدم، وإن فيها لهدى لقوم يتفكّرون ألا تقرءون سورة العصر وقد بيّن في أعدادها عمر الدنيا من آدم إلى نبيّنا لقوم يتفقّهون وهذا هو العمر الذي يعلمه أهل الكتاب، فاسألوهم إن كنتم لا تعلمون

गढ़ते हैं। क्या यह ज़माना अंतिम ज़माना नहीं? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सोचते नहीं? क्या हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के द्वारा क़यामत निकट नहीं आ गई और उसकी निशानियाँ प्रकट नहीं हो गईं? अत: तुम कहाँ भागोगे। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ख़बरों को उनके निर्धारित समय से परे धकेलते हो और जानते-बूझते हुए उन्हें पीछे करते हो। क्या तुम हदीस- بُعِثْتُ اَنَا وَ السَّاعَتُ كَهَاتَيْنِ (अर्थात मैं और क़यामत इन दो उँगलियों के समान इकट्ठे हैं) भूल गए हो? तुम्हें क्या हुआ है तुम क्यों इंकार करते हो? अत: तुम तर्जनी ऊँगली और उसके साथ वाली ऊँगली को छू कर देखो और अल्लाह के वादे को याद करो और शिक्षा केवल वे लोग ग्रहण करते हैं जो विनम्र हैं। मैं उस छठे हज़ार में ही आया हूँ जो कि आदम की पैदाइश का दिन है। निस्संदेह इनमें विचार करने वाली क़ौम के लिए अवश्य मार्गदर्शन है। क्या तुम सूर: अस्र नहीं पढ़ते कि उसके आदाद (संख्या) में धर्म की समझ रखने वालों के लिए आदम से लेकर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण के समय तक संसार की आयु वर्णन की गई है और यह वह आयु है जिसको अहले-किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) भी जानते हैं। यदि तुम

ولا فرق بين عِدّة سورة العصر وعِدّتهم إلّا الفرق بين أيام الشمس وأيام القمر، فعُدّوها إن كنتم تشكّون وإذا تقرّرَ هذا فاعلموا أنى وُلدتُ فى آخر الالف السادس بهذا الحساب، وإنه يومُ خلق آدم، وإن يوما عند ربنا كألف سنة مما تعدّون وإن كنتم فى ريب مما كتبنا من أنه من أيام سلسلة آدم ما بقِى إلىٰ يومنا هذا إلّا ألفُ سنة أو معه قليل من سنين، فتعالوا نُثبِته لكم من كتاب الله ومن الحديث ومن كتب النبيّين السابقين فإن أعداد سورة العصر بحساب الجُمل، كما كُشِفَ علىّ من الله الوهّاب وكما هو متواتر عند أهل الكتاب، يهدى إلى أن الزمان إلى عهد خاتم الانبياء كان مُنقضيًا إلى خمسة آلاف من آدمَ أوّلِ النبيّين وما كان باقيا من

नहीं जानते तो तुम उनसे पूछ लो और सूर: अस्र की वर्णित गिनती और अहले किताब की गिनती में कोई अंतर नहीं सिवाए उसके जो सूर्य के दिनों के हिसाब और चन्द्रमा के दिनों के हिसाब में होता है। अगर तुम्हें कुछ सन्देह हो तो तुम गिनती करके देख लो और जब यह बात सिद्ध हो गई तो तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस हिसाब से मैं छठे हज़ार के अंत में पैदा किया गया हुआ और यह हज़रत आदम की पैदाइश का दिन है और हमारे रब्ब का एक दिन तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल के बराबर होता है। जो कुछ हमने लिखा है इसके बारे में अगर तुम्हें कोई शक हो कि आदम अलैहिस्सलाम के सिलसिला के समय से लेकर हमारे आज के दिन तक केवल एक हज़ार वर्ष या उसके साथ कुछ और वर्ष संसार की आयु में से शेष रह गए हैं तो आओ हम तुम्हें यह बात ख़ुदा की पुस्तक (पवित्र क़ुर्आन) और हदीस और पहले अवतारों की पुस्तकों से सिद्ध कर देते हैं जैसा कि वह्हाब ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि जुमल (अब्जद के अक्षरों) के हिसाब से सूर: अस्र की गिनती, साथ ही अहले किताब के निकट जो रिवायत निरंतर चलती आ रही हैं, वे इस ओर मार्गदर्शन करती हैं कि सबसे प्रथम नबी हज़रत आदम

الخامس إلا قليل من مئين ★ و كمِثله يُفهَم مِن حديث مِنبر ذى سبع درجات بمعنى بيّنّاه فى موضعه للناظرين ولمّا ثبت أن هذا القدر من عمر الدنيا كان مُنقضيا إلى عهد رسول الله خيرِ الورٰى، ثبت معه أن القدر الباقى ما كان إلا أقلّ مقدارا نسبةً إلى ما مضى فإن القرآن الكريم صرّح مرارا بأن الساعة قريبة لا ريب فيها وقال اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وقال اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وقال فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا و كذالك توجد فيه فى هذا الباب آيات أخرٰى، فعُلِمَ منها بالقطع واليقين يا أولى النهى، أن الحصّة الباقية من الدنيا أقلّ من زمان

अलैहिस्सलाम से लेकर ख़ातमुल अम्बिया के ज़माने तक सिवाए कुछ शताब्दियों के, पाँच हज़ार साल बीत चुके हैं और इसी प्रकार का भाव सात दर्जों वाले मिम्बर (मंच) वाली हदीस का है। जिसके अर्थ हमने उस के स्थान पर पाठकों के लिए वर्णन किए हैं। और जब यह सिद्ध हो गया कि खैरुल वरा (सृष्टि में से श्रेष्ठतम) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने तक संसार की आयु का इतना समय बीत चुका था तो उसके साथ यह बात भी सिद्ध हो गई कि संसार की आयु में से बचा हुआ समय, बीते हुए समय की अपेक्षा बहुत कम रह गया है। अत: पवित्र क़ुर्आन ने कई बार इस बात को सविस्तार वर्णन किया है कि क़यामत निस्संदेह बहुत निकट है जैसा कि फ़रमाया - اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ (अर्थात लोगों के हिसाब किताब का समय निकट है। सूर: अम्बिया-2)

★الحاشية۔ان الاقوال التى تخالف هٰذه العدة وذكرها المتقدمون فهى كلمات تكذب بعضها بعضًا وما اتفقوا علىٰ كلمة واحدة بل انهم فى كل وادٍ يهيمون فليس بحرى ان يتمسك بها بعدما اتفق على هٰذه العدة القرآن و النبيون الاوّلون منه

★वे कथन जो इस गिनती के विपरीत हैं और पूर्व लोगों ने जिनका वर्णन किया है वे केवल ऐसी बातें हैं जिन में से कुछ, कुछ अन्य बातों को नकारती हैं। वे लोग किसी एक बात पर सहमत नहीं बल्कि वे हर ओर हाथ पैर मारते हैं। इसलिए जबकि क़ुर्आन और पूर्व अवतार इस गिनती पर सहमत हैं तो फिर वे कथन इस योग्य नहीं कि उन्हें अवश्य अपनाया जाए।

انقضى، حتى إن أشراط الساعة ظهرتْ ويوم الوعد دنٰى، وقرُب الآتى وبَعُدَ ما مضى، فارجع البصر هل ترى من كذب فيه، والسّلام على من اتّبع الهُدى وقد علمتَ أن المدّة المنقضية من وقت آدم إلٰى عهد نبيّنا المصطفٰى، كانت قريبة من خمسة آلاف، وقد شهد عليه القرآن واتفق عليه أهل الكتاب من غير خلاف، فما المقدار الذى هو أقلّ من هذا المقدار؟ أليس هو آخر وقت العصر، أجِبْنا بالإنصاف؟ ولو تعسّفتَ كلّ التعسّف ثم مع ذالك لا بُدّ لك أن تُقرّ بأنه أقلّ من النصف بغير الاختلاف فقد اعترفتَ بدعوانا بقولك هذا مع هذا الاعتساف فلزم لك أن تُقرّ أن مِن

फिर एक स्थान पर फ़रमाया- اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ क़यामत की घड़ी अब निकट है (अल क़मर-2) और उसके साथ ही कहा- فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا अत: उसकी निशानियाँ तो आ चुकीं हैं (मुहम्मद-19)। इस विषय से संबंधित पवित्र क़ुर्आन में कई और आयतें भी पाई जाती हैं। हे बुद्धिमानो! इन आयतों से यह बात निश्चित रूप से ज्ञात होती है कि संसार की आयु का शेष भाग उस समय से बहुत कम है जो बीत चुका है, यहाँ तक कि क़यामत की निशानियाँ प्रकट हो गईं और वादे का दिन निकट आ गया तथा आने वाला समय समीप आ गया और बीता हुआ समय दूर चला गया। अत: तू अपनी नज़र इस पर बार-बार डाल। क्या तू इस मामले में कोई बात सत्य के विपरीत देखता है? और उस व्यक्ति को अल्लाह सलामत रखे जो सत्य का अनुसरण करे और तुम यह जान चुके हो कि आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से हमारे नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने तक बीती हुई अवधि लगभग पाँच हज़ार वर्ष है और इस पर पवित्र क़ुर्आन ने गवाही दी है और अहले किताब (यहूदी और ईसाई) भी बिना किसी मतभेद के इस बात पर सहमत हैं। अत: वह समयसीमा कौन सी है जो इस समयसीमा से कम हो। तुम न्यायपूर्वक हमें बताओ कि क्या यह अस्त्र का अंतिम समय (सूर्यास्त से थोड़ा पहले) नहीं है। यदि तुम इस बात को स्वीकार करने में आना-

مُدّة عهدِ آدم ما كانت باقية إلى عهد رسول الله إلا ألفين وعِدّةً من مئين، وهذا هو دعوانا فالحمد لله ربّ العالمين فإنا نقول إنا بُعثنا على رأس ألفٍ آخِر من ألوف سلسلة أبي البشر ★ وخاتمة الالف السادس بإذن الله أرحم الراحمين وهٰذا هو زمان المسيح الذى هو آدمُ آخِرِ الزمان، وهذه هى حُجّتى التى أقررتَ بها يا أبا العدوان فانظرْ أنك صُفّدتَ حق التصفيد و كذالك يصفَّد كلّ مَن أعرض عن أهل العرفان وَالله ما نبّأنا بالساعة، ونبّأنا بالإلف الذى تقع

कानी करो तो इसके बावजूद तुम्हें इस इक़रार से कोई चारा नहीं कि शेष रहने वाली अवधि बिना मतभेद के आधी से भी कम है। तो सही तरीके से हट जाने के बावजूद तुमने अपनी इस बात के साथ हमारे दावे को स्वीकार कर लिया इस बात से तुम पर अनिवार्य है कि तुम इस बात का भी इक़रार करो कि आदम अलैहिस्सलाम के ज़मने में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने तक संसार की आयु केवल दो हज़ार और कुछ सौ वर्ष शेष रह गई थी और यही हमारा दावा है। समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए हैं, हम कहते हैं कि मनुष्य के पिता आदम अलैहिस्सलाम के सिलसिला के हज़ारों वर्षों के अंतिम हज़ार वर्ष के आरंभ पर हम अवतरित किए गए हैं अर्थात अरहमुर राहिमीन ख़ुदा

★ الحاشية۔ انا انتقلنا فى بعض عبارات كتابنا هٰذا من تصريح لفظ خاتمة الدنيا الى لفظ انقلاب عظيم او انقطاع سلسلة اٰدم او عبارةٍ اخرٰى۔ فان امر الساعة خفىّ لا يعلم تفصيله الا الله فالكناية اقرب الى التقوٰى۔ ونؤمن بانقلاب عظيم بعد هٰذه المدّة ونفوّض التفاصيل الٰى ربّنا الاعلٰى۔ منه

★ हमने अपनी इस पुस्तक की कुछ इबारतों में संसार के समापन शब्द की व्याख्या छोड़ कर उसकी बजाए महान परिवर्तन या आदम के सिलसिला की समाप्ति या कोई और इबारत प्रयोग की है। क्योंकि उस घड़ी का मामला तो रहस्य है उसका विवरण अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता इसलिए इशारों में वर्णन करना तक्वा (संयम) के अधिक निकटतम है। हम इस अवधि के बाद एक महान परिवर्तन के आने पर ईमान रखते हैं और विवरण अपने सर्वश्रेष्ठ पालनहार के सुपुर्द करते हैं।

الساعة فيها، وعرّف بعضَ الحالات وأعرضَ عن بعض فلا نعلم وقت الساعة ولا مَلَكٌ في السماء، وما نعلم حقيقة الساعة، ونعلم أنها انقلاب عظيم ويوم الجزاء، ونفوّض تفاصيلها إلى عليم يعلم حقيقة الابتداء والانتهاء ثم نعيد الكلام ونقول إن الله شبّه زمان رسول الله صلى الله عليه وسلم بوقت العصر، وإن شئت فاقرأ في القرآن سورة العصر، وكذالك جاء ذكرُ العصر في الاحاديث الصحيحة والاخبار الموثّقة المتواترة، حتّى إنه توجد في البخاري والموطّأ وغيرها من الكتب المعتبرة والسرّ في هذا التشبيه أن الله بَعث موسٰى بعد إهلاك القرون الاولى، وجعَله آدمَ للاُمّة الجديدة

के आदेश से छठे हज़ार साल के अंत पर, ओर यह उस मसीह के ज़माना है जो अंतिम युग का आदम है। हे अत्याचार करने वाले यही वह मेरी दलील है जिस के सही होने का तुमने इक़रार कर लिया है। अत: देखो की तुम किस प्रकार पूर्णत: जकड़ दिए गए हो और हर वह व्यक्ति जो अध्यात्मज्ञानियों से विमुख हो उसे इसी प्रकार जकड़ दिया जाता है। और अल्लाह ने हमें क़यामत की घड़ी के बारे में कुछ नहीं बताया, हाँ हमें इस हज़ार वर्ष की ख़बर दी है जिसमें क़यामत घटित होगी। ओर उसने हमें कुछ अवस्थाओं का ज्ञान दिया है और कुछ का नहीं दिया। अत: न तो हम क़यामत के समय का ज्ञान रखते हैं ओर न आसमान में कोई फ़रिश्ता, ओर न हम उस घड़ी की वास्तविकता से परिचित हैं। हाँ हमें इतना ज्ञान है कि वह एक महान परिवर्तन और प्रतिफ़ल का दिन होगा ओर उसके विवरण हम सर्वज्ञानी ख़ुदा के हवाले करते हैं जो आदि ओर अंत की वास्तविकता को जानता है। फिर हम बात को दोहराते हुए कहते हैं कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह के ज़माने की असर के समय के साथ समानता वर्णन की है और यदि आप चाहें तो पवित्र क़ुर्आन में सूर: असर पढ़ लें। और इसी प्रकार सही हदीसों और निरन्तर ठोस ख़बरों में असर का वर्णन आया है, यहां तक कि यह वर्णन बुख़ारी, मौता ओर अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में पाया जाता है। और इस

وأوحٰى إليه ما أوحٰى، وانقطع سلسلةُ دينه إلٰى ثلاث مائة بعد الألف ونيفٍ وكذالك أراد الله وقضٰى ثم بعث عيسٰى ليذكِّر بنى إسرائيل ما نسوه من التوراة ويرغّبهم فى أخلاق عظمٰى، وانقطعت سلسلة دينه إلى مدّة هى قريب من نصف مدّة سلسلة موسٰى ثم بعَث نبيَّه محمّدًا خيرَ الورٰى ورسوله المصطفٰى، عليه صلوات الله وسلامه وبركاته الكبرٰى، وجعَل سلسلة الأخيار الذين اتّبعوه إلى مدّة هى نصفُ النصف الذى أُعطىَ لعيسٰى، أعنى القرون الثلاثة التى انقرضت إلى ثلاث مائة من سيّدنا المجتبٰى فكان عهدُ أُمّة موسٰى يضاهى نهارًا كاملًا تمامًا، ويضاهى عددُ مِئاتِه عددَ ساعاتِه، وعهدُ أُمّة عيسٰى يضاهى نصفَ النهار فى حدّ ذاته، وأمّا عهد

समानता में यह भेद है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहली क़ौमों के नष्ट करने के बाद अवतरित किया और उन्हें नई उम्मत का आदम बनाया और उनकी ओर वह्यी (ईशवाणी) की जो भी वह्यी की, और उनके धर्म का सिलसिला तेरह सौ वर्ष से कुछ अधिक चल कर समाप्त हो गया और अल्लाह तआला ने ऐसा ही इरादा और निर्णय किया था। फिर अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को अवतरित किया ताकि वह बनी इस्राईल को तौरात की उस शिक्षा को स्मरण कराएँ जिसे वे भूल चुके थे और उन्हें उच्च शिष्टाचार पर स्थापित होने की प्रेरणा दिलाएँ। उनके धर्म का सिलसिला एक ऐसे ज़माने तक पहुंच कर समाप्त हो गया जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले के ज़माने का लगभग आधा था। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी और रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया जो सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ हैं (आप पर अल्लाह तआला की रहमतें, उसकी सलामती और बड़ी बरकतें हों) और आप के बेहतरीन अनुयायियों के सिलसिला को उस अवधि तक ले गया जो उस आधी अवधि का आधा है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दी गई अर्थात तीन शताब्दियों तक, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

أخيارِ أُمّة خيرِ الرسل الذين كانوا إلى القرون الثلاثة فهو يضاهى نصفَ نصف النهار أعنى وقت العصر الذى هو ثلاث ساعة من الايام المتوسطة ثم بعد ذالك ليلة ليلاء بقدرٍ من الله وحكمةٍ، وهى مملوّة من الظلم والجور إلى ألف سنة ثم بعد ذالك تطلُع شمس المسيح الموعود من فضل الرحمٰن، فهذا معنى العصر الذى جاء فى القرآن هذا ما ظهر علينا من حقيقة وقت العصر، ولكن مع ذالك قُرب القيامة حقٌّ صحيح ثابت من الفرقان وللقرآن وجوه عند أهل العرفان، فهذا وجه وذٰلك وجه وكلاهما صادقان عند الإمعان، ولا ينكره إلا جاهل ضرير أو متعصّب أسير فى حُجب العدوان، لان المعنى الذى قدّمناه فى البيان يحصُل به التفصّى من

वसल्लम के अवतरण के पश्चात तीन सौ वर्ष व्यतीत हुए। अत: मूसा की उम्मत का ज़माना पूर्ण तथा प्रकाशमान दिन के समान है और उसकी शताब्दियों की संख्या दिन की घड़ियों की संख्या के बराबर है। ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का ज़माना अपने अस्तित्व में उस दिन के आधे के बराबर है परन्तु खैरुर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के नेक लोगों का ज़माना जो तीन शताब्दियों तक थे, आधे दिन के आधे के समान है अर्थात अस्र का समय जो सामान्य दिनों में तीन घंटे का होता है। फिर उसके बाद अल्लाह की तक़दीर और उसकी हिकमत के अनुसार अँधेरी रात आ गई जो अत्याचार और अनीति से भरी हुई थी और वह एक हज़ार वर्ष तक चलती चली गई। फिर उसके बाद रहमान ख़ुदा की कृपा से मसीह मौऊद का सूर्य चढ़ना मुक़द्दर था। अत: ये अर्थ उस अस्र के हैं जो पवित्र क़ुर्आन में वर्णित है और यही अस्र के समय की वास्तविकता है जो हम पर प्रकट हुई। लेकिन उसके साथ ही क़यामत का निकट होना बिल्कुल सही बात है जो पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है और अध्यात्मज्ञानियों के निकट पवित्र क़ुर्आन की विभिन्न व्याख्याएँ हो सकती हैं तो एक दृष्टिकोण से यह है और दूसरे दृष्टिकोण से वह है और विचार करने पर दोनों सही हैं। और उसका इन्कार

بعض الاشكال التى تختلج فى جَنان بعضِ عطاشى العرفان، مِن تتابُعِ وساوس الشيطان ثم إن هذا المعنى ينجى حديث البخارى والموطّأ من طعنِ الطعّان، ومن اعتراض معترض يتقلّد أسلحة لِلطَّعَنَان وتقرير الاعتراض أنه كيف يمكن أن يشبه زمان الإسلام بوقت العصر وقد ساوى زمانُ هذا الدين زمانَ موسٰى، وزاد علٰى زمان دين عيسٰى، بل جاوزَ ضعفه إلٰى هذا العصر، فما معنى العصر نسبةً إلى الزمان المذكور؟ بل ليس هذا البيان إلا كذبا فاحشا ومِن أشنع أنواع الزور، بل ذيلُ الاعتراض أطولُ من هذا المحذور فإن نبأ نزول عيسٰى وخروج الدجّال ويأجوج ومأجوج الذى ينتظره كثير من العامّة قد ثبَت كذبه بهذا الإيراد بالبداهة وبالضرورة، فإن وقت

मूर्ख, अंधे तथा उद्दंडता के पर्दों में क़ैद पक्षपाती के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। क्योंकि जो अर्थ अपने बयान में हमने पहले वर्णन किए हैं उनसे उन कुछ संदेहों से मुक्ति मिलती है जो अध्यात्मज्ञान के कुछ प्यासे दिलों में शैतान के बार-बार के भ्रमों से दुविधा उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त यह अर्थ बुख़ारी और मोता की हदीस को आरोपक के आरोप से बचाते हैं और उस आरोप लगाने वाले के आरोप से भी बचाते हैं जो नुक्ता-चीनी के लिए हर समय हथियार लटकाए फिरता है। आरोप लगाने वाले का आरोप यह है कि यह कैसे सम्भव है कि इस्लाम के ज़माने को अस्र के समय से समानता दी जाए जबकि इस धर्म का ज़माना मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने के बराबर है और ईसा अलैहिस्सलाम के धर्म के ज़माने से अधिक है बल्कि इस अस्र के समय तक उसके दोगुने ज़माने से भी अधिक हो गया है। अत: इस वर्णित ज़माने के बारे में अस्र के वर्णित अर्थ कैसे सही होंगे? बल्कि यह बयान खुला खुला वास्तविकता के विरुद्ध और घिनौना झूठ है और ऐतराज़ का दामन तो इस वर्जित सीमा से भी आगे बढ़ गया है क्योंकि ईसा अलैहिस्सलाम का अवतरण, दज्जाल का निकलना और याजूज-माजूज के निकलने की ख़बर जिसकी अधिकतर लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं,

العصر قد مضى بل انقضى ضِعفاه من غير الشك و الشبهة نظرًا إلى زمان الملّة الموسوية، فما بقى لظهور هذه الانباء وقت، واضطر المنتظرون إلى أن يقولوا إنها باطلة فى الحقيقة و ما بقى سبيل لتصديقها إلّا أن يقال إن هذه الاخبار قد وقعت، وقد نزل عيسى النازل، وخرج الدجّال الخارج، وظهر يأجوج ومأجوج، وتحقّقَ النسل والعروج، وتمّت الاخبار التى قُدّرتْ والرسل أُقّتتْ فلمّا قلنا إن زمان أمّة موسٰى كان بين هذه الامم الثلاث أطولَ الازمنة، و كان زمانُ أمّة عيسٰى نصفَه، و كان نصفَ هذا النصف زمانُ أخيار هذه الامّة نظرًا إلى تحديد القرون الثلاثة، بطُل هذا الاعتراض، وانكشفَ الامر على الذى يطلب الحق بسلامة الطويّة

उसका झूठ इस वर्णन से स्पष्ट एवं निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है क्योंकि अस्त्र का समय बीत चुका बल्कि मूसा की उम्मत के ज़माने को देखते हुए बिना किसी संदेह के उससे चार गुना समय बीत चुका है। अत: इन भविष्यवाणियों के प्रकटन में अब कोई समय शेष नहीं रह गया है और इन ख़बरों की प्रतीक्षा करने वाले यह कहने पर विवश हो गए हैं कि यह सब ख़बरें वास्तव में बिल्कुल झूठ हैं और उनके सत्यापन का कोई मार्ग शेष नहीं रहा सिवाए इसके कि यह कहा जाए कि ये भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं और अवतरित होने वाला ईसा अवतरित हो चुका। साथ ही दज्जाल भी प्रकट हो चुका और याजूज माजूज भी प्रकट हो गए और उनका संसार में फैल जाना और उनका फलांगना और उनका विकास एवं उन्नति पूर्ण हो गई और वे समस्त ख़बरें पूरी हो गईं जो निर्धारित थीं और रसूल निर्धारित समय पर लाए जा चुके। और जब हम क़ुरूने सलासा (प्रथम तीन शताब्दियों) की हदबंदी को दृष्टिगत रखते हुए कहते हैं कि मूसा की उम्मत का ज़माना इन तीनों ज़मानों में से सबसे लम्बा ज़माना था और ईसा अलैहिस्सलाम की उम्मत का ज़माना उससे आधा था और इस उम्मत के बेहतरीन लोगों का ज़माना वर्णित आधे का आधा था तो ऊपर किया गया ऐतराज़ झूठा सिद्ध हो

وصحة النيّة، و ثبت بالقطع واليقين أن زمان الامّة المرحومة المحمدية قليل فى الحقيقة من زمان الامّة الموسوية والعيسوية ★ وهذه منّةٌ منّا على المخالفين من الفِرق الإسلامية، ولم يبق لعاقل

जाता है और उस व्यक्ति पर वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है जो नेक फितरत और साफ़ नीयत से सच्चाई को मालूम करना चाहे। और निश्चित रूप से यह सिद्ध हो जाता है कि उम्मत-ए-मुहम्मदिया का ज़माना उम्मत-ए-मूसाअ० और उम्मत-ए-ईसाअ० के ज़माना से वास्तव में कम है। और इस्लामी फ़िर्क़ों में से विरोधियों

★ الحاشية۔ قدصرح رسول الله صلى الله عليه وسلم بان المراد من الامم الذين خلوا من قبلهم اليهود و النصارٰى فلا سبيل لمن مارٰى ياماسمعت قول رسول الله ''فمن'' ففكر و امعن ثم نقول علٰى سبيل التنزل ان وقت بعث نبينا المصطفٰى ما كان الا كالعصر نسبة اِلٰى امم اخرٰى فان نسبة الالف الخامس الٰى عمر الدنيا اعنى سبعة الافٍ تضاهى نسبة توجد لوقت العصر بما مضٰى بغير خلافٍ و ذالك اذا اُخذ مقدار النهار سبع ساعات نظرًا الٰى اقل مقدار طلوع الشمس و غروبها فى بعض معمورات و انت تعلم ان النهار يوجد بهذا القدر فى بعض بلاد القصوٰى كما لا يخفىٰ علٰى اولى النهٰى و انا اخذنا النهار فى صورة اولٰى بلحاظ ازيد ساعاتها و فى الاخرٰى بلحاظ اقلها و لنا الخيرة كما ترٰى۔ منه۔

★**हाशिया :-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट कर दिया है कि उन उम्मतों से अभिप्राय जो पहले गुज़र चुकी हैं यहूद और ईसाई हैं। अत: झगड़ने वाले के लिए कोई मार्ग शेष नहीं। क्या तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन **فَمَنْ** 'फ़मन' (कि ज़ाल्लीन यहूद और ईसाइयों के अतिरिक्त और कौन हैं) नहीं सुना? अत: विचार कर, फिर हम तनज्जुल के तौर पर कहते हैं कि हमारे नबी मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अवतरण का समय दूसरी उम्मतों के देखते हुए अस्र का ही समय था क्योंकि पांचवे हज़ार की तुलना जो संसार की आयु अर्थात सात हज़ार से है, उस तुलना के समान है जो अस्र के समय से पाई जाती है जो बिना मतभेद के पहले वर्णन किया गया है और यह इस प्रकार है कि जब कुछ इलाकों में सूर्य के उदय और अस्त को देख कर दिन की कम से कम अवधि सात घंटे ली जाए और आप को ज्ञात है कि कुछ दूर के इलाकों में दिन इतना ही होता है जैसा कि बुद्धिमान जानते हैं। पहली अवस्था में हम ने दिन की अधिक घंटों के हिसाब से गणना की और दूसरी अवस्था में कम से कम घंटों के हिसाब से और हमें अधिकार है जैसा कि तू देख रहा है।

ارتياب فى هذا البيان، بل هو موجب لثلج الصدر والاطمئنان، وبطُل معه اعتراض يرِد على حديث عمر الانبياء، فإن عمرَ عيسٰى من جهةِ بقاءِ دينه نصفُ عمر موسٰى كما ظهر مِن غير الخفاء، وعمرَ سيدِنا خير الرسل بالنظر إلى القرون الثلاثة نصفُ عمر عيسى ابن مريم بالبداهة ثم بعد ذٰلك أيامُ موت الإسلام إلى ألف سنة ثم بعد موت رسول الله صلى الله عليه وسلم بهذا المعنى زمانُ المسيح الموعود، الذى يشابه أبا بكر فى قتل الشيطان المردود، فإن المسيح الموعود قد استُخلفَ بعد موت النبيّ الكريم مِن حيث دينه، مِن غير فاصلة بل قبل تدفينه، وأَشركه ربُّه فى نبأ خلافةِ أبى بكر أعنى النبأ الذى ذُكر فى صحف

पर यह हमारा एहसान है और किसी बुद्धिमान के लिए इस बयान के बाद संदेह का स्थान नहीं रहता बल्कि यह हृदय की संतुष्टि एवं तसल्ली का कारण है और उसके साथ वह आरोप भी झूठा हो जाता है जो नबियों की हदीस पर पड़ता है क्योंकि स्पष्ट रूप से हज़रत ईसा की आयु आपके धर्म के शेष रहने की दृष्टि से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आयु की आधी बनती है और सय्यदना खैरुर्रुसुल (अवतारों में श्रेष्ठ) की आयु आपकी पहली तीन शताब्दियों को देखते हुए स्पष्ट रूप से ईसा इब्न मरयम की आयु की आधी बनती है। फिर इसके बाद एक हज़ार वर्ष तक इस्लाम की मौत का ज़माना है। फिर इन अर्थों की दृष्टि से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहांत के बाद उस मसीह मौऊद का ज़माना है जो धुत्कारे हुए शैतान के क़त्ल करने के सिलसिले में हज़रत अबू बक्र रज़ि के समान है। क्योंकि मसीह मौऊद को धर्म की दृष्टि से रसूल करीम के देहांत के बाद अविलंब बल्कि तदफ़ीन से भी पहले ख़लीफ़ा बनाया गया है और अल्लाह ने उसे हज़रत अबू बक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त की ख़बर में सम्मिलित कर दिया है अर्थात वह ख़बर जो पवित्र क़ुर्आन में वर्णित है और उसको भी हज़रत अबू बक्र रज़ि के समान तौफ़ीक़

مطهَّـرة، ووُفّـق كمـا وُفّـق أبـو بكـر، وأُعطـيَ له العـزمُ كمِثـله لمنـع سـيل ضـلالة مهلكـة وإليـه أشار سـبحانه تعـالىٰ فى قـوله لَيۡـلَةُ الۡقَـدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ يعنى مِـن ألـف سـنة، و كثُرت الاسـتعارات كمثـله فى كتـب سـابقة ثـم بعـد ذالـك الإلـف زمـانُ البعـث بعـد المـوت وزمـان المسـيح الموعـود، فقـد تـمّ اليـوم ألـفُ الضـلالة والمـوت، وجـاء وقـت بعـد الإسـلام المـوء ود وتمّـتْ حجّـة الله عليكـم أيهـا المنكـرون، فـلا تكونـوا مـن الظانّـين بـالله ظـنّ السـوء ، و عُـدّوا أيّـام الله أيهـا العـادّون وإنّ وعـد الله حـق، فـلا تغرّنكـم الحيـاة الدنيـا، ولا يغرّنكـم الشـيطان الملعـون وإن هـذه الإيّـام أيّـامُ ملحمـة عظمٰـى أيهـا المجاهـدون الخاطئـون، وأيّـامُ نـزول المسـيح وخـروج الشـيطان بغضـب مـا رآه السـابقون فـإن الشـيطان

दी गई और विनाशकारी गुमराही के सैलाब को रोकने के लिए उन जैसा दृढ़ संकल्प दिया गया। इसी की ओर अल्लाह तआला ने अपने कथन- لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۙ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ۱ में इशारा फ़रमाया है। हज़ार महीनों से अभिप्राय यहां एक हज़ार वर्ष है और इस जैसे इस्तेआरात (रूपक) पहली पुस्तकों में बहुत हैं। इस हज़ार वर्ष के पश्चात 'बअस बअदल मौत' (मरने के बाद पुन: उठाया जाना) और मसीह मौऊद का ज़माना है। अत: आज गुमराही और मौत का हज़ार साल पूरा हो गया और ज़िंदा दफन इस्लाम के बाद (उसकी दोबारा उन्नति) का समय आ गया। और हे इन्कार करने वालो! तुम पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो गई। अत: तुम अल्लाह पर कुधारणा करने वालों के समान न बनो। और हे गणना करने वालो! अल्लाह के दिनों की गणना करो और अल्लाह का वादा निस्संदेह सच्चा है। अत: तुम्हें न यह सांसारिक जीवन धोखा दे और न शैतान धोखा दे। हे गलती करने वाले मुजाहिदो! यह ज़माना बड़ी जंग का ज़माना है और मसीह के अवतरण और शैतान के ऐसे भयानक क्रोध के साथ

---

१ **अनुवाद-** अर्थात लैलतुल क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। अनुवादक

رأى الزمان قد انقضى، وإن وقت المُهلة مضٰى، ويوم البعث أتٰى، وما كانت المهلة إلّا إلٰى يومِ يُبعَثون هذا ما وعد الرحمٰن وصدق المرسلون و إن الذين يجادلون فيه بعدما أتتهم شهادة من الفرقان إنٌ فى صدورهم إلا كبرٌ، وما بقى لهم حق ليكفروا بسلطان نزل من الرحمٰن، وتمّت عليهم حجّة الله الديّان لا يريدون الحق ولا الهدىٰ، وينفدون الاعمار فرحين مستبشرين بهذه الدنيا ألم يأتهم ما أتى الامم الاولٰى؟ ألم يروا آيات كبرٰى؟ أما جاء رأس المائة وفسادُ الامّة، والفتنُ العظمٰى من أعداء الملّة، والكسوفُ والخسوف فى رمضان ومعالم أخرٰى؟ فإن كنتم صالحين فأين التقوٰى؟

प्रकट होने का ज़माना है जिसे पहलों ने नहीं देखा। शैतान ने देख लिया है कि उसका ज़माना समाप्त हो गया और उसको दी गई मोहलत की मीआद पूरी हो गई और उठाए जाने का दिन आ गया और उसको दी गई मोहलत केवल इस उठाए जाने के दिन तक थी। यही तो है जिसका रहमान ख़ुदा ने वादा किया था और अवतार सही ही कहते थे। और वे लोग जो क़ुर्आन की गवाही आ जाने के बाद भी इसके बारे में झगड़ा करते हैं उनके दिलों में अहंकार है और उनके लिए इस दलील से इन्कार करने का कोई अधिकार शेष नहीं जो रहमान ख़ुदा की ओर से आई है। उन पर निर्णय करने वाले ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई। वे सत्य और सन्मार्ग नहीं चाहते और वे अपनी आयु इस संसार की नेमतों पर प्रसन्न हो कर समाप्त कर रहे हैं। क्या उनके पास वह मामला नहीं आया जो पहली उम्मतों के पास आया था? क्या उन्होंने महान निशान नहीं देखे? क्या शताब्दी का आरम्भ और उम्मत का फ़साद और उम्मत के दुश्मनों की ओर से बड़े बड़े उपद्रव और रमज़ान के महीने में कसूफ व खसूफ़ (सूर्य और चन्द्र ग्रहण) तथा अन्य निशानियाँ प्रकट नहीं हो गईं? अगर तुम नेक हो तो तक्वा कहाँ गया?

أيها الناس قد علمتم مما ذكرنا من قبل أن أعداد سورة العصر بحساب الجُمّلِ تدلّ على أن الزمان الماضى من وقت آدم إلى نزول هذه السورة كان سبع مائة سنة بعد أربع آلاف هذا ما كشَف علىّ ربى فعلمتُ بعد انكشاف، وشهد عليه تاريخ اتفق عليه جمهور أهل الكتاب من غير خلاف، وقد زاد على تلك المدّة إلى يومنا هٰذا ثلاث مائة بعد الألف، وإذا جَمعناهُمَا فهو ستة آلاف كما هو مذهب المحقِّقين من السلف ومن هٰهنا ثبت أن تولُّدى فى آخر الألف السادس يضاهى خلقةَ آدم فى اليوم السادس ولا شك أن المبعوث فى آخر ألفِ الموت سُمّى بآدم عند الرحمٰن،

हे लोगो! तुम मालूम कर चुके हो जो हमने पहले वर्णन किया है कि जुमल (अब्जद के अक्षरों) के हिसाब से सूर: अस्र का जोड़ इस बात पर दलालत करता है कि आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से इस सूर: के उतरने तक का समय चार हज़ार सात सौ वर्ष के लगभग बनता है। यह वह बात है जिसका मेरे रब्ब ने मुझ पर रहस्योद्घाटन किया। अत: इस रहस्योद्घाटन के बाद मैंने वास्तविकता को जान लिया और उस इतिहास ने भी इसके सही होने की गवाही दे दी जिस पर बिना मतभेद के समस्त अहले किताब (यहूदी और ईसाई) भी सहमत हैं और इस अवधि पर, हमारे इस दिन तक तेरह सौ वर्ष गुज़र चुके हैं और जब हम इन दोनों अवधियों को जमा करें तो यह छ: हज़ार वर्ष बन जाते हैं जैसा कि पूर्व अन्वेषकों का मत है। यहाँ से सिद्ध हुआ कि मेरा छठे हज़ार के अंत पर जन्म होना आदम के छठे दिन में जन्म के समान है और कोई संदेह नहीं कि मौत के हज़ार (वर्ष) के अंत पर अवतरित किए जाने वाले का नाम रहमान ख़ुदा के निकट आदम रखा गया है। अत: यह अल्लाह की हिकमत के भेदों में से है कि उसने मुझे छठे हज़ार के अंत में पैदा किया ताकि मेरा जन्म इस दृष्टिकोण से आदम के जन्म के समान हो जाए और यह हिकमतों वाले तथा

فكان من أسرار حكمةِ الله أنه خلقني في آخر الألف السادس ليشابه خَلْقي خَلْقَ آدم بهذا العنوان و كان هذا وعدًا مقدَّرًا من الله ذي الحِكم والفنون، وإليه أشار في قوله وَ اِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ وإن زمان خَلقي ألفٌ سادس لا ريب فيه، فاسأل الذين يعلمون ونطق به التوراةُ التي يؤمن بها المسلمون، ولم يثبت بنصوص صريحة ما يخالف هذه العِدّةَ ويعلمه العالمون فما كان لهم أن يكفروا بعِدّة التوراة وما قال النبيّون و كيف وما خالفه القرآن بل صدّقه سورة العصر فأين يفرّون؟ بل إليه يشير قوله تعالى "يُدَبِّرُ الْاَمْرَ

विभिन्न विशेषताओं वाले अल्लाह की ओर से एक निर्धारित वादा था। इसी की ओर उसने अपने कथन- وَ اِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ

(अनुवाद- ख़ुदा का एक दिन ऐसा है जैसे तुम्हारे हज़ार वर्ष, अल्हज्ज- 48) में इशारा किया है। निस्संदेह मेरे जन्म का समय छठा हज़ार है, इसमें कोई संदेह नहीं जानकरों से पूछो। यह बात तौरात ने भी वर्णन की है जिसे मुसलमान भी मानते हैं, जो कुछ इस गणना के विरुद्ध है कदापि 'नुसूसे सरीहा' (क़ुर्आनी आयत) से सिद्ध नहीं है और उसे ज्ञानी लोग जानते हैं। अत: उनके लिए उचित नहीं कि वे तौरात की वर्णित गिनती का और अवतारों के कथन का इन्कार करें। और वे इसका इन्कार कर भी कैसे सकते हैं जबकि क़ुर्आन ने इसका विरोध नहीं किया बल्कि सूर: अलअस्र ने इसका सत्यापन किया है। अत: वे कहाँ भागेंगे? बल्कि ख़ुदा का यह आदेश- يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ✲ (अस्सज्द: 6)

भी इसी ओर इशारा करता है और उसके साथ आयत- اِلٰى يَوْمٍ يُبْعَثُوْنَ को मिला

✲ **अनुवाद-** वह आदेश को युक्ति के साथ आसमान से धरती की ओर उतारता है फिर वह एक ऐसे दिन में उसकी ओर चढ़ता है जो तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार वर्ष के बराबर होता है। (अस्सज्द: 6)

مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ"★ واقرؤوا معها آية اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ هذه آية كتبناها من سورة السجدة، ومن السُنّة أنها تُقرَأ فى صلٰوة الفجر من الجمعة، وإن الله تبارك وتعالٰى يقول فى هذه السورة

कर पढ़ो। यह आयत हमने सूर: अस्सज्द: से लिखी है और यह सुन्नत है कि यह सूर: जुमा के दिन फजर की नमाज़ में पढ़ी जाती है। अल्लाह तआला इस सूर: में फरमाता है कि उसने पवित्र क़ुर्आन उतार कर शरीयत के मामलों की योजना बनाई और पवित्र क़ुर्आन के द्वारा लोगों के लिए उनका धर्म पूर्ण कर दिया। फिर उसके

★الحاشية۔ قد صرح الله تعالٰى فى هذه الاٰية۔ و بيّن حق التبيين ان ايام الضلالة بعد ايام دعوة القراٰن هى الف سنة۔ و بعدها يبعث مسيح الرحمٰن فانقطعت الخصومة بهذا التعيين المبين لا سيما اذا الحق به ما جاء ذكر الف سنة فى كتب النبيين السابقين۔ ففكر ثم فكر حتّى يأتيك اليقين الا ترى الذين فتنوا المؤمنين والمؤمنات۔ الحقوا بجماعتهم كثيرًا من الحشرات۔ وقلبوا العالم بالبدعات۔ وارادوا ان يستأصلوا الحق بالخزعبيلات۔ وانفقوا جبال الطلاء كاجراء نهر الماء۔ لهدم الشريعة الغراء۔ ايوجد مثلهم فى الاولين من الاعداء۔ او صُبّت على الاسلام مصيبة من قبل كمثل هذا البلاء۔ لن تجد من اٰدم الى اٰخر الوقت فتنًا كفتن هولاء۔ منه

★**हाशिया :-** अल्लाह तआला ने इस आयत में व्याख्या वर्णन की है और भली-भांति स्पष्ट किया है कि क़ुर्आन के प्रचार प्रसार के दिनों के बाद गुमराही का ज़माना है जो हज़ार साल है और उसके बाद रहमान ख़ुदा का मसीह अवतरित होगा। इस स्पष्ट निश्चय के पश्चात झगड़ा समाप्त हो गया। विशेषकर जब उसके साथ इस हज़ार साल की चर्चा को मिलाया जाए जो पूर्व अवतारों की पुस्तकों में आया है। विचार कर और फिर विचार कर, यहाँ तक कि तुझे विश्वास हो जाए। क्या तू उनको नहीं देखता जिन्होंने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को मुसीबत में डाला और उन्होंने अपनी जमाअत के साथ बहुत से कीड़े मकोड़े मिला लिए और संसार को बिदअतों (धर्म में नई बात पैदा करने) से तहस-नहस कर दिया और उन्होंने चाहा कि झूठी बातों से सत्य को मिटा दें और उन्होंने प्रकाशमान शरीयत को बर्बाद करने के लिए पानी की नदी बहाने के समान सोने के पहाड़ ख़र्च कर दिए। क्या पहले शत्रुओं में उनका उदाहरण पाया जाता है या इस्लाम पर उस जैसी मुसीबत पहले कभी आई। आदम से लेकर अंतिम समय तक उनके फ़ित्नों जैसे फ़ित्ने तुम कदापि नहीं पाओगे। इसी से।

إنه دبّر أمر الشريعة بإنزال الفرقان الحميد، وأكملَ للنّاس دينهم بالكلام المجيد، ثم يأتي بعد ذالك زمان تمتدّ ضلالته إلى ألف سنة، ويُرفَع كتاب الله إليه ويعرُج إلى الله أمره بِشِقَّيه، يعني يُضاع فيه حقُّ الله وحق العباد، وتهبّ صراصر الفساد على قِسمَيه، ويفشو الكذب والفِرية، يعني الفتن الدجّالية، ويظهر الفسق والكفر والشرك، وترى المجرمين معرضين عن ربهم وظهيرين عليه ثم يأتي بعد ذالك ألف آخر يُغاث فيه الناس من ربّ العالمين، ويُرسَل آدمُ آخرِ الزمان ليجدّد الدين، وإليه أشار في آيةٍ هي بعد هذه الآية أعني قوله وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ وإنّ هذا الإنسان هو المسيح الموعود وقُدّر بعثه بعد

पश्चात वह ज़माना आएगा जिस की गुमराही एक हज़ार वर्ष तक फैली होगी और अल्लाह की किताब उस (अल्लाह) की ओर उठा ली जाएगी और अल्लाह का आदेश अपने दोनों पहलुओं के हिसाब से उस (अल्लाह) की ओर उठा लिया जाएगा अर्थात उस (गुमराही के ज़माना) में अल्लाह का हक़ भी व्यर्थ किया जाएगा और बन्दों का हक़ भी और फसाद की आंधियां उसकी दोनों प्रकारों पर चलेंगीं। झूठ और मनगढ़त बातें अर्थात दज्जाली फ़ित्ने फ़ैल जाएँगे। वादा ख़िलाफ़ी, कुफ़्र और शिर्क का प्रभुत्व हो जाएगा और तू मुजरिमों को अपने रब्ब से विमुख होते हुए और उसके ख़िलाफ़ हिमायत करते हुए देखेगा। फिर उसके बाद एक और हज़ार आएगा जिसमें रब्बुल आलमीन (ब्रह्माण्ड के पालनहार) की ओर से लोगों की दुआएँ सुनी जाएंगीं और अंतिम ज़माने के आदम को भेजा जाएगा ताकि धर्म का नवीनीकरण करे। इसी की ओर उस आयत में इशारा किया है जो इस आयत के बाद है अर्थात अल्लाह फरमाता है- وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ

अनुवाद - और उसने मनुष्य की सृष्टि का आरम्भ गीली मिट्टी से किया। (अस्सज्द: 8) यह मनुष्य ही मसीह मौऊद है इसका अवतरण उन शताब्दियों से जो बेहतरीन शताब्दियाँ हैं, एक हज़ार वर्ष गुज़रने के पश्चात निर्धारित किया गया था

انقضاء ألف سنة من القرون التى هى خير القرون، واتّفق عليه معشر النبيين وقد جاء فى الصحيحين عن عمران بن حصين قال قال رسول صلى الله عليه وسلم خيرُ أمّتى قرنى ثم الذين يلونهم، ثم الذين يلونهم، ثم إن بعدهم قوم يشهدون ولا يُستشهدون، ويخونون ولا يُؤتمَنون، وينذِرون ولا يُوفون، ويظهَر فيهم السِّمَن وفى رواية ويحلِفون ولا يُستحلفون فظهر من هذا الحديث الذى هو المتفق عليه أن الزمانَ المحفوظ من غلبة الكذب الذى هو من الصفات الدجّالية وزمانَ الصدق والصلاح والعفّة لا يجاوز ثلاث مائة من قرن سيدنا خير البريّة، ثم بعد ذالك يأتى زمان كَلَيلٍ سَجْى عند غيبة بدرٍ اختفٰى، وفيه يفشو الكذب ويهوى من الاهواء مَن هَوٰى،

और इस पर अवतारों के समूह की सहमति है। सहीहैन* में इमरान बिन हसीन से रिवायत आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत का बेहतरीन भाग मेरी शताब्दी है फिर वे लोग जो उनके निकट हैं फिर वे जो उनके निकट हैं फिर उनके बाद वे लोग होंगे जो गवाही देंगे हालांकि उनसे गवाही नहीं मांगी गई होगी। वे ख़यानत करेंगे और उन्हें अमीन न समझा जाएगा, मन्नत मानेंगे परन्तु पूरी न होगी उनमें स्थूलता आ जाएगी और एक रिवायत में इस प्रकार है कि वे क़सम खाएँगे हालांकि उनसे क़सम की मांग न की गई होगी। अत: इस हदीस से जो कि 'मुत्तफ़िक़ अलैहि' (बुख़ारी और मुस्लिम दोनों जिसमें सहमत हों) है, स्पष्ट है कि झूठ के प्रभुत्व से जो कि दज्जाल की विशेषताओं में से है, सुरक्षित ज़माना तथा सच्चाई, नेकी और सच्चरित्रता का ज़माना सय्यदना खैरुल बरिय्या सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शताब्दी से तीन शताब्दी आगे न जाएगा। फिर उसके बाद ऐसा ज़माना आएगा जैसे चन्द्रमा के छुप जाने पर रात अंधकारमय हो जाती है, उसमें झूठ फ़ैल जाएगा और तामसिक इच्छाओं के कारण नष्ट होने वाला नष्ट हो जाएगा। प्रति दिन

* **सहीहैन-** अर्थात हदीस की दो प्रसिद्ध पुस्तकें बुख़ारी और मुस्लिम - अनुवादक

ويزيد كلَّ يوم زُورٌ وأحاديث تُفترَى فإذا بلغ الكذب إلى حدّ الكمال فينتهى يومًا إلى ظهور الدجّال، وهو آخِرُ أيام هذا الإلف كما يقتضيه سلسلةُ الترقى فى الزُور والافتعال، وكما هو مفهوم حديث رسول الله ذى الجلال وذالك الزمان هو الزمان الذى يعرُج أمرُ الله إليه والهدٰى، ويُرفَع القرآن إلى السماوات العُلٰى، وقد شهدت الواقعات الخارجية أن هذا الزمان الفاسد امتد إلى ألف سنة أعنى إلى هذا الزمان، حتى صار الصِلُّ كَالْاِفْعُوَان فَفَهِمْنَا من هذا باليقين التام والعرفان، أن قوله تعالٰى يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ، يتعلّق بهذه المدّة التى مرّت فى الضلالة والفسق والطغيان، وكثُر فيه المشركون، إلا قليل من الذين كانوا يتّقون وإنه

झूठ और मनगढ़त बातें बढ़ती जाएंगीं फिर जब झूठ चरम सीमा तक पहुँच जाएगा तो एक दिन यह दज्जाल के प्रकटन का आधार होगा और वे उस हज़ार (वर्ष) के अंतिम दिन होंगे जैसा कि झूठ और आत्मनिर्मित बातों की उन्नति की श्रंखला उसकी मांग करती है और जैसा कि प्रतापी ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का भाव है। यह ज़माना वही ज़माना होगा जिसमें अल्लाह का आदेश और हिदायत उसकी ओर लौट जाएँगे और क़ुर्आन बुलंद आसमानों पर उठा लिया जाएगा। घटनाएं घटित होकर गवाही दे चुकी हैं कि यह बिगड़ा हुआ ज़माना एक हज़ार वर्ष तक अर्थात इस ज़माने तक फैला हुआ था। यहाँ तक कि छोटा विषैला सांप बड़े विषैले सांप के समान हो गया। अत: इस विवरण से हमने पूर्ण विश्वास तथा विवेक से समझ लिया है कि ख़ुदा का आदेश -

يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (अस्सज्दः - 6)

(अनुवाद - वह एक ऐसे दिन में अल्लाह की ओर चढ़ता है जो तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार वर्ष के समान होता है) उस अवधि के बारे में है जो गुमराही, दुराचार और उद्दंडता में व्यतीत हुई है। उस में मुश्रिकों की

ألف سنة ما زاد عليه وما نقص، فأى دليل أكبر من هذا لو كنتم تفكّرون وإن لم تقبَلوا فبيّنوا لنا ما معنى هذه الآية من دون هذا المعنى إن كنتم تعلمون أتظنون أن القيامة هى ألف سنة كسنواتِ مُدّةِ الدنيا أو تصعَد الاعمال إلى الله فى يوم القيامة فى مدّةٍ كمثلها، ولا يعلَمها الله قبلَها؟ اتّقوا الله أيها المسرفون وأى شهادة أكبر مما ظهر فى الخارج أعنى مقدار مدّةٍ غلبت الضلالة فيها، فإنكم رأيتم بأعينكم أن مدّة زمان الضلالة وشدّتها وتزايُدها بعد قرون الخير قد امتدّتْ إلى ألف سنة حقا وصدقا أتنكرون وأنتم تشاهدون؟ وبدأ الكذب كزرع، ثم صار كشجرة، حتى ظهرت هيكل

अधिकता हो गई थी सिवाए कुछ लोगों के जो संयमी थे। यह पूरे एक हज़ार वर्ष हैं न उससे अधिक न कम। अत: यदि तुम विचारपूर्वक काम लो तो इससे बड़ी दलील और क्या होगी और यदि तुम स्वीकार न करो तो हमें खोल कर बताओ कि इस अर्थ के अतिरिक्त इस आयत का और क्या भाव है अगर तुम ज्ञान रखते हो। क्या तुम यह समझते हो कि क़यामत भी सांसारिक वर्षों के समान हज़ार वर्ष की है या क़यामत के दिन इसी के समान अवधि में कर्म अल्लाह की ओर जाएंगे और इससे पूर्व अल्लाह को उन कर्मों का ज्ञान नहीं होगा। हे सीमा का उल्लंघन करने वालो! अल्लाह से डरो, उससे बड़ी कौन सी गवाही है जो वास्तव में प्रकट हो चुकी। मेरा अभिप्राय इस अवधि से है जिसमें गुमराही का प्रभुत्व रहा। तुम निस्संदेह अपनी आंखों से देख चुके हो कि अच्छाई की शताब्दियों के पश्चात गुमराही के ज़माना की अवधि और उसकी वृद्धि और उसमें बढ़ोतरी होना वास्तव में 1000 वर्ष तक रहा है। क्या तुम स्वयं देख लेने के बावजूद इंकार करते हो। झूठ खेती की कोंपल के समान शुरू हुआ फिर एक वृक्ष के समान हो गया यहां तक कि दज्जाल की ऊंची इमारत प्रकट हो गई और तुम देखते रहे। गुमराही यद्यपि पहले भी थी लेकिन उसके सींग इन तीन शताब्दियों के पश्चात

الدجّال وأنتم تنظرون وإن الضلالة وإن كانت من قبل ولكن ما حدّثتْ قرونُها إلّا بعد هذه القرون الثلاثة ألا تقرءون حديث القرون؟ وقد جمع هذا الإلف كلَّ ضلالة، وأنواعَ شرك وبدعة، وأقسام فسق ومعصية، وأُضيعَ فيه حقوق الله وحقوق العباد وحقوق المخلوق، وانفتحت أبواب الارتداد، فبأى دليل بعد ذالك تؤمنون؟ وفُتحتْ يأجوج ومأجوج، وترون أنهم من كل حدَبٍ ينسلون وما خرَجَا إلّا بعد القرون الثلاثة، وما كمُل إقبالهما إلّا عند آخر حصةِ هذا الإلف، وكُمّلَ الإلف مع تكميل سطوتهما، وإن فيها لآية لقوم يتدبّرون، وإنّ القرآن يهدى لهٰذا السرّ المكتوم ويقول إن يأجوج ومأجوج

ही तेज़ हुए हैं। क्या तुम शताब्दियों वाली हदीस नहीं पढ़ते? इस हज़ार वर्ष ने हर प्रकार की गुमराही और शिर्क और बिदअत की समस्त किस्में और दुराचार तथा अवज्ञा की समस्त किस्में अपने अंदर जमा कर ली हैं। इसमें अल्लाह के अधिकार, बन्दों के अधिकार और सृष्टि के अधिकार नष्ट कर दिए गए हैं। धर्म से विमुखता के द्वार खोल दिए गए हैं फिर उसके बाद तुम किस दलील पर ईमान लाओगे? याजूज और माजूज खोल दिए गए हैं और तुम देखते हो कि वे हर ऊंचाई से दौड़ते चले आ रहे हैं। यह दोनों उन तीन शताब्दियों के पश्चात ही निकले हैं और इन दोनों का प्रभुत्व उस हज़ार के अंतिम भाग में ही पूर्ण हुआ है और उनके दबदबे की पूर्णता के साथ इस हज़ार की पूर्णता हुई है। निस्संदेह इसमें विचार करने वाली क़ौम के लिए अवश्य एक निशान है। क़ुर्आन इस गोपनीय भेद की ओर मार्गदर्शन करता है और कहता है कि याजूज माजूज एक निर्धारित समय तक रोके गए और जकड़े गए हैं फिर नेकी (अच्छाई) के सूर्य के अस्त होने के दिन और गुमराहियों के ज़माना में वे दोनों खोल दिए जाएंगे जैसा कि इन दिनों में तुम देखते हो। सत्य के अभिलाषियों के लिए इतना ही वर्णन करना पर्याप्त है। मेरा विचार है कि मैं जो चाहता था वह मैंने पूर्ण कर दिया है और

قد حُبِسا وصُفّدا إلى يوم الوقت المعلوم، ثم يُفتَحان في أيام غروب شمس الصلاح وزمان الضلالات، كما أنتم ترون في هذه الايام وتشاهدون وكفى الطالبين هذا القدر من البيان، وأرى أنّي أكملتُ ما أردت وأتممت الحجّة على أهل العدوان وهذا آخر ما أردنا، فالحمد لله على إتمامه لطلباء الزمان۔

تمت

المؤلّف

میرزا غلام احمد

۱۷ اکتوبر سنة ۱۹۰۲ء

अत्याचारियों पर हुज्जत पूरी कर दी है। यह वह अंतिम बात है जिसका हमने इरादा किया, इस ज़माने के सत्याभिलाषियों के लिए इस बात को पूरा करने पर हम अल्लाह की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं।

समाप्त

लेखक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

17 अक्टूबर 1902 ई०